



मूल सुत्ताणि

[श्री दशवैकालिक स्त्र, श्री उत्तराध्ययन स्त्र, श्री नंदीस्त्र तथा श्री अनुयोगद्वार स्त्र का शुद्ध मृल्पाठ]



ः संपादकः

पं० मुनिश्री कन्हैयालालजी महाराज 'कमल'



प्रकाशक :— शांतिलाल वी. शेठ,

गुरुकुल पिंटिंग प्रेस, च्यावर ।

प्रथमावृत्ति	मूल्य ५) रूपया	्रीर सम्वत् २४७६
१०००	पांच रूपया	वि० संवत् २०१०

- ग्रंपनी वात -

मानव जाति के ज्ञान विकास के आन्तरिक साधनों में जिज्ञासा-वृत्ति प्रधान है। श्रंब तक मनुष्य ने जो कुछ भी पाया है वह जिज्ञासा के सहारे ही।

जिज्ञासा मानव का एक सहज गुण है, श्रेज्ञ या विज्ञ सभी में जिज्ञासा रहती है।

जिज्ञासावृत्ति-की त्रेरणां से अर्थात् जानने की इच्छा से ही मेर्नुज्य देश-विदेश पर्यटन, हश्य-दर्शन, भाषण-अवण, अन्वेषण, अध्यय-नादि कोर्थी में प्रवृत्ति करता है।

अतीतकाल में इन कार्यों में, लगे हुए या इस समय लग रहे धन के तथा समय के सही आंकड़े किसी गणित-विशेषज्ञ द्वारा एकत्रित होकर आपके सामने आवें तो आपको आश्चर्य होगा और पता चलेगा कि मानवजीवन में जिज्ञांसा का स्थान कितना महत्त्वपूर्ण है ?

जिज्ञासुत्रों का वर्गीकरण नन्दीसूत्र में इस प्रकार उपलब्ध होतां है:—

> जाणिया १ अजाणिया २ दुविवयङ्ढा ३ जाणिया - समभदार अजाणिया - नासमभ

श्रीर दुव्वियह्दा - (दुविदग्ध) न कुछ जानते हुए भी सब कुछ सममने को दावा करने वाले।

किन्तु जिहासुकी उत्तमता और अधमता उसकी जिहासा की पृष्ठमूमि में रही हुई मनोवृत्ति पर आश्रित है।

को हैयक्ति "देखकर, सुनकर या पढ़कर स्व-परं के आहंमकल्यांगा के लिए क्या हैय है और क्यां उपादेश हैं १" सदा ऐसी जिल्लासा करता है

वह उत्तम जिज्ञासु कहा गया है श्रीर जो ऐसी जिज्ञासा नहीं करता, जिसकी जिज्ञासा कोरे छुतू इल से प्रेरित होती है श्रीर चिणिक मनोरंजन में ही परिसमाप्त हो जाती है उसे मध्यम या श्रधम जिज्ञासु कहा जा सकता है।

इसी सिद्धान्त का सहारा लेकर प्रत्येक व्यक्ति श्रपने ··· जीवन का पर्यवेत्तरण करके "स्वयं कैसा जिज्ञासु है" यह निर्णय कर सकता है।

जैन दरीन श्राध्यात्मिक दरीन है। जैनों का सारा "श्रागम-साहित्य हेय, ज्ञेय श्रीर उपादेय के वर्णन वाली मूलभित्ति पर स्थित है।

अतएव उत्तम जिज्ञासुओं के लिए जैनागमों का स्वाध्याय करना आत्मज्ञान की प्राप्ति में अद्वितीय सहायक सिद्ध हुआ है।

स्वाध्याय जैन साधुओं के जीवन का प्रमुख अंग है। वह जैन-शास्त्रों में उत्तम कोटि का तप माना गया है। चित्त की स्थिरता के लिए ता स्वाध्याय से बढ़कर और कोई अनुष्ठान ही नहीं है। स्वाध्याय ज्ञाना-वरण के च्चय के लिए अमोघ अस्त्र हैं। यही कारण है कि—जैन अमण समाचारी में केवल स्वाध्याय-ध्यान के लिए ही आठ पहर में से चार प्रहर नियत किए गए हैं।

प्रतिदिन नियत काल तक स्वाध्याय करके श्रुत का पारायण करने की परिपाटी भी प्राचीन काल में जैन श्रमणों की श्रवश्य रही होगी।

जैनागमों में उपलब्ध कतिपयक्ष पंक्तियों से ऐसा अनुमान होता है।

*पन्नत्तीए आइमाण अठणहं सयाणं दो दो उद्देसगा उद्दिसिन्नंति, गावरं चउत्थे सए पढमदिवसे अह, विड्यदिवसे दो उद्देसगा उद्दिसिन्नंति, नवमात्रो सयात्रो आरद्धं जावइयं जावइयं एइ तावइयं तावइय एगदिव-सेणं उद्दिसिज्जइ।

उक्षोसेणं सयंपि एगदिवसेणं, मिन्मिमेणं दोहिं दिवसेहिं सय, जहन्नेणं तिहिं दिवसेहिं सयं एवं ''जाव 'वीसइमं सयं, णवरं गोसालो एगदिवसेणं उद्दिसिज्जइ जइठिक्रो एगेण चेव '''क्यायंविलेण श्रग्णुएण-विज्जइ, श्रह ए ठिक्रो श्रायंविलेणं छट्टेणं श्रग्णुएणवइ, एफावीस-णवीस-तेवीस इमाइं सयाइं एक्केक्क दिवसेणं उद्दिसिज्जांत चडवीसइमं सयं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा,

किन्तु वर्तमान में चार प्रहर तक आगम-साहित्य का स्वाध्याय करने वाले जैन अमग्र कितने हैं ?

सारे आगमों का पारायण करने की परिपाटी भी आज कहाँ है ? प्रातः सायं ''इग्रामेव निगांथं पावयग्रं सच्वं'' का पाठ करने वालों की श्रागम-स्वाध्याय के प्रति उसंग भी आज पहले जैसी कहां है ?

यद्यपि ब्राज भी श्रमणसंघ की ब्रागमों के प्रति श्रद्धा-भक्ति यथावत् है फिर भी उनकी स्वाध्याय की स्रोर इतनी ऋरुचि क्यों ?

मेरे खयाल से आगम-स्वाध्याय के प्रति अरुचि होने में निम्न लिखित कारणों का प्राधान्य है।

पंचवीसइमं दोहिं दिवसेहिं छ छ उद्देसगा, वंधिसयाइ श्रद्धसयाइं एगेएं दिवसेएं

सेढिसयाइं बारस एगेएां

एगिदिय महाजुम्म सयाइं बारस एगेएं · · ·

एवं वेइदियाण बारस, तेइदियाण बारस, चडिंदियाण बारस, एगेणं— श्रमित्रपचेंदिय। ए बारस, सन्निपंचिदिय महाजुम्म सयाई एक्कवीसं एग-दिवसेख उद्दिसिङ्जंति।

रासीजुम्मसयं एगदिवसेगां उद्दिसिङजङ् ।

उवासगदसाण सत्तमस्स श्रंगस्स एगो सुयखंधो दस श्रहमत्यणा एकसरगा दससु चेव दिवसेसु डाइस्सिडजंति, तन्त्रो

सुयखंघो समुद्दिसन्जइ दोसु दिवसेसु ।

अंतगडदसाणं श्रंगस्स एगो सुयखंध श्रष्ट वग्गा श्रष्टसु चेव दिवसेसु उहिसिन्जाति।

अणुत्तरोववाइयदसाणं एगो सुयखंधो, तिरिण वग्ना तिसु चेव दिवसेसु डिइसिड्जंति।

+ + + + + पण्हावागरणेणं एगो सुयखबो, दस अन्मयणा. एकसरगा . दससु चेव दिवसेसु उ इसिन्नंति। एगंतरेसु आयंविलेसु निरुद्धेसु आउत्त-भत्तपाग्एएं।

१ अञ्यवस्थित शिक्ंग-

वर्तमान में नवदीचित श्रमण के लिए जिन श्रचलित-पद्धतियों से शिचण दिया जारहा है, उनसे युगानुकूल विशिष्टज्ञान श्राप्त नहीं होता।

क श्राजकत श्रमणों में सर्व प्रथम संस्कृत भाषा का श्रव्ययन करने की पद्धति श्रिधिक प्रचित्तत हैं। संस्कृत का श्र्ध्ययन कराने के लिये प्रायः श्रजैन श्रध्यायक द्युलाये जाते हैं। उन्हें जैन श्रमण जीवन से प्रायः घृणा सी होती है।

दृसरी वात यह है कि-वे अमणचर्या और जैन : सिद्धान्तों के मम से अनभिज्ञ होते हैं।

यदि किसी विद्वान को जैन सिद्धांतों की सामान्य जानकारी हुई भी तो उस जानकारी का जैन सिद्धान्तों के प्रति अरुचि के कारण हितकर परिकाम नहीं निकलता।

प्राय: नवदीचित श्रमण ही पंडितों से पढ़ते हैं, नव दीचितों का पहला स्व श्रध्ययन केवल प्रतिक्रमण या २-४ थोकड़ों से श्रधिक नहीं होता, श्रतएव दृढ़ श्रद्धा के श्रभाव में उनके कोमल हृदय पर श्रमण संस्कृति से विपरीत विचारों का प्रभाव पंडे विना नहीं रहता।

संस्कृत का ऋध्ययन कठिन होने से सामान्य ज्ञान प्राप्त करने में और कुछ कान्यों के पढ़ने में ही ४-५ दर्ष पूरे होजाते हैं। वाद में भम्णों के वयस्क होजाने पर तथा आवश्यकता पड़ने पर संस्कृत टीकाओं से आगमों का अर्थ समम सकने की धारणा यन जाने से उनका मूल आगमों के स्वाध्याय के लिए उत्साहपूर्ण प्रयत्न नहीं होता।

दुह-विवागे दस अन्मयणा एकसरगा दससु चेव दिवसेसु इहिसिक्जंति, एवं सुहविवागे-वि।

निरयाविल उवंगेणं एगो सुयखंधो पचवग्गा पंचसु दिवसेसु उद्दिसिञ्जति।

नोट- आचाराङ्ग आदि बहुत से सूत्रों के अन्त में ऐसे पाठ क्यों नहीं है यह विचारणीय है।

- ख. जब से स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी घोषित हुई है, तब से अमण भी हिन्दी का अध्ययन करने की ओर विशेषका से आकृष्ट हुए हैं, वे प्रभाकर, विशारद, एवं रत्न आदि परीचाएं भी देते हैं और इन परीचाओं के पाठ्य प्रंथों का अध्ययन करने में ही उनके ४-४ वर्ष पूरे होजाते हैं। इस प्रकार सामान्य रूप से हिन्दी का अच्छा ज्ञान हो जाने पर भी संस्कृत, प्राकृत के पर्याप्त ज्ञान से वंचित रह जाते हैं और इस कारण आगम का स्वाध्याय करना उन्हें कठिन प्रतीत होता है।
- ग. आजकल जैन अमगों में तीसरी यह भी पद्धित देखी जाती है कि दो चार अधिक प्रचलित आगम पढ़ लिए जाते हैं, कुछ थोकड़े " याद करिलये जाते हैं श्रीर शेष आगमों के प्रति उदासीनता प्रदर्शित की जाती है।

किन्तु इतने मात्र से भाषा ज्ञान के अभाव में पिठतसूत्रों के सिवा धान्य सूत्रों का स्वाध्याय नहीं हो सकता।

२ प्रसिद्ध वक्ता वनने की उमंग-

दो चार वर्ष के कच्चे श्रध्ययन के बाद ही श्रमणों के मनमें प्रसिद्ध वक्ता बन जाने की उमंग पैदा हो जाती है, यह भी जैनागामों के स्वाध्याय में सबसे बड़ी वाधा है।

श्रावक समाज प्रायः सबसे श्रधिक महत्त्व उसी श्रमणं को देता है जिसका व्याख्यान मनोरंजक होता है इसलिए युवा श्रमणों को वक्ता बनजाने की धुन लग जाती है।

थधिप वक्ता बनना बहुत अच्छा है, परन्तु वक्ता वनने के लिए पहले उच्च कोटि का श्रोता बनना नितान्त आवश्यक है। आगमों का मार्निक ज्ञान, बहुमुखी प्रतिभा, और अनेक .. विषयों के अध्ययन के बिना सही अर्थ में वक्ता नहीं बना जा सकता।

षक्तृत्व-शक्ति, को प्रस्फुटित करने के लिए स्वरमाधुर्य, तैज आवाज, श्रीर प्रतिपाद्य विषय का पूर्णज्ञान होना भी श्रत्यंत स्रावश्यक होता है। पर वक्ता बनने की धुन रखने वाले इन वालों पर कहां ध्यान देते हैं ?

- क. स्वरमाधुर्ये के अभाव में भी नए नए सिनेमा के गाने की अति-धिकार चेष्टा करके जनता को आकर्पित करने का विफल प्रयास करना भी आज जैन अम्णों में देखा जाता है!
- ख. स्वरम।धुर्ये वाले श्रमण भी जव विशाल परिषदा में श्रविकतर जोर लगाकर तेज श्रावाज से व्याख्यान देते हैं तो उनका व्या-ख्यान भी नीरस हो जाता है।
- ग. श्रागम-झान के श्रभाव में भी श्रागम की ही एक दो गाथाएँ कहकर उन पर शास्त्रीय विषय का प्रतिपादन करने वाले श्रमण से किसे श्राश्चर्य न होगा ?
- चिद ऐसे वक्ता से शास्त्रज्ञ-श्रावक प्रस्तुत विषय को लेकर श्राधिक स्पष्टीकरण करना चाहे या उनसे एक दो प्रश्न पूछ ले तो वक्ता का मुंह विवर्णे हुए विना नहीं रहता।

३ वड़ों का श्रनुकरण—

जब तक मराग अवस्था है, तब तक मानव हृदय से महत्वा कांचा दूर नहीं हो सकती। चड़े अमणों की अतिष्ठा व अतिभा देखकर छोटे अमणों के मन में भी वैसी ही अतिष्ठा व अतिभा प्राप्त करने की अतिस्था पैदा होती है। एतद्थे छोटे अमण भी चड़े अमणों की कार्य प्रणाली का अनुसरण करते हैं। प्रायः वड़े अमण भी व्याख्यान और आवश्यक के अतिरिक्त स्वाध्याय में समय नहीं लगाते। इसका असर यह होता है कि-छोटे अमण भी व्याख्यान की तैयारों के लिए व्याख्यान चिन्द्रका हृद्यान्त सागर आदि को पढ़ने में और नई तर्जों के स्तवनों को याद करने में ही लगे रइते हैं, "आवश्यक" से अधिक स्वाध्याय वे नहीं कर पाते।

ऐसा भी देखा जाता है कि प्रायः वड़े संत भक्तमंडली से सदा विरे हुए रहते हैं। लघुवयस्क संत भी अपने गुरुजनों के पथ पर चलने के लिए अपने समवयस्क श्रावकों की भक्त मंडनी का संगठन करने लग जाते हैं भीर इससे उनके स्वाध्याय का समय समाप्त हो जाता है।

४ आधुनिक संपादन-कला से संपादित आगमें। को अभाव । वर्तमान में नवदीत्तितों के अध्ययन के लिए प्रायः मुद्रित प्रतियां ही दी जाती हैं, क्योंकि लिखित प्रतियां ऋधिक मृत्य वाली और अधिक परिश्रम से लिखी हुई होती हैं, श्रतः उनके फटने या विगड़ने का भय सदा बना रहता है, इसके श्रतिरिक्त नवदीन्तित सहसा शास्त्रीय लिपि पढ़ भी नहीं सकता।

इसके विपरीत मुद्रित प्रतियां सुलभ तथा नागरी लिपिवाली होती हैं। एक प्रति के बिगड़ने या फटने पर दूसरी प्रति का मिलना कोई कठिन नहीं होता। परिणामतः अध्ययन की समाप्ति के बाद अभण को जब गुरुजन लिखित प्रतियां देते हैं तब अभण का मन उन लिखित प्रतियों के अध्ययन में नहीं लगता क्योंकि अलग अलग लेखकों की अलग अलग लिपियां होती हैं, और उनमें अशुद्धियां भी अधिक होती हैं, अतएव प्राचीन ... पद्धति से लिखित प्रतियों से स्वाध्याय करना कठिन हो जाता है।

श्रागमों के श्रद्याविध मुद्रित संस्करण भी प्राय. हस्त लिखित प्रतियों की तरह ही पदच्छेद, प्रश्न सूचक चिह्न, विराम चिह्न श्रोर विषय निर्देश ष्रादि से रहित श्रीर प्राचीन ढंग के हैं।

श्राधुनिक पद्धति से सुसंपादित श्रीर मुद्रित पुस्तकों से संस्कृत, प्राकृत श्रीर हिन्दी श्रादि का श्रध्ययन करने वाले इस युग के श्रमणो का मन प्राचीन ढंग से मुद्रित श्रागमों की प्रतियों से स्वाध्याय करने का नहीं होता।

४ ज्ञान भंडारों की कमी---

जैन श्रमण पैदल विहार में अपने उपयोगी उपकरणों का भार स्वयं उठाते हैं, इसिलये वे एक हो आगम जो सरल तथा अधिक प्रचलित होते हैं उन्हें ही सदा साथ में रख सकते हैं।

दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दी आदि जिन आगमों के कई संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं और जिनकी प्रतियां सर्वत्र सुलभ होती हैं, उन्हीं आगमों का स्वाध्याय किया जाता है, अन्य आगमों का नहीं।

उल्लिखित कारणों के निराकरण के लिए नीचे लिखे प्रयत्न होने चाहिए—

१ नवदीत्तित श्रमणों का श्रध्ययन विद्वान् श्रमणों द्वारा या जैन श्रध्यापकों द्वारा ही होना चाहिए।

- २ श्रमणों के लिए एक ऐसा पाठ्यक्रम निर्धारित करना चाहिए जिससे संस्कृत, प्राकृत श्रादि भाषाश्रों का ज्ञान जैन काव्यों का, जैन दर्शन प्रन्थों का श्रीर जैनागमों का श्रम्ययन तथा प्राचीन लिपियों के पढ़ने का श्रभ्यास व्यवस्थित रूप से होसके।
- ३ जिन श्रमणों ने श्रध्ययन पूरा कर लिया हो उनसे नए श्रमणों का श्रध्ययन कराना चाहिए। ऐसा करने से उनका ज्ञान परिपक्त हो जाता है।
- ४ साधारण अभ्याखियों के लिए-आगमों के मूलपाठ के साथ सरल भाषा में शञ्दार्थ, भावार्थ से संकलित पूरी आगम बत्तीसी का संगदन होना चाहिए।

विदेशों में प्रचार के लिए—भिन्न भिन्न भाषात्रों में समस्त आगमों का आधुनिक शैली से सुन्दर से सुन्दर संपादन होना चाहिए।

५ चातुर्मास करने योग्य सभी चेत्रों में ज्ञान भण्डार श्रवश्य होने चाहिए प्रत्येक ज्ञान भण्डार में मूलपाठ को तथा हिन्दी श्रतुवाद वाली पूरी वलीसी होनी चाहिए, संस्कृत टीका वाले सब श्रागम तथा प्राकृत का कोप श्रादि मुख्य मुख्य प्रंथों का संप्रह श्रवश्य होना चाहिए, यदि स्वाध्याय उपयोगी साहित्य सर्वत्र सुलभ होगा तो संघ में स्वाध्याय का प्रचार श्रवश्य श्रिक होगा। ऐसा मेरा हढ़ विश्वास है।

प्रस्तुत संस्करण—

मृत श्रागमों के स्वाध्याय के लिए दो प्रकार के संस्करण तैयार करने की बहुत दिनों से मेरी प्रवज्ञ इच्छा थी।

प्रथम प्रकार के संस्करण में-

- क. पद्यविभाग में—पद्यों का छन्दों के श्रनुसार श्रलग श्रलग श्रालेखन हो।
- ख. संवाद वाले श्रध्ययनों में तथा कथानक वाले श्रध्ययनों में यथा स्थान पात्रों के नामों का निर्देश हो।
- ग. भिन्न भिन्न विषय के भिन्न भिन्न पेरेप्राफ हों।
- घ. जहां जहां मूलपाठ में संख्या का निर्देश हो वहां वहां कमां क लगा दिए ज.एं।

गद्य विभाग में—

लम्बे समासान्त पदों में भिन्नता सूचक (हाइफन) चिन्ह हों चौर जहां प्रश्नोत्तर हों वहां प्रश्नोत्तर रूप में ही दिखाए जांय ।

सूचना-पाठ यथा-एवं श्रीर जाव से जितना पाठ जहां जहां लेना आवश्यक हो वहां वहां पूरे पाठ वाले सुत्रों के सुत्राङ्क, पृष्ठ श्रीर पंक्ति के श्रंक दिए जावें तथा भिन्न-प्रकार के श्रज्ञरों में दिखाए जावें। प्रत्येक वाक्य श्रलग श्रलग हों।

अपनी चिर-त्राकांचा की पूर्ति के हेतु इसी शैली का श्रनुसरण करके "मूल सुत्तािण" को मैंने तैयार किया है।

में चाहता हूं कि-दूसरे प्रकार के संस्करण में एक ही विषय के समान पाठों की पुनरावृत्ति के बिना ३२ सूत्रों के पूरे मूल पाठ हों श्रीर एक ही जिल्द में छोटे साइल का प्रन्थ हो जिसे प्रत्येक स्वाध्याय प्रेमी श्रनायास ही सदा श्रपने साथ रख सके। इसके लिए भी प्रयस्न चाल् है।

मूल सत्र संज्ञा की सार्थकता-

प्रस्तुत संस्करण में दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, नन्दी, श्रीर श्रमुयोग द्वार इन चार मूल सूत्रों का संकलन किया गया है, इसलिए इस संस्करण का नाम "मूल सुत्ताणि" रक्खा गया है।

किन्तु इन सूत्रों का नाम "मूल" क्यों पड़ा ? यह अभी तक अन्वेषण का ही विषय बना हुआ है। क्योंकि बहुत कुछ अन्वेषण करने पर भी मुभे अभी तक इन सुत्रों की "मूल" संज्ञा के संबंध में ऐतिहासिक-सामग्री नहीं मिल सकी है, फिर भी निम्नलिखित तथ्यों के आधार से इन सुत्रों की "मूल" संज्ञा पर काफी प्रकाश पड़ता है।

१ दशवैकितिक छादि चारों सूत्रों का प्रधानतया प्रतिपाद्य विषय भव-श्रमण का मृत श्रीर मोत्त का मृत बताना है, सम्भव है इसी श्राशय को लेकर इन सूत्रों को "मृत" कहा गया हो।

श्राचराङ्ग सूत्र के टीकाकार श्री श्राचार्य शीलांक ने "अमूल"

क्षमगं च मूलं च विगि च घीरे, षिलिच्छिदियाणं निकम्मदसी । स्राचारांग—प्रथम श्रुत रकंघ, तृतीय स्रध्य० उद्दे ० २ ।

शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि साधक को भव-भ्रमण के मूल को छोड़ कर मोत्त के मूल को स्वीकार करना चाहिए। श्राचार्य ने चार घाति कर्म-मोहनीय, मिथ्यात्व, श्रमंथम श्रादि को भव-भ्रमण का मूल वताया है। क्योंकि इन्हीं के सम्बंध से श्रात्मा कर्मों से आवद्ध होती है।

मोच का मूल धर्म है.। मोच का अर्थ होता है आत्मा का कमें से अलग हो जाना। धर्म से अपना सम्बन्ध स्थापित करके ही आत्मा कर्म-बन्धन से मुक्त हो सकती है। इसीलिए यह बताया गया है कि मोच का मूल धर्म है।

अहिंसा आदि पांच महात्रत, विनय, ज्ञान दर्शन चारित्र आदि ही तो वस्तुतः जीवन के मृल धर्म हैं।

मूल धर्म ऋहिंसा को लेकर ही दशवैकालिक सूत्र प्रारंभ किया गया है "ऋहिंसा संजमो तवो" यह दशवैकालिक सूत्र के प्रथम ऋष्ययन की पहली गाथा का दूसरा पद है। इसमें ऋहिंसा का वर्णन किया गया है ऋतः यह मूल सूत्र है।

उत्तराध्ययन सृत्र मृल धर्म विनय को लेकर प्रारंभ किया गया है। उत्तराध्ययन के पहले अध्ययन का नाम भी विनय अध्ययन है। इस-लिए यह मूल सूत्र है।

नंदी सूत्र में ज्ञान का विषय है। "पढमं नाएं तस्रो दया" "णाएोन विणा न हुंति चरण गुणाः" ये सूत्र वाक्य बतलाते हैं कि ज्ञान के बिना जीवन का विकास नहीं हो सकता। इसलिए ज्ञान मूल धर्म है और नन्दी सूत्र में ज्ञान का वर्णन है स्रतः नन्दी सूत्र मूलसूत्र है।

अनुयोग द्वार सूत्र में भी श्रुत्रज्ञान का ही विस्तृत वर्णन है अतः उसकी भी मूल सूत्रों में गणना संगत है।

इस प्रकार इन सुत्रों में ज्ञान दर्शन चारित्र श्रादि मोत्त के मृल धर्मों के वर्णन, श्रीर मिश्वास्त्र श्रादि भवश्रमण के मृलधर्मों के वर्णन ही हैं। इसलिए इन सूत्रों को "मूल" कहना किसी भी दृष्टि से श्रयुक्त प्रतीत नहीं होता।

२ नंदी सूत्र में जहां कालिक श्रीर उत्कालिक सृत्रों की गणना की गई दे वहां कालिकों में सर्व प्रथम उत्तराध्ययन का नाम तथा उत्कालिकों में सर्व प्रथम दशवैकालिक का नाम श्रीयाँ है इसलिए भी इन सूत्रों की /

३ नंदी सुत्र में अनुयोग द्वार सूत्र के नाम के साथ मुल शब्द लगा हुआ है। सम्भव है इसी दृष्टि से अनुयोगद्वार सूत्र की गणना मूलसूत्रों में की गई हो।

४ तए शिष्यों के प्रारम्भिक श्रध्ययन के लिये ये सूत्र ही श्रधिक उपयुक्त माने गये हैं। इनके श्रध्ययन के बाद ही नवीन साधक श्रंगादि सूत्रों में सरलता से प्रवेश कर सकता है इस दृष्टि से भी ये मूलसृत्र हैं।

यद्यपि कई प्राचीन विचारक नन्दी श्रीर श्रनुयोग द्वार को मूल-सूत्र न मानकर श्रोघनियुक्ति श्रादि श्रन्य सूत्रों को मूलसूत्र मानते हैं। किन्तु ऐतिहासिक प्रमाण के श्रभाव में किसी निर्णय पर पहुँचना सम्भव नहीं है श्रतः श्रागम साहित्य के मर्मे इ विद्वान इसी विषय पर श्रिधक प्रकाश डालेंगे, यही श्रभ्यर्थना है।

श्राभार-प्रदर्शन---

श्रद्धेय परम पूज्य मेरे गुरुदेव श्री फतेचंद्रजी महाराज तथा श्री प्रतापचंद्रजी महाराज के श्रसीम उपकार से ही मैं श्रमणजीवन श्रीर श्रुतसेवा के चेत्र में प्रवेश कर सका हूँ।

भद्र हृदय शान्तस्वभावी श्रद्धेय स्वामीजी महाराज श्री हजारी-लालजी महाराज का भी मैं श्रत्यंत श्राभारी हूं। श्रापके स्तेहपूर्ण सहयोग से ही मैंने श्रागमों का श्रध्ययन किया है।

पंडित सुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज "मधुकर" के परिश्रमपूर्ण सहयोग से तो यह संस्करण सर्वाङ्ग सुन्दर बन सका है, अतएव आप ही स्मृति तो आजीवन रहेगी ही।

श्रीयुत् पं० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल से इस 'मूल सुत्ताणि' के संपादन में सारा मार्ग दर्शन जिस स्नेइ से मिला है उने मुलाया नहीं जासकता। श्रंत में गुरुकुल प्रेस के मैनेजर श्रीयुत्त शान्तिलालजी वनमाली सेठ का भी स्मरण करना ही होगा, जिनके सत् प्रयत्नों से यह संस्करण इतने प्रशस्त रूप में स्वाध्याय प्रेमियों के सामने श्रासका है।

छद्मस्थ जीवन के नाते इस संस्करण में अनेक त्रुटियों का हो जाना असंभव बात नहीं है, आशा है पाठक व समालोचक रही हुई भूलों की अवश्य सूचना देंगे।

जैन स्थानक पिपित्तया बाजार, य्यावर

म्रिन कन्हैयालाल जैन (कमल)



पद्यानामनुक्रमणिका

(अ)

-	श्चध्य०	उद्दे०	गाथाक्रमांक	पृष्ठांक
श्रह्मूमिं ०	ĸ	P	ર૪	२४
श्र इयस्मि०	৩		5	४२
श्र इयम्मि ०	G		٩,	४२
श्रइयस्मि०	v		१०	४२
श्रकाले चरसि०	¥	२	¥	३१
त्रमातं०	¥	Ŗ	٤	३२
श्रगुत्ती ०	६		ΧE	80
श्र्वयं चर०	8		የ	२०
श्रजयं चिंद्र०	8		२	२०
श्रनयं श्रास०	8		3	20

२०

२०

२०

२०

४३

६८

४३

38

성독

O

२३ -

38

₹

૪

X

Ę

१५

3

१४

QQ

१३

४

१०

देश

8

8

૪

v

O

X

5

8

¥

5

चू० १

ę

۶

श्रजयं सय०

श्रजयं भंज॰

श्रवयं भास०

श्रज याहं •

श्रजीवं परिगायं०

श्रद्ध सुहुमाइं०

अट्टावए य०

अगायगो०

अणायारं०

স্সজাए০

শ্বজিए০

	श्रध्य ०	उद्दे ०	गाथाक्रमांक	पृष्ठांक
श्चित्य०	चृ० २		¥	৩০
श्रामुए०	¥.	Ł	१३	२४
त्र्यान्नवित्त ०	¥	8	5 3	३०
श्रगुसोय॰	चू० २		२	୯୦
श्रगुसोय०,	, चूं०२ ं		३	७०
अत्त हा०	×	२	३२	३४
श्रतिंतियों 🗸	4		२६	38
छत्थं गयंभि०	5		२म	કદ
श्रदी गो ०	¥	२	२६	३३
श्रघुवं ०	5		३४	38
अन्नटुं	5		४२	¥ የ
श्चनाय ं छं ॰	3	३	8	<u>ን</u> ፪
श्रनिलस्स॰	६		३७	३८
अ निलेग् ०	१०		3,	६३
श्रपग्रहा०	६		१२	३६
श्रापग्धे वा॰	U		४६	88
ऋष्प्रतियं ०	4		४८	x १
श्रपग्हा०	8	२	१३	४७
श्रपा खलु॰	चू० २		१६	७२
श्रपुच्छित्रो०	5		કહ	४१
श्र पेसिया ०	¥	१	હ્યુ	२६
ब्रबंभचरियं ०	६		१६	ইত
श्रभिगम० ्	3	8	६	६३
श्रभिभ्य॰	१०		१४	EX.
श्रमज्जमंसासि॰	चू० रे		હ	७१
श्रमरोवमं ०	चु० १		११	६६
श्रमोहं वयगां०	5		३३	38
त्रतं पासाय०	৩		२७	88
त्र लो लुए ०	3	३	१०	Ęo CC
श्रतोत्तभिक्खू	१०	m	१७	६६
ञ्चवएग्वायं० 🕆	٤	३	.	<i>ች</i> የ
श्रासं विरसं०	પ્ર	8	<u>د</u> ح	₹ १ ₽2
श्रसचमोसं ०	ড		ર	ध २

	श्चध्य ०	उद्दे 0	गाथाक्रमांक	पृष्ठांक
•	65		- १३	ሂ६
श्रसइं वोसट्ट०	१०	•	४७,४६,४१,	२७
ग्रसणं पाण्यं?	/ X	१	४३,४७	
4 3	ሂ	१	३४	२६
- असंस हेग्र०	×	8	२३	२४
'श्र सं सत्त ं	હ	•	३३	୍
, ऋसंथडा०		٧,	દ્ધ	३ १
श्रह को इ न े	y Y	१	દર	३०
त्रहो जिगोहिं०		,	२३	३७
त्रहोनिचं°	Ę,		ξ,	६
ग्रहं च भोग?	ર		•	·
	(आ)	r	
श्राइएग्-श्रोमाण्०	चू०	२	६	७१
ञ्चा डकायं०	Ę		३०	34
त्राउकायं°	Ę		38	३८
त्राज्यायः श्राभोएता ग •	¥	१	58	े ३०
श्रातवंते०	3	२	२०	አo
त्रात्वेयं थिगातं <i>०</i>	ሂ	8	· ?&	ર ૪
श्रायरिए०	×	7	१ ४०	३४
- श्रायरिए ०	¥	7	१ ४४	३४
श्रापरियपाया ०	3	9	१ १०	४४
ञ्चायरियम्गि	3		३ १	ጷጜ
ज्यायावयाही ०	ર		ሂ	Ę
श्राया वयं ति०	. રૂ		१२	5
श्रायारप गिहि०	5		8	જેજ
श्रायारपन्नत्ति ०	5		ሂ၀	४१
च्यायारम हा०	3		२ २	_ት ሂ⊏
श्रासणं सयणं०	v		35	88
ग्रासिविसो ०	3		٤ ٤٠ ٤٠ ٠٠ ٤٠ ٠٠ ١٠ ٠٠ ١٠ ١٠ ١٠ ١٠ ١٠ ١٠ ١٠ ١٠ ١٠ ١٠	ধ্র
श्रासंदी०	६		78	
श्राहरंती०	×		१ रू	
•		(इ)	·	• •
ह्येव छजीव०	, 8		ર્ટ	्रवर

ì	श्रध्य०	उद्दे ०	गाथाक्रमांक	पृष्ठांक
इच व संपस्सि॰	चू० १		१८	GO
इमस्स ता०	चूँ० १		१४	६६
इत्थियं पुरिसं०	¥	२	78	३३
इहलोग०	5		88	Ho
इहेवऽधम्मो०	चू० १		१३	इध
इंगार्ल	¥	8	હ	२३
इंगालं ०	5		5	४७
	(ন্ত)			
उगामं से अ०	×	8	४६	२७
उचारं ०	5		१=	8=
ज्जुपन्नो ०	¥	8	દ૦	३०
उद् उल्लं ०	६		२४	३७
उद् जल्लं ०	۲ ,		U	४७
उद्देसियं कीय०	३		२	v
उद्देसियं कीय०	¥	8	ሂ ሂ	२७
उपन्नं ०	¥	8	33	३१
उप्पत्तं ० ं	×	२	१४	३्२
उप्पतं ०	¥	ર્	१६	३२
उवसमेगा ०	5		રૂદ	४०
उवहि म्मि०	१०		१६	६६
	(q)			
एएगान्नेगा ०	હ		१३	४२
एगंत सबक्ष०	ሂ	8	5 १	२६
एगंत मवक्ष०	¥	8	4 8	३०
एमेए समगा०	१		३	¥
एयारिसे महा०	¥	8	६६	२८
एयं च दोसं०	ሂ	२	85	३४
एयं च दोसं०	Ę		२६	३७
एयं च श्रहु०	৩		8	ક્ષર
एलगं दारगं०	×	१	. २२	२४
एवसाइउ जा०	G		y ne	४२
एवमेयाणि ०	· ≒	•	१६	85
एवं उद्उञ्जे०	ሂ	१	३३	7 X

	স্থা ণ	उहें,०	गाथाक्रमांक	पृष्ठांक
एवं उस्सिक्या ०	y '	१	Ęą ,	२⊏
एवं करेंति०	۶	•	. ११	৩
एवं तु अगुग्।०	¥	ঽ	४१ - ′	ર ેજ
ेएवं तु सगुग्र	¥	२	88	३४
एवं धम्मस्स०	ع	ર્	२	४६
	(ओ))		
श्रोगाहइत्ता०	×	१	३१	ર¥ં
श्रोवायं ०	¥	Ŕ	8	[.] २३
	(अं)		•
श्रंग पच्चंग०	ج	~	· ½5	પ્રગ
त्रांततिक्ख ०	હ		ধ্ર	४६
	(ক))		
कएए सोक्खेहिं०	5		२६	્ ૪૬
कयराइं०	5		१४	४८
कविट्ठं ०	¥	?	२३	३३
कहम्नु ०	२		8	Ę
कहंचरे०	8		৩	[,] २०
कालेगा० /	Ř	ર	8	३१
कालं छंदो ०	3	ર્	२१	২৩
किं पुरा जे॰	٤	२	१६	২৩
किं में परो०	चू०	२	१३	७२
कोहो पीइं०	· 5		३८	४०
कोहोय० कोहं मार्णं०	5		- 80 ·	, Xo
જાહ મા ગ ા ઇંગ્રં જારું	5		ইও	Хo
कंदं मूलं० कंसेसु०	ሂ	8	७०	२्द
फस लु ०	Ę		४१	४०
,	(ख	1)	1	
खवित्ता० — २०	ą		१४	5
खवेंति०	Ę	•	६८	88
खुहं पिवासं०	5		२७	28 38
•			•	0 C

,	ऋध्य ०	उद्दे 0	गाथाक्रमांक	पृष्ठांक
	(ग)		, ,	
गह्रणेसु०	দ		११	8=
गहराडु । गिहिसोवेया ०	રૂ	r	६	હ
गिहि गोविया ०	चू० २	•	3	७१
गुगोहि साहू०	ر ج	રૂ	११	६०
गुरुमिह् ०	3	३	१४	६०
गुव्विगीए०	¥	ę	રૂદ	२६
गुरुव व्याप्त गेह्य ्	¥	8	38	२४
गोयरमा ०	×	8	38	રજ
गोयरगा०	¥	२	5	३२
गोयरगग०	६		ሂወ	80
गंभीर०	Ę		ዾ६	४०
1011	(च)			
	' '		8	४१
् चउरहं खलु०	१०		દ્	. ६४
चत्तारि वमे०	5		ሂሂ	ዾ የ
चित्त-भित्ति०	६		१४	३६
िचतमंत ०		ę	8	90
चृत्तियंतु०				•
	(জ))		
जइ तं काहिसी०	२		3	9
जत्थ पुष्फाइं	- ሂ	8	२१	ર૪
जस्थेव पासे०	चू०	ર્	१४	७२
जया जीव०	8		88	२ १
जया गई०	૪		१४	२१
जया पुरगं०	8		१६	२ १
जया निन्विद्ए०	* 8		१७	
जया चयइ०	8		१८	२ १
जया मुंडे०	8		, 98	२ १
जया संवर०	8		२ ०	२ १
जया धुगाइ०	8		२१	२ १
जया सन्व ०	४		२२	. २२

,	হ্মধ্য	उद्दे०	गाथाक्रमांक	पृष्ठांक
	ષ્ઠ		२३	ं २२
जया लोग०	~ 8		२४	२२ ``
जया जोगे०	૪		२४	२२
जया कम्मं०	चू० १		*	६८
जया य चयइ०	चू० १		२	६८
जया श्रोहा०	चू० १		ą '	६८
जया य वंदि०	्रेचू० १ चू० १		8	६८
जया य पूई०	•		¥	- ६८
जया य माणि०	चू० १		Ę	६८
जया य थेर०	चू० १		, o	६८
जया य कुकु०	चृ० १ ४		5	२०
जयं चरे० च्या चरक	, s		- ર ફ	, Xo
जरा जाव०			१७	" v o
जस्सेवमप्पा० कारोपिक ा	चू० १		१४	७२
जस्सेरिसा <i>०</i>	चृ० २	۶	१२	XX .
जस्संतिए०	3	•	48	४१
जहा कुक्कुड़ ०	4		५ ० २	, x ,
जहा दुमस्स०	१	0		
जहा निसंते०	3	, 8		<i>አ</i> ጽ,
जहा ससी०	3	Ş		ሂሂ ።
जहा हियग्गी०	في	8		88
जाइ-मरगाउ०	3	ૃ ષ્ટ		६३
जाइमंता०	9		3 8	88
जाइं चत्तारि०	६		80	•
जाए, सद्घाए०,	म	_	६१	४२
जागांतु ता०	¥	•	•	
जायसद्या०	9		२	४१
जाय तेयं०	Ę		३३	३ ८ -
जावंति लोए०	Ę ,		१०	-३६
जि गावयगा ०	8	\$	} k	, ६२
जुवं गवेत्ति०	v	5	२४	४३,
जे त्र्यायरिय०	٤	7	२ १२	১ ৫
जे न वंदे० २०००	¥	;	२ ३०	३३ ,
जे नियारां०	Ę		યુદ	₹&*

	श्चाध्य ०	उद्दे ०	गाथाक्रमांक	पृष्ठांक
जेग्। बंधं०	٠ ٤	२	१४	, <u> </u>
जे माणिया०	3	ş	१ ३	६०
जे य कंते०	२	•	3	દ્
जे य चंडे०	3	ર	३	४६
जे यावि चंडे०	3	ą	• २ ३	४८
जे यावि मंदि०	3	8	ર ે	४३
जे यावि नागं०	3	ę	8	४३
जोगं च०	5	•	४३	Ko
जो जीवे०	8		१२	२१
जो जीवे०	မွ	r	१३	२१
जो पव्वयं०	3	१	۳.	78,
जो पावगं०	3	8	६	88
जो पुन्व०	चू० २	• •	१२	७२
जो सहइ०	१०		११	ĘŁ
जं जागोजा०	¥	8	७६	२६
जं भवे०	¥	8	88	२६
जं पि चत्थं०	६		२०	য়ৢড়
जं पि वत्थं०	ફ	~	3.5	३६
	(র্ন)			
तश्रो कारग्र०	¥	. ₹	३	३१
त ग्रारुक् खं०	5		१०	४७
तत्तो विसे०	Ł	२	상도	३४
तत्थ से चिट्ठ०	´ X	8	ર્હ	२४
तत्थ से भुंज०	×	8	58	३०
तित्थमं पढम०	É		3	38
तत्थेव पडिले०	¥	8	२४	२४
तम्हा तेण०	×	Ś	Ę	२३
तम्हा एयं०	¥	8	११	ર૪
तम्हा एयं०	Ę		3 8	₹ =
तम्हा एयं०	Ę		ફ ર	3 =
तस्हा एयं०	६		3 &	3c
तम्हा एयं०	ં ફ		80	₹ 3€
तम्हा एयं ०	Ę		४३	₹€.

ķ `,

(त)

तहेव सुवि० 38 ४३ Ę तम्हा एय० ३६ तम्हा श्रसण्० χo દ્ ६३ तम्हा ते न० 83 હ્ ४२ तम्हा गच्छामो० ७ દ્ ¥0 चू० २ , R तम्हा आयार० ٦X त्तवतेगो • • २ ४६ X ⁻तवोगुग्ग० २२ ४ 5/0 ३४ त्तवं कुव्वइ० २ ४२ X सव चियं० ६२ ४२ 5 त्तस कायं० Ę 38 88 Ę 38 88 तस काय॰ २ ४३ R तस्स पस्सह० X तसे पाणे० १२ 85 5 तहा कोलः २ २१ ३३ ¥ तहा फलाई॰ ३२ 88 Q तहा नईस्रो० ३८ 88 G तहेव चाउतं : २ २२ ३३ y तहेव डहरं० ३ १२ દ્દર 3 तहेव फल० २ २४ ३३ X तहेव सत्तु० १७१ २९ X तहेव फरसा० - 88 ४२ O तहेव कागां० . १२ O ४२ तहेव गान्नो० २४ ४३ O तहेच गंतु० - २६ Ø ४३ तहेव गंतु० ३० Q 88 तहेव माणुसं० २२ ४३ O तहेव मेहं० ४२ ४६ O तहेव सावज्जं० 80 88

तहेव सावज्जं०

तहेव सुवि•

बहेव सुवि०

48

3

२

२ ११

3

£

४६

४६

४७

तं देहवासं०

तहेव संखर्डि० 88 ३६ तहेव छवि० प्र६ २ G, 3 तद्देव श्रवि २ १० ४६ 3 तदेव अवि० ४६ ર Ę X ६५ तश्रव हेसणं १० ۵ ६१ **तहेव श्रस**णं १० B तहेव संज० ४७ ४३ 9 तहेबुद्याव० Ę २ Ġ X तहेवुद्या० 3 S ¥ तहेवोसहीश्रो० ३४ 88 ত तहेव होले 8: १४ O तरुग्गं 38 3: ¥ 2 तरुणियं वा० 3 २० ¥ २ तारिसं ४८ 2 ¥ ताह्मियंटेग्ए० Ę ₹¤ Ę तालियंटेण० 5 3 80 तिरहमञ्र० -Ę ६० 8 तिसगं० 23 9 3 ¥ वीसे सो० २ 90 ते वितं गुरुं ० २ १४ 3 K तेसि सो० ₹ ' Ę 3 तेसि अच्छग्र० ۲, 3 ४। तेसिं गुरूगां० 3 Ę १४ Ę तं श्रइक्क० ર ११ X 3: तं श्रप्यगा० દ્દ १४ -3, तं डिक्सिवित्त० ४ 8 二义 3 तं च श्रच्चितं०४ १ **ં.** કેશ २ त च होजा० ¥ 50 2 तं च उन्भिदिशा,४

४६

١

?

Ę

१ ४६ .

२१

१०

Ę

२

तं भवे भत्त० ४ २ ४१, ४३ वह ६०, ६२, ६४, २८ ४०, ४२, ४४, ४८, २३ २ १४, १७ ३२ 73 थ थगागं पिज्ज० X १४२ २६ थंभा व० δ थोवमासायगा० ४ १ ७= 38 (द) २८ दगमहिय० दुरुहमाणी० १ २६ २४ X १ ६८ X दुल्ल्हाञ्चो० १ १०० ३१ 'दगवारेख० 8 ४४ **२**६ ¥ X देवलोग० १० 33 δ २४ বৃ৹ १४ - द्वद्वस्स० ધ ४६ देवार्णं० Ę ३६ 义口 G दस श्रट्ठ० 9 २६ दिट्टं मियं० दोएहं तु भूंज० १ ३७ X8 X ζ 38 २६ दोएहं तु भुंज० 8 35 X १४ 5 - दुक्कराइं० ३ ४६ दंड सत्थ २ दुःगद्यो० 5 3 3 38 8 <u></u>
১০ ध धुवं च० १७ 85 १ X 5 धम्मी मंगल०

धूवगोत्ति ० Ę ದ धम्माश्रो भट्टं० चू० १ 3 33 १२ धिरत्थु ते० 9 (न)

XX × ? नक्खत्तं० ς ४१

Ęĸ नगिग्रस्स ०

39

¥

5

१५

३०

४६

१ ६६

२३ 5

र=

३६

ሂየ

७१

६६

38

X = १० ¥ त सो परिगाहो० ६

नामघेज्जेग्ए०

न में चिरं० चू० १ १६ नमोक्कारेगा ० 83 8 २३ न य भोय० न य बुगाहं० १० नवा तमेजा० चू० २ 80 8 28 न सम्म०

33 ३० 38 ६४ } ७१ ६६

Şo 30 २१ XF १ नाग दंसण० Ę ४४ 38 नाग दंसग० O ६२ 3 8 नाग्रमेगग्ग० 3

Ŷ

४३

१७

न चरेडज० X न चरेबज० २३ 3 ¥

80

4

Ę

Ę

न जाइमत्ते०

नन्नत्थ०

न तेगा भिक्खू०

न पक्खऋो०

न वाहिरं

न पहिवन्नेज्जा चू० २

नपरं वएजासि० १०

	r							
			(न))				
नामधेन्जेग्ए० ७	ર	.0	४३	निद्देसवत्ती०	3	•	8	X 5 '
नासंदि० ६		X	80	निद्दं च न०	Š		२ '	Xo
निक्खम्म० १०		Ş	६३	निस्सेणि ०	ሂ	8 8	e e	रम
्रानच्चुठिवगगो० ४	_	3	३४	नीयं दुवार०	K	•	(0	२ ४
िनिद्वाणं रस० =	•	२२	85	नीयं से ज्जं०	3	ર	१७	<u> ২</u> ৩
111812			् (प			~		
पक्खंदे० .	ર	ફ	8	पियए एग०	¥	2	રે હ '	\$8 -
*	` ६ १	રે	४३	पिडं सेन्जं०	ફ		४८	38
1.46.4	8	२⊏	२२	पीढए०	હ		२८	88
पच्छाकस्म०	Ę	४३	80	पुढविकायं०	Ę		२७	३८
षडिकुट्ट	५ १	१७	२४	पुढिवकायं०	Ę		२५	३८
पहिंगाहं०	४ २	8	३१	पुढिव दग०	5		२	४७
	१०	१२	६४	पुढविं भित्ति	5		8	४७
पडिसेहिए०	४ २	१३	३२	पुढिंच न०	१०		२	६३
पढमं नाणं०	8	१०	२१	पुत्तदार०	चू०	8	5	६८
पयत्तपक्कित्ति०	v	४२ -	४४	पुरश्रो जुग०	×	१	३	२३
परिवुढत्ति०	ø	२३	४३	पुरे कम्मेगा०	×	. 8	३२	74
परिक्खभासी	9	४७	४६	पूयगहा०	Ł	3	३ ३४	રૂપ્ટ
परीसह०	Ę	१३	5	पेहेइ हिया०	8	<u>.</u> 8	ક ર	६१
पवडते०	×	१४	२३	पोगगलागां०	τ	7	६०	४२
प्विसित्तु०	ξ,	38	કદ	पंचासव०		₹	88	5
पवेयए०	१०	२०	६६	पंचिंदियागा०	•	S)	२ १′	४३
पाइग्रं०	Ę	३४	३८	l				
•			((ब)				
बलं थामं च०	5	३४	४०	वहु बाहडा०)	y	38	४४
षहवे इमे०	v	85	84	बहुं परघरे०		×	२ २७	33
बहु श्रद्वियं०	×	१ ७३	-	ब हुं सुगोइ०		5	२०	85
			(भ)	٠	•		
भासाए०	49	୍ଥ ଧ୍ୟ		ं भ्यागामेस०)	Ę	३४	35
भु'जित्तु०	चू०	१४	६६				• •	, ,
				=				

रायाणी०

रूढा बहु०

रोइय०

ल्रहवित्ती

लोहस्सेस०

विश्वयं पि०

विगए सुए०

वितहं पि०

विभूसा०

विमुसा २

विभूसा०

विवत्ती०

विवत्ती०

विकित्ता य०

ल

व

३४

ሂሂ

38

38

38

३२

३६

¥

ξ

म) Ş X ्मूलमय० X महुगारसमा० मूलए सिंग? 3 8 १६ ሂሂ **महागरा**० मूलाश्रो० मुसावात्र्यो० ३६ १३ Ę 34 ३ 3 g Ŧ

भुहुत्तदुक्खा० २४ ११६ X ४१ ζ ५० ሂ写

रन्नो गिहव० राइग्गिएसु० राईशिएसु० ९ રૂ ą

ताद्ध्या वि० X २ ४७ ९ ξ १३ लन्जा दया०

बह्दइ सोंडिया० ४ २ ३८ वग्रसहं० ८१ Ę

वग्रस्सई० Ę ४२ २ १२ वणीमगरस ¥

वत्थरांघ० ર Ę **वय**छ्क्कं २ वयं च वित्तिं १ १०

वह्यां तस० वात्रो बुट्टं० Q वाहिञ्जो०

विक्कायभागां० X विडमुब्सेइसं० Ę

विराएग पत्रि०

सइकाले०

सबुहुगः

सन्नोवसता०

सक्हा सहेउ०

8 8 49 ६१ १ ७२

¥

ሂ

Ę

3

Ę

२

Ę

२ =

१८

Ę

33

Ę

Ę

55

35 ३७

३० (स

३१

४१

3%

३६

६४ ४६ 8:

विसएसु०

वीसमंती॰

सन्निहिं०

सन्निहिं च०

समणं माह्रणं०

सन्भाय० 5

5 विविद्द गुग्ग० 3 5 ¥

7

5

Y

Ę

३

3

Ę

O

ξo

5

Ę

3

৩

5

Ę

Ę

Ę

3

?

8

२

१७

9

१

२

34

X

२४

39

४

8

ų

১৩

६६

६७

४५

२ २२

३७

O

ሂ६

34

88

६४

38

30

પ્રદ

६१

४२

४२

४१

४१

80

ছত

¥٦

SE

३र

8

3% १ ६४

६३

33

२४

१०

४२ ३०

¥₹ X

•						
सम्महिटी० १०	G	६४	सीश्रोदगं०	5	६	80
सम्मदिट्ठी० १० समाप पेहाए० २	ષ્ટ	Ę	सुकडंति०	5	४१	88
L .	३ म	3%	सुक्कीयं0	৩	४४	SX
समावयंता० ६	र ¬ २२४	33	सुद्धपुढवीए ०	5	×	૪૭
समुयार्गं० ४		33	सुयं वा जइ००	5	२१	४८
स्यणासग् ४ ५		३७	सुयं वा०	5	२१	४८
म्बन्धु० ६	् २२		युव क्का ॰	19	ሂሂ	४६
सञ्बर्भूयण ठ	.	२१	प्रुरं वा०	×	२ ३६	३४
सन्वमेयमणा० ३	80	5	धुहसायग रस >	ષ્ટ્ર	२६	२२
सन्वमेयं७ ७	88	88	से गामे वा०	×	१२	२३
सन्युक्कस० ७	, ४३	४४	_		38	88
सन्वे जीवा० ६	११	३६	से जाग्र०	2		. 9
साणी पावार० ४	१ १८	२४ *	सेन्जायर०	3	, <u>k</u>	
माणं सूइयं० ४	११२	રેષ્ઠ	सेन्जानिसी०	Y.	२ २	3 8
सालुय वा० ४	२ १८	३२	सेतारिसे०	4	૬૪	४२
साहदु निक्खि० ४	१ ३०	२४	सोचा जागाइ०	ક	११	२१
्रम्बह्वी तो० ४	8 EX	३०	सोच्चा गा०	3	१ १७	XX
[*] सिं दि खडग्र० ४	२ ४०	३४	सोबच्चज्ञे ०	ર્	T	5
सिया एग० ४	२ ३३	३४	संखडिं०	Ø	३७ .	ଃ
सिगागं० ६	ફષ્ઠ	४१	संघट्टइत्ता०	3	२ १८	ે પ્રહ
सिगोहं० प्र	१४	85	संजमे०	३	१	હ
सिया एग० ४	२ ३१	३४	संतिमे०	Ę	२४	३७
सिया य समग्र० ४	१ ४०	२६	संतिमे०	Ę	६२	80
सिया य गोय० ४	१ =२	39	संपर्शे०	X	११	२३
सिया य भिक्खू॰ ४	१८७	३०	संथारसे जा		ર ૪	ሄ٤
सिया हु० ह		78	संमद्माणी०	¥	१ २६	२४
्रिया हु सीसे ६		48	संवच्छरं०	चु०	२ ११	٩٥
सीश्रोदग० - ६		છ૦	संस्ट्ठेग य०	×	१ ३६	२६
•	•		•	•	- ,,	• •
		, (₹)			
हत्थसंजए० १०	१४	, ६४	हिहो हले०	•	१६	४३
हत्थ-पाय० =	. ४६	* \$ 8	होन्ज कटुं०	ሄ	१ ६४	२ ⊏ ,
हत्थं पायं च० ट	: ૪૪	, 28	हंदि धम्मत्थ०	Ę		ર્ફ
हले हलेत्ति० प	१६	४३			•	• •
		,				

उत्राज्यायुत्

(अ) श्रहतिक्ख०-39 १४७ **श्रद्धां**गि० ५२ श्रट्ट-रुद्दाग्रि० 239 38 श्रकसाय० 25 ३३ श्रद्ध कम्माइं० ष्ट्रकोस**वहं**० Ę १५ १३६ श्रदृ जीयग्र० श्रक्षोसेन्ना० २४ 55 २३ ` श्रगारि सामा० ४ इ३ श्रद्ध पवयग्र• २४ श्रद्वविह गोय० ३० श्रगिहुत्त० રપ્ર १६ १८६ श्रामा य इइ० २३ श्रद्वारस साग० ३६ ४२ 308 श्रामारमुग्रे० ३१ श्र**श**णं रयणं० १८ 388 ३४ **श्रग्**चावियं० श्रचेलगस्स० 2 ३४ 5 २६ श्रग्भिगाहिय०२८ श्रचेतगी० १३ १७६ २३ श्रग्रसग्रमुगो० ३० श्रचेत्रगो० २३ 38 १७७ श्रच्चेइ कालो० १३ **श्रग्**णवंसि० 34 १२८ श्रद्येमु ते महा०१२ ३२ ३४ १२१ **अगाइकाल**० श्रग्गावायमसं. २४ ٩ २२० श्रबंत कालस्स०३२ श्रच्वंतियाग्.१८ २४ १४२ ४३ 77 77 श्रिच्छिले माहए. ३६ बगाहोमि० २० २६२ ३४१ श्रच्छेरग० XX १०७ श्रगासवा० 🐇 3 श्रिशिस्स्रिशे 🍳 २४६ २७८ **अजह**न्न० ३६

१८७

277

१३३

` 188=

१८

ξo

२म

३१

ફ

१६

38

24

Ş

Ę

श्रजाग्गा०

श्रज्या सुवरगा॰३६

श्रवजेव धम्मं० १४

श्रुक्मावयाग्यं० १२

श्रक्कात्रयाएं० १२

श्रक्जेवाहं न०

श्रदमत्थं०

8 38 त्रगुकसाई*०* २ 78 -श्रगुपुत्रए० **अगुप्पेहा**ए० 35 ३६ त्रगुवद्ध० 55 8 श्रगुसासग थ३ श्रगुसासिश्रो• 8 श्रग्रुगाइरित्त० २६ 388

२१८

२४४

२३६

244

१८३

२१७

२६६

२११%

928

739

२१४

83

२३८

१८४

73 १६१

52

१६०

二と

१७०

२७२

=३

53

939

34

३१

Ş

६०

3,4

२३१

१८

२४

२६

5

δ

१११

१६

१७ -

\$

१३

93

38

२०

२२

२८ '

3

रद

२७०

			•				
	20	१६	१६६	श्रापा नई?	२०	३६	१६४
-16.10.1.	२१ ७	१३	33	श्रापिया देव०	३	१्र	83
्त्रणेग वासा०		₹¥ ₹¥	१७५	श्रपं च श्रहि		११	११४
त्र्राणेगाणं सह०	14	१४	२४१	श्रप्कोवमंड ०		¥	१४न
श्र ग् तकाल०		بر 4 3	२४७	श्रवते जह०		३३	११२
75 17	77	` E 8	२४८	श्रवभाह्यंमि ?		२१	१३२
75 57	33	१८४	२५६	श्रब्सुट्ठाणं श्रं	ज.३०	३ २	२१७
17 77	53	११६, १२४	1	श्रक्सुट्ठाणं गुर	इ०२६	હ	980
		१३४	२६१	श्रध्मुद्रागं च	नव २६	8	३८६
	^	688	२६२	श्रभुद्वियं ०		६	१०३
		१४४	२६३	श्रभश्रो परिथ		११	१४८
1		१६६	२६४	श्रभिक्लएं ०		v	११४
•		१७५	२६४	श्रमिवायण्		34	25
		१८७, १६		श्रमू निगा		ሄሂ	03
		२४≒, २४	t t	श्रायककर ०		હ	33
्र अत्थि एगो०	२३	દ્ધ	१८०	श्रम्मताय०	39	११	१५३
श्चरिथ एगं०		- 58	१८२	अ यसीपुष्फ	३४	Ę	૨ ૪१
श्रत्थं च०	12	३३	१२१	श्रयं साहसि	घो.२३	ሂሂ	१७९
ऋ त्थंतंमि०	१८	ं १६	१४६	श्रारह रह0	२१	२१	္
श्चदंसगां०	32	` .8x	१ २२	श्रारह गंढं ०	१०	२्७	१११
श्रधुवे श्रसा	о <u>т</u>	१	१०१	श्राई पिट्ट०	२	१४	5 0
्श्रद्धार्यं जीव		ृ१=	१४४	श्रक्तविणी॰		६७	२४४
श्रद्धाणुं जोव		२०	१५४	्श्रतोए पडि	० ३६	্ ধুত	ર ૪૪
श्रनिश्री रा			१४१	श्रतोतुयं ०	२४	ঽ৸	१८७
्रश्रन्नेग विसे	० ३०	२३	२१७	श्रतीले न०	३४	१७	રષ્ટદ
्रिंश्रज्ञं पाणां प	व० २०	२६	163	अव डिकाउ	ह्या० ६	ሂሂ	१•७
श्रपहिबद्धः	याए.२६	३ ०	गद्यक्रमांक			₹•,	११२
श्रप्तणा वि			१६२		ड० २६	३६	१६२
श्रप्पागो०		~ -	5 8	श्रवसी लो	३१ ०	४६	१४७
छ प्पसत्थेहिं	•	-	• •	1	0 80	३२	११२
श्रप। कता		=	• •	4		રંદ	१२०
श्रप्पा, चेव	•	-	्		० ११	5	[े] ११४
ऋषाग्रमे व	3 0	. ३ ४	१०६	श्रसइं तु०	3	३०	१०४

श्रसमाग्वरे०	२	48	50
श्रस्स करणीय०	३६	१००	२४८
श्रसासए ०	38	१३	१५३
श्रसासयं०	१४	(१३०
श्रसा हत्थी०	२०	१४	१६२
श्रसिपजीवी ०		१६	१३८
श्रसीहिं श्रयसि.	38	ሂሂ	१४७
श्रमुरा नाग०	३६	२०७	२६७
त्र श्रमंखकात्त०		१३, ८६,	१०४
		=१, ११४,	1
श्रसंखमागी०	३६	888	
श्रसंखयं ०		8	६२
श्रसंखिजाणीस	_	•	રયપ્ર
श्रह श्रद्वहिं॰		8	११३
श्रह श्रन्नया०		5	१६८
, झह आउयं०		७२ ग	の節の
श्रह श्रासगत्री			१४५
श्रह उसिएगः	•	११	१७१
श्रह कालंसि॰		३ २	દફ
श्रह केसरंभि०		8	१४८
घह चडहसहिं		દ્	११३
श्रह जे संवुडे		રપ્ર	इड
छह तत्थ०	38	ሂ	१४३
श्रह तायगो०	१४	5	130
श्रह तेगोव०	२३	×	१७४
छह तेगोव०	२४	8	१८४
ग्रह ते तत्थ	२४	१४	१७६
श्रह पच्छा०	ર્	81	೯ ೬
ष्यह पन्नरसिंह	०१	१०	११४
ष्यह पालियस		8	१६७

श्रह पंचहिं० રૂ ११ श्रह भवे पहन्ना ०२३ 33 श्रह्मासी० रद १८ श्रह मोगोगा० 3 १८ १८ O श्रह राया० श्रह सा भगर० २२ ३० ग्रह सारही ? १७ २२ १४ श्रह सारही० २७ श्रह सा राय० २२ 9 श्रहसा राय० २२ ४० म्रह से तत्थ० २४ X श्रह से सुगंध २४ २२ _{ज्यह सो तत्थ० २२} १४ श्रह सोऽवि० ३६ २२ घहवा तह्याए,३० २१ त्रहवा सपरि**•** ३० १३ **छहाह जग्र**को. २२ 5 श्रहिज वेए० 3 १४ १२ श्रहिस सच्चं० २१ श्रहिण्पंचिदिय. १० १८ **अहीवेगंत**० 38 ३८ छाहे वयइ० 3 XS महो ते छज्जवं० ६ ७७ श्रहो ते निजियो,६ XĘ द्यहो वस्सो० २० Ę 8 १६ र्श्वंगपच्चग ० श्रंगुलं सत्त० 88 २६ श्रंतमुहुत्तंिि० Ęo ३४ **छंतो**मुहुत्त० 8X ३४ छांती हियय० 8X २३

ऋंघयारे०

श्रंधिया०

११३ .

१७५

820 t

१४५

CHE!

र्रे७३

१७२

४९४

१७१

३५४ :

25%

१७२

१७२

१७३

50E"

र्रव

१७१

१३०

१६८

११०

१४४

209

105

107

१६४

888

१९•

२४७

२४६

308

१८१

२६२

SX

१४६

२३

(ओ)

888 , श्रातश्रीव १६ 308. Ę ~80 **आ**उक्काय० गद्य क्रम ४ ष्ट्रातोयगाए० २६ ~ १**६**४′ 80, े ष्ठाउत्तया० .२० **े**२१७ ३१ **ञ्च.लोयणारिहा**३० \$39 श्रागए काय० रे६ ४७ े १५३ श्रातम् अगोगा० २४ २५० ६ श्रागासे तस्स० ३६ , २३७ ३२ श्रावज्ञइ० -३६३ ~ የሂሂ े ज्ञागासे गंग० १६ र् २४० श्रावरणिजाण ३३ **=**٤" '2 **ऋागानिद्देस**० १२ 23 હ્ . **३** श्रावरणा० ^{′ के} 58 [.] श्रागाऽनिद्देस० १ 8 २२ · 53 **ब्रासग्**गश्रो० २८ 201 श्रामोसे लोम० श्रासग्रे ं **રે**૦ ં 디릭 ۶, 388 8 श्रायरिय० १७ १७ २१६ श्रासमपए० ३० १४६ श्रायरिय० १७ X 038 १४ श्रासादबहुले० २६ १४७ श्चायरिय० १७ १७ २१७ 🙏 ऱ्यासाढ मासे० २६ ः १३ .880 - श्रायरिय १ **'३३** -, ३० ેં १२४ श्रासिमो भाय १३ y **5** श्रायरिएहिं Ŷ २० श्रासिविसो० १२ २७ १२० . श्रायरिय० - 88 82 १८० , श्रासे य इइ० २३ ، ४७ 32 : श्रायवस्स० २ ३४ ्रश्रासं विसद्धः १८ १४८ श्रायार्गा० છા કુ 5 ઃ ફ **ي** ج श्राह्य चंडा० 🔧 १ 🕠 ११ 52 श्रायामगं० १३ १३८ १४ ⁻ श्राहच सवर्ण० , ع , 93 श्रायंके० 3 २६ ३४: 855 ब्राहारमिच्छे०,३२ १८१ े २६ र्श्वास्त्र २२० २६ श्रारभडा. श्रारभाश्रो० २४ াই २४४ (इ) . इइ इत्तरियं० 80 ३ १०९ इत्तरिय० 3 ३० इइ एस धम्मे० 5 -- **२**०-१०३ इत्रोकाल० ३६ - ,११२ इइ पाउकरे० इत्थीपुरिस ० .१८ 88 388 ३६ , χo इइ बेइदिया० ३६ १३१ . २६१ इत्थीविसय० O Ę

२१५ - **२**४६ - २४४ 33 ू३६ 🚎 इक्खागराय० **१**⋤, १४१,, इत्थी वा पुरि० ३० रर ्रः ३१७ इच्चेए थावरा. ३६ 348 ४०७ २० 👝 ३५ इमाहु अञ्चा १६४ इड्डिगारविए० २७ 3 × 9.8 × इमे खलु० २ 3 写义 इड्डिजुइ० २७ इमे खलु० १६ १०१ ३ ३६१ इड्डी वित्तं० 38 55 इमे य बद्धा० 328 १प्र - 8X १३४ (१८)

इमं सहीरे इह कामाणि० Q इमं च मे श्रित्थि १२ ٦Ł इह कामणि० U इमंच मे श्रात्थि०१४ इह जीवियं ० इय एएसु० इह जीविए० इय चडिरिद्या ३६ इहमेगे उ० Ę इय जीव इहं सि उत्तमी ० ሂട इय पाउकरे इंदगोषग ० રફાં इयरो वि० इंदियगगाम० इरिएसण्० इंदियत्थे ० ર इरियाभासे० इंदियाणि उ० Ś X इस्सा श्रमिरस.३४ ३ (ਰ) **उक्का वि**न्जू० **उदहीसंरिस**० **उक्कोसोगाह्या**०३६ उद्देसिय ० . જે उक्रोसोगाह्या.३६ उप्पालग० २४% उगात्रो खीए २३ उभग्रो'सोस० いち उग्गञ्जो विमलो.२३ ષ્ફ **उराला तसाठ** दे६ १२ं६ उल्लो सुक्रो० उगमुष्पायगं० २४ જિર उगगं तवं ० **उवक्ख**डं ० <u>. کی</u>خ उचारं ० उकट्टिया मे० रंष्ठ १८४ः ₹० उचावयाहिं ० **उविए**जई० उद्योयए० **खबरिमा**० **उज्जार्ग्य** ० उवलेबो होइ० **च्ह्रं थिरं** ० **उवहिंप्**च० **उ**ण्हाहितत्तो० **उवास**गाग्ां ० ξo **उ**एहाहितत्तो० **चवेहमां**गो० ર **उत्तरा**ईं० उसिएां परि० ሂ Ş **उदहीसरिस**० उस्सेहो चस्स०३६ Ęĸ XX F **उद्दीसरिस**० (জ) **ऊससिय**० 3%

s		•	, (U	[)		
एए खरपुढवि०	३६	७७ -	२४७	एगडभूष्ट्रो० १६	_ _	१४६
'एए चेव उ०	२८	38	્ર હ	एगयाऽचेलए० २	१३	
्ष्य नरिंद् ०	38	४७	१५१	एगया खत्तिष्ठो०३	8	80
⁽⁶ ्रथप् परीसहा	२	४६	६१	एगया देव० ३	રૂ	63
१ एए पाउकरे०	स्थ	₹8	१८८	एगविह मना० ३६	5 9	ঽ৾ৼৢড়
े एप्र य संगे	३२	१=	~ २ २३ ।	्एगवीसाए० ३१	१४	२१६
प्रसिं तु०	३०	8	<u>ર</u> ૂ૧×	एगृरापरामहो० ३६	१४१	२६२
ं एएसिवएणश्रो.	३६	58	२४७	एगाव्य ० ३६	Pox	२६४
"	77	દર	२ ४८	एगे जिए० २३	३६	१७८
77 - 77 °	72	१०६	~ ? \&	एगेगा त्रागोगाइ २८	२२	१६७
77 . 77	"	११७	२६०	एगो मूलंपि० 🖢	१४	१ 00
77 97	۶, ۲	२६,१३ ,६	२६१	एगो पडइ० २७	×	१६४
∯ 79	77	१४४	२६२	एगं इसइ० र७	8	१६४
18t 171- 99	"	१७०	२६४	एगंतमणावाए. ३०	25	२१७
1 27 5 27	"	<i>ક</i> છ ફ	२६४	एगंतरत्ते० ३२	४२	२२ =
77 77	77	155 155	२६६	77 99	9 5	२३३
₹ 99 ÷ 99	"	388	२६६	"	83	२३४
77 79	"	२०४	२६७	77 99	२६	२२४
())))	"	`२४१	२७१	" "	38	्रे २६
∦ एगुएव चरे० ∦ एगु.झो संव०	2	१८	ÉÀ	77 79	६४	२३१
१ एगुझा संव० १६ एगुझो विरइ	\$8	२६	१३२	्एगंतरमायामं ०३६	२४७	
	38	્ર	२१८	एसेव गंधंसि० ३२	દ્રદ	२४७' '२३०
श्ह्यंक्ज	,२३ २३	ફ ૦	१७७	एमेव फासंमि ३२	= ¥	२३०
		ર ૪ 	१७७	एमेव भावंभि ३२	٤5	२३६
एग् गम ण्०	.३६ २٤	• •	२६४	» रसंमि ३२	৩ ই :	` २३२
्रणच्छत्तं ०	<i>عد</i> لات	२४	.२•४	" रूवंमि ३२	३३ ;	रिर्
	38	४२	१५१	" सहंभि ३२	४६	ॅ २२७
एगत्तंग साइया	38	११ इ.स.	340	" अहा छंद० २०	አ _ር	१६६
एमज्ञं च०	२५	६६ १३	२४४	पयमट्टं निसामित्ताह	- 5	१०३
एयपां ऋतिए.	, ,	्	039	एयमादाय० २	- १७	, =@
	17	*"	्१७८	एयाई श्रहु० २४	१०	१८३ू ं

एयाञ्जो श्रदृ॰	र४	३	१८४	एवं च चिंत०	२०	३३	१६३
एयाश्रो पवयश्		२७	१८४	एदं जियं०	હ	39	१००
एयाञ्जो पंच०	र्प	3 \$	१८४	एवं चवं तु॰ 🌣	३०	՟३৩	२१द
एवाञ्रो पच०		२६	१८४	एवं तु संसए०	२३	= ६	१८२
एयात्रो मूल०	33	१६	२४६	एवं तु संजय॰	१ ३०	ફ	२१४
एयारिसीइ०		१३	१७२	एवं तु संसए?	२४	•	१५५ है
एयारिसे पंच०	१७	52	१४७	एवं ते कमसो०	१४	3	१३४
एयाइं तीस०	, १२	ર૪	398	एवं ते राम०	२्२	⁻ २७	१७३
एयमहुनिसामि	ताध	5	१०३	एवं शुणित्ताण	०२०	<u></u> ሂፍ	१६७
		- 88	१८४	एवं घरमं ऋका			178
		३१ ,	9 4	एवं धम्म पि॰	. १ ६	, २१ .	१४४
~ *		५३	१०४	एवं धम्मं वि उ	• <u>५</u>	१४ -	X3
		१७ `	१०४	एवं नारोग्रा०	38	६४	१६०
55 55	3	5	१०३	एवं भदसंसारे	80.	१४	११०
75 77	,, १२,१	३,१७,१६	. १०४	एवं मागुस्सगा		् १२ -	,33
? ? ? ?		२४, २७,		एवं तगाति०	२४	, ৪ই -	१८६
		३ १	1	एवं लोए०	33	,२४३	१४७
33 33	,, ३३,३	७,३६,		एवं विगाय०	, 6	२३	5 3
	४१,	४३	१०६	एवं बुत्तो०			१६२
)) 12	,, ૪૪,૪	৬,४१,४२	१०७	एवं समुद्धिश्री	39 c	८३	3X8'
एयम्द्रसपेहाए			७७	एवं संइप्प०		१८७	२३८
एयं पचिवहं?	२⊏	×	१६६	एवं सिक्खा०	¥	२४	દ્ધ
एयं पुरुग्।वयं०	६८	३४	१४०	एवं से विजय०		88	१८६
एयं सिरगारां		४८	१२३	एवं सी श्रम्मा		G Ę	148
एरिसे संप>	ς _α	{¥	१६२	एविंदियत्था ०	३२	१००	२३६
एवमधी ग्वद	৩	२्२	१८०	ग तुरगद्गे०	२०	४३	१६६ू.
एनमावट्ट०	રૂ	¥	60 ;	एस ख्रागय०	3	१२	fog
एवसेव वय०	१४	<mark>४३</mark>	१३४	एसखलुमम्मत		હરૂ	गद्य
ग्बरमदंते०	२०	, हर	१६६	एम धरमे०	१६	५७	१४४
पवं श्रीम श्रुएां स	गेर्	ક્રદ	१७४	एस्णास्मिश्रो		१६	ध्य
एयं करें ति:	٤	६ः	१५	एमो हु सो ०			388
एवं करेति०	\$E	દદ્	१६०	एसा श्रजीय०			२४४
एवं युगाः	7,4	3.X	%== ,	एसा खलु लेस	ाण् ३४	%•	२४४
i							

ें २६ एसो बाहिरंग०३० **પ્ટ**ર્જ -एसा तिरिय० ३४ एहिं ता भुं जिंमोरर एसा नेरइयाएं ३४ ં્ક્ષ્ટ્ર ामायारी २६ एसा (ओः) ↔ श्रोमोयरणं ० . श्रोहोवहो० १३ १८४ २१६1 ३० १४ श्रोहिनाग्ए० १७४ (海 **फ**ग्युकुडगं० 🕐 58 करक्षंडू० ¥ १८ कप्पं न इच्छिज्ज३२ १०४ कत्रह २३७ 23 करेंस[/]श्रद्घा०' कपाइया ० ३६ २१३ २६८ १६ २२ १७२ कप्पासद्विम०३६ 369 252 कसाया श्रीगि०२३ ४३ 308 कपोवगा० ३६ ं कसियां पि० २०६ २६७ 5 १६ १०२ ે ફ कर्ममंसंगेहिं० 🚧 ३ .03 कहं चरे भिक्लू १२ 80 कि १२२ कम्माणं दु० Ę Ø 03 कहं धीरे॰ १८ 48 १४२ कम्मानियागा १३ १२४ । ς कहं घीरो० १८ ४२ १४२ कंद प्यकुक् 0 ३६ २६१ २७२ कहिं पडिहया : ३६ ধ্ৰ , २४४ ' ି ସ୍ତନ कंद्रपमाभि० ३६ २६० कंदतों कंदु॰ 38 १५६'. 38 कम्मुणाः ' '२४ 965 13 कंपिल्ले नयरे० १८ १ १४७. कयरे खाग०' १२ Ę ११६ । कंपिल्ले० १३ १२३ कयरे तुम० १२ कुंपिल्लिमिश G १३ १२४ (का) कामागुगिद्धि ३२ .38 ,२२३ कायसा० X १० EX: कामं तु देवेहि० ३२ ...**१६** -२२२ कालीपव्वंग०: ३ **=\xi** कायठिइ खह० ३६ 839 **१**६६. कालेगाकालं २१ * 88 १६६ कायठिई मग्रु० ३६ * २**६**७, `२०२ कालेगा निक्खमे ~ ⁶38 ं दर्ह कायस्स फासं० ३२ २३२ / ଜଧ कावोया जा ३३

18: 7- 989-

ار ۱۹۶۰ : ۱۹۶۰ - ۱۹۶۰ -

किएहा नीला०, ३६

किएइ। नीला० ३६

श्रम् । इ.स.च्या

किग्रांतो०

क्रिएसु भी०	3	v :	१०३	किलिन्नगाए०	२	३६	, ८६			
किमिग्गो०	३६	- १३५ •	२६१	किं तृबं०	२६	४१	१६४			
किरियासु०	38	१२	२१६	किं ज्ञामें०	१८	, .R	કેશ્વદ			
किरियं०	१म	२३	१४६	किं माह्या॰	१२	३८	१२२			
किरियं च०	१५	३३	१४०							
•			(ক্ক).						
कु क्टुं है o	३६	१४८	२६२	कुसीललिगं०	२०	४३	१६४			
कुप्पवयगा०	२३	६३	१८०	कुएं च जुवं०	१२	38	४२२			
&cd210	२३	Ęo	१५०	क्रहाइ०	38	६६	१ ४८			
कुस्रगामे त्ता	G	ૃરહ	१००	कुं:थुपिवीति	136	83 <u>=</u>	२६२			
कुसुग्गे जह०	१०	्रे	१०५	,- <u>,</u>	-	-	1			
	,	-	(कू)						
कूह्यं०	१६	१२.	488 ।	कूवंती०	38	¥8 (-	१५७			
		٠.,	(के	-		·	ŕ			
के हत्य०	१२	१८	.28=	केरिसो०	.२३	ደየ	,१७ <u>६</u>			
	. १२	४३	१२३	केलि एवं०	२३	39	१७ ७			
क ते हरए०	१२	્રં ક્ષ્ય	१२३	केंस्रीक्रमारः	२३	£-88-80				
केग्र , झन्भा	१ ४	ેરર	१३२	के सीगोयम०	२३	55	१८२			
•			(को	')						
फोट्टगं०	२३	5	१७६	कोहा वा जइ	२४	રજ	१८७			
फोड़ी सहिय	३६	२४९	409 ·	कोहे माणे य	२४	3	१⊏३			
कोलाहलग०		¥	~ १०३	कोहो-य माणी		१४	१३८			
कोःवा से बोस	390}	<i>હ</i>	.१४६	*	.२२	प्र०	્રેશ્ક			
कोसंबी०	.२०	₹≒	,१३२	को च०	. ३ २	१०२	⊋३७			
(ख)										
खब्जूर०	३४	१४	२४३	खाएां पि मे	२०	३०	१६३			
सहरूया मे॰	ę	३८	68	स्रतियगण्०			. ₹३ ●			
च्छ्मिसप्रुक	स ११४	` १३	१३१	सतुंका जानि	सार७	5	१६४			

ট(ইয়) खलुंके जो उ० २७ ३ /१६४ खवेत्ता पुन्तर २५ ४४ खितार २८ ३६ १६६ खंघाय खंघर ३६ १० 378 २४० ः ः ं (खा) खाइता० 38 58 १४९ -(福) खिप्पं न स**क्**केइ०४ १० ٤٤. (बी) खीर-इहि० ३० २६ २१७ (頓) खुरेहिं तिक्ख० १६ ६२ 246 (視) खेत्तं वत्थुं ० १९ १४४ वित्तांचि अम्हं टें १२ १६ '१३ े ११८ खेत्तं वत्थुं ० ३ १७ £.8 खेमेण ऋागए० २१ (ःग) गइ तक्खणो० २८ ६ १६६ । गंघम्रो परि० ३६ १८ गत्त भूस्रग्रा० १६ २४१ · १३ ; १४४ | ग्रंबस्स बार्गा० ३२ 🏸 🤫 ६ गडभवं क्षंतियार्० ३६ , २३८ १६७ २६६ गंधाग्रुगासा० ३२ ४३ 386 रांधागुरत्तस्स० ३२ ५८ 355

गमणे त्राविस्तयं ०२६ ४ १८६ रांधासुरत्तस्य ०३२ ५८ गलेहिं मगर० १६ ६४ १४७ गंधासुवाएस०३२ ४४ गवासं मणि० ू ६ २२६ गवेसगाए० र् गंघे अतित्ते .३२ ७३ - XX - - 77E -११ १८३ मधे विस्ती० अस् र ६० - २३० गंधचो जे० ई६ २४२ | गंघत्रों जे० इइ गंधेसु जो० 137 - Xo (前) गामासुगामं २२ हिर्ह गामे नगरे १३० ११६ । २१६ । गाहासीलसहि:३१ । ११६

	•	(गि)		
गिद्धोवमा० १४	४७	१३४	गिहवासं० ३४	ર્	२४५
गिरिं रेवतयं० २२		१७३	िहिस्से जे० १४	१०	१३७
गिरिं नहेहिं० १२		१२०	ζ,		
		(गु)		•
गुणाणमासत्रो २	= &	१६६	•		
3000000		ं (गो)	* *	
गोमेन्जए य० ३९	३ ७६	२४६	गोयं कम्मं ? ३३	१४	२४०
गोयमे पहि० २	•	१७६	गोवालो भंड २२	४४	१७३
_	२ २६	55			
		् (घा)		
. घाणस्स० ३	२ ४८	२२⊏			
	•	(घो	')	-	
घोरासम	६ ४२	१०६			
ų.	-	(-च	-		
चइता भारहं० १	म ३६	१४०	चउरुहुलोए० ३६	ष्ध	२५४
,, ,, ,	प ३५	१४१	चडवीससाग ३६	२३४	২ ৫৩
,, ,,	१५ ४१	१४१	चउित्रहेडवि० १६	ફ ૦	8 X X
चह्ता विउत १	∖ક ૂ_ કદ્	, १३४	चक्कबट्टीमहि० १३	8	258
चइउगा देव०	9 3	१०३	चक्खुस्स रूवं० ३२	२ २	230 2 42 2 43
चउत्थीए पोरी०		१६२	चक्खुमचक्खु० ३३	Ę	२३९ १८४
चउइसं साग०	३६ '२२६	२६६	चक्खुसापडि॰ २३	१४	१८४
	६ १८०	२६४	चत्तपुत्त० ६	१४	£40
चउरिंदिया०	३६ १४६			۶ • • •	ર્પ્રષ્ટે
चडरिंगियीए०		१८६		43	२६६
चररंगं दुल्त०		६१	चम्मे उ लोम० ३६		२१८
चडिर्दियकाय	१० १२	४०६	चरणविहिं ३१	{	33

ज्ञितमासार०	o 13.	२ . ू१६६	। चुवेहा	मुट्टि० १	38	૾ૄ૬૭	१४८
च् रित्तमोहणं ०	33 . ? (ं चंदगा	् । गेरुय़ २	३६ ,	ا فی	.२५६
, चुरे पशाई ,	\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\\	७ _ ६३	. चंदा	मराय० ३	ξ ξ	२०६ -	
	5 ', `	<u>፟</u> ፟፞፞፞፞፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟፟		្តា បាត្របoទ	., 28- ~	, १	
, चरंतं विरयं	_	_					
} ~~		~~		**	~ ,		
्रे ज्ञासन्त्रामी०	23 '?.* 23 '?.*	ર ઼ ૾ૼૢૻૺ ર હફ	ं चारह	ूर् सामी०	२३	₹3 ~~	فافرغ
8. \$10m1.	, 5 ° ,	1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1	^ ,·		`\$7,	i i	
· · ·	ر» ^ب ،	, " <u>'</u>	चे ')'	ŧ	**,	-,	
`	3) F =	} ' ;e'	, <u>,</u>		, ,		
विश्वाण भ्रग् ०							
		४ ^{- ,} १२७				३४ -	
्र चिषा रह०	१८ २	381,0	िचिर	पि से र	२०ः	<i>श्वरः</i> ,	१६४
, ,	, " 1), (° - ,	चीं \		ì	(4° , į	40 5
	•				ł	,".l " \$	
े चीराजीर्षे०	¥:= '' २	१ ं १६	्री चीवर	राग्गि० ३	२२ ^{(*} '	૱ઌ૽ ૺૼ૽ૻ	१७३
ر المرتجي ا		50 g		7.3	15	12.	,
1,84	1 17 3	- T.	छ ्र)	*		- 1-21	~, <u>t</u>
्र इंच्चेव य्०	36 3,5	^ •	,)	~- ~-	२ई	6 ,,,,	0
्छ्रजी वकाय ०	इंद्र ुर्ध		१ , छन्द	デラ・ デラ・	43		
् छ्वीस सागः	າ ໄດ້ ເ 38 ສີສ	१९ - १९३ १९ - १९३	८ । अ.द.।	नेरो०	8	, ५ , ,	ू हैरे
ं श्रे-गाय योगा	१ २	<u>.</u>	'	8.	٠, , , ۳	·	<i>;</i>
,		- (छि 🖔	•		~	3
ਾਂ , ਲਿਵਿਜ਼ ਤਾੜ	4	, `	. ,-	•	. "	· · ,	;
छिदित्तु ज्ञात इछिन्नात्ते०	88	१४ - , १३ ६			₹,	. X	- द्रह
•	२७	ō 888	१ ुाल्लन	सरंक	१४, -	~~.jo _{1,~}	१३७
	~	1 (ম্ভ)	*		; ; ; · .	t f
	ب ام 00	_		; ; ~	2	1 1	· .
छुहा तएहा य	01£-	३१ १४	k ()	c _i		234	~~
34	4	/	⇒ \		,	()	
		. · · · (-		13	, -	
जइ तं काहिसी		४४- े १७	४ ॑ जइः	मद्रमः ०,	ર ڃ'	· .? &= · ·	' १७२
जइ तंसि भोगे	o १.३	३२ . १२	C =====	सि रूवेगा०	••• २ २	×97	१७४ १७५
जइता विस्ते	9 R = 1	रेप - १०			१२		
-			• •		, ,	؛ لم	१२७

जगनिस्सिएहिं	5	१०	१•२	जहा विराला० ३२	१३ '	२२२
नगेग सद्धि०	¥	હ	દક	जहा भुयाहिं० १६	४२	.१४६
जम्म दुक्खं०	39	१४	१४४	नहा महातता ३०	ሂ	ટ્ર ધ
जया य सं सुही	390	50	१५६	जहा मिए एग०१६	 5	१४६
त्रया सच्चं०	१८	१२	१४८	जहा मिगस्स० १६	৩ 5	१४६
ज रा मरग्र०	38	୪६	१५६	ज्हा य श्रगी०१४	? =	2 3g 9
जरामर ग्ए०	२३	६=	१८१	जहा य श्रंड० ३२	Ę	'२३१
जलघन्न ०	ą٧	११	२४८	जहा य किंपाग३२	२०	२२३
जस्सित्थि मच्चु	० १४	२७	१३२	जहाय तिन्नि ७	१ध	33
जह कडुय०	३४	१० ,	२४२	जहा य भोइ १४	३४	१३४
जह करग०	३४	१म	२४३	नहा लाही म	१७ ्	१०२
जह गोमड०	३४ .	१६	२४३	जहा वयं धम्मं०१४	२०	१३२
जह उरुण्	३४	१२	ર૪ર	जहा सागडित्रो.४	१४	£ £
न्ह विगडु॰	३४	₹ १	२४२	जहां सा दुमाण्११	२७	११४
जह परिण्यंवा	७३ ४	१३	२४२	जहां सा नईगा॰ ,,	२८	११४
जह चूरस्स०	३४	38	२४३	जहा सुग्णी० १	8	50
जह सुरहि०	३४	१७	ર૪ર	जहा से उडुयइ०११	२४	११४
जह अग्गि०	38	३६	१४४	जहा से कम्बो० "	१६	११४
नहाऽ ऽएसं०	ড	१	٤٢	नहा से खलु० ७	8	33
जहाइएस सम	र ११	१७	११४	नहां सं चाउ० ११	२२	११४
जहा इह धगर	गि१६	४७	37É	जहां से तिक्ख.,,	39	११४
जह इह इम०	38	४८	१४६	जहां सं नगाए "	२६	የየሂ
ज । उ पावर्ग		ያ	३१४	जहां से वासु॰ "	ર્	११४
जहा करेगु०	22	\$=	358	जहा से सयंभू० ,,	३०	Pex
जहा कागि ए	ाए ७	22	33	,	२३	१२५
नहा किंपागः		^ဥ ၒ	१४४		२६	78-
जहा क़ुसगो०	r	२३	800		१५	११४
बहा गेहे॰	38	२२	४५४		સ્દ	8.58
जह। चंदं०	२४	واح	१८६		128	१६=
जहा तुलाए०	PE	85		नहें सीहो० १३	२्२	१२६
जहा दुक्खं०		Se	१४६		'१२	
ं जहां दवगिग	३२	22	२२२	जं च मे पुच्छ० १८	३२ ं	े ५४०
जहा पोस०	२४	₹\$	१८७	ं जंनेइ जया॰ २६	39	137

		1, 20,	•			
जं.मे बुद्धा॰ १ ~	२७	्द३ ।	जं विविच्छ .	१६ :	¥.	- १४४
	:	.(जा)		s 5, "	
जाई जरामच्च् १४	íg	१२९	जागासि संभूय	१३	88	१२४
जाइपराजिस्रो १२	ا م	१२३	_	રુજ ં	x 8	२४७
जाइमयपडि० १२	لا	११६	'जा नीलाए०	३४	χo	२४६
जाइसरणे० १६	5	१४३	जा पम्हाए०	३४	XX	२,४७
्रजाइ सरित्तं० ६	ર ૈ	१०३	जायस्वं०	२४ 💘	` २१	१८७
जा ड श्रस्सा० २३	હર્	१न१	जारिसा माणुर	वे१६	৩३	१४८
जां किएहाए० ३४	8દં	२४६	'जारिसामंम०	२७	१६	ं११४
जा चेव उद्यां ३६	१६८	२६४	जावजीव० ं	१६ं	१४	१४४
जा'जा वचई १४	૨૪ ૽	१३२	जाव नएइ०	v	३	33
जानावश्रद्ध १४	२४	१३२	जावंत ऽविजा	६	१	દહ
•		,	जा सा ऋण्स्य	ग्र३०	१२	२१६
		(=	. .		,	
-1	ţ,	(वि	1)	**		
जिण्वयणे ३६	२६१		जिब्भाए रसं	३२	६१	२३०
्रीजणे पासित्ति २३	8	१७४				
		ं (जं	1)	•		
जीमूय निद्ध० ३४	, 8	२४१	जीवाजीवा०	२५	18	,१६७
ंजीवा चेव० ३६	ે ર	२४०	जीवियं चेव०	{ =	१३	१४८
्जीवाजीव० ' ३६ '	8	२४०	्जीवियं तं तु०	२२	92	् - १७२
Exist.	•	(5	ने)	44		
्रेजे श्रायय० ३६	४७	२४३	जे य मगोगा०	२३	६३	१८०
जे इदियागां० ३२	૪ ૭ ૨ <i>१</i>	२२३	्जे य वेयविष्ठ	२४	່ ບ້	१८६
े केइ उपव०१७ जे केइ उपव०१७	٠ १	१४४	जे यावि दोस	०३२	[`] ं३८	,२२६
जे केइ उपव० १७	, 3	११४	जेया व दोसं	० ३२		२२८
जे केंद्र परिथवाट ६	३२	४०४	जे यावि दोसं	० ३२	६४	२३०
ने केइ सरीरे० ६	• •	٤Ē	जे यावि दोसं	० ३२ ं	60	२३२
ने गिद्धे काम० ४	¥	ÉS	जे यावि दोसं) ३२	o <i>3</i>	२३४
जेण पुणी जहाय१४		१३७	जे यावि दोसं	० ३२	२४	२२४
जेट्ठामूले० २६	१६	१६०	जे यावि होया	० ११	२	११३
						• • •

		('स्ट	·)		
ते लक्ख्यां ० ५	६१	११२]	जे समत्था० २४	१२	१६≍
जे तक्खणं० १०	४४	१६४	जे समत्था० २४	१४	२६⊏
ज वजाए० १७	२१	१४७	जेसि विज्ला० ७	११	र्वन
जे समस्या० २४.	5	१६८	ने संखया० ४	२३	६४
		(जो	· -)		
जो श्रदिशकाय ० २⊏	२७	२६८	जो लोए वस २४	२९	8=12
नो नस्स उ० ३०	१४	२१६	जो सहस्सं० ६	३४	१०६
लो जिग्गिहेंद्रु० २८	१८	033	जो सहस्सं० ६	So	१०६
जो न सज्जड्र० २४	२०	१८७	जो सुत्तमहि० २८	२१	१६७
जो पव्वहत्ताग्र०२०	३६	१६४	जो मो इत्त० ३०	२०	२१६
जोयणस्स० ३६	६३	२४४			
		ं (ठ	1)		
ठाणा बीरा० ३०	२७	२१७	ठाएो य इइ० २३	45	१८२
ठाणे निसी० २४	२४	१८४			
		(त	`)		72
तह्याए पोरी० २६	३२	१६२	तश्रो से मरण० ४	१६	£¥
तश्रोद्याउ० ७	१०	33	तस्रोसोपह० १०	१०	१६१
तस्रो कल्ले॰ २०	३४.	१६३	तस्रोहिएव० १०	३१	१६३
[*] तश्रीकमा० ७	3	33	_	४६	१४७
तस्रो काले॰ ४		દફ	तरहामिभूय० ३२	३०	२२४
तद्यो देसिं० २३	२४	१७ ७	77 77 79	४३	ঽঽ৻৽
तस्त्रोजिए० ७	१=	१००	?? 3) ??	ሂξ	२२६
्तस्रो तेण्जिएः १८	१६	{8 F	33 33 33	६६	२३१
तथो पुट्टो खायं०४	११	દક્ષ	57 27 57	45	553
तन्त्रो पुट्टोपि बा० २	8	5 5	**	83	
तथो बहु ग्रि०३६			तताइंतव० १६	-	
तशो मंबच्छा ३६			वत्ती य धरग० ३०	११	
तछो से जायंति३२	६०४	२३७	तक्तो विय० =	t ¥	
तथी संदंड० ४	ć	દુષ્ટ		Y.	२⊏३
तंत्री से पुंट्टे ० ७	ঽ	85	तत्थ ठिच्चा० ३	\$ 8	£₹

१६१ X तस्स रूवं० २० १६६ 8 LOS २५ तत्थ पंच० तस्य लोग्० २३ . 248 ६४ ३६ ્રેશહદ્ય तत्थ सिद्धा० तस्य लोगं २३ -ムニ २१ २२० तत्य से अत्य० 3 तस्सेस संगो० ३२ १६१ तत्थ सो पासई०२० ષ્ઠ २४५ तसाणं थावराणं ३४ દક્ષ 8 त्रत्थमं पढमं० Y . २४४ 30 38 तहा पयगुर 94 १३ त्रशोववाइयं० ે ૧૫ ७३४ ¥ तहिया गं० २८ १९१ २ः ३६ तिमीन य २६ १२१ १२् तिहयं गंघी ? ₹**x** २४१ तम्हा एएसिं॰ 33 'શેષ્ટ્રંગ 38 तहेव कासि० 45 २४७ ६१ न्तंम्हा एसिं० ३४ १४२ χò त्हिव विजञ्जी० १८ `={ Q तम्हा विर्णायं० 9 -58₽ 34 तहेव भत्त० ११६ ३२ ११ 'तम्हा सुय २४५ Ę तहेव हिसं० 34 १६४ ४६ २० तमंतमे० -१४२ **१**म 🚎 तहेवुगां -208 २२ 3 तव नाराय७ ₽8[′] 152 ५३ त ठागं० a Éo र्र १६८ 'तंबं सिसयं ० तं पासिङग्र॰ 3 २१्र '१ंदु३ 88 · 'तंबी जोइं० १२ **Ę**, १४३ तं पेहइ० 38 338 तंबी य दुविंही ३४ २५ १४४ तं विं तस्मा २४ 38 48 'त्वीवहार्ण ० પ્રૅર १ ~ **\\$**\\$ तं वि तम्मो 33 ₹=6 ইঽ ⁷तेसपायो 24 'રહંદ तं तयं० १ं⊏६ न्त्रं सक्खेव ० **RX** १६७ २० ते सि नाही ॰ १६१ र्वेस पाए० तं एक्सगं० ११७ २२ त्सस भजा० त पासिङ्गण् १७१ न्तिस्स मे अप्पै० 93 38 * १३४ 'तं पुच्यनेहेंग्र० १४ १६५ २१ र्तस्स रूव (ता ेताणि ठाणाणि ४ तालगा २्दं' ≀

२४६

२६०

२६०

२६४

११२

ति**ग्**णुदही०

तिग्रोव ऋहो० ३६

तिग्गोव सह० ३६

तिर्णेव साग ३६

तिएगो हु सि० १०

३४

४२

११३

१२३

१६२

३४

तियं भे श्रंत०

तिव्वचंड 🤄

तिविही बद

तिदुयं०

१६२

२४३

१७४

11785

२१

२०

. 38

३४

२३

.

```
( ३० )
                              (ती)
                                    वीस तु साग ? ३६
तीसे यजाइ
                            १२६।
                     38
                                                        २४३
            १३
                                                                 २४४
                            १७४
तीसे मी वयणं०२२
                    ४६
                              ( तु )
                             १६६
                                                                 १८८ ३
                                     तुन्भे समत्था० २४
तुर्नमं सुलद्धं० २०
                     XX
                                                         38
तुहे य विजय० २४
                                    तुलया विसे०
                     ३७
                             १८८
                                                                 909
                                                         ३०
तुट्टी य सेगिष्ठी०२०
                                     तुलिया विसे०
                             १६६
                     78
                                                                  ६६
                                                   y
                                                         30
तुरमे जह्या
                                     तुह् पियाइ०
             २४
                             १८५
                                                  39
                                                                 १५८
                     ३⊏
                                                         33
                                    तुहं वियासुरा० १६
तुब्भेत्य भो०
             १२
                     १४
                             १८५
                                                                 245
                                                         40
                               (ते
तेइंदिया०
                                                                २६४
                                     तेसीस साग०
             ३६
                     १३६
                                                  ३६
                                                          १६७
'वेडकाय०
             १०
                                     तत्तीमा साग० ३६
                                                          38×
                             308
                                                                 २७०
                      O
तेष पम्ह०
                                     ते पासे०
                             २४७
                                                  २३
             38
                                                          ४१
                                                                  १७=
                     ५७
तें ऊ वा उ०
                             २४६
                                     ते पासिया०
                                                  १२
              38
                     १०७
                                                          ३०
                                                                  १२० . ८.
                                     ते में तिगिच्छं० २०
                                                          २३
                                                                  १६३
 तेगिच्छ०
               ર્
                      33
                               37
                                     तेवीसईसूय०
                                                  38
                                                          १६
                                                                  398
 तं घोरस्वा०
                      28
                              १२०
              १२
                             ३३६
                                     तेवं/स साग०
                                                  ३६
                                                          २३६
                                                                 379
 ते काम०
              88
                       દ્
                                     तेसि पुत्ते०
 तेस पर बोच्छामि० ३४ ४१
                                                           ?
                                                                  १४२
                                                  3}
                             २४६
                                     तेसिं सोचा०
                                                                   ६६
 तेग्रावि जं०
                                                          38
              8=
                      १७
                              १४६
                                                    X
                                     तेंदिय काय० १०
                                                          ११
 तेण जहा०
                               દર
                                                                 305
                       ą
               8
                               (तो)
                              १०१ ;
                                                                  १७२
                                    तोसिया०
                                                  २३
  तो नाण दंसण्० न
                       3
                                                          37
                              १८५ | तोऽह नाहो
  तो घंदिङगा०
                                                                  १६४%
                                                          34
                                                   २०
                      ६०
                                (智)
  घलेलु पीयाद्य० १२
                       १२
                              ११७
                               (था)
  धाषरं जंगमं०
                                १७
                       म्
```

् (थे)

१६४ 'थेरे गगहरे० 38 १७४ २२ स्ट्र्या रह० १३४ १४ दवशिगगा० ४२ १४६ १७ ्रद्व*द्*वस्स० 5

, दब्बन्नो खेतन्त्रो०२४

दव्यश्रो खेतश्रो ३६

्दव्याण सब्व० २८

दब्धे खेत्ते० ३०

दसउद्ही० ३४

दस चेव साइ०३६

दसं चेव साग०३६

३३,

१५

२६

२

'३२

१६

्र दायो लाभे०

- दिवसस्स०

दिवसस्स०

दिगिछापरि०

दुकरं ०

्र दुक्खं ह्यं o

ः दुष्पए०

दीसंति बहवे• २३

दाराणि य०

ंदंग्वयो चक्खुसा० ५४

Ę

ş

Q

२४

१४

४३

२२४

१४

38

88

२०

२

६७

80

२८

5

88 .

१०३

(६).

, १८३

720

१:८३

888

२१७

२४६

329

339

१४५

(दा)

(दि)

1039

२१६

न६

१८०

<u>-</u>805

55

२२१

.१४४ 📒 दुमपत्तए०

(दीं

इसएए रज्जं० १८ दसय नपु•

"

77

इसहा उ०

दंडागां०

३६ दस वास०

३४-

दंतसोहरा० १६

दिव्वमागुस० २४०

दिन्वे य जै० ३१०

दुद्ध दही०

दुष्परिचया०

१७

; 5

१४

दंसणनागा०

२४० दासा दसरग्रे०१३

३४,ः दस सागरी० ३६

३४: , . ४८, . - २४६ ३६

२८-

३१

१६५ 🕆 २,६४

४२

<u> খুই -, - - ই</u>প্তত

४१ - २४४

२४४

२०४ - - ' २,६७

8 २१८

३७ १४४ .२४ 🚎 ११६८

	दुसहे ॰	१०	8	309	दुविहा पुढ०	३६	90	२५६
	दुषिहं खवे०	၁ ၇	28	300	दुविहा वरा०	३६	६३	२४६
	दुविद्दा श्राउ०	३६	ፍ ሂ	२५७	दुनिहा वाउ०	३६	११८	740
	दुविहा तेउ०	३६	3 ३ १	328	दुहश्री०	৩	१७	800
	दुविहा ते भवे	३ ६	१७२	२६४	_			
				(दे)			, <i>Y</i>
	देव दागाय०	१६	१६	188	देवा चड०	३६	२०४	२६७
	देव दाणव॰	२३	२०		देवा भवि०	१४	१	१३६
	देव मगुरस० न	२२	२ २	१७२	देवाभित्र्यो०	१२	२१	399
	देव लोग०	38	=	१५३	देवा य०	१३	G	१२४
	देवसियं च०	२६	४०	१६३	देवे नेरइए०	१०	१४	११०
				[दो]		pt.	
s	दो चेव साग	३६	२२१					s
	. ,	••	• ()	[ध]			d.
	धग्र-धन्न	38	२्ध	१४४।	- धम्माधम्मा	३६	¤	२५०
	धर्णं पसूयं०	१४	१६	१३१	धम्माधम्मे०	३६	હ	२५०
	ध्या परक्रमं०		३१	904	धम्मारामे॰	18	१४	१४४
	धणेण कि॰	१४	શ્ હ	१३१	धस्मे हरए०	१२	४६	१२३
	धम्मिलयं०	8	४२	58	धम्मो श्रधन्मो	२ द	ড	१६६
	धम्मत्थिकाए०		¥	२५०		२८	5	१६६
	धनमस्यं०		=	888	धम्मं पि हु०	?0	२०	११०
				[धि	[]			
	धिररधुनेऽज्ञस	इ.च्च्	४२	१७४				į
	Č			[ဗ်	1			
	भीरस्स पस्स	ુ હ	રફ	202	, 7			
			•	[न	7			
,	भी हों। प्रस्केत	in u	4 Q		्र न काममोगा०	30	202	२३४
	स क्षेत्रज्ञे क्ष	g v. Ko vy	. Yn	2	न फोवएत	* * \ \$	8.	# y
	ंक द्वरणश्रद्ध यह् थेण्	Ha fa	, C	A majority of	सर और श्री रूर्ड देश	•	Ģ.	

							. •
न्या उपद्ये	२	३२ '	32	न मे निवारगां०	२ े	ُ وِ	, CA
नेच्चा नमइ०	१ै	88	_ ≅β	न य पाव०ू	११ ,	१२	११४
र्ने चित्ता०	દ્દ	१० '	0 3	नंरिद ! जाइ०	१३	१८	१२६
नट्टेहि गीएहि०	१३	૧૪ ે	१२४	नं रूव-लावएग्।०	३२	१४	ે સ્ટ્રું
न तस्स दुव्खं०	१३	२३ े	- १२६	न लवेडज०	8	= ×	£ 3
न तं ऋरी०	२०	85	१६५	न वा लभेडज़ा०	३२	¥	े २२१
न तुष्म भोगे०	१३	३३	१२=	्न वि जागासि०	२४	११ ॅ	१८६
न तुमं जाणे०	२०	१६	१६२	न वि मुहिएए०	इष	३१	१८८
नित्थ चरित्तं०	रेप	२६	१६८		રેષ્ટ	_ =	२६८
नित्थ नूएां 2	२	88,	ه 'ع	न संतसे०	२	११	= &
नन्नद्वः पाग्रा०	રપ્ર	१०	१८६	न सा ममं०	२७	२२	188
न पक्खन्त्रो०	१	१८	दर	न हु जिग्गो०	१०	३१	१६२
न्मी नमेइ०	3	६१	१०८	न हु पाग्यवहं०	=	5	१८२
नमी नमेइ०	१८	88	१५१	नहेव कुचा०	१४	३६	१३४
•			(;	i)		·	. •
नंद्गो सो उ०	38	ą		• •			
	10	۲ _	् १५२ - १८=	PT \			
			(7	11).	٠.	•	
नाइउच्चे०	8	३४	78		३३	8	२३६
नाइदूर०	8	३ ३	८३	नागोगा जागाइ०	र⊏	34	334
नागो जहा०	१२	30-	१ृह७	नाणेणं दंस०	२२	६	, १७३,
नागो व्व०	18	86	१६४	नादंसिंग्सिः	२प	३०	1 255.
नाग्रस्स केव्०	३६	२६६	- २७२		8	စ္စပ	ू. ८ २
नार्णस्सस्ववस्स ्नाणस्सावर०	१०२५	2	. २२०	,नामकरमं ०	३३	३	-
्राण्यसायरण नागां च दसगां	جو م 2-	्२	२३६	नामकम्मं ० नामकम्मं ०	३३ .	ं १३	्र ३ ४०
	2- 2-7-	, 4	१६६	नामाड वर्गा०	30	5	ં- ર ષ્ઠ
77 79 77 79	250 7.0	, a , a , 8	११६	ागारास नाव०	E -	90	, १०३
नासा दम०	20	 	, <i>031</i> ;	ानावा य दर	53		
नांणा रुइ 0	१८	्. ३०	. 797	नासाल न०	89		178
	1	, २७	"/ × c	ानाइ रस०	१४		. 83×
£			~ (:, T	ਜੇ) (ਜੇ	,	-	7 . "4""
निगांथे पावं	२१ '	२	१६७	निगांथो घिइ ्	f, se f	_	
			,	र जना विश्व	13	8	१६२ े

নিঘ্যমান ০	33	ခန	१५४	निरहरांमि०	२	४२	<i>ټ٤</i> .
निच भीएए०	१६	७१	१४५	निरद्विया० ,	হ্০	88 - 1	१६६
निज् हि ऊग्ए	३४	૨૦ ં	२४६	निव्वागौति०	२३ ्.	ㄷ੩	१⊏२
निहा तहेव०	३३		२३६	निस्संत०	8		= १
निद्धंस परि०	३४	र २ ़	२४४	निसग्गुव०	२८	१६	१६७
निम्ममे०	३४	સર્રુ	२४६	निस्संकिय० 📡	२८	३१	<i>१६</i> ८
निम्ममो०	38	58	१६०	निस्संते०	8	5 1	= १
- 4	,		· (नी				
٨			•	•			· , .
नीयवित्ती०	३४	२७	उठ८	नीहरंतिमयं०	१८	१५	१४८
नीलासोग०	38	¥	૨ ૪૧				
		,	(ने	·)			
				,	•	0.5	47)
नेरइय० 👝	३३	१२		नेव पल्ह०	१	39	८२
नेरइया०	३६	१४७	२६३				
-			(न	1)			
	_	* -	035	े ने महत्रक	१५	ሂ	१३७
नो इंदियगेडमा		१६	१३२	नो सकइ०	45	•	110
नो रज़खसी०	6	१=	१०२	l			
'			. ()	[)			
			•			; 00	0.5
पर्जवाइ०	११	٤	•	,पढमं पोरिसि॰	૨ ૬ ` ૧૯	ं १२	350
पइरिषकु०	ર્	२३	ದ್ದ	पढमं पोरिसि॰	` २६	्रश्य	938
पक्छांदे०	२२	४२	१७४	पढमं पोरिसि॰		88	ू १६३ ्
पश्चयस्थं o	२३	३२	१७≍	पहमे वासः	३६		२७१
्रित नरए०	15	źΧ	. \$68	पणयोत्त०	३६		२४४
.ढकमित्तु ॰	२६	४२	१६३			१७	२१६
हिलेह्गां ०	२६	२६		पण्वीस साग			३८०
प टिक्कमामि०		३१	१५०		१६	પ્ર	388
व हिनेहं.इ०	थ्र	3	१४६	पत्तेगसरी०	3,5	EX	# !
पहिल्यायं च॰	8	१७	ㄷ੨		३६	१६८	રદૃહ
वडमा साव०	३६	Þ	१८६	पभृयरयगो०	ગ્૦	₹	१६१
दहमें च ष्ठ	२०	~ \$£	१६२	पयगुकोह०	3%	२६	२५४
1 46 1 7 7				•			

i				M ₂			
गरमत्थ०	२८	२८	· · · · · · · · · · · · · · · · · · ·	,पिलश्रोवसमेगं व	३६	्२२३	२६८
परिजुएगोहिं	. २	१२	्रह्र७	प्रति,श्रोवमस्स०	३६	= 73K =	.२६६
परिजूरइ०	•	ऱ् १, २२, ३		, पितज्ञोवसं० -	३४ .	. ५२	त्वे २४६ ।
	ર્	, २४, २६) १११	पलिश्रोवमाइं०	३६ .	" የፍሂ	२६४
परिमडल०	३६	ે ૪३ -	२४३	पतिश्रोवमाइ०	३६	२०१	- २६७
परिव्वयंते०	१४	48	१३१	पह्नोयागुह्न०	३६	430 -	२६१
परीसहा०	२१	१७ँ	, १६६	पसिंढिल ०	२६		. 888
परीसहागां०	२	- 18 -	ं द्	[।] पसुर्वधा०	२४	30	ِي. رک=۶
परेसु घास०	સ્	३०	22	पहाय रागं	२१	१६	१६९
पलालं० '	२३ ′	፡	१७६	पहार्वत 🐬	२३	४६	. ₹23 840
पलिश्रोवममेग	३६	े २२२	र्६८	पहींगापुत्तस्स	48	ે રે ઉં	" १३३ 1
• ;				•		``	,,144
- •		4.00	(1	()		¢ 4	`
पंकाभा० '	ેં રૂદ્	१४८ _	२६३	पंताणि चेव०	-		, Y
पंखाविहूगो०	१४	30	ू १३३	पंजालराया०	5 5	्र १२ ः	
पंचमहव्वय०	38		१६०	पंचासव०	१३	* ३ ४	,१२८
पंचमहव्वय०	२३	46	१८२	पंचिदियाणि०	३४	. २१	488
पंचमी छद्०	२६	Ę	१८६	पंचिदिय0	3	३ ६	१०६
पंच समिश्रो०	ર ે.	_	. 38%		ξο	१३	328
पंत सयगा०	१४	8	१३६	पाचादय० ; भ पिचदिया०		- १७१	्२६४
		J	***	। ना नाषुवा ठ	३६	१४६	२६३
			(·,ឫ	Π); .	,	;	
पागारं० े	3	- १८	. १८४	पविद्धेयः		- ·	1 2
पाणिवह०	३०	२	२१ ४		,38	•	२२०
पायो य नाइ०		E	१०२	पासवेगुद्धार०	दिह		'१६'३
पायच्छित्तं०	३०			1	१३	४२	१७८
पारिय काउ०		୍ଟି ୧ ୪ (୪୧ ୪ ୨ ୧	<i>210 1</i> 2	पासाए कार० पासेहिं कुड०	&	२४	-१०५
पारिय०	રફ	סנדטני ביי בע	. 9e 12	पासाह कुह०	38	्र ६३	१४७
	- (, ,	, ~ t	n	
•			(fe	<u>e</u>	- •	* ~!	•
		J	(,](Ť).		, se	
पिंडोलए०	v	35				_	

४ २२ ६६ | विहोगाह० ३१ ँ ९

पिंडोलए०

(पि)

पियधम्मे०	કેઠ્ઠ	२५	₹88	विसाय ०	३६	२०८	२६ऽ	
विय पुत्तग्गा०	१४	¥	१२६	पिहुंडे०	२१	ą	२६७	
विया मे	२०	२ ४	१६३	_				
			(9	()				,
पुच्छ भंत्ते !	२३	૦ ૨	१७७	पुत्तो मे भाय०	8	38	ಷ೪	
पुच्छ।मि ते०	२ ३	२१	१८७	पुमत्तमागम्म०	१४		१०ह	
पुन्धिङ्गङ्गण्	२०	y vo	१६७	पुरिमा उन्जु>	२३	२६	१७७	
पुन्दिज्ञः	२३	२२	१७०	पुरिमार्गां०	२३	5 6	१७७	
पुरजा जस्स०	X	४६	58	पुरोहियं•	१४	११	१३०	
पुट्टो य०	२	१०	⊏ಡಿ	पुरोह्यं०	१४	३७	१३४	
पुढवी आउ०	२६	३०	१६२	पुन्यकोडि०	રૂદ્	१ऽ७	२६४	
पुढवी छाउ०	રફ	38	१६२			१८६, १६३	२६६	
पुरुविद्याय ०	१०	¥	१०६	पुंच्चिल्लंमि०	२६	5	१६०	
पुढवी य॰	38	७४	२५६	पुन्चिल्लंमि०	२६	२१	१८१	
पुढवी साली?	٤	કદ	१५०	पुटिंव च इतिहं०	१२	३२	१२१	
			[पे]				
पहा च श्रद्ध०	३०	१६	२१६	वेसिया०	२७	१३	१६५	
		•	[पं	1]				
पोल्लैव०	२०	५२	१६४	पोरिसीए ०	२६	३८	१६२	
वारिसीए०	२६	ሄሂ	१६३	37 ×3 *	२६	४६	१६३	
31 27	२६	२२	१६१					
,			[फ़	1]				
फास श्री	₹६	₹ ¥	ခန္ကဒ္	कासागुवाए०	३२	E0	२३३	
फास सो	રૂદ	(38, 34, 3	Ξ,	फासुयं मि ०	ЗX	ঙ	586	
	38.	,४०,४१,४	म्। म्४३	फासे अति ते ०	37	= {	553	
				फामे विश्लोट				
				फासेसु जो॰			इ ३३	
फोग्सामार संग				\				

२३४

कायागुरता० ३२

(बं)

(बा)

बालस्स०

वालागं०

बालुया०

गावत्तरि०

- बाताभिरामेसु०

बालेंहिं मूढेहिं

बावीस सह्०

बंबिस साग०

वावीसं साग•

398

२६०

२४६

2X0.

२४८

२५६

२४५

१७४

देखर

२७२

(बु

(बे)

११३ | बुद्धे परि०

. १८६ / बेइंदिया०

१६३ भवत्यहा०

_(_भा.)

े १६१ । भावस्स०

[ृ]ुर्दे । भावागुरत्तः

^र्रेद्दे | भावाग्रुगासी**०** ३२ -

(ब) १५७ | बहुं खुमुणि० बता संडास॰ १९ XC बहुं माइ० बहिया उड्ह• १३ १८ દ્ २७२ | बहुयागि॰ बहु जागम० ३६ २६६

18

318

७२

=&

83

280

45

G

244

२६५

१०

1919,

२६

२५

38

३६

३६

३६

३६

३६

३६

२३

३६

38

२३

२०

9 १७ 38 १६ ११ X3

१८

3

20

30

3.4

Ę

61

१६६

234

U

X

13

39

१२

२१

३६

३६

३६

१०

२३

३२

65

53

e3

. _रङ्देष्ठ

` देश

188 १६०

१०४

१०१

FR

१२४

१४५

१३०

१६८

२४७

२६४

३६६

वसंमि नाय॰

बायरा जे०

बायरा जे०

बालमरणाणि०

बेइंदिय० काय० १०

भइणीत्रो मे०

भागा अ इइ०

भग्ता०

भायंरो०

मारिया०

बुद्धस्त

बायरा जे० बायरा जे॰ बायरा जे० वारसहि॰ 'बार्संग० बारसेव०

भग्वागुवाएग्		६३	२३४	(•
भावे श्रतितं०	३२	83	નર ્ય	भावेसु जो० ३३	۲ 5٤	२३४
-		,	. (f	भें)	•	* •
भिक्खालसिए०	३७	80 ~	7884	भिक्तिखंयव्यं ०	k - 8x	રુષ્ટ
		i	(· \$	भी)		
भीया य सा०	२२	ર ે પ્ર	१७३	* *	1	À
	, .	•••	_	H)		
						•
भुश्रोरग०	३६	१८२	२६४	मु जमाग्राम्सए० १	ર્દ ૪३	्र१४६
भुत्ता रसा०	१४	३२	ं१३३			•
			ו []	[[]]	•	**,
भूयत्थेण हि०	२८	- १७	१९ं७			4
	• -	•		ते ।		,
		~ ,	_		÷	,
	5	¥	् १०१	भी हां मागुरंसए०	३ १६	83
भोगे भोच्चा०	१४	ેઠઠ	१३४		, - *	* ,
			(t	र)		•
मएसु वंभ	३१	१०	२१६	•	३् ४⊏	१८०
मगो य इइ०	२३	६२	१८०	्रमणोहरं० ३	શ્રે ૪	२४८
मच्चुगा०	१४	२३	१३२	मत्तं च० २	२ १८	१७१
मच्छाय०	३६	१७३	२६४	•	४ १८	£ሂ
मज्भिमा०	३६	२१५	ग्६⊏	मरिहसि रायं० १	४ ४०	
मण्गुत्तो०	१२	३	११६	'महत्थ रूवा० १	३ १२	42K .)
मग्गुत्तो०	२२	४७	१७५	महप्यभावरस्स० १	८ ६७	१६० र
मग्राःम०	३२	= •	२३४		३ ६४	१८०
मग्पपरिगामो०	र्२	२१	१७२		२ २३	
मगापल्हाय०	१६	२	१४४	-	६ ४३	
मिण्रियण्०	३६	8	१४२	महादवग्गि० १		ै
मगुया०	३६	१६६-	२ ६६	महामेह० 😁 २		
मणोगयं०	१	४३	. EA	्महासुक्का० ३	६ - २१२	२६=

(中)

मंतं मूलं 🤊 🗽 १४ 🐩 🖰 🚾 १३७ | मंदा य फासा० 8: १२-€3 मंता जोगं० ं २६= त २७२ माई मुद्धेगा० · Ę ६ - १६४ माया विया मा गलिय॰ १२ पर माथा वि में ०, २० १५३ म्या बुइयर् मागुप्तत्ते० 38 १४ ٤5 १४० माग्रुसत्त० १६ १०० | मासे मासे० 8 88 मागुप्तत्तंमि० ३ ११

र्ध १ ∣ माहगाकुन्न० ६१ मा हु तुमं०

१७ १६४ मित्तवं० 👙 १४७ मिहिलाए०

३६: (२६१,२६३) २७१ |

१५७ | मृहुत्तद्वं० **⊏**३ ्मुहुत्तद्धं० १ं३१ ′सहुं मुहुं०

[मो] ^१६६ | मोसंस्स पच्छा० ३२^{-६} २२३ | मोसस्स पच्छा० ३२ १३६ मोंसस्स पच्छ ० ३२ ः २२४ | मोहंशिङ्जं० 256 - 10

७० - २३१ **⊏**३ २३४ **६**६ २३६ ३३५ उँहर्र १३ ह

२४

१४ -

3**

3

3

३४

8

Ş

३३

१८

3

8

- २४, १३४,३४,३६,२४४

88

३७,३८,३६) २४४

931 =

१०४

१०३

£ 2

मिख मह्व० मिए छुहित्ता० मिगचारियं १६ (८४, ८४) १४६ मिहिलं सपुर० मिच्छादं सग्र० मुसं परिहरे० मुहपोत्ति० मोक्खमगा० २८

मोक्खभिकंखि० ३२

मोगां चरिस्सामि १४

मोसस्स पच्छा० ३२

मोसस्स पच्छा २ १३२ 💉

माग्रास्सं० ्

मा य चंडा०

२७

१

२६

१८

३

ခ်န

२३

१

१७

8

३१

(₹)

			' '	` /		
रति पि चउरी०	२६	१७	3 39	रमागुरत्तस्य०	३२	' ৩१
रम्रो तर्हि०	१ २	२०	388	रसागुवाएगा	३२	६७
रमए पंडिए०	१	३७	58	रसा पगामं०	३२	१०
रसश्रो	३६	(३०, ३१, ३२		रेंसे अतित्ते॰	33	६८
		३३, ३४)	२४२	रसे विरत्तो०	३ २	より
र्सस्स जिब्भे ०	३२	६२	२३०	रसेसु जो०	३२	દર્ફ
रसंती कंदु॰	38	×ίγ	१४६	रहनेमी०	२२	३७
#1 +	३२	६६	२३१			
_			1	1)		
?	-2	•	•	•	20	•
राइमइ०	२ २	२ ६		रागे दोसे॰	38	ş
राइयं च०	२६	8=	838	(-	२८	२० ७
राभोवरयं०	8X	ર 		रागी य दोसी०		
रागद्दोसा ॰ रागं च दोसं०	२३ ३ २	•	२५१	ेराया सह०	१४	४३
राग च दास०	44	•		{		
		ı	(₹	<u> </u>		
रूवस्य चक्खुं०	३२	२३	२२४	रुविंगो चेव	३६	Ř.
ह्रवागुगासा०		70	२२४	1	३२	२६
रूवागुरत्तस्स०			२६५		३२	ર ૪
रुवागुवाएण•		२=	२२४	हेनेसु जो गिद्धि	३२	२४
		A	(5	त)		
লৱ্তা০	१०	(१६.१७,१६)	११०	लया य इइ०	२३	યુ હ
7			_	11)		
बा भालाभे ६	ÿ2	90		•• /		
सामालामव	7 €	7.	१६ 0	3. .		
			(5	a)		
लेसडभावगां०	३४	*	২ ৪१	लेसाहि॰	38	(૪=, ૪૧)

(लो)

२४६ स्रोगेग देसे० ३६ ξS लोगग देसे० २६४ ३६ १७४ २६६ ३६ 38 ३६ १८३ २६४ " 17 77 २६३ २४८ लोहिग्गी० 38 33 लोगस्स० ३६ १५९ ३६ २१५ .२६८ । " " (q) २१६ वएसु इंदिय० ३१ वरवारुणीए॰ ३४ २४३ Ø 88 वजरिसह० २२ Ę १७१ वरं मे श्रपा॰ ٤ १६ दर षरणञ्जो ३६ २३ २४१ वलया पव्वगा० ३६ 33 २४८ वरणञ्जो ३६ २४,२४,२६,२७२४२ वसे गुरुकुले० ११ १४ ११४ वग्रसइ काय० १० 309 वहरों वह 3 २७ २ 838 वत्तणालक्ला २८ 339 80 ुः (वं)

षंके वंक० ३४ २४ २४४ | वंतासी० १४ 35 (वा) वाइया० २७ 8 238 वायंगा० ३० ३४ षाउकायo 80-6 308 वायं विविहं १४ የሂ वाएगा० 3 १० १०४ वासाइं० ३६ १३३ वाडेसु व० ₹o ' वासुदेवो० १८ २१६ २२ २५, ३१ वाणारसीए० ३ 74 ξΞΧ (वि

१३४ २१र्⊏ १३५ २६१ १७३ विगहा० 38 ફ विभूसं० 🕆 २१८ १६ विगिच० £ 188 3 १३ वियरिज्जइ० 83 विगिच० १२ १० ११७ Ę-१४ वियाणिया० 23 38 वित्थिएगो० 老台 १६० 38 १५ १५४ विरइ श्रवंभ० विजहिंतु० 33 २८ **txx** 4 3

१०१ विरज्जमाग्र० वित्ते अचोइए० 32 १०६ ' २३७ 8 88 - **58** वित्तेण तागां० विवायं च० 🗸 १७ 82. **\$**8*€* 8. विवित्त लये० K 83 २१ ~ २२ १७०

विवित्त सेवजा०	३ २	१२	२२२	विसं तु पीयं	२०	દ્વર	१६४
विसएसु०	38	E	१४३	विसालिसेहिं०		१४	83
विसप्पे सन्वश्रो		१२	२४६		•	•	•
	,	• `		1).	•		
			(4	١).			
वीदंस एहिं०	३६	६४	१४८	वीसं तु साग०	३६	२३३	२६६
			(वे	† }			
			\ \ \				
वेएडज >	ર	३७	<u> ಇ</u> ٤	वेयणीयं०	३३	છ	२३९
वेमाणिया०	३६ ,	२१०	२६७	वेया ऋहीया•		१२	१३०
वेमायाहिं०	હ	२०	१००	वेयावच्चे०	२६,	१०	१६०
वेयग्र०	२६	३३	१६२	वेयागां च०	२४	१४	१८६
			(वं	} \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \ \			
			1 4	()			
वोच्छिद्	१०	२८	१११	•			
			(स	(1)			
सकम्म०	१४	२	१२६	सद् धयार०	२८	१२	१९७
सक्खं खु०	१२	३७	१२१	सदागुगासा०	३२	80	२२६
सगरोवि०	१८	३४	१४०	=		8¥-	२२७
सन्चसोय०	१३	3	१२४	सदागुवाएगा०		કર	२२७
सच्चा तहेव०	२४	२२	१८४	सदा विविद्या	१४	१४	१ँ३८
सन्नाग नागो॰	२ १	२३	१७०	सद् अतित्ते	३२	४२	२२७
सगंकुमारो०	१=	३७	१४१	सदे रूवे०	१६	१०	१४४
सत्तरस०	३६	२३०	२६६	सद्दे विरत्तो०	३२	४७	२२८
मत्तरस०	३६	१६५	२६४	सद्दे सु नो०	३२	३७	२२६
सत् य इइ॰	२३	३७	१७५	सदेव०	१	४८	። ደ
सत्तेव०	३६	ದಕ್ಕ	२५७	सद्धं नगरं०	3	२०	१०४
सत्तेव०	રૈદ્ ,	१६३	२६४	सन्नाइपिडं०	१७	१९	१४७
सत्थगहर्गा०	३६	२७१	२७२	सिन्निहिं च०	Ę	१४	£=
सत्थं जहा०	२०	₹0 -	१६२	सपुन्वमेवं०	8	3	, દ ર્
सहस्य सोयं०	३२	३६	च्२६	समए वि०	३६	£	इंध्

	_	G	१०२	संयंगेहं० १	9.	१⊏ -	र्ध७
्समण्। सु॰	5		११७	-	0	३२	१६३
'समगो०	१२	<u> </u>	1	(14)	8	३२	२४५
समग्रं०	२	÷ (9	55		३	৩ ३	१८१
'समयाए०	२४	३२	१=८		3		. १०७
समया०	86,	२४ 🐬	१५४	सल्लं कामा०		• •	-२३८
समरेसु०	१	२६ ' "	ृ नइ		{ 2	•	२४०
सम्मत्तं चेव०	३३	3	२३६	(1-4-11-11-6	३३	•	3€=
सम्मह्म। गो०	१७	Ę	१४६	(1-1/11/04/11	३६	२१७	-
सम्भदंसग्	३६	२६२	२७२		38	. 8v	१४८
समं च संथवं०	१६	३ -,	१४४	सन्वं गंथं० ,	٦	, . ጸ	१०१
, सम्मं धम्मे०	१४	٤o	૧ રૂપ	•••	88	38	१३४
समागया०	२३ .	38	१७६	सन्वतन्त्रा 🔻	३२	308.	२३८
समोव न्नांग् ०	₹ 4-	२	60		१३	ः १६	१२५
समिइहिं०	१२	१७	११८	सन्वं सुचिएगं॰	१३	90 ,	१२४
	- Ę -	ેર,	<i>७</i> ३	सन्वे ते०	१८	२७	१४०
[ु] समुद्दगंभीर०	११	38	११६	सन्वेसि०	३३	१७	२४०
संमुयाण० ६	3 × .	, E	. २४६	सन्वेहि०	२१^	१ ३	१६=
समुवद्वियं०	२४	8	१८४	सन्वोसहीहिं०	२२	. 3	,,१७१
सयगासगा०	३०	३६	२१⊏	ससरक्खपाए०	90	१४	१४६
सयगासग्र०	१४	११	१३८				
		•		\	,		
;	•		(सं)			,
संखंककुंद०	३४	ê	૨ ૪૨	संजोगा० 🚟	११	. 8	' ११३
संखंककुंद्	३६	६२	२५४	संठाणऋो परि०	35	२ २	२४१
ृसंखिज्ज •	३६	१४३	253	संद्रागात्रो भवे०			કે) રષ્ટ્રક
संखिडज०	३६	१४३	्रे २ ६२	संथार० "	१७		188
सखिब्ज०	३६	१३४	१६१	, स्पञ्जिलिया ०	૨ ર	ફ	30.8
संखेडज० 🛴	३६	२५०	२७१	_	२१		
संजन्त्रो श्रह०	१ ८		887		3 ६	•	१६८
संजुळी चइ०	१=		् १४ ६	यंद्री अभावि	44 20	् १९६ (२९ २२ २५	् २६ ७
संजन्त्री नाम	१८	77	, ६ ८६		48 35	१५१,५३,५४	7.458
	, –		/ 126	I SECRETIC	~ ~	W 74 A	~ =

संजोगा०

१८

8

२२

१४६ सवदृग०

३६ १२० २६०

		e					
संसारत्था०	३६	ह्रह	२५६	संसारत्था०	३६	२४२	२७१
संसारत्था०	३६	86	- २४४	संसारमावन्न ०	8	8	९२
			(स	1)			
सागरंतं०	१८	80 .	१४१	सारीरमाग्रसा०	3,8	ય	१ ४६,
सागरा अउणती	सं ३६	२४२	- २७३	सारीरमाणसे०	२३	60	१८२१
सागरा श्रउणवं		२३२	२६८	सासगीं॰	१४	५२	१३६
सागरा श्रद्धवीर	सं ३६	२४१	२७०	साहारण०	३६	<i>७</i> ३	२४८
सागरा इक्कतीसं	०३६	૨ ૪૪	२७०	साहियं०	३६	२२०	- २६म
सागरा इकवीर	i. ३६	२३४	२६६	साहिया०	३६	६२ ७	२६६
सागराणि०	३६	२२६	२६९	साहु गोयम !	२३	२८	१७७
सागरा सत्तवीर		६४०	210	j; ;;	३४	38	208
सागरा साहिया	० ३६	२२४	२६६	77 77	કર	४६, ४४	१५६
सागरोवम०	३६	१६१	२६३	19 93	४६	६४	१८०
सा पन्वइ्या॰	ર્ર્	३२	े १७३	57 57	દંદ	૭૪, હદ	१८१
सामाइयत्थ०	२८	३२	४६८	,,	ረሂ		१८२-
सामायारि०	इह	१	१म्ह	साहुस्स द्रि॰	39	હ	१४३
मामिसं०	१४	४६	१३५				
			(रि	H)			
सिङ्जादढ़ा०	१७	ঽ	१ ४४-		3 3	२४	ર ુઇ ?
सिद्धाएां	२०	१	१६१	सिया उगहा०	३६	२१	२४१
स्द्राइगुण	38	२०	२२०				
			(र्स	Ì)			
सीश्रोसिणा	२१	१=	१६६	-सीसेण एयं०	१ २	२क्ष	१२० 🆫
			[€				
सुई च लद्धं०	3	१०	183	सुणिया भावें०	१	Ę	<u> </u>
सुक्कडमार्गं०	3,4	33	२४६	सुर्णेह मे॰	२ ०	૧ ૭	१६२
	१	36		सुणेह मे०			२४८
सुरगीवे०	हर्द	8	१५३	सुत्तेसु यावि०	8	₹ Ę	९२
सुधाराव	२०	*3	१६६	सुद्धेसगा उ॰	6	११	१०२
-				→ •		, ,	

			ſ		0.5	ષ્ઠર	.१२५
सुयाणि मे०	3 {	80.	१४३ र	नुसं बुडा० ्	१२		१८४
सुया से नरए०	×	१२	£ 2 3	पुहं वसामो०	. 3	१४	२६०
सुवंग्गा०	3	४६	१६७	पुहुम्। सन्व०	' ३६	१२	२ <u>५</u> ७
	રૂપ	६	२४८	सुहुमा सब्ब॰	३६	, 3o	
सुसार्वा	3	२०	رير ال	सुहोइश्रो०	38	३४	१४४
सुसागो॰	१४	३१	१३३				
्र) सुसंभिया ०	10	~ `	_	•		r.	
1		•	(से	'			\$
ik				et	5	૪૦	28
से चुए वंभ•	१५	२६	१४० ी	से नूणं मए०	२		~ ~
-			ि मो	11		•	
			L X			•	. 5
सोऊण तस्स०	२२	8=	१७२	सोयुगिगा।	•	् १०	१३०्
सोऊण तस्स०	१८	१८	485	सोयस्स सइं०		३४	२२६
सोऊण राय०	२२	२⊏	६७३	सोऽरिहनेमि०	२२	×	१७१
्रसो कुन्डलाण्	२२	२०	१७२	सोरियपुरंमि०	्रश्र	े ३	१७१
सोचागां०	ર	ર×	スち	सोरियपुरंमि०	२२	१	१७१
सो तत्थ०	२ ५	3	१८६	सोलसविह०	३३	११	२४०
सो तवो०	३०	હ	૨ १૪	सोवागकुल०	१२	8	११६
स्रो तस्स०	32	११०	२३⊏	सो वि श्रन्तर	० २७	११	१६४
सो दाणिसिं०	१३	२०	१२६	सोवीर राय०	१८	૪૮	१५१
^{१४} सो देवलोग॰	3	3	, १०३	सोही उज्जुय	o 3	१२	83
^{श्रा} सो बितम्मा०	38	ુ કુ જુજુ કુ	१० ३ १४६	सो हो इ अभि	र्गम २८	२३	१६८
सो वितम्मा०	38		· 8x=				
	·			Ē.): []			
<i>{</i>		Ĵ		6.	-		
[श्रो [ं] न संज्ञले	० २	२६		हरियाल०	३४	5	२४२
स्थागया०	×		દક	हरियाले०	३६	৩১	२ ५६
्त्थागया <i>०</i> इत्थिगापुरंमि	१३	२८	१२७	م ـ ـ ـ د العا	ो० ३६	٤٣	२४८
<u>इ</u> याणीए०	१८	२	१४७				• •
			3]	[]			
इास किङ्कं	१६	Ę	१४४	- · · -			
राज राष्ट्र	14	*	500				
I							

[हि]

२४२ | हिंसे वाले०

८३ | हिरएगां जाय़ ३४

१३

૭

¥

२४६

१९

हियं विगय० १ हिरएण सुवएणं० ६

38

५

39

36

हिंगुलघाउ०

हिंसे बाले॰

हुश्रासर्गे०

हेड्डिमा॰

होमि नाहो०

२६ ४६

હ

3

४७

२१४

११

१०७ () ()

EK

१५७

२६८

१६२

(हु)

(हे)

[हो]

परिशिष्ट २

मूल-सूत्रों में निर्दिष्ट दृष्टान्तों की अकारादि अनुक्रमिशका

असि क्षिप्र

२७ १२

१२० प्राप्ता नइ० ઇઉ

श्रगणि व० १६४ २०

अगाी विवा०

२०

११

४६

३६

२१

थुष

२६ प० १२ - २०३

[্] २८

38

9

२२

39

२०

:88

8

१०

श्रद्धागां०

श्रद्धार्गं०

श्रंकुसेग्रः

त्रागासे०

इंदासिण्०

उद्गं व०

श्रोहरिय०

क्रण्कु डगं०

कुमुयं ०

उरगो ०

ग्रपत्थं श्रवगं०

३६ ६१

श्रन्जुएए। 🍳

१५४ श्रयतिए० 38 १८

ं श्रवले जह० २४५ अमयं व०

[翠]

१४४ असिधारा०

(ጃ)

(劉)

(इं)

(3)

१६२

१४४ | श्रासे जहा०

१०२ | उल्लो सुक्को०

(潮)

"(事/) 😘

[要]。

१११ | कुसगो०

्रें ८१ । कसं वे दहु०

१७४

६६ । श्रहिवेगंत०

३६

३३

२१

४२

३७

35

१२

3

80

१६४

११२

१४७

१६४

१४४

१५४

£3 ~

१८६

८२

205

२०

१०

१७

२०

38

			()	}=)			
			(;	ब)			
खलुं के जो०	२७	3 -		0			
			(₹	वी)			
खीरे घयं०	१४	१८	१३१				
			(4	T~) '			
गितयस्सं०	8	३७	۳8 . ر	.			-
			•	गे)			
गिद्धोवमा०	\$ 8	૪૭		गिरि नहेहि०	१२	२६	१२०
			[3	II			
गुरुष्ठो लोह०	39	३४ ्	१४४	_			
			(1	îl:)			
गोवालो०	२२	84	१७४				
			(ε	1)			
धयसित्ति व्व०	રૂ	१ २	- 93	•			
			(f	ब्रे)			
छिन्दित्तु जातं०	१४	३४	१३४	·			
J			(2	f)			
जलेग वा०	३२	₹8 -	२२४	जहा कुसगो०	v	२ ३	33
जवा लोहमया०	38	३८	१४४	जहा गेहे०	38	२२	१४४.
	३२			जहा य तिन्नि०		१४	33
•	38	<i>३</i> ६		जहा तुलाए०			१५%
जहा इह०	39	४७		जहा द्वरगी०			२२२
जहा इहं०	33	8=	१४६		३६	Ro	१४६
जहा एमं०	હ	8	ध्य	जहा भुय।हिं०			१५६
अहा कागिणिए०		१ १	33	जहा मट्टं ०	२४	२१	१८७
· .		२०	२२३	जहा महातला०		×	२१४
जहां दिवाग०	3 ,	् १७	१४४	जहा मिए॰	38	पर्	१४६

(88)

जहा मिगस्स० १६ १४६ | जहा विराला० ३२ १३ **6**5 जहा य श्रम्मी० १४ १८ १३१ | जहा सागडिस्रो० ५ जहा य ऋंड० २३ Ę २२१. ्जहा सुग्णि॰ जहा य भोइ० १४ ३४ १३४ जहां संखंमि॰ ११ जहा व दासे हिं० ८ १०२ जहेह सीहो ० १८ (जा) जाय पक्खा० २७ 88 89x s (जी) जीमुय० ३४ 8 २४१ (ਭ) जुएएो व हंसो० १४ ३३ १३३ (ति)

३४

तिएगो हुसि० १० 8 **ર**

तेगो जहा० . थलेसु० १२

दविगिगाा० १४

दीवप्पग्रहें व०

दुइस्सो•

दुमपत्तए०

दिया काम०

२३

१०

४२

१४ 88

Ł

१२

(,दः) १३४ १३४

११२

(ते)

(智)

(बि.)

[]

१३

१२८

२२२

58

११४

' १२ं६

~ £¥

१४ .

엉

१३

१४

```
( Ko )
                             ( दे )
देवो दोगु दश्रो० २१
                           १६८
                     v
                            [ ਬ ]
                            X3
धुत्तेव०
                    १६
              ¥
                            ( 7 )
                           १३४
नहेव कुंचा०
                    ३६
             १४
                            ( ना )
                          १२७ | नागो संगाम०
नागो जहा०
                                              २
                                                     १०
            १३
                    ३०
                                                             50
                           १३४ | नाहं रमे०
                                              १३
                    ४८
                                                     ४१
                                                             १३४
नागो व्व०
             १४
                            (4)
                            ६८ | पराइ स्रो०
                                                             २२२
                                              ३२
                                                      १२
                    १४
             દ્
पक्खीपत्तं०
ाक्ख दे०
                    ४२
                           १७४
             २२
                            [ q ]
                           ८७ | पंखाविहूगा०
                                               १४
                                                      ३०
                                                             १३३
                    १७
पंकभूया०
              २
                            [पो]
                           १६४
पोल्लेव मुट्टी० २०
                    ४२
                             (市)
                            १४३
 फेग्। पुच्बुय०
                     १३
             १९
                            [ भा ]
                             ६२ | भास छन्ना०
                                              २४
 भारंड पंखीव० ४
                      Ę
                                                      15
                                                             १८७
                             ( ) ( )
भिच्चव्विहूगो० १४
                            १३३
                     ३०
( भू )
Ħ
ाभूयाणं जगइ० १
                     ४४
                             53
```

```
( \ \ \ \ \ )
                             (日)
                                  महा द्वरिग०
                                                                १४६
मच्छिया०
                                                38
                     4
                                                        40
              5
                                  महा नागो०
                                                                ३५६
                            २५५
मच्छि पत्ताड०
             ३६
                    ६०
                                                 38
                                                        ¤ಕ
                                                        १४
                            १४७ | महा सुका०
महिसो०
                                                 3
                                                                 83
             38
                    ४७
                                 मागत्तिय०
महा उद्ग०
             २३
                    ६४
                            १८०
                                                 8
                                                        १२
                                                              - दर्
महा जतेसु
             39
                    ५२
                            १५७
                             (मे)
मैरुव्व०
             २१
                     38
                            १६६
                             (用)
मिहिलाए०
              3
                   09-3
                            १०४
                             [ सं रं
रागाडरे०
             ३२ (३७, ४०, ६३,
                                  राढा मणी०
                                                २०
                                                        ४२
                                                                १६४
                  ७६, ८१)
        प्रष्ठ २२६ २२= २३० २३२ २३४
                              ( रें )
रेगुयं०
              38
                            १५६
                     50
                             ( रो )
रोडमो वा०
             33
                    ১६
                            920
                              (可)
विणया वा०
                      Ę
                            १०१
                             (वा)
वायाविद्धो०
             २२
                     88 '
                            १७४) बाह्यसे०
                                                १९
                                                        ३७
                                                               १४५
विवन्नसारो०
             १४
                            १३३ | विसंतु पीयं०
                     ३०
                                                २०
                                                       ઇઇ
                                                               १६४
विसफलो०
             38
                     ११
                            १५३
                                  विह्या इव०
                                                २१
विसंवालउडं०
                                                       ६०
                                                               १६७,
             ३६
                     १३
                            १४४
```

३७

ह्यं भद्दं व० १



८४ | हगाइ सत्थं० २०

॥ अर्हन् ॥

ह्य य

श्री वर्द्धमान वासी प्रचारक कार्यालय की आय व्यय का विवरण भिती वैशाख दुजा सुदी ३ सं० २०१० विक्रम

श्राय

दानवीरों द्वारा प्राप्त सहायता १४०१) श्री खे० स्या० जैन संघ पीही

श्री खे॰ स्या॰ जन संघ पाहा मारवाड़

४००) श्रीमान् बछराजजी कन्हैयालालजी सुराणा पीही हाल सुकाम बागलः

कोट ६०१) समस्त खटोड़ परिवार लाडपुरा

"

१२३) समस्त लुगावत परिवार १०१) गुप्तदानी श्राविका

११) श्री घतराजजी कर्नावट

प्तरि) श्री खें ० स्था० जैन संघ मकरी मारवाड़ १०१) श्री खें ० स्था० जैन संघ राघडि-

याद मारवाड़ १११) श्रीमान् दीपचंदजी सुराणा बड़ीपादू १२१) श्री खे० स्था० जैन संघ मोरि-

याना मारवाड़ १०१) श्रीमान् सूरजगलजी बुलराजजी बूंटीवाला

भूटावाल। ४१) श्रीमान् वगतावरमलजी टांटीयां वेलडांगा ४०) हम श्रामा गहकों से एए

४०) दस श्रविम ग्राहकों से ग्राप्त ३०॥) गुदड्मल खटोड लाडपुरा(मारवाड्) ४२⊏४॥)

> निवेदक गुद्दमल खटोड मंत्री श्री वद्धमान वाणी प्रचारक कार्यालय, लाडपुरा (मारवाद)

११०३) बत्तीस ब्याकमों की विषय सूची बनाने का व प्राचीन प्रतियों के पाठ मिलाने का पंडितों को परिश्रम दिया गया

६००) श्रीमान् शांतिलाल बनमाली सेंठ मैनेजर श्री गुरुकुल प्रेस, ज्यावर को मृत सुत्ताणि (दशवे-

कालिक उत्तराध्ययन नंदी श्रगाः-योगद्वार) के छपाई के लिये दिये =३१।) रेमिंगटन टाइप राइटर हिन्दी की बड़ी मशीन सूत्रों की प्रति-

त्तिपियां व प्रेस कापियां तैयार

६४%) संपादनकार्य के लिए आगमादि ग्रंथ मंगाये गये ७५) नंदीसूत्र का ब्लाक बनवाया ८) कार्यकर्ता का जाने थाने का खर्च

करने के लिए मंगाई गई

३१०२।८) २८६३८) श्री पोते बाकी रहे १८०३॥।) श्रीमान शंकरतातजी मुखोत ज्यावर वार्तो के पास २२४) श्रमर सिल्क स्टोर खगड़ा

मा० प्रेमचन्द्रजी खटोड लाडपुरा वालों में बाकी रहे ६४१८) स्वर्गीय श्रीमान् मूलचन्द्रजी मोदी फर्म लालचन्द्र हगाम-चन्द्र ब्यावर में रहे

२१=३८)

४२५४॥)

	r	
		-

॥ मूल सुनाणि ॥

(?)

दसवेत्रािक्यसुत्तं

[उक्कातियं]

नामकरगां-

मणुगं पहुच्च सेन्जंभवेण, निन्त्रहिया दसन्भयणा । वेयालियाइ ठविया, तम्हा दसकालियं नाम ॥

उद्धरगां--

त्रायप्पवायपुन्वा, निज्जूहा होइ धम्म-पन्नत्ती।
कम्मप्पवायपुन्वा, पिंडस्स उ एसणा तिविहा।।
सन्चप्पवायपुन्वा, निज्जूहा होइ वक्कसुद्धीउ।
श्रवसेसा निज्जूहा, नवमस्स उ तह्यवत्थूश्रो।।
बीश्रोऽवि श्र श्राएसो,गणिपिडगाश्रो दुवालसंगाश्रो।
एयं किर निज्जूहं, मणगस्स श्रग्रुग्गहहाए।।

विसयानि इसो-

पढमे धम्म-पसंसा, सोय इहेव जिणसासणिमिति ।
विइए धिइए सक्का, काउं जे एस धम्मोति ॥
तइए श्रायार-कहाउ, खुडिया श्रायसंजमोवाश्रो ।
तह जीव-संजमोऽवि य, होइ चउत्थिमि श्राज्यस्यणे ॥
भिक्ख-विसोही तव,संजमस्स गुणकारिया उ पंचमए।
छडे श्रायार-कहा, महई जोग्गा महयणस्स ॥
वयण-विभत्ती पुण,सत्तमिम पणिहाण-महमे मणियं।
नवमे विणश्रो दसमे, समाणियं एस भिक्खुति ॥
दो श्राज्यस्यणं चूलिय,विसीययंते थिरीकरणमेगं ।
विइय विवित्त चरिया, श्रसीयणगुणाइरेग फला ॥

—भद्रवाहु निर्युक्ति गाया १४, १६, १७, १८, २०, २१, २२, २३, २४,

विषय-संबंध-निर्देश:-

प्रथमाध्ययने धर्मप्रशंसा-

सचात्रैव-जिनशासने धर्मो, नान्यत्र इहैव निर्वधवृत्तिसद्भावात् । धर्माभ्युपगमे च सत्यपि मामूद्भिनवप्रव्रजितस्याष्ट्रतेः सम्मोह-इत्यत-स्तिनगा-करगार्थाधिकारवदेव द्वितीयाध्ययनम् । सा पुन्धृतिराचारे कार्या न त्वनाचारे-इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव-तृतीयाध्ययनम् ।

स च श्राचारः षड्जीवनिकायगोचरः प्राय-इत्यतश्चतुर्थमध्ययनम् ।
स च देहे स्वस्थे सित सम्यक् पाल्यते, स चाहारमन्तरेगा प्रायः स्वस्थो न
भवति, स च सावद्येतरभेद-इत्यनवद्यो प्राह्य-इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव
पश्चममध्ययनम् ।

गोचरप्रविष्टेन च सता स्वाचारं पृष्टेन तद्विदापि न महाजनसमसं तंत्रैव-विस्तरतः कथियतव्यः श्रिपि तु श्रालये-गुरवो वा कथयन्तीति वक्तव्यम् इत्यतस्त-दर्थाधिकारवदेव षष्ठमध्ययनम् ।

त्रालयगतेनाऽपि तेन, गुरुणा वा वचनदोषगुणाभिज्ञेन निरवद्यवचसा कथयितव्य इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव सप्तममध्ययनम् ।

तच निरवधं वचः श्राचारे प्रिशिहितस्य भवति इत्यतस्तदर्थाधिकारवदेवा- ष्टममध्ययनम् ।

त्राचारप्रिशिहतश्च यथोचितविनयसंपन्न एव भवतीत्यतस्तदर्थाधिकारवदेव-नवममध्ययनम् ।

एतेषु एव नवस्वध्ययनार्थेषु यो व्यवस्थितः स सम्यग् भिच्चरित्यनेन-सम्बन्धेन दसमं सभिद्यध्ययनम् ।

स एवं गुण्युक्तोऽपि भिद्धः कदाचित् कर्मपरतन्त्रत्वात्कर्मण्थः वलवत्त्वात्सीदेत् ततस्तस्य स्थिरीकरणं कर्चव्यमतस्तदर्थाधिकारवदेवन् पूडाह्यम्। —श्री हरिभद्रस्रिः

🕸 ग्रामोऽशु ग्रं तस्स समग्रस्स भगवश्रो महावीरस्स 🕸

दसवेत्रानियसुत्तं

दुमपुष्फिया नामं पढमज्भयणं

धम्मो मंगलग्रुक्किट्टं, श्रहिंसा संजमो तवो। देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सया मणो॥ १॥

जहा दुमस्स पुष्फेसु, ममरो त्रावियइ रसं।' न य पुष्फं किलामेइ, सो य पीगोइ ऋष्पयं॥ २॥

एमेए समणा मुत्ता, जे लोए संति साहुणो । विहंगमा व पुष्फेसु, दागभत्तेसगो रया ॥ ३॥

वयं च वित्तिं लब्भामो, न य कोइ उवहम्मइ। श्रहागडेसु रीयंते, पुष्फेसु भमरो जहा॥४॥

महुगारसमा बुद्धा, जे भवंति त्र्र्थाणिसिया । नाणापिंडरया दंता, तेण वुच्चंति साहुगो ॥ ५ ॥ सि बेमि ॥

अह सामण्णपुन्वयं नामं दुइअमन्भयणं

कहं नु कुजा सामएणं, जो कामे न निवारए। पए-पए विसीयंतो, संकप्पस्स वसं गत्रो ॥ १॥ वत्थ-गंध-मलंकारं, इत्थीत्रो सयणाणि य। श्रच्छंदा जे न मुंजंति, न से 'चाइ' ति वुचइ ॥ २ ॥ जे य कंते पिए भोए, लख्ने विपिष्टि कुव्वई। साही यो चयइ भोए, से हु 'चाइ'-ति वु चई ॥ ३॥ समाए पेहाए परिव्वयंतो, सिया मणो निस्सरई बहिद्धा। 'न सा महं नोवि ऋहंपि तीसे' इचेव तात्रो विगएज रागं ॥ 8 ॥ श्रायावयाही चय सोगमन्लं, कामे कमाही कमियं खु दुक्खं। छिंदाहि दोसं विणएज्ज रागं, एवं सुही होहिसि संपराए ॥ ५ ॥ पक्खंदे जलियं जोइं, धूमकेउं दुरासयं। नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधगो ॥ ६ ॥ धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा। वंतं इच्छिसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे।। ७॥ अहं च मोगरायस्स, तं चऽसि श्रंधगविष्हिगो ।

मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुस्रो चर ॥ = ॥

, 3]

जइतं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारिश्रो। वायाविद्धो व्व हडो, अद्विअप्पा भविस्ससि ॥ ६ ॥ तीसे सो वयगं सोच्चा, संजयाए सुभासियं। श्रंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपर्दिवाइश्रो ॥१०॥ एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा। विणियद्वंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमो ॥ ति बेमि ॥११॥ अह खुड्डियायारकहा नामं तइयमज्मयणं संजमे सुद्धित्रप्पागां, विष्पमुक्काण ताइगां। तेसिमेयमणाइंग्गां, निग्गंथागां महेसिगां।। १।। उद्देसियं कीयगढं, नियागं अभिहडाणि य। राइ-मत्ते 'सिणागे च, गंध "मल्ले य वीयगे ।। २ ॥ सिन्ही "गिहि-मत्ते"य, रायपिंडे "किमिच्छए"।

संवाहणां दंतपहोयणां य,
संपुच्छणां देह-पलोयणां य ॥ ३ ॥
अद्वावएं य नालीएं, छत्तस्सं य धारणद्वाए ।
तेगिच्छं पाहणां पाए, समारंभं च जोइणों ॥ ४ ॥
सेन्जायर-पिएडं च, ग्रासंदीपलियंकएं ।
गिहंतरनिसन्जां य, गायस्सुच्वहुणाणिं य ॥ ४ ॥
गिहिणो नेश्राविद्यं ,जा य श्राजीववित्तयां ।

तत्तानिवुडभोइत्तं ३०, स्त्राउरस्सरगागि ३० य ।। ६ ॥

. कॅदे^{३५}मृत्ते^{३६}य सच्चित्ते, फ्ले^{३°}षीए^{३८}य स्नामए ॥ ७ ॥

मृत्तए^{३२} सिंगवेरे^{३३} य, उच्छुखंडे^{३४} श्रनिव्दुडे ।

सोवचले दिधवे लोगे, रोमा-लोगे व श्रामए।
सामुद्दे पंसुखारे व मगो व महिन्य मण् । ८ ।।
धूवगो ति व मगो व मगो व महिन्य मणे व श्रामए ।। ८ ।।
श्रंजगे दंतवगो व मगो व महिन्य मणे व श्रामणे ।। ८ ।।
सञ्जमेयमणाइएगां, निगांथाण महिन्यां।
संजमिम श्र जुत्तागां, लहुभूयविहारिगां।।१०।।
पंचासवपरिएगाया, तिगुत्ता छसु संजया।
पंचिनगाहणा धीरा, निगांथा उज्जुदंसिणो ।।११।।

श्रायावयंति गिम्हेसु, हेमंतेसु श्रवाउडा। वासासु पडिसंलीणा, संजया सुसमाहिया।।१२॥ परिसह-रिक्ज-दंता, धूश्रमोहा जिइंदिया। सन्बरुक्खप्पहीणहा, पक्कमंति महेसिणो।।१३॥ दुक्कराइं करित्ताणं, दुस्सहाइं सहित्तु य।

केइऽत्थ देवलोएसु, केइ सिल्फंति नीरया ॥१४॥ खिवत्ता पुन्यकम्माइं, संजमेण तवेण य। सिद्धिमग्गमसुप्पत्ता, ताइणों परिणिन्वुड़ा ॥ त्ति वेमि ॥१४॥

अह छजीवणिया नामं चउत्थमज्भयणं

2000 C

सुयं मे आउसं! तेगं भगवया एवमक्खायं— इह खलु छजीवणिया नामन्क्रयगं— समग्रेगं सगवया महावीरेगं कासवेगं पवेद्दपा-सुत्रक्लाया सुपन्नता। ्रसेयं मे श्रहिजिजं श्रज्भयणं धम्मप्रणत्ती।

कयरा खलु सा छन्जीवणिया नामन्भयणं— समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइया-सुत्रक्खाया सुपएणत्ता । सेयं मे श्रहिन्जिनं श्रन्भयणं धम्मपन्नती । इमा खलु सा छन्जीवणिया नामन्भयणं—

समग्रेणं भगवया महावीरेण कासवेगां पवेइया-

सुत्रक्वाया सुपन्नता। सेयं मे त्रहिन्जिनं त्रन्मयगं धम्मपन्नती। तं जहा— पुढवि-काइया १, त्राउ-काइया २, तेज-काइया ३, वाज-काइया ४, वणस्सइ-काइया ५, तस-काइया ६,।

श्रनतथ सत्थ-परिणएगां। २ श्राऊ चित्तमंतमक्खाया श्रगोग-जीवा पुढी-सत्ता श्रनतथ सत्थ-परिग्राएगां।

१ पुढवी चित्तमंतमक्खाया अग्रेग-जीवा पुढो-सत्ता

- ३ तेऊ चित्तमंतमक्खाया यशोग-जीवा पुढी-सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएगां। ४ वाड चित्तमंतमक्खाया अशोग-जीवा पुढी-सत्ता
- श्रन्नत्थ सत्थ-परिणएगां।

 ध वणस्मई चित्तमंतमक्खाया श्रगोग-जीवा पुढ़ो-सत्ता
 श्रन्नत्थ सत्थ-परिणएगां।

तं जहा---

अग्गबीया मूलबीया पोरबीया खंधबीया बीयरुहा-

सम्मुच्छिमा तणलया-

वणस्सइकाइया सबीया चित्तमंतसक्खाया अग्रेग-जीवा

पुढो-सत्ता अन्नत्थ सत्थ-परिणएणं।

तं जहा-

श्रंडया पीयया जराउया रसया---

संसेइमा संमुच्छिमा उब्भिया उववाइया ।

जेसि केसि च पाणागां-अभिक्कंतं पहिक्कंतं संकुचियं पसारियं—

रुयं भंतं तसियं पलाइयं-**आगइ-गइ-विनाया, जे य कीडपयंगा**-

जा य कुंथुपिनीलिया— सन्वे बेइंदिया सन्वे तेइंदिया-

सन्वे चउरिंदिया सन्वे पंचिंदिया— सन्वे तिरिक्ख-जोिणया सन्वे नेरइया-सन्वे मगुत्रा सन्वे देवा-

सन्वे पाणा परमाहम्मिया। एसो खल्ल छहो जीवनिकात्रो 'तसकाउ त्ति' पवुच्चइ ।

, इञ्चेसि छएहं जीवनिकायाणं— नेव सयं दंडं समारंभिज्जा-

नेवन्नेहिं दंडं समारंभाविज्जा— दंडं समारंभंते वि श्रने न समगुजागोजजा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेगां-

६ से जे पुण इमे अगोगे बहवे तसा पाणा-

अ०४] मगोगं वायाए काएगां-

न करेमि न कारवेमि---करंतं पि अनं न समग्रुजाणामि-तस्स भंते !

पिकमामि निदामि गरिहामि-श्रपाणं वोसिरामि ।

पढमे भंते ! महञ्बए पाणाइवायात्रो वेरमर्गा। सन्वं भंते ! पाणाइवायं पचक्खामि---से सुहुमं वा वायरं वा

तसं वा थावरं वा नेव सयं पागे श्रइवाइज्जा---नेवऽन्नेहि पाणे ऋइवायाविज्जा—

पागो श्रइवायंते वि श्रन्ने न समग्रुजागोजा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेगां— मगोगं वायाए काएगां--

न करेमि न कारवेमि---करंतं-पि श्रनं न समग्रुजाणामि-तस्स भंते ! पिंडकमामि निंदामि गरिहासि— श्रपाणं वोसिरामि।

सव्वं भंते ! ग्रुसावायं पचक्खामि । से कोदा वा लोहा वा

पढमे भंते ! महन्वए उवडिस्रोमि सन्त्रास्रो पाणाइवायात्रो वेरमणं ॥ १ ॥ श्रहावरे दोच्चे भंते ! महन्वए ग्रुसावायाश्रो वेरमगां। भया वा हासा वा नेव सर्यं ग्रसं वैएजा नेवडकेहिं मुसं वायावेज्जा मुसं वयंते वि असे न समग्रुजागोजजा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेगां-मगोगं वायाए काएगां— न करेमि न कारवेमि-करंतं पि अनं न समग्रजागामि-तस्स भंते ! पिडकमामि निदामि गरिहामि अप्पार्गं वोसिरामि। दोचे भंते ! महन्वए उवड्रिश्रोमि सन्वात्रो मुसावायात्रो वेश्यगं ॥ २ ॥ अहावरे तचे भंते ! महन्वए अदिशादाणाश्रो वेरमणं। सव्वं भंते ! अदिनादाणं पचक्खामि । से गामे वा नगरे वा रएगो वा--अप्पं वा वहुं वा अर्ग् वा धूलं वा— चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा---नेव सयं अदिनं गिएहेज्जा-नेवऽसेहि ऋदिसं गिएहावेज्जा— अदिनं गिएहंते वि असे न समगुजागोज्जा जावजीवाए तिविहं तिविहेशं-मणेणं वायाए काएणं-न करेमि न कारवेसि करंतं पि अनं न समग्रजाणामि।

तस्स भंते !

दसवेद्यातियसुत्त पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि-अप्पागं वोसिरामि। तचे भंते ! महन्वए उवट्टिश्रोमि सन्बात्रो अदिनादाणात्रो वेरमणं ॥ ३ ॥ ब्रहावरे चउत्थे भंते ! महन्वए मेहुगात्रो वेरमणं-सन्वं भंते ! मेहुगां पचक्खामि से दिच्वं वा माणुसं वा तिरिक्ख-जोणियं वा नेव सर्यं मेहुण्ं सेवेज्जा-नेवन्नेहिं मेहुगां सेवावेज्जा-मेहुणं सेवंते वि अने न समणुजाणेजा जाव जिवाए तिविहं तिविहे गां-मगोगं वायाए काएगं न करेमि न कारवेमि करंतं पि अन्नं न समग्रुजाणामि---तस्स भंते ! पिंडक्क्रमामि निदामि गरिहामि-श्रपाणं वोसिरासि । चउत्थे भंते ! महव्वए उवड्डिग्रोमि-सन्वात्रो मेहुगात्रो वेरमणं। सन्वं भंते ! परिगाहं पच्चक्खामि ।

श्रहावरे पंचमे भंते ! महन्वए परिग्गहाश्रो वेरमणं-से अप्पं वा बहुं वा अर्गुं वा धूलं वा चित्तमंतं वा अचित्तमंतं वा नेव सर्य परिग्गहं परिगिएहेज्जा---नेवन्नेहिं परिग्गहं परिगिएहावेज्जा-

परिग्गहं परिगिएहते वि ऋने न समग्रुजागोज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेगं मगोगां वायाए काएगां---न करेमि न कारवेमि-करंतं पि अन्नं न सम्गुजाणाधि तस्स भंते ! पडिक्कमामि निदामि गरिहामि-अप्पाणं वोसिरामि। पंचमे भंते ! महन्वए उवद्वित्रोमि---सन्वाश्रो परिग्गहाश्रो वेरमणं ॥ ५ ॥ श्रहावरे छट्टे भंते ! वए राइ-भोयणात्रो वेरमणं सर्वं भंते ! राइ-मोयणं पच्चक्खामि से श्रसणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा---नेव सयं राइं मुंजेज्जा नेवन्नेहिं राईं मुंजावेज्जा राइं भुंजंते वि श्रने न समग्रुजागोज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेर्ण-मगोगां वायाए काएगां न करेमि न कारवेमि क्रंतं-पि अनं न समगुजागामि तस्म भंते ! पिडक्कमामि निदामि गरिहामि श्रप्पाणं वोसिरामि । छट्टे भंते वए उवद्विश्रोमि ।

सच्वात्रो राइ-भोयणात्रो वेरमणं।

इचेयाइं पंच महन्वयाइं राइ-भोयगा-वेरमगा-छट्टाइं

अत्त-हियद्वयाए उत्रसंपजित्ताणं विहरामि ॥ ६ ॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा--संजय-विरय-पडिहय-पच्चक्रलाय-पावकम्मे दिश्रावा राश्रो वा एगओ वा परिसागओ वा सुत्ते वा जागरमाणे वा से प्रदिवं वा भित्तं वा सिलं वा लेलुं वा---स-सरक्लं वा कार्यं स-सरक्लं वा वर्श्यं---, हत्थेण वा पाएगा वा कटुंण वा किलिंचेगा वा--श्रंगुलियाए वा सलागाए वा सलाग हत्थेण वा-न त्रालिहेडजा न विलिहेडजा---न घट्टेज्जा न भिंदेज्जा---श्रनं न श्रालिहावेजा न विलिहावेज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा

अशं आलिहंतं वा विलिहंतं वा

षष्टंतं वा भिदंतं वा न समग्रुजागोज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेशं मगोगं वायाए काएगां---

न करेमि न कारविम करंतं-पि अनं न समग्राजागामि तस्स भंते !

पिंदनकमामि निदामि गरिहामि अप्याणं वोसिरामि ॥ १ ॥

से भिक्खू वा भिक्खुगी वा

संजय-विरय-पड़िहय-पच्चवखाय-पावक्कमे— दिश्रा वा राश्रो वा—

एगस्रो वा परिसा-गस्रो वा-

सुत्ते वा जागरमाणे वा--

से उदगं वा श्रोसं वा हिमं वा महियं वा-करगं वा हरित गुगं वा सुद्धोदगं वा-

उदउल्लं वा कार्य उदउल्लं वा वत्थं-

सिणिई वा कायं सिणिई वा वत्थं—
 न श्राग्रसेजा न संपुरेजा—

न श्रावीलेजा न पवीलेजा— न श्रक्खोडेज्जा न पक्खोडेज्जा— न श्रायावेज्जा न पयावेज्जा।

न त्रायावज्जा न पयावज्जा। अदां न त्रामुसावज्जा न संफुसावज्जा -

न श्रावीलावेडजा न पवीलावेडजा— न श्रक्खोडावेडजा न पक्खोडावेडजा—

न त्रायावेडजा न पयावेडजा— श्रनं त्रामुसंतं वा संफुसंतं वा

श्रावीलंतं वा पवीलंतं वा श्रक्लोडंतं वा पक्लोडंतं वा

श्रायावंतं वा पयावंतं वा न समणुजागोज्जा

जावज्जीवाए तिविहं तिविहेशं
मर्गेगं वायाए काएगं

न करेमि न कारवेमि करंतं-पि अन्नं न समग्रुजाणामि

तस्स भंते ! पिंदामि गरिहामि—

अप्पार्गं चोसिरामि ॥ २ ॥

संजय-विरय-पड़िहय-पच्चक्रखाय-पावकम्मे

से भिक्खू वा भिक्खुणी वा--

एगस्रो वा एरिसा-गस्रो वा

दिश्रावा राश्रोवा

सुत्ते वा जागरमायो वा से अगणि वा इंगालं वा मुमुरं-वा अचि वा---जालं-वा , त्रालायं वा सुद्धागणि वा उक्कं वा---न भिंदेज्जा-न घट्टेजा न उंजेन्जा न उज्जालेजा न पजालेजा न निञ्वावेज्जा-**अनं न उंजावे**ज्जा न घट्टावेज्जा न भिंदावेज्जा न उज्जालावेज्जा न पज्जालावेज्जा न निवावेज्जा अनं उनंतं वा घट्टंतं वा भिदंतं उज्जालंतं वा पञ्जालंतं वा निन्वावंतं वा न समगुजागोञ्जा जावज्जीवाए तिविहं तिबिहेगां मखेणं वायाए काएणं-न करेमि न कारवेमि -करंतं-पि अन्नं न समग्रुजागामि तस्स भंते ! पिंडकमामि निंदामि गरिहामि अप्यांगं वोसिरामि ॥ ३ ॥ से भिक्ख् वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पड़िहय-पच्चक्खाय-पावक्कमे-दिआ वा रात्रो वा— एगओ वा परिसा-गओ वा-सुत्ते वा जागरमागोःवाः-

से सिएण वा विहुखेण वा तालियंटेण वा—

पत्तेगा वा पत्तभंगेण वा---

साहाए वा साहा-भंगेण वा---पिहुगोण वा पिहुण-हथेण वा----

चेलेगा वा चेल-ऋएगोण वा---हत्थेण वा मुहेण वा---

श्रपणो वा कायं वाहिरं वा वि पोग्गलं

न फूमेन्जा न वीएन्जा---

अनं न फूमावेजा न वीआवेज्जा---अनं फूमंतं वा वीयंतं वा न समग्रुजागोज्जा-

ः जावज्जीचाए तिविहं तिविहेशं

मग्रेगं वायाए काएगं न करेमि न कारवेमि करंतं-पि अनं न समगुजाणामि

तस्स भंते ! पिंदनक्रमामि निंदामि गरिहामि-

अप्पाणं वोसिरामि ॥ ४ ॥ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा संजय-विरय-पिहरय-पच्चक्खाय पावकम्मे-

दिश्रा वा राश्रो एगुओ वा परिसा-गुओ वा

सुत्ते वा जागरमाणे वा से वीएसु वा वीय-पड्डेसु वा-

रूढेसु वारूढ-पड्डेसु वा-जाएसु वा जाय-परहेसु वा-

दसवेत्रातियसुत्तं हरिएसु वा हरिय-पइट्डेसु वा-·छिनेसु वा छिन-पर्हेसु वा— सचित्तेसुवा सचित-कोल-पड़ि-निस्सिएसुवा न गच्छेज्जा न चिट्टेज्जा न निसीएज्जा न तुयट्टेज्जा-श्रकं न गच्छावेजा न चिट्ठावेज्जा-न निसीयावेजा न तुयट्टावेज्जा-अनं गच्छंतं वा चिहुतं वा-निसीयंतं वा तुयद्वंतं वा न समखुजाखेजजा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेगां-

मगोगं वायाए काएगं--न करेमि न कारवेमि-करंतं-पि श्रन्नं न समग्रुजाणामि-

पडिकमामि निदामि गरिहामि-श्रप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥ से भिक्ख् वा भिक्खुणी वा---

तस्स भंते!

संजय-विरय-पडिह्य-पचक्खाय-पावकम्मे---दिश्रा वा राश्रो वा-एगत्रो वा परिसा-गत्रो वा-, ्सुचे वा जागर-मागे वा-

से कीड़ं वा पयंगं वा कुंथुं वा पिवीलियं वा-हत्थंसि वा पायंसि वा बाहुंसि उरुंसि वा उदरंसि ता सीसंसि वा-वत्थंसि वा पिंड्ग्गहंसि वा कंबलगंसि वा पाय-पुच्छगंसि वा रय-हरगंसि वा गुच्छगंसि वा उडुगंसि वा दंडगंसि वा पीढगंसि वा फलगंसि वा सेज्जंसि वा संथारंगंसि वा

फलगांस वा संज्ञांस वा संशारगांस वा

श्रन्नयरंसि वा तहप्पगारे उवगरणजाए— तथ्रो संजयामेव—

पड़िलेहिय पड़िलेहिय पमिडिजय पमिडिजय—
एगंतमवशेडजा—

नो गां संघाय-मावजेज्जा ॥ ६ ॥

त्रजयं चरमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसइ।

वंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ १ ॥ श्रजयं चिट्टमाणो छ, पाण-भ्रुयाइं हिंसइ।

त्रजप । पहुनाणा ७, पाण-सूपाइ । हिसइ। बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं॥२॥ श्रजयं श्रासमाणो ७, पाण-भूयाइं हिंसइ।

वंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कड्यं फलं।। ३।।

अजयं सयमाणो उ, पाग-भूयाई हिंसइ। बंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं॥ ४॥ अजयं भुंजमाणो उ, पाण-भूयाई हिंसइ।

वंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ४॥ अजयं भासमाणो उ, पाण-भूयाइं हिंसइ। वंधइ पावयं कम्मं, तं से होइ कडुयं फलं ॥ ६॥

कहं चरे १ कहं चिट्ठे १, कहमासे १ कहं सए १ कहं भुंजंतो भासंतो, पाव-कम्मं न वंधइ १ ॥ ७ ॥ जयं चरे, जयं चिट्ठे, जयमासे जयं सए ।

जर्थ मुंजंती मासंतो, पाव-करमं न वंधइ ॥ ⊏ ॥

सन्वभूयप्पभूयस्स, सम्मं भूयाई पासत्री-। ्षिहियासवस्स दंतस्स, पाव-कम्मं न बंधइ॥६॥ पढमं नागं तत्रो दया, एव चिट्ठइ सन्वसंजए । अन्नाणी किं काही, किं वा नाहिइ सेय-पावगं ॥१०॥ सोचा जागाइ कल्लागां, सोचा जागाइ पावगं। उभयं पि जागाइ सोचा, जं सेयं तं समायरे ॥११॥ ^{''}ं जो 'जीवे वि न याणाइ, श्रजीवे वि न याणइ। जीवाजीवे अयागितो, कहं सो नाहीइ संजमं ॥१२॥ ं जो जीवे वि वियागोइ, श्रजीवे वि वियागाइ। जीवाजीवे वियागंतो, सो हु नाहीइ संजर्म १।१३॥ . जया जीवमजीवे य, दो वि एए वियाणइ। तया गइं बहुविहं, सन्वजीवाण जागाइ।।१४॥ . जया गई वहुविहं, सन्वजीवाण जागाइ। तया पुरुषां च पातं च, बंधं मोक्खं च जाणइ।।१५॥ . जया पुराणं च पावं च, बंधं मोक्खं च जाणइ। तयां निव्विदए मोए, जे दिन्वे जे य माणुसे ॥१६॥ ज्यां निव्वदए भोए, जे दिन्वे जे य माणुसे । तया चयइ संजोगं, सब्भितर-बाहिरं ॥१७॥ तया चयइ संजोगं, सब्भितर-बाहिरं। तया मुंडे भवित्ताणं, पन्त्रइय श्रणगारियं ॥१८॥ जया मूंडे भवित्तार्गं, पव्वइय ऋणगारियं। तया संवरमुकिहं, धरमं फासे अणुत्तरं ॥१६॥ जया संवरमुकिट्टं, धम्मं फासे अगुत्तरं। तया धुणइ कम्मरयं, अबोहिकलुसं कडं ॥२०॥ जया धुणइ कम्मर्यं, त्रबोहिकलुसं कडं। सव्वत्तर्ग नाणं, दंसणं चामिगच्छइ ॥२१॥ तया

जया सन्वत्तगं नागां, दंसगां चाभिगच्छंह। तया लोगमलोगं च, जिणो जाग्रह केवली ॥२२॥ जया लोगमलोगं च, जिखो जाणइ केवली। तया जोगे निरुंभित्ता. सेलेसिं पहिवजइ॥२३॥ जया जोगे निरुंभित्रा, सेलेसि पडिवज्जइ। तया कम्मं खिवताणं, सिद्धं गच्छइ नीरश्रो ॥२४॥ जया कम्मं वित्तार्गं, सिद्धं गच्छइ नीरश्रो। ंतया लोगभस्थयत्थो, सिद्धो हवइ सासत्रो ॥२५॥ सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स। उच्छोलणापहोत्रस्स,'दुलहा सुगइ' तारिसगंस्स ॥२६॥ तवोगुण-पहाशास्स,उज्जुमइ-खंति-संजमरयस्स । परीसहे जिगांतस्स, 'सुलहा सुगइ' तारिसगस्स ॥२७॥ पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति श्रमर-भवणाई। जेसि पित्रो तवो संजमो य, खंतिय वंभचेरं च ॥२८॥ इच्चेयं छजीवणियं, सम्मदिष्टी सया जए। दुल्लहं लहित्तुं सामर्ग्णं, कम्मुगा न विराहिजासि ॥२६॥ ॥ ति वेमि ॥

अह पिंडेसणा नामं पंचमज्भयणं

पढमो उद्देखो .

संपत्ते भिक्खकालिम्, असंभंतो अमुच्छित्रो । इमेण कमजोगेण, भत्तपार्गं गवेसए।। १॥ से गामे वा नयरे वा, गोयरग्गात्रो मुणी। चरे मंदमगुव्यिग्गो, अविस्खत्तेण चेयसा ॥ २ ॥ पुरश्रो जुगमायाए, पेहमागो महि चरे। वज्जंतो बीय-हरियाए, पांगी य दग-मिट्टर्य ।। ३ ॥ श्रोवायं विसमं खाणुं, विज्जलं परिवज्जए । संक्रमेख न गच्छेजा, विज्ञमाखे परक्रमे ॥ ४ ॥ पवडंते व से तत्थ, पक्खलंते व संजए। हिंसेज पाण-भूयाई, तसे ऋदुव थावरे ॥ ५ ॥ तम्हा तेण न गच्छेजा, संजए सुसमाहिए । , सइ अन्नेण मग्गेण, जयमेव परक्कमे ।। ६ ।१ इंगालं छारियं रासिं, तुसरासि च गोमयं। ससरक्खेहिं पाएहिं, संजन्नो तं नइकक्मे ॥ ७ ॥ न चरेज वासे वासंते; महियाए व पहंतिए। महावाए व वायंते, तिरिच्छ-संपाइमेसु वा ॥ ८ ॥ न चरेज वेसा-सामंते, वंभचेरवसागुए। बंभयारिस्स दंतस्स, होजा तत्थ विसोत्तिया। ह ॥ त्रणायणे चरंतस्स, संसम्मीए श्रमिक्खणं। होज वयार्णं पीला, सामएणिम य संसम्रो ॥१०॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं। वज्जए वेस-सामंतं, मुणी एगंतमस्सिए।।११॥ साणं सूइयं गाविं, दित्तं गोणं हयं गयं। संडिब्मं कलहं जुद्धं, दूरस्रो परिवज्जए ॥१२॥ त्रणुत्रए नावगए, त्रपहिट्ठे त्रणाउले। इंदियाई जहाभागं, दमइत्ता मुणी चरे ॥१३॥ दवदवस्स न गच्छेजा, भाससाणी य गीयरे। हसंतो नाभिगच्छेजा, इंल उचावयं सया ॥१४॥ श्रालोयं थिग्गलं दारं, संधि दगभवणाणि य। चरंतो न विनिज्माए, संकट्ठाणं विवज्जए।।१५॥ रहो , गिहवईगां च, रहस्सारिक्खयागा य। संकिलेसकरं ठाणं, दूरश्रो परिवज्जए ॥१६॥ पडिकुट्ट-कुलं न पविसे, मामगं परिवज्जए-। अचियत्त-कुलं न पविसे, चियत्तं पविसे कुलं ॥१७॥ साणीपावारपिहियं, अप्पणा नावपंगुरे। कवार्ड नो पणोल्लेखा, श्रोग्गहंसि श्रजाइया ॥१८॥ गोयरगगपविद्वो उ, वच्च-मुत्तं न धारए। श्रोगासं फासुयं नच्चा, श्रगुन्नविय वोसिरे ॥१६॥ नीयंदुवारं तमसं, कोट्टगं परिवन्जए। श्रचक्खुविसस्रो जत्थ, पाणा दुप्पडिलेहगा ॥२०॥ जत्थ पुष्काइं वीयाइं, विष्पइएणाइं कोद्वए। श्रहुणोवलित्तं उद्घं, दहुगां परिवज्जए ॥२१॥ एलगं दारगं सार्णं, वच्छगं वावि कोहए। उद्घंधिया न पविसे, विउहित्ताण च संजए ॥२२॥

श्रसंसत्तं पलोएजा, नाइद्रावलोयए।
उप्पुद्धं न विनिज्भाए, नियद्धिज श्रयंपिरो।।२३॥
श्रइभूमिं न गच्छेज्जा, गोयरग्गगश्रो ग्रुणी।
ग्रुलस्स भूमिं जाणित्ता, मिय-भूमिं परक्षमे।।२४॥
तत्थेव पिललेहिज्जा, भूमिभागं वियक्खणो।
सिणाणस्स य वचस्स, संलोगं परिवज्जए।।२५॥
दगमद्दियश्रायाणे, बीयाणि हरियाणि य।
परिवज्जंतो चिद्देज्जा, सर्व्विदयसमाहिए।।२६॥
तत्थ से चिद्दमाणस्स, श्राहरे पाणमोयणं।
श्रकण्यं न गेणिहज्जा, पिडगाहेज्ज कण्पियं।।२७॥
श्राहरंती सिया तत्थ, परिसाहेज्ज कण्पयं।।२७॥
श्राहरंती सिया तत्थ, परिसाहेज्ज भोयणं।

संमदमाणी पाणाणि, बीयाणि हरियाणि य । श्रमंजमकरिं नच्चा, तारिसं परिवज्जए ॥२६॥ साहट्ड निविखविचाणां, सचित्तं घडियाणि य । तहेव समणद्वाए, उदगं संपणोल्लिया ॥३०॥ श्रोगाहद्वा चलइ्चा, श्राहरे पाणभोयणां । दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३१॥

पुरेकम्मेण हत्थेण, दन्वीए भायणेण वा। दितियं पिंडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥३२॥ एवं उदछन्ने सिसिणिद्धे, ससरक्खे मिट्टियाऊसे। हिरयाले हिंगुलए, मणोसिला श्रंजणे लोणे ॥३३॥ गेरुय-विणय-सेहिय, सोरिट्टय-पिट्ट-कुक्कुस-कए य। उक्किट्टमसंसट्टे, संसट्टे चेव वोद्धन्वे ॥३४॥

त्रसंसद्वेण हत्थेण, दन्वीए भायग्रेण वा। दिज्जमार्गं न इच्छिज्जा, पच्छा-कम्मं जिहं भवे ॥३५॥ संसद्वेण य हत्थेण, दन्वीए भायगोगा वा। दिज्जमार्गं पिडच्छिज्जा, जं तत्थेसिग्यं भवे ॥३६॥ दोगहं तु मुंजमाणाणं, एगो तत्थ' निमंतए। दिन्जमार्गं न इच्छेन्जा, छंदे से पहिलेहए ॥३७॥ दोगहं तु मुंजमाणागां, दो वि तत्थ निमंतए । दिज्जमार्गं पिडच्छेज्जा, जं तत्थेसणियं भवे ॥३८॥ गुन्विणीए उवन्नत्थं, विविहं पाणमीयगां। भूंजमार्गं विवज्जेन्जा, भुत्तसेसं पडिच्छए ॥३२॥ सिया य समग्रहाए, गुन्तिणी कालमासिगी। उद्दिया वा निसीएन्जा, निसन्ना वा पुरादुए ॥४०॥ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकप्पियं। दितियं पिडयाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४१॥ थणमं पिज्जमाणी, दारगं वा कुमारियं। तं निक्खविश्र रोश्रंतं, श्राहरे पाणमोयणं ॥४२॥ - तं भन्ने भत्तपाणं तु, संजयाण अकष्पियं। दितियं पिटयाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४३॥ जं भवे भत्तपागां तु, कप्पाकप्पम्मि संकियं। दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४४॥ दगवारएण पिहियं, नीसाए पीढएण वा। लोहेणं वा वि लेवेण, सिलेसेण व केणइ॥४५॥ तं च उब्भिदित्रा दिजां, समणद्वाए व दावए। दिंतियं पिडयाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥४६॥

भ्रसणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा। जं जाणेज सुणेजा वा, दाणहा पगडं इमं ॥४७॥ तारिसं भत्तपाणं तु, संजयाण श्रकप्पियं। दितियं पिडयाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥४८॥

श्रसणं पाण्मं वा वि, खाइमं साइमं तहा । जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, पुरणद्वा पगढं इमं ॥४६॥ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण श्रकप्पियं। दितियं पडियाइक्छे, न मे कप्पइ तारिसं॥५०॥

श्रसणं पाण्यं वा वि, खाइमं साइमं तहा। जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, विणमट्ठा पगडं इमं ॥५१॥ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण श्रकप्पयं। दितियं पिडयाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥५२॥

श्रसणं पाइगं वा वि, खाइमं साइमं तहा। जं जाणेज्ज सुणेज्जा वा, समणद्वा पगडं इमं ॥५३॥ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाणं श्रकप्पियं। दितियं पडियाइक्खे; न में कप्पइ तारिसं॥५४॥

उद्देसियं कीयगढं, पूइकम्मं च आहडं।
अन्मोयर पामिचं, मीसनायं च वन्नए।।५५॥
उग्गमं से अ पुच्छेन्ना, कस्सद्वा केण वा कढं।
सोच्चा निस्संकियं सुद्धं, पिडगाहेन्न संनए।।५६॥
असगं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा।
पुष्फेस होन्न उम्मीसं, वीएस हरिएस वा।।५७॥
तं भवे भत्तपाणं तु, संनयाण अकिप्यं।
दितियं पिडयाइवखे, न मे कष्पइ तारिसं।।५८॥

श्रसणं पाणगं वा वि, खाइमं साइमं तहा। उदगंमि होज्ज निविखत्तं उत्तिग-पणगेसु वा ॥५६॥ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण श्रकिपयं। दितियं परियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६०॥ श्रसणं पाणगं वा वि, 'खाइमं साइमं तहां। तेउम्मि होज निविखत्तं, तं च संघड्डिया दए ॥६१॥ तं भवे मत्तपाणं तु, संजयाण अकिप्पयं। दितियं पड़ियाइक्खे, न मे कप्पइंतारिसं ॥६२॥ एवं उस्सिक्या ग्रोसिक्या, उज्जालिया पञ्जालिया निन्वाविया। उस्सिचिया निस्सिचिया, उवत्तिया ऋोयारिया दए ॥६३॥ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण अकिष्पयं। दिंतियं पिड्याइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं ॥६४॥ होज कट्टं सिलं वा वि, इड्डालं वा वि एगया। ठवियं संकमद्वाए, तं च होज चलाचलं ॥६४॥ न तेण भिक्खु गच्छेजा, दिङ्घो तत्थ असंजमो । गंभीरं सुसिरं चेव, सन्विदियसमाहिए ॥६६॥ निस्सेगि फलगं पीढं, उस्सवित्तागमारुहे। मंचं कीलं च पासायं, समग्रहाए व दावए ॥६७॥ दुरुहमाणी पवडेजा, हत्थं पावं व लूसए। पुढिवजीवे वि हिंसेजा, जे य तं निस्सिया जगे ॥६ =॥ एयारिसे महादोसे, जाणिऊण महेसिणो। तम्हा मालोहडं भिक्खं, न पडिगिएहंति संजया ॥६६॥ कंदं मूलं पलंबं वा, आमं छिनं च सनिरं। तुंबागं सिंगवेरं च, श्रामगं परिवज्जए ॥७०॥

तहेव सत्तु-चुएणाई, कोल-चुएणाई स्रावरो । सक्कुलि फाणियं पूर्य, स्रनं वा वि तहाविहं ॥७१॥ विक्कायमार्गं पसढं, रएगं परिफालियं। दितियं परियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥७२॥

बहुअडियं पोग्गलं, श्रिशामिसं वा बहुकंटयं। श्रित्थियं तिंदुयं विल्लं, उच्छुखंडं च सिंबलि ॥७३॥ श्रप्पे सिया मोयणजाए, बहुउज्भियधम्मिए। दिंतियं पडियाइक्खे, न मे कप्पइ तारिसं॥७४॥

तहेबुचावयं पाणं, अदुवा वारधोश्रणं।
संसेइमं चाउलोदगं, अहुणाधोश्र विवज्जए।।७५॥
जं जाणेज चिराधोयं, मईए दंसणेण वा।
पिडपुच्छिऊण सोचा वा, जं च निस्संकियं भवे।।७६॥
अजीवं पिरण्यं नचा, पिडगाहेज संजए।
अह संकियं भवेजा, आसाइत्ताण रोयए।।७७॥
योवमासायणहाए, हत्थगम्मि दलाहि मे।
मा मे अचंबिलं पूइं, नालं तएहं विणित्तए।
तं च अचंबिलं पूइं; नालं तएहं विणित्तए।
दिंतियं पिडयाइक्खे, न मे कष्पइ तारिसं।।७६॥

तं च होज अकामेगां, विमगोगा पहिन्छियं। तं अप्पणा न पिवे, नो वि अन्नस्स दावए ॥८०॥ एगंतमवक्कमित्ता, अचित्तं पहिलोहिया। जयं परिद्ववेज्जा, परिद्वप पहिकमे ॥८१॥

सिया य गोयरग्गञ्जो, इच्छेज्जा परिमोत्तुत्रां। कोट्टगं भित्तिमूलं वा, पडिलेहित्ताण फासुयं॥=२॥

श्रणुन्नवित्तु मेहावी, पडिच्छन्नम्मि संवुडे। हत्थगं संपमिं जत्ता, तत्थ भूं जिज्ज संजए ॥८३॥ तत्थ से भूंजमाणस्स, अद्विधं कंटस्रो सिया। तर्ग-कट्ट-सकरं वा वि, अनं वा वि तहाविहं ॥८४॥ तं उक्खिवित्त न निक्खिवे, श्रासएगा न छुड्डए। हत्थेण तंँ गहेऊणं, एगंतमवक्कमे ॥८४॥ एगंतमवक्रमित्ता. श्रचित्तं पडिलेहिया। जयं परिद्ववेज्जा, परिद्वप्य पडिकमे ॥८६॥. सिया य भिष्खु इच्छेज्जा, सेज्जमागम्म भोत्तु अं। सपिंडपायमागम्म, उडुऋं पडिलेहिया।।८७॥ विणएगा पविसित्ता, सगसे गुरुणो ग्रुणी। इरियावहियमायाय, त्रागश्रो य पडिक्कमे ॥८८॥ श्रामोएत्ताण नीसेसं, श्रइयारं जहक्कमं। गमणागमणे चेव, भत्तपाणे य संजए।।⊏६।। उज्जुपनो त्रगुव्यिगो, त्रव्यक्खित्तेग चेयसा । श्रालोए गुरुसगासे, जंजहा गहियं भवे ॥६०॥ न सम्ममालोइयं होज्जा, पुव्चि पच्छा व जं कडं । पुणो पडिक्कमे तस्स, वोसिट्टो चिंतए इमं ॥६१॥ श्रहो जिगोहिऽसावज्जा, वित्ती साहूण देसिया। मोक्खसाहगाहेउस्स, साहुदेहस्स धारणा ॥६२॥ नमोकारेण पारेता, करेता जिणसंथवं। सज्भायं पद्ववित्ताणं, वीसमेज्ज खणं मुणी ॥६३॥ वीसमंतो इमं चिंते, हियमहं लाभमहित्रो। जइ मे अगुग्गहं कुन्जा, साहू होन्जामि तारिश्रो ॥६४॥ साह्वो तो चियत्तेगां, निमंतेज्ज जहकमं। जइ तत्थ केइ इच्छेजा, तेहिं सिद्धं तु भुंजए ॥६५॥

श्रह कोइ न इच्छेज्जा, तश्रो भुंजेज्ज एक्कश्रो।
श्रालोए भायणे साहू, जयं अपिरसाडियं ।।६६॥
तित्तगं व कडुयं व कसायं,श्रंबिलं व महुरं लवणं वा।
एयलद्धमन्नहुपउत्तं, महु-घयं व भुंजेज संजए ।।६७॥
श्ररसं विरसं वा वि, सह्यं वा श्रस्ह्यं।
उन्नं वा जह वा सुक्कं, मंधुकुम्मासभोयणं ।।६८॥
उपमं नाइहीलेजा, श्रपं वा बहु फासुयं।
सहालद्धं सहाजीवी, भुंजिजा दोसविजयं।।६६॥
दृन्नहा उ सहादाई, सहाजीवी वि दृन्नहा।
सहादाई सहाजीवी, दो वि गच्छंति सुगाई ।।१००॥
। ति बेमि ।।

पंचमज्भयणे—बीओ उद्देसो

पिंडिगाहं संलिहित्ताणं, लेवमायाए संजए।

दुग्गंधं वा सुगंधं वा, सन्वं भुंजे न छड़ए।। १।।

सेज्जा निसीहियाए, समावन्नो य गोयरे।

श्रयावयद्वा भोचाणं, जह तेण न संथरे।। २।।

तश्रो कारणसुष्पन्ने, भत्तपाणं गवेसए।

विहिणा पुन्वउत्तेणं. इमेणं उत्तरेण य।। ३।।

कालेण निक्खमे भिक्ख्, कालेण य पिंडकमे।

श्रकालं च विविज्जित्ता, काले कालं समायरे।। ४।।

श्रकालं चरित भिक्ख्, कालं न पिंडलेहिसे।

श्रपाणं च किलामेसि, सिन्नवेसं च गरिहिसे।। ॥।

सह काले चरे भिक्ख्, कुज्जा पुरिसकारियं।

श्रलामो त्ति न सोएज्जा, तवी ति श्रहियासए।। ६।।

तहेबुच्चावया पाणा, मत्तद्वाए समागया। तं उज्जुयं न गच्छिज्जा, जयमेव परकक्रमे ॥ ७॥ गोयरग्गपविद्वी उ, न निसीयज्ज कत्थइ। कहं च न पबंधेज्जा, चिद्वित्ताण व संजए।। 🖘।। अग्गलं फलिहं दारं, कवाडं वा वि संजए। ं श्रवलंबिया न चिट्ठेज्जा, गोयरगगगत्रो मुणी ॥ ६ ॥ समगां माहगां वा वि, किविगां वा वगाीमगं। उवसंक्रमंतं भत्तहा, पाग्रहाए व संजए।।१०॥ तं अइकमित् न पविसे, न चिट्टे चक्खुगोयरे। एगंतमवक्तमित्ता, तत्थ चिट्ठेज्ज संजए ॥११॥ वणीसगस्स वा तस्स, दायगस्मुमयस्स वा। श्रपित्यं सिया होन्जा, लहुत्तं पवयणस्स वा ॥१२॥ पिंसेहिए व दिने वा, तत्रो तिम नियत्तिए। उवसंक्रमेडन भत्तद्वा, पाणद्वाए व संजए ॥१३॥ उपलं पंडमं वा वि, कुमुयं वा मगदंतियं! त्रनं वा पुष्फसचित्तं, तं च संलुंचिया दए ॥१४॥ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण श्रकप्पियं। दिं तियं पडियाइक्खे, न मे कपइ तारिसं ॥१४॥ उप्पत्तं पउमं वा वि, कुप्रुयं वा मगदंतियं। श्रनं वा पुष्फसचित्तं, तं च संमिद्या दए ॥१६॥ तं भवे भत्तपाणं तु, संजयाण ऋकिष्पयं। दितियं पडियाइक्ले, न मे कप्पइ तारिसं।।१७॥ सालुयं वा विरालियं, कुमुयं उपलनालियं। मुगालियं सासवनालियं, उच्छुखंडं श्रनिच्छुडं ॥१८॥

तरुणमं वा पवालं, रुक्खस्स तणगस्स वा । अन्नस्स वा वि हरियस्स, आमगं परिवज्जए ॥१६॥ तरुणियं वा छिवाडि, आमियं मजियं सहं। दितियं पडियाइक्खे, न मे कप्पेइ तारिसं॥२०॥

तहा कोलमणस्सनं, वेलुयं कासवनालियं।
तिलपप्पडगं नीमं, आमगं परिवज्जए ॥२१॥
तहेव चाउलं पिट्टं, वियडं वा तत्तनिन्वुडं।
तिलपिट्ट-पूड्रपिएणागं, आमगं परिवज्जए ॥२२॥
किवेहं माउलिंगं च, गूलगं मूलगत्तियं।
आमं असत्थपरिणयं, मण्सो वि न पत्थए ॥२३॥
तहेव फलमंथूिया, बीयमंथूिण जाियाया।
विहेलगं पियालं च, आमगं परिवज्जए ॥२४॥
सम्रुयाणं चरे भिक्ख, कुलं उच्चावयं स्था।
नीयं कुलमङ्कम्म, उसहं नािभधारए ॥२५॥

त्रदीणो वित्तिमेसेजा, न विसीएज पंडिए । त्रप्रुच्छित्रो भोयणम्मि, मायने एसग्रारए॥२६॥

बहुं परघरे त्रात्थि, विविद्दं खाइमसाइमं। न तत्थ पंडिखो कुप्पे, इच्छा दिज्ज परो न वा ।।२७॥ सयगासणवर्त्थं वा, भत्त-पार्गं व संजए। त्रादितस्त न कुप्पेडजा, पचक्खे विय दीसस्रो ।।२८॥

हत्थियं पुरिसं वा वि, इहरं वा महल्लगं। वंदमार्गं न जाएन्जा, नो य गां फरुसं वए ॥२६॥ जे न वंदे न से कुप्पे, वंदिश्रो न समुक्तसे। एवमन्नेसमाग्रस्स, सामगणमणुचिट्टइ ॥३०॥

सिया एगइश्रो लड्डूं, लोभेग विशिगृहइ। मा मेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए ॥३१॥ श्रत्तद्वा गुरुत्रो लुद्धो, वहुं पावं पक्तव्वइ। दुत्तोसत्रो य से होइ, निन्दार्ण च न गच्छइ ॥३२॥ सिया एगइत्रो लड्डं, विविहं पाणभीयगं। मद्गं भद्गं भोचा, विवएणं विरसमाहरे ॥३३॥ जागंतु ता इमे समणा, श्राययही श्रयं मुगी। संतुद्वो सेवए पंतं, लूहवित्ती सुतोसश्रो ॥३४॥ पूयणहा जसोकामी, माण-संमाणकामए। बहुं पसवइ पावं, मायासल्लं च कुव्वइ॥३५॥ सुरं वा मेरगं वा वि, ऋतं वा मज्जगं रसं। ससक्खं न पिवे भिक्खू, जसं सारक्खमप्पणो ॥३६॥ पियए एगओ तेणो, न मे कोइ वियाणइ। तस्स परसह दोसाइं, नियडिं च सुगोह मे ॥३०॥ वह्दइ सोंडिया तस्स, मायामोसं च मिक्खुणो । श्रयसो य श्रनिन्त्राणं, सयय च श्रसाहुया ॥३८॥ निच्चुविग्गो जहा तेणो, अत्तकम्मेहिं दुम्मई। तारिसो मरणंते वि, नाराहेइ संवरं ॥३६॥ श्रायरिए नाराहेइ, समगो यावि तारिसे। गिहत्था वि गां गरिहंति, जेण जागांति तारिसं ॥४०॥ एवं तु अगुगाप्पेही, गुणागां च विवन्जस्रो।

तारिसो मरगंते वि, नाराहेइ संवरं ॥४१॥ तवं कुन्वइ मेहावी, पणीयं वज्जए रसं। मजज-प्यमायविरञ्जो, तवस्सी श्रइउकसो ॥४२॥

तस्स पस्सह कल्लागां, त्र्रागोनसाहुपूड्यं। विउलं अत्थरंजुत्तं, कित्तइस्तं सुग्रेह में ॥४३॥ एवं तु स गुग्पोही, अगुणागं च विवज्जस्रो । 'तारिसो मरगंते वि, श्राराहेइ संवरं ॥४४॥ श्रायरिए श्राराहेइ, समग्रे यावि तारिसे। गिहत्था वि गां पूर्यति, जेगा जागांति तारिसं ॥४५॥ तवतेगो वयतेगो, रूवतेगो य जे नरे। श्रायारभावतेषो य, कुन्वइ देविकिन्विसं ॥४६॥ लद्धण वि देवत्तं, उववन्नो देविकव्विसे। तत्थावि से न याणाइ, किं में किच्चा इमं फलं ॥४७॥ तत्तो वि से चइत्ताणं, लब्भिही एलमूत्र्रयं। नरयं तिरिक्खजोणि वा, बोही जत्थ सुदुल्लहा ॥४८॥ एयं च दोसं दहूणं, नायपुत्तेण भासियं। श्रग्रमायं पि मेहाँवी, मायामोसं विवज्जए ॥४६॥ सिक्खिऊण भिक्खेसणसोहिं, संजयाण बुद्धाण सगासे। तत्थ भिक्खु सुप्पशिहिइंदिए, ्तिव्वलज्जगुणवं-विहरेज्जासि ॥५०॥ ति वेमि ॥ अह महिलयायार कहा नामं छट्टमन्भयणं

(धम्मत्थकाम)

नाण-दंसण-संपन्नं संजमे य तवे रयं।

गणिमागमसंपन्नं, उज्जागम्मि समोसढं॥१॥

रायाणो रायमच्चा य, माहगा श्रदुव खित्तया।

पुच्छंति निहुयप्पाणी, कहं भे श्रायारगीयरी ॥ २ ॥

तेसिं सो निहुओं दंतो, सन्वभूयसुहावहो। सिक्खाए सुसमाउत्तो, श्रायक्खइ वियक्खणो ॥ ३ ॥ हंदि धम्मत्थकामाणां, निग्गं ाणां सुगोह मे । ्रित्रायारगोयरं भीमं, सयलं दुरहिद्धियं ॥ ४ ॥ ननत्थ एरिस बुत्तं, जं लोए परमदुचरं। विउल्रह्मणभाइस्स, न भूयं न भविस्सइ॥ ५॥ सखुंडुगवियत्ताणं, वाहियाणं च जे गुणा। श्रखंडफुडिया कायन्त्रा तं सुगोह जहा तहा ॥ ६ ॥ दस श्रद्ध य ठाणाइं, जाइं वालोऽवरज्मइ। ्तत्थ अएणयरे ठाणे, निग्गंथतात्रो भस्सइ ॥ ७ ॥ वयछकं कायछंकं दे, अकप्पों गिहिभायणं रे। पलियंक ' निसेजा ' य, सिणागां ' सोहवज्रगां ।। = 11 (१) तित्थमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं। श्रहिंसा निउणा दिद्वा, सन्वधूएसु संजमो ॥ ६ ॥ जावंति लोए पाणा, तसा ऋदुव थावरा। ते जाणमजागं वा, न हगो नो वि घायए ॥१०॥ सन्वे जीवा वि इच्छंति, जीविउं न मरिजिउं। तम्हा पाणवहं घोरं, निग्गंथा वज्जयंति गां।।११।। (२) अप्पणहा परहा वा, कोहा वा जइ वा भया । हिंसगं न मुसं चूया, नो वि श्रनं वयावए ॥१२॥ मुसावात्रो व लोगंमि, सन्वसाहृहिं ग्रहियो। अविस्सासी य भूयाणं, तम्हा मोसं विवज्जए ॥१३॥

(३) चित्तमंतमचित्तं वा, श्रप्पं वा जइ वा वहुं। दंतसोहणमेत्तं पि, श्रोग्गहंसि श्रजाइया ॥१४॥

i i

तं अपणा न गेएहंति, नो वि गिएहावए परं । ः अनं वा गिएहमाणं पि, नाणुजाणंति संजया ॥१५॥ (४) अवंभचरियं घोरं, पमायं दुरहिद्वियं। नायरंति मुणी लोए, भेयाययणविज्ञणो ॥१६॥ यहादोससमुस्सयं। मूलमेयसहम्मस्स, तम्हा भेहुणसंसम्मं, निम्मंथा वज्जयंति गं।।१७॥ (५) विद्युक्भेइमं लोगां, तेल्लं सप्पि च फाणियं। ंन ते सन्निहिमिच्छंति, नायपुत्त-वत्रोरया ॥१८॥ लोहस्सेसं अणुष्कासो, मने अन्यरामित्र । ेजे सिया सिन्हीकामे, गिही प्ववइए न से ॥१६॥ जं पि वत्थं व पायं वा, कंबलं पायपुंछ्यां। तं पि संजमलजिद्धा, धारंति परिहरंति य ॥२०॥ न सो परिग्गहो बुत्तो, नायपुत्तेण ताइणा। ्रमुच्छा परिग्गहो बुत्तो, इइ बुत्तं महेसिणा ॥२१॥ सन्वत्थुवहिणा बुद्धा, संरक्खणपरिग्गहे । अवि अपणो वि देहंमि, नायरंति ममाइयं ॥२२॥ (६) अहो निचं तबोकम्मं, सव्बबुद्धेहिं विषणयं। 🔢 जा य लजासमा वित्ती, एगमत्तं च मोयर्णं ॥२३॥ संतिमे सुहुमा पाणा, तसा श्रदुव थावरा । जाई राश्रो श्रपासंतो, कहमेसणियं चरे ॥२४॥ उदउद्घं बीयसंसत्तं, पाणा निव्विषया महिं। दिश्रा ताई विवन्जेजा, राश्रो तत्थ कहं चरे ॥२५॥ एयं च दोसं दट्ठूणं, नायपुत्तेश भासियं। त सन्वाहारं न भुंजंति; निग्गंथा राइमोयगां ॥२६॥ (१) पुढिवकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।२७॥
पुढिवकायं विहिंसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे।।२०॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
पुढिवकायसमारंभे, जावज्जीवाए वज्जए।।२६॥

(२) आउकायं न हिंसंति, मणसा वयसा कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया।।३०॥
आउकायं विहिसंतोः, हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे॥३१॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्हणं।
आउकायसमारंमं, जावज्जीवाए वज्जए॥३२॥

(३) जायतेयं न इच्छंति, पावगं जलइत्तए।
तिक्खमन्नयरं सत्थं, सन्वन्नो वि दुरासयं॥३३॥
पाईगां पिडणं वा वि, उड्ढं श्रणुदिसामवि।
श्रहे दाहिणन्नो वा वि, दहे उत्तरन्नो वि य ॥३४॥
भूयाणमेसमाधात्रो, हन्ववाहो न संसन्नो।
तं पईवपयावद्वा, संजया किंचि नारभे॥३५॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
तेउकायसमारंभं, जावज्जीवाए वज्जए॥३६॥
श्रमिलस्स समारंभं, बुद्धा मन्नंति तारिसं।
सावज्जवहुलं चेयं, नेयं ताईहिं सेवियं॥३७॥

(४) तालियंटेण पत्तेण साहाविहुयगोण वा । ं न ते वीइउमिच्छंति वीयावेऊण वा परं ॥३८॥ जं पि तत्थं च पायं वा कंत्रलं पायपुंछेण । न ते वायप्रुईरंति, जयं परिहरंति य ॥३६॥ तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइत्रड्ढणं। वाउकायसमारंभं जावज्जीवाए वज्जए ॥४०॥

(५) वगस्सइं न हिसंति, मणसा त्रयस कासया।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥४१॥
वगस्सइं विहिसंतो हिंसइ उ तयस्सिए।
तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य श्रचक्खुसे ॥४२॥
तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढणं।
वगस्सइ-समारंमं, जावजीवाए वज्जए॥४३॥
(६-१२) तसकायं न हिसंति,मणसा वयस कायसा।
तिविहेण करणजोएण, संजया सुसमाहिया ॥४४॥
तसकायं विहिसंतो, हिंसइ उ तयस्सिए।

तसे य विविहे पाणे, चक्खुसे य अचक्खुसे ॥४५॥

तसकायसमारंभं, जावजीवाए वजाए ॥४६॥

तम्हा एयं वियाणित्ता, दोसं दुग्गइवड्ढगां।

(१३) जाइं चत्तारिऽमोज्जाइं,इसिगाहारमाइणि।
ताइं तु विवज्जंतो, संजमं अग्रुपालए ॥४०॥
पिंडं सेन्जं च वत्थं च, चउत्थं पायमेव य ।
अकिपयं न इच्छेजा, पिंडगाहेन्ज किप्पयं ॥४८॥
जे नियागं ममायंति, कीयग्रदेसियाहडं।
वहं ते समग्रुजागंति, इइ वृत्तं महेसिगा ॥४६॥
तम्हा असणपाणाइं, कीयग्रदेसियाहडं।
वन्ज्यंति ठियमप्पाणो, निर्गंथा धम्मजीविणो ॥४०॥

(१४) कंसेसु कंसपाएसु, कुंडमोएसु वा पुणों। मुंजंतो असण्पाणाइ श्रायारा परिभस्सइ॥५१॥ सीत्रोदगसमारंभे, मत्तधोयसाछाडुणे। जाइं छंगांति भूयाइं, दिद्वो तत्थ श्रसंजमो ॥५२॥ पच्छाकरमं पुरेकरमं, सिया तत्थ न कप्पइ। एयमई न भुंजंति, निग्गंथा गिहिमायेगे ।। ५३।। (१५) त्रासंदीपलियंकेसु, मंचमासालएसु वा । 🗔 अणायरियमज्जार्या, 🕆 श्रासइत्तु सइत्तु वा ॥५४॥ नासंदीपलियंकेसु, न निरुसेज्जा न पीढए। निग्गंथाऽपिं लेहाए, बुद्धवुत्तमिंहुगा ॥५५॥ गंभीरविजया एए, पाणा दुप्पडिलेहगा।. श्रासंदीपलियंको य, एयम्हं विविज्जिया ॥५६॥ . (१६) गोयरग्गपविद्वस्स, निसेज्जा जस्स कप्पइ। इमेरिसमणायारं, आवन्जइ अवोहियं।।५७॥ विवत्ती वंभचेरस्स, पाणाणां च वहे वहो। वणीमगपिं वास्रो, पिंकोहो स्रगारिणं ॥४८॥ श्रगुत्ती बंभचेरस्स, इत्थीत्रो वावि संकर्ण। कुसीलवड्ढगां ठागां, दूरश्रो परिवज्जए ॥५६॥ तिएहमन्यरागस्य, निस्सेज्जा जस्य कप्पइ। जराए श्रमिभूयस्म[°] वाहियस्म तबस्सिणो³ ॥६०॥ (१७) वाहिस्रो वा अरोगी वा,सिणाणं जो उपत्थए। ् बुकंतो होड् श्रायारो, जहो हवड् संजमो ॥६१॥

संतिमे सुहुमा पाणा, घसासु भिलगासु य। जे उ भिक्खू सिणायंतो, सीएण उसिणेण वा ॥६२॥

तम्हा ते न सिणायंति, सीएण उसिगोण वा। जावजीवं वयं घोरं, असिणाणमहिद्वगा ॥६३॥ सिणाणं ऋदुवा ककं, लोद्धं पउमगाणि य 🎼 गायस्मुवङ्गणहाए, नायरंति कयाइ वि ॥६४॥ (१८) निगणस्स वा वि मुंडस्स,दीहरोमनहंसिणो । मेहुणा उवसंतस्स, कि विभूसाए कारियं।।६५॥ विभूसावत्तियं भिक्खू, कम्मं बंधइ चिक्कणं। संसारसायरे घोरे, जेगां पडइ दुरुत्तरे ॥६६॥ विभूसावत्तियं चेयं, बुद्धा मन्नंति तारिसं। 'सावन्जं-बहुलं चेयं, नेयं ताईहिं सेवियं।।६७॥ खवंति श्रप्पाणममोहदंसिणो, तवे रवा संजमत्रजवे गुगो । धुगांति पावाई पुरेकडाई, नवाइं पावाइं न ते करेंति ॥६८॥~ सत्रोवसंता श्रममा श्रकिचणा, सविङ्जविङ्जागुगया जसंसिणो । उउपसन्ने विमले व चंदिमा, सिद्धि विमाणाई उवैति ताइणो ॥६६॥ ति वेमि ॥ अह वक्कसुद्धी नामं सत्तमज्भयणं चडण्हं खंख भासाणं, परिसंखाय पर्णणवं। दोग्हं तु विणयं सिक्खे, दो न भासेज्ज सव्वसी ॥ १॥

जा य सचा श्रवत्तव्या, सचामोसा य जा मुसा। जा य खुद्धेहिऽखाइएणा, न तं भाषेज्ज एकार्य ।। २ ॥ श्रमचमोसं सचं च, श्रणवज्जमककसं। समुप्पेहमसंदिद्धं, गिरं भासेज्ज पन्नवं ॥ ३॥ एयं च अद्वमनं वा, जं तु नामेइ सासयं। स भासं सचमोसं वि, तं वि धीरो विवन्जए ॥ ४ ॥ वितहं पि तहामुत्ति, जं गिरं भासए नरो। तम्हा सो पुट्टो पावेगां, कि पुण जो मुसं वए ॥ ४ ॥ तम्हा गच्छामो वक्खामो, श्रमुगं वा ग्रे भविस्सइ। श्रहं वा गां करिस्सामि, एसो वा गां करिस्सइ ॥ ६ ॥ एवमाइ उ जा भासा, एसकालम्मि संकिया। संपयाईयमट्टे वा, तं पि धीरो विवज्जए।। ७॥ श्रईयम्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए। जमद्वं तुन जागोज्जा, एवमेयं ति नो वए।। =।। श्रईयम्मि य कालम्मि, पन्चुप्पन्नमणागए। जत्थ संका मने जं तु, एवमेयं ति नो वए ॥ ६॥ श्रईयस्मि य कालम्मि, पच्चुप्पन्नमणागए। निस्संकियं भवे जं तु, एवमेयं ति निहिसे ॥१०॥ तहेव फरुसा भासा, गुरुभूत्रोवघाइणी। सच्चा वि सा न वत्तव्वा, जत्रो पावस्स त्रागमो ॥११॥ तहेव कार्यं कार्ये ति, पंडगं पंडगे ति वा। वाहियं वा वि रोगि ति, तेणं चीरे ति नो वए ॥१२॥ एएणन्नेण श्रद्धेण, परी जेगावहम्मइ। श्रायारमावदोसन्तु, न त भासेज्ज पन्नवं ॥१३॥ तहेव होले गोले ति, सायो वा वसुले ति य।

दमए दूहए वा वि, न तं भारेष्ज पन्नवं ॥१४॥

श्रिन्जिए पन्जिए वा वि, श्रम्मो माउसिए ति य। पिउसिए भाइगोज्ज चि, धुए नचुणिए चि य ॥१५॥ हले हले चि श्रनें चि, मुद्देसामिण गोमिण। होले गोले वसुले ति, इत्थियं नेवमालवे ॥१६॥ नामधेन्जेग गं बूया, इत्थीगोत्तेग वा पुगो। जहारिहमभिगिज्म, त्रालवेज्ज लवेज्ज वा ॥१०॥ श्रज्जए पज्जए वा वि, वप्पो चुन्लपिउ त्ति य। माउलो भाइंगोज्ज त्ति, पुत्ते नतुणिय त्ति य ॥१८॥ हे हो हले ति अन्ने ति, मट्टे सामिय गोमिय। होले गोले वसुले ति, पुरिसं नेवमालवे ॥१६॥ े नामधेन्जेण गां बुया, पुरिसगोत्तेगा वा पुणो। जहारिहमभिगिज्म, श्रालवेज्ज लवेज्ज वा ॥२०॥ पंचिदियाणं पाणाणं, एस इत्थी श्रयं पुमं। जाव गां न विजागोआ, ताव जाइ ति त्रालवे ॥२१॥ तहेव माणुसं पसं, पविंख वा वि सरीसवं। थूले पमेइले वज्मे, पायमित्ति व नो वए ॥२२॥ परिवृहत्ति गां बुया. बुया उवचिए त्ति य। संजाए पीणिए वा वि, महाकाए ति श्रालवे ॥२३॥ तहेव गाम्रो दोज्भात्रो, दम्मा गोरहग ति य। वाहिमा रहजोग्गत्ति, नेवं भासेज्ज पन्नवं ॥२४॥ जुनं गवे ति गां चूया, धेगां रसदय ति य। रहस्से महल्लए वा वि, वए संवह्यो त्ति य ॥२५॥ तद्देव गंतुमुजार्यं, पन्वयािय व्णाणि य। रुक्खा महल्ल पेहाए, नेवं भासेच्य पन्नवं ॥२६॥

श्रलं पासायखंभागं, तोरगागं गिहाण य। फलिहग्गलनावार्यां, अलं उदगदोणियां ॥२७॥ पीहए चंगवेरे य, नंगले मइयं सिया। जंतलट्टी व नाभी वा, गंहिया व अलं सिया ॥२८॥ श्रासणं सयगं जागं, होजा वा किंचुवस्सए। भूत्र्योवघाइणि भासं, नेवं भासेजा पन्नवं ॥२६॥ तहेव गंतुमुन्जार्गं, पन्वयाणि वणाणि य। रुक्खा महल्ल पेहाए, एवं भासेजा पन्नवं ॥३०॥ जाइमंता इमे रुक्खा, दीहवड्डा महालया। पयायसाला विडिमा, बए दरिसणित्ति य ॥३१॥ तहा फलाइं पकाइं, पायखज्जाइं नो वए। वेलोइयाइं टालाइं, वेहिमाइं ति नो वए ॥३२॥ श्रसंथडा इमे श्रंवा, वहुनिन्विडमा फला। वएजा बहुसंभूया, भूयस्वत्ति वा पुणो ॥३३॥ ्तहेवोसहीय्रो पक्ताय्रो, नीलियाय्रो छवी इय। लाइमा मिन्जमात्रो ति, पिहुखन्जिति नो वए ॥३४॥ रूढा बहुसंध्या, थिरा ऊसढा विय। ग्विभयात्रो पद्मयात्रो, संसारात्रो ति त्रालवे ॥३५॥ तहेव संखिं नचा, किचं कज्जं ति नो वए। तेगागं वा वि वज्मे ति, सुतित्थे ति य आवगा ॥३६॥ संखिं संखिं व्या, पिएयद्वति नेगागं। वहुसमाणि तित्थाणि श्रावगाणं वियागरे ॥३७॥ तहा नईश्रो पुएणाश्रो, कायनिङ्कत्ति नो वए। नावाहिं तारिमात्रो ति, पाणिपेङ्गित नो वए ॥३०॥

वहुवाहुडा अगाहा, वहुसिल छुप्पिलोदगा।
वहुवित्यडोदगा यावि, एवं भासे जा पत्रवं ।।३६॥
तहेव सावज्जं जोगं, परस्सद्वाए निष्ठियं।
कीरमार्गा ति वा नचा, सावज्जं नालवे मुगी।।४०॥
सुकडे ति सुपके ति, सुञ्छिके सुहुडे मडे।
सुनिद्विए सुलहे ति, सावज्जं वज्जए सुगी।।४१॥
पयत्तपकति व पक्षमालवे,
पयत्तिकृति व कम्महेउयं,

पहारगाढिति व गाढमालवे ॥४२॥ सन्बुक्तसं परग्वं चा, अउल नित्य एरिसं। अविकियमवत्तव्वं, अवियत्तं चेव नो वए॥४३॥ सन्वमेयं वइस्सामि, सन्वमेयं ति नो वए। अशुवीइ सन्वं सन्वत्थ, एवं मासेज्ज पन्नवं॥४४॥

सुकीयं वा सुविकीयं, श्रिकंजं किज्जंमेव वा।
इमं गेएह इमं मुंच, पिण्यं नो वियागरे ॥४५॥
श्राप्यचे वा महण्ये वा, कए वा विकए वि वा
पिणयट्ठे समुप्पन्ने, श्राप्यकंजं वियागरे ॥४६॥
तहेवासंजयं धीरो, श्रास एहि करेहि वा।
सयं, चिट्ठ, वयाहि ति, नेवं भासेका पन्नवं ॥४७॥

बहवे इमे श्रसाहू, लोए बुच्चंति साहुगो। न लवे श्रसाहुं साहु ति, साहुं साहुत्ति श्रालवे ॥४८॥ नाण-दंसण-संपन्नं, संजमे य तवे रथं। एवं गुणसमाउत्तं, संजयं साहुमालवे ॥४६॥

देवाणं मणुयाणं च, तिरियाणं च बुग्गहे। अमुयाणं जत्रो होउ, मा वा होउ त्ति नो वए ॥५०॥ वात्रो बुद्धं व सीउएहं, खेमं धायं सिवं ति वा। क्या खु होन्जा एयाणि, मा वा होउ त्ति नो वए ।। ११।। तहेव मेहं व ग्यहं व मागावं, न देव देव त्ति गिरं वएजा। संग्रुच्छिए उन्नए या पत्रोए, वएका वा बुट्ट बलाहय ति ॥४२॥ श्रंतलिक्स ति णं वूया, गुज्भाणुचरिय तिय। रिद्धिमंतं नरं दिस्स, रिद्धिमंतं ति श्रालवे ॥५३॥ तहेव सावज्जणुमोयणी गिरा, श्रोहारिणी जा य परोवधाइणी। से कोइ-लोइ-भय-हास-माणत्रो, न हासमाणो वि गिरं वएजा ॥५४॥ सुवक्तसुद्धि समुपेहिया मुणी, गिरं च दुट्टं परिवज्जए सया। मियं श्रदुई श्रखुवीए भासए, सयाण मज्जे लहइ पसंसर्गं ॥ ४ ४॥ भासाए दोसे य गुणे य जाणिया, तीसे य दूहे परिवज्जए सया। छुसु संजए सामणिए सया जए, वएज बुद्धे हियमाणुलोमियं ॥५६॥ परिक्खमासी सुसमाहिइंदिए, चउकसायावगए श्रिकिसए। स निद्धणे धुन्नमलं पुरेकडं, आराहर लोगमियां तहा परं ॥५७॥ ति वेमि ॥

अह आयारपणिहिनामं अट्टमज्मस्यणं

त्रायारपणिहिं लद्धुं, जहां कायव्व भिक्खुणा।
तं भे उदाहरिस्सामि, त्राणुपुव्ति सुणेह मे।।१।।
पुढिव-दग-त्रगणि-मारुश्च, तणरुक्ख-सबीयगा।
तसा य पाणा जीव ति. इइ वृत्तं महेसिणा।।२।।
तेसि अच्छणजोएणा, निच्चं होयव्वयं सिया।
मगसा काय-वृक्षेण, एवं भवइ संजए।।३।।
पुढिव भित्ति सिलं लेलुं, नेव भिदे न संलिहे।
तिविहेण करणजोएण, संजए सुसमाहिए।।४।।
सुद्धपुढवीए न निसीए, ससरक्खिम्म य आसगे।
पमिल्रत्तु निसीएजा, जाइता जस्स उग्गहं।। ४।।

सीग्रोदगं न सेवेजा, सिलाषुट्टं हिमाणि य । उसिणोदगं तत्तफासुयं, पिडगाहेज संजए ॥ ६ ॥ उदउद्धं श्रप्पणो कायं नेव पुंछे न संलिहे । सम्मुप्पेह तहाभूयं, नो णं संघट्टए मुणी ॥ ७ ॥

इंगालं अगणि श्रिचं, अलायं वा सजोइयं। न उंजेजा न घटेजा, नो गं। निन्वावए ग्रुणी ॥ ८॥

तालियंटेण पत्तेग, साहाए विहुगोण वा । न वीएज अप्पगो कायं,वाहिरं वा वि पोग्गलं ॥ ६॥

तणरुक्खं न बिंदेजा, फलं मूलं व कस्सइ। श्राममं विविहं बीयं, मणसा वि न पत्थए॥१०॥ गहणेसु न चिहेजा, बीएसु हरिएसु वा। उदगंमि तहा निचं, उत्तिग-पणगेसु वा॥११॥ तसे पाणे न हिंसेजा, वाया श्रदुव कम्सुणा।

उवरश्रो सन्वभूएसु, पासेज विविहं जगं ॥१२॥ श्रद्ध सुहुमाई पेहाए, जाई जागित्त संजए। ू दयाहिगारी भूएसु, श्रास चिट्ठ सएहि वा ॥१३॥ कयराइं श्रद्ध सुहुमाइं १, जाइं पुच्छेज संजए। इमाई ताई मेहावी, आइक्खेजन वियक्खणे ॥१४॥ सिणेहं पुष्फसुहुमं च, पाणु तिंगं तहेव य। पणगं वीय हरियं च; अंडसुहुमं -च अहमं ॥१५॥ एवमेयाणि जाणित्ता, सन्वभावेण संजए। अप्यमत्ते जए निच्चं, सन्विदियसमाहिए॥१६॥ धुवं च पडिलेहेजा, जीगसा पायकंवलं। सेज्जमुचारभूमिं च, संथारं अदुवासणं ॥१७॥ ंडच्चारं पासवर्णा, खेलं सिंघाण्जल्लियं। फासुयं पडिलेहित्ता, परिञ्चावेज्ज संजए ॥१८॥

पितिसत्तु परागारं, पाणहा भोयणस्स वा। जयं चिह्न मियं भासे, न य रुवेस मणं करे।।१६॥ वहं सगोड क्रणोहिं. वहं श्रच्छीडिं पेच्छड।

बहुं सुगोइ क्रागोहिं. वहुं श्रच्छीहिं पेच्छइ।
न य दिहुं सुयं सन्वं, भिक्ख् श्रक्ताडमरिहइ॥२०॥
सुयं वा जइ वा दिहुं, न लिवजोवघाइयं।
न य केण उवाएगं, गिहिजोगं समायरे॥२१॥
निहारां रसनिज्जृहं, भद्दगं पावगं ति वा।
पुष्टो वा वि श्रपुद्दो था, सामालाभं न निहिसे॥२२॥

न य भोयग्रमि गिद्धों, चरे उंछं श्रयंपिरो । अफासुयं न भुंजेजा, कीयमुद्देसियाहडं ॥२३॥ सिनिहिं च न कुञ्वेजा, श्रगुमायं पि संजए । ं मुहाजीवी असंबद्धे, हवेजा जगनिस्सिए ॥२४॥ लूहिवत्ती सुसंतुद्दे, श्रिष्पच्छे सुहरे सिया। त्रासुरत्तं न गच्छेजा, सोचा गां जिणसासगां ॥२५॥ करणसोक्खेंहिं सद्देहिं, पेमं नाभिनिवेसए। दारुणं ककसं फासं, काएण श्रहियासए।।२६॥ खुहं पिवासं दुस्तेज्जं, सीउएहं श्ररहं भयं। श्रहियासे श्रव्वहित्रो, देह-दुक्खं महाफलं ॥२७॥ श्रत्थंगयंमि श्राइच्चे, पुरत्था य श्रग्रुग्गए। श्राहारमाइयं सच्वं, मणसा वि न पत्थए ॥२८॥ श्रतितियो श्रचवले, श्रप्पभासी मियासयो। हवेज उयरे दंते, थोवं लृद्धं, न खिसए।।२६॥ न बाहिरं परिभवे, श्रतागं न समुक्कसे । सुयलाभे न मजेजा, जच्चा तबस्सिबुद्धिए ॥३०॥ से जाणमजागां वा, कट्ड श्राहम्मियं पयं। संवरे बिप्पमप्पागं, बीयं तं न समायरे ॥३१॥ श्रेणायारं परकम्मं, नेव गूहें न निगहवे। ' सुद्दे स्या वियडभावें, असंसत्ते जिइंदिए ॥३२॥ श्रमोहं वयगं कुन्जा, श्रायरियस्स महप्पणी। तं परिगिज्म वायाए, कम्मुणा उववायए॥३३॥ श्रघुवं जीवियं नचा, सिद्धिमग्गं वियाशिया। ा विश्वियङ्केज भोगेसु, त्राउं परिमियमप्पणी ॥३४॥ वलं थामं च पेहाए, सद्धामारोग्गमप्पणो। खेत्तं कालं च विन्नाय, तहप्पाणं न जुंजए।।३४॥ जरा जाव न पीलेइ, वाही जाव न वड्ढइ। जाविंदिया न हायंति, ताव धम्मं समायरे।।३६॥

कोहं माणं च मायं च, लोमं च पाववहरणं।
वमे चत्तारि दोसे उ, इच्छंतो हियमप्पणो ॥३७॥
कोहो पीइं पणासेइ, माणो विणयनासणो ।
माया मित्ताणि नासेइ, लोहो सव्वविणासणो ॥३८॥
उत्रसमेण हणे कोहं, माणं मद्द्रवया जिणे।
मायं च उज्जुभावेण, लोमं संतोसत्रो जिणे ॥३६॥
कोहो य माणो य अणिगहीया,
माया य लोमो य पवहृदमाणा।

चत्तारि एए कसिया कसाया,

राइणिएसु विणयं पर्डने, धुवसीलं सययं न हावइन्जा। 'कुम्मोन्न' श्रल्लीणपत्नीणगुत्तो, परक्षमेन्जा तवसंजमम्मि ॥४१॥

सिंचंति मृलाइं पुणव्भवस्स ॥४०॥

निहं च न वहु मन्नेजा, सप्पहासं विवज्जए।

मिहो कहाहि न रमे, सज्भायिम रश्रो सया ॥४२॥
जोगं च समणधम्मिम, जुंजे श्रयालसो धुवं।
जुत्तो य समग्रधम्मिम, श्रद्धं लहइ श्रयुत्तरं ॥४३॥
इहलोग-पारत्त-हियं, जेगं गच्छह सोग्गइं।
बहुस्सुयं पज्जुवासेआ, पुच्छंज्ञत्यविणिच्छयं॥४४॥

हत्थं पायं च कायं च, पिश्हाय जिइंदिए। म्राष्ट्रीणगुत्तो निसिए, सगासे गुरुणो मुखी॥४५॥

न पक्खश्रो न पुरश्रो, नेव किचाण पिट्टश्रो।

न य उक्तं समासेजा, चिट्टेजा गुरुणंतिए ॥४६॥

श्रपुच्छिश्रो न मासेजा, मासमाग्रस्स श्रंतरा।

पिट्टिमंसं न खाएजा, मायामोसं निवज्रए ॥४७॥

श्रप्पत्तियं जेण सिया, श्रासु कुप्पेज वा परो।

सन्वसो तं न भासेजा, मासं श्रहियगामिणि ॥४८॥

दिट्टं मियं श्रसंदिद्धं, पिटिपुण्णं वियं जियं।

श्रयंपिरमणुन्विग्गं, भासं निसर श्रत्तवं ॥४६॥

श्रायार-पन्नतिधरं, दिट्टिवायमहिज्जगं।

वायविक्खिल्यं नच्चा, न तं उवहसे सुणी ॥५०॥

नक्खत्तं सुमिणं जोगं, निमित्तं मंतभेसजं।

गिहिणो तं न श्राइक्स्वे, भूयाहिग्रणं प्यं ॥५१॥

श्रमहं पगडं लयणं, भएजा सयणासणं।
उच्चार-भूमिसंपनं, इत्थी-पसुविविज्ञयं।।५२।।
विवित्ता य भवे सेजा, नारिणं न लवे कहं।
गिहि-संथवं न कुजा, कुजा साहृहिं संथवं।।५३।।
जहा कुक्कुड-पोयस्स, निचं कुललश्रो भयं।
एवं खु बंभयारिस्स, इत्थी-विग्गहश्रो भयं।।५४।।
चित्तमित्तं न निज्माए, नारिं वा सुश्रलंकियं।
भक्खरं पिव दहुणं, दिद्धि पिडसमाहरे।।५५॥
हत्थ-पाय-पिडचिन्ननं, कएण-नास-विकिप्पयं।
श्रवि वाससईं नारिं, बंभयारी विवज्जए।।५६॥

विभूसा इत्थिसंसग्गो, पणीय-रस-भोपणं। नरस्स-त्तगवेसिस्स, 'विसं तालउडं जहा' ॥ ४७॥ श्रंग-पचंग-संठाणं, चारुल्लवियपहियं। इत्थीर्णं तं न निज्माए, कामरागविवड्हणं।। ५८।। विसएसु मणुनेसु, पेमं नाभिनिवेसए। श्रिशिच्चं तेसिं विन्नाय, परिणामं पोग्गलाग य ॥५६॥ पोग्गलाण परिणामं, तेसि नच्चा जहा तहा। विग्गिय-तग्हो विहरे, सीईभूएण अप्पणा ॥६०॥ जाए सद्धाए निक्लंतो, परियायद्वाणमुत्तमं। तमेव त्रगुपालेजा, गुगो त्रायरियसम्मए ॥६१॥ तवं चियं संजमजोगयं च सज्भायजोगं च सया श्रहिद्वए। 'स्रे व सेगाए' समत्तमाउहे ग्रलमप्पणो होइ ग्रलं परेसि ॥६२॥ सज्भाय-सज्भागारथस्स ताइणो श्रपावभावस्स तवे रयस्स । विसुज्भई जंसि मलं पुरेकडं 'समीरियं रुप्पमलं व जोइगा' ॥६३॥ से तारिसे दुक्खसहे जिड़ंदिए सुएण जुत्ते अममे अकिंचणे।" विरायई कम्मघणिम व श्रवगए, कसिणव्भ-पुडावगमंव चंदिमे ॥६४॥ ॥ चि वेमि ॥

अह विणयसमाही नामं णवमङ्भयणं

(पढमो उद्देसी)

थंगा व कोहा व मयप्पमाया गुरुस्सगासे विषायं न सिक्खें। सो चेव उ तस्स अभूइमावो 'फलं व कीयस्स वहाय होइ' ॥ १॥ ने यावि मंदित्ति गुरुं विइता ं डहरे इमे अप्पसुए ति नच्चा। हीलंति मिच्छं पडिवजमाणा करंति आसायगं ते गुरुगं।। २।। पगईए मंदा वि मवंति एगे, डहरा वि य जे सुयबुद्धोववया। त्रायारमंता गुणसुहियप्पा, जे हीलिया 'सिहिरिव भास कुज़ा' ॥ ३॥ ने यावि 'नागं , उहरं ति', नच्चा, श्रासायए से श्रहियाय होइ। एवायरियं, पि. हु हिलयंतो, नियच्छइ जाइपहं खु मंदे ॥ ४॥ 'श्रांसिविसो वा वि परं सुरुहो,' कि जीवनासाउ परं नु कुजा। श्रायरियपाया पुण श्रप्यसन्ना, ं अबोहि-आसायगा अनित्थ मोक्खों।। ५ ॥

जो पावगं जलियमवक्कमेडजा, श्रासीविसं वा वि हु कोवएजा। जो वा विसं खायइ जीवियद्वी, एसोवमाऽऽसायगाया गुरूगां ।। ६ ।। सिया हु से पावय नो डहेज्जा, श्रासिविसी वा कुविश्रो न भक्खे। सिया विसं हालइलं न मारे, न यावि मोक्लो गुरूहीलगाए ॥ ७॥ जो पन्थयं सिरसा भेत्तुमिच्छे, सुत्तं व सीहं पडिवोहएआ। जो वा दए सत्तिश्रगो पहारं, एसोवमाऽऽसायण्या गुरूण्ं ॥ = ॥ सिया हु सीसेण गिरिं पि भिंदे, सिया हु सीहो कुवित्रो न मक्खे। सिया न भिंदेज्ज व सत्तिश्रगां, न याचि मोक्लो गुरुहीलगाए॥६॥ श्रायरियपाया पुण श्रप्यसन्ना, अवोहि-श्रासायण नित्थ मोक्खो। तम्हा अणाबाह-सुहामिकंस्ती, गुरुपसायाभिग्रहो रमेजा ॥१०॥ जहाहियग्गी जलगं नमंसे, नाणा-हुई-मंत-पयाभिसित्तं। एवायरियं उबचिद्वएजा, भगंत-नागोवगभोवि संतो ॥११॥

जस्संतिए अम्मपयाई सिक्खे, तस्संतिए वेणइयं पउंजे। सकारए सिरसा पंजलीत्रो, कायग्गिरा भो मणसाय निर्च।।१२॥ लुझा-द्या-संजम-बंभचेरं, कल्लाणभागिस्स विसोहिठाणं। जे मे गुरू सययमणुसासयंति, ते हं गुरू सययं पूययामि ॥१३॥ ''ज़हा निसंते तवणचिमाली', पभासइ केवल-भारहं तु। एवायरित्रो सुय-सील-बुद्धिए, विरायई 'सुर-मज्मे व इंदो' ॥१४॥ जहा ससी कोग्रुइजोगजुत्तो, ्नक्खत्त-्तारागण-परिवुडप्पा । खे सोहइ विमले अन्ममुक्के, एवं गणी सोहइ भिक्खुमज्मे ।।१ ५॥ महागरा श्रायरिया महेसी, समाहिजोगे सुय-सील-बुद्धिए। संपाविउकामे श्रणुत्तराई, त्राराहए तोसए धम्मकामी ॥१६॥ सोच्चाग महावि सुभासियाई, सुस्द्रसर् श्रायरियऽप्यमत्ती । श्राराहइताग गुगो श्रागीने, सो पावई सिद्धिमणुत्तरं ॥१७॥ चि बेमि॥

णवमज्मयणे— (बीद्यो उद्देसो)

'मुलात्रो खंघपभवो दुमस्स, खंधाउ पच्छा समुवेति साहा। साहप्रसाहा विरुहंति पत्ता, तत्रो से पुष्फंच फलंरसो य'।।१॥ एवं धम्मस्स विगात्रो, मूलं परमो से मोक्ख़ो। जेण कित्ति सुयं सिग्घं, निस्सेसं चामिगच्छइ ॥ २ ॥ जे य चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई वियडी सहै। बुज्भइ से अविगायिषा, 'कट्टं सोयगयं जहा' ॥ ३॥ विगायं पि जो उवाएण, चोइत्रो कुप्पइ नरी। दिव्वं सो सिरिमेज्जंति, दंडेग पुडिसेहए।। ४॥ तहेव अविणीयप्पा, उववज्माः हया गया। दीसंति दुहमेहता, आभियोगमुबद्धिया ॥ ४ ॥ तहेव सुविणीयप्पा, उववज्मा हया गया। दीसंति सुहमेहंता, इड्डिं पत्ता महायसा ॥ ६ ॥ तहेव अविगीयप्पा, लोगंसि नरनारिश्रो। दीसंति दुइमेहंता, छाया ते विगलिंदिया॥ ७॥ दंड-स्रत्थ-परिजुगगा, असब्भ-वयगोहि य। कलुणा विवनच्छंदा, खुप्पिवासाइपरिगया ॥ = ॥ तहेव सुविणीयप्या; लोगंसि नरनारिश्रो। दीसंति सहमेहंता, इड्डिं पत्ता महायसा ॥ ६ ॥ तहेव श्रविणीयपा, देवा जक्का य गुन्मगा। दीसंति दूहमेहंता, आभियोगमुबद्धिया ॥१०॥

तहेव सुविणीयेच्या, देवा जनसा य गुज्कमा । दीसंति सहमेहंता, इड्डिं पत्ता महायसा ॥११॥ जे श्रायरिय-उवन्कायाणं, सुरस्सा वयणंकरा । तेसि सिक्खा प्रवृद्दंति, 'जलसित्ता इव पायवा' ॥१२॥ श्रपणहा परहा वा, सिप्पा नेउणियाणि य । गिहियो उनमोगद्वा, इहलोगस्स कार्या।।१३॥ जेगा वंधं वहं घोरं, परियावं च दारुगां। सिन्खमाणा नियच्छंति, जुत्ता ते ललिइंदिया ॥१४॥ ते वि तं गुरुं पूर्यति, तस्स सिप्पस्स कारगा। सकारंति गामंसंति, तुट्टा निहेस-वत्तिगो ॥१४॥ कि पुरा ने सुयरगाही, ऋगंतहियकामए। श्रायरिया जं वए भिक्खू, तम्हा तं नाइवत्तए ॥१६॥ नीयं सेज्जं गईं ठाणुं, नीयं च श्रासणाणि य। नीयं च पाए वंदेजा, नीयं कुजा य अंजलि ॥१७॥ संघट्टइत्ता काएगां, तहा उवहिणामवि। खमेह अवराहं मे, वएज न पुणो ति य ॥१८॥ 'दुग्गश्ची वा पत्रोएगां, चोइश्ची वहइ रहं।' एवं दुबुद्धि किचागां, बुत्तो वुत्तो पकुन्त्रइ ॥१६॥ श्रालवंते लवंते वा, न निसेजाए पहिस्सुगी। मोत्र्गं त्रासगं धीरो; सुस्द्वसाए पडिस्सुगो ॥२०॥ कालं छंदोवयारं च, पडिलेहित्ताण हेउहिं। तेहिं तेहिं उवाएहिं, तं तं संपिडवायए ॥२१॥ विवत्ती अविणीयस्स, संपत्ती विणीयस्स य। जस्सेयं दुहुत्री नायं, सिक्खं से अभिगच्छह ॥२२॥

जे यावि चंडे मइ-इड्डि-गारवे, पिसुणे नरे साहसहीण-पेसणे। श्रिहिंडधम्मे विणए श्रकोविए, श्रसंविभागी व हु तस्स मोक्खो ॥२३॥ णिहेसवत्ती पुण जे गुरूणं, सुयत्थधम्मा विणयंमि कोविया। तरित्तु ते श्रोहमिणं - दुरुत्तरं, खवित्तु कम्मं गइस्तमं गया॥२४॥ ॥ ति बेमि॥

णवमज्भयणे— (तह्रश्रो उद्देसो)

श्रायरियग्गिमवाहियग्गी,

सुरस्रमाणो पहिजागरिका। श्रालोइयं इंगियमेव नचा, जो छंदमाराहयई स पुजो॥१॥

श्रायारमङ्का विगायं पडंजे,
सुस्स्रसमाणो परिगिज्म वकं।
जहोवइडं श्राभकंखमाणो,
गुरुं त नासाययई स पुज्जो ॥ २ ॥
राइणिएसु विगायं पडंजे,
हहरा वि य जे परियाय जिड़ा।

नीयत्तर्णे वट्टइ सचवाई,

श्रोवायवं वककरे स पुज्जो ॥ ३ ॥

श्रकायउंछं चरई विसुद्धं, जवणद्वया सम्रुयाणं च निर्च । श्रलद्भयं नो परिदेवएजा, लुदुं न विकत्थई स पुज्जो ।। ४ ॥ संथार-सेन्जाऽऽसण्-भत्त-पाणे, श्रप्पिच्छया श्रइलाभे वि संते । जो एवमप्पाग्मित्तोसएज्जा, संतोस-पाहम-रंए स पुज्जो ॥ ५॥ सका सहेउं श्रासाइ कंटया, श्रश्रोमया उच्छहया नरेगां । श्रणास्ए जो उ सहेन्ज कंटए, वईमए क्रएणसरे पुज्जो ।। ६ ॥ मुहुत्तदुक्ला उ ह ति कंटया, श्रश्रोमया तें वि तश्रो सुउद्धरा। वायादुरुत्ताणि दुरुद्धराणि, वेराणुवंधीिण महन्मया गा ॥ ७॥ समावयंता वयणाभिघाया, क्रणां गया दुम्मणियं जगांति। धम्मो ति किचा परमग्रास्ररे, जिइंदिए जो सहई स पुज्जो ॥ = ॥ भवएणवार्यं च परंग्रहस्स, प्यक्सओ पहिणीयं च भासं। म्रोहारिणि म्रप्पियकारिणि च, भार्स न भारोज्ज सया स पुज्जो ॥ ६ ॥

त्रलोत्तुए अ**य**कुहए श्रमाई 🚃 श्रिवसुर्ये यावि श्रदीग्वित्ती । 🎠 नो भावए नो वि य भावियप्पा, श्रकोउहल्ले य सया स पुन्नो ॥१०॥ गुणेहि साहू, अगुणेहिऽसाहू, गिएहाहि साहू गुण मुंचऽसाहू। वियाणिया अप्पगमपप्णं, जो राग-दोसेहिं समी स पुज्जी ॥११॥ तिहेव डहरं व महल्लगं वां, इत्थी पुमं पन्वइयं गिहिं वा। नो हीलए नो वि य खिसएजा, थंमं च कोहं च चए स पुज्जो ॥१२॥ ने भाणिया सययं माणयंति, 💖 'जत्तेश कनं व निवेसयंति!। ते साखए माणरिहे तवस्सी, जिइंदिए सच्चरए स पुन्जो ॥१३॥. तेसि गुरूगं गुणसागरागं सोचाण मेहावि सुमासियाई। चरे मुणी पंच-रए तिगुत्तो, चउक्कसायविगएं स पुज्जो ॥१४॥ गुरुमिह सययं पडियरिय मुणी, जिणवयनिउखे अभिग-मकुसले । धुिखय रय-मलं पुरेकंडं, भासुरमंडलं गई गए ॥१४॥ ॥ चि वेमि॥

(चउत्थों उद्देसञ्चो)

सुयं मे आउसं 🕂 तेगां भगवया एवसक्खायं

इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिट्टाणा पनता-

तंजहा-

१ विणयसमाही २ सुयसमाही ३ तवसमाही ४ श्रायारसमाही

भवइ य एत्थ सिलोगो-

तं जहा-

तंजहा-

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिद्वाणा पन्नता—

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं चत्तारि विणयसमाहिद्वाणा पन्नता ?

चंडविवहा खंखु विणयसमाही भवइ—

चउन्विहा खलु सुयसमाही भवइ—

विगए सुए तवे य, त्रायारे निच्च पंडिया ।

अभिशामयंति अप्यार्गं, जे भवंति किइंदिया ॥ १॥

१ श्राणुसासिज्जंतो सुम्सूसइ २ सम्मं संपिडवज्जइ ३ वेयमाराहयइ

४ न य भवइ श्रत्तसंपग्गहिए । चुउत्थं पयं भवइ──

पेहेइ हियाणुसासणं, सुस्स्सइ तं च पुणो श्रहिद्वए।

१ सुयं मे भविस्सइ ति श्रज्भाइयव्वं भवइ।

२ एगगाचित्तो भविस्सामि ति ग्रज्भाइयव्वं भवइ।

., न य माणम्पण मज्जइ, विणयसमाही आययद्विए।।। २।।

णवमज्भयणे -

६१

दसवेद्यातियसुत्तं

३ श्रप्पाणं ठावइस्सामि ति श्रन्भाइयव्वं भवइ। ४ ठिश्रो परं ठावइस्सामि ति श्रन्भाइयन्वं भवइ। चउत्थं पयं भवइ । भवइ य एत्थ सिलोगो-नागामेगग्गचित्तो य, ठिश्रो य ठावंइ परं।

सुयाणि य त्रहिन्भित्ता, रत्रो सुयसमाहिए ॥ ३ ॥ चउन्त्रिहा खलु तवसमाही भवइ।

ं तं जहा-

१ नो इहलोगहुयाए तवमहिद्वेजा। २ नो परलोगद्वयाए तवमहिट्ठेंजा।

३ नो कित्ति-वन्न-सद्द-सिलोगट्टयाए तवमहिट्टेजा। ४ नन्नत्थ निजरहुयाए तवमहिद्वेजा । चउत्थं पयं भवइ— भवइ य एत्य सिलोगो ।

विविहगुणतवोरए य निच्चं, भवइ निरासए निज्जर्डिए। तवसा धुणइ पुराणपावगं, जुत्तो सया तवसमाहिए ॥ ४ ॥

चउन्विहा खलु श्रायारसमाही भवह। तंजहा---१ नो इहलोगट्टयाए त्रायारमहिट्टेजा। २ नो परलोगद्वयाए आथारमहिद्वेज्जा।

३ नो कित्ति-वन्न-सइ-सिलोगट्टयाए त्रायारमहिट्ठेजा। ४ नन्नत्थ त्रारहंतेहिं हेउहिं त्रायारमहिद्देज्जा। चउत्थं पयं भन्र-भवइ य एत्थ सिलोगो-

> जिणवयण-रए श्रतित्यो. पिंदुएणाययमाययद्विए।

श्रायार-समाहि-संबुडे, भवइ य दंते मावसंघए॥ ४॥ श्रमिगम चउरो समाहिश्रो, सुविसुद्धो सुसमाहियप्पश्रो। विउल-हियं सुहावहं पुणो, कुन्वइ सो पयखेममप्पणो ॥ ६॥ जाइ-मरगाउ सुन्चइ, इत्थत्थं च चएइ सन्बसो। सिद्धे वा भवइ सासए, देवो वा श्रप्पर महिड्डिए॥ ७॥ त्ति वेमि॥

अह सभिक्खू नामं दसमज्भयणं

निक्खम्ममाणाइ अ बुद्धवयणे,
णिचं चित्तसमाहिस्रो हवेजा।
इत्थीण वसं न यावि गच्छे,
बंतं नो पिडयायइ जे स मिक्खू॥१॥
पुढवि न खणे न खणावए,
सीस्रोदगं न पिए न पियावए।
स्रगणिसत्थं जहा सुनिसियं,
तं न जले न जलावए जे स मिक्खू॥२॥
स्रिनिसेण न वीए न वीयावए,
हिरयाणि न छिंदे न छिंदावए।
बीयाणि सया विवज्जयंतो,
सचित्तं नाहारए जे स मिक्खू॥३॥

वहर्णं तस-थावराण होइ, ें पुढवी-तण-कट्ट-निस्सियाणं । कि तम्हा उद्देसियं न भुंजे, नो वि पएन पयावए जे स भिक्खू ॥ 🞖 ॥ रोइय- नायपुत्त-वय्गे, श्रप्यसमे मन्नेज छप्पि काए। पंच य फासे महन्वयाई, पंचासव-संवरए जे सं भिक्लू ॥ ५ ॥ चत्तारि वमे सया कसाए, धुवजोगी य हवेज्ज बुद्धवयगे। न्नहर्षे निज्जायरूवस्यए; गिहिजोगं परिवज्जए जे स भिक्खू ॥ ६ ॥ सम्मदिही सया अमूढे, अत्थि हु नागे तव-संजमे य । तवसा धुगाइ पुराणपावगं, मण-वय-कायसुसंबुडे जे स भिक्खू ॥ ७॥ तहेव असर्गं पागागं वा, विविद्दं खाइम-साइमं लभित्ता । होही श्रद्धो सुए परे वा, तं न निहे न निहावए जे स भिक्खू ॥ = ॥ तहेव असगं पाणगं वाः विविह-खाइम-साइमं लिभत्ता। छंदिय साहम्मियाग भुंजे, भोचा सज्भायरए य जे स भिक्खू ॥ ६॥

न य वुग्गहियं कहं कहिजा, ं, न य कुष्पे निहुइंदिए पसंते। संजम-धुव-जोग-जुत्ते, जवसंते श्रविहेडए जे संभिक्खू ॥१०॥ जो सहइ हु गामकंटए, श्रकोस-पहार-तज्जणात्रो य । भय-भेरव-सद्द-सप्पहासे, ं संमसुहदुक्खसहे य जे सं भिक्खू ॥११॥ पिंडमं पिंडविजया प्रसार्थी, नो भीयए भय-भेरवाई दिस्स । विविहगुण-तवोरए य निचं, न सरीरं चाभिकंखए जे स भिवखू ॥१२॥ श्रसइं वोसट्ट-चत्त-देहे, श्रक्कुट्ठे व हए व लूसिए वा। पुढ्विसमे मुणी हवेज्जा, अनियागो अकोउहल्ले य जे स भिक्लू ॥१३॥ श्रमिभूय काएण परीसहाइं, समुद्धरे जाइ-पहाउ श्रप्पयं । 🔧 ं विइत्तु जाइ-मरगं महब्भयं, 🕝 तवे रए सामणिए जे स भिक्खू ॥१४॥ **हत्थसंजए पायसंजए,** ः वायसंजए संजईदिए। अज्भव्परए सुसमाहियप्पा, सुत्रतथं च वियाणइ जे स मिक्खू ॥१४॥

उवहिम्मि श्रमुच्छिए श्रगिद्धे, श्रनायउच्छं पुलनिप्पुलाए । कय-विकय-सन्निहिन्रो विरए, सञ्चसंगावगए य जे स भिक्खू ॥१६॥ श्रलोल-भिक्खू न रसेसु गिद्धे, उंछं चरे जीविय नाभिकंखे । इड्डिं च सकारण-पूर्यणं च, चयइ ठियपा श्रणिहे जे स भिक्लू ॥१७॥ न परं वएज्जासि श्रयं कुसीले, जेणऽन्नो कुप्पेन्ज न तं वएन्जा। जािखय पत्तेयं पुराण-पावं, श्रताणं न समुक्कसे जे स भिक्खू ॥१८॥ न जाइमत्ते न य रूवमत्ते, न लाभमत्ते न सुएण मत्ते । मयाणि सन्वाणि विवन्त्रयंतो, धम्मज्भागारए य जे स भिवखू ॥१६॥ 'पवेयए श्रज्ज-पर्य सहाम्रुणी, धम्मे ठिस्रो ठावयइ परंपि। निक्लम्म वज्जेज्ज कुसीललिंगं, न यावि हासं कुहए ने स-भिक्खु ॥२०॥ तं देहवासं असुईं असासयं, सया चए निच्चहिय-द्वियप्पा । छिंदित्तु 'जाइ-मरग्रस्स बंघगं, उवेइ भिक्ख् अपुणागमं गई ॥२१॥ त्ति बेमि ॥

التحقيق كالماسحاء

रइवका णामा पढमा चूलिया

इह खलु भी ! पव्वइएगां उप्पन्नदुक्खेगां संजमे अरइसमावनचित्रेगां श्रोहागुप्पेहिगा श्रंगोहाइएगं चेव-हयरस्सि-गयंकुस-पोयपडागा-भूयाई--इमाइं अद्वारस ठाणाइं सम्मं सपिडलेहियव्वाईं भवंति । तं जहा----हं भो ! दुस्समाए दुप्पजीवी ॥ १ ॥ लहुस्सगाः इत्तरिया गिही गां कामभोगा ॥ २ ॥ भुज्जो ऋसाय-बहुला मग्रुस्सा ॥ ३ ॥ इमं च मे दुक्खं न चिरकालोवष्टाइ भविस्सइ ॥ ४॥ श्रोमजणपुरकारें।। ५ ॥ वंतस्स य पडित्रायणं ।) ६ ॥ श्रहरगइ-वासोवसंपया ॥ ७ ॥ दुन्नहे खलु भो ! गिहीणं धम्मे गिहिवासमज्मे वसंताणं ॥=॥ श्रायंके से वहाय होइ॥ ६॥ संकप्पे से वहाय होइ ॥१०॥ सोवकेसे गिहिवासे निरुवकेसे परियाए ॥११॥ वंधे गिहिवासे मोनखे परियाए ॥१२॥ सावज्जे गिहिवासे श्रगावज्जे परियाए ॥१३॥ बहुसाहारणा गिहीणं कामभोगा ॥१४॥ पत्तेयं पुराणपावं ॥१५॥

श्रिणिच्चे खलु भी ! मणुयाण जीविए कुसग्गजलविंदुचंचले ॥१६॥ वहुं च खलु भो ! पावं कम्मं पगढं ॥१७॥ पावाणं च खलु भो ! कडागां कम्मागां पुन्ति दुच्चिगणागां दुप्पडिकंतागां— वेयइत्ता मोक्खो, नित्थ अवयइत्ता, तबसा वा भोसइता। श्रठारसमं पयं भवइ ॥१८॥ भवइ य एत्थ सिलोगों— जया य चयइ धम्मं, श्रगाज्जो भोगकारणा। से तत्थ मुच्छिए बाले, आयई नावबुज्भइ॥१॥ जया श्रोहाविश्रो होइ, इंदो वा पिडश्रो छमं। 🔧 सन्त्र-धम्म-परिब्महो, स पच्छा परितप्पइ ॥ २ ॥ जया य वंदिमो होइ, पच्छा होइ अवंदिमो। देवया व चुत्रा ठागा, स पच्छा परितप्पइ ॥ ३ ॥ जया य पूड्मो होइ, पच्छा होइ अपूड्मो। राया व रखपब्भट्टो, स पच्छा परितंपद् ॥ ४॥ जया य माणिमी होइ, पच्छा होइ अमाणिमो । सेट्टिच्य कब्बडे छूढो, स पच्छा परितप्पइ ॥ ५ ॥ जया य थेरळो होड, समइक्कंत-जोव्वणो। मच्छोव्य गलं गिलित्ता, स पच्छा परितप्पइ ॥ ६ ॥ जया य कुकुडंबस्स, कुतत्तीहिं विहम्मइ। हत्थी च वंधगो बद्धो, स पच्छा परितप्पइ॥ ७॥ पुत्त-दार-परिकिएणो, मोहसंताण-संतश्रो। पंकोसनो जहा नागो, स पच्छा परितप्पइ॥ =॥ श्रञ्ज याहं गणी होंतो, भावियप्पा बहुस्सुश्रो।

जइ 5 हं रमंतो परियाए, सामच्यो जियदिसिए ॥ ६ ॥

देवलोगसमाणो उ, परियाओ महेसिगां। अर्यागं च, महानरय-सारिसो ॥१०॥ रयाणं अमरोवमं जाणिय सोक्खमुत्तमं, ्रयोण परियाए तहारयाणं । निरयोवमं जाणिय दुक्खमुत्तमं, रमेञ तम्हा परियाए पंडिए ॥११॥ धम्माउ मद्वं सिरिश्रोववेयं, 👯 जन्नग्गि विज्ञायमिवप्पतेयं । हीलंति गं दुन्विहियं कुसीला, दाढुड्ढियं घोरविसं व नागं।।१२॥ इहेवऽधम्मो अयसो श्रकित्ती, दुन्नामधेन्जं च पिहुज्जणिम । चुयस्स धम्मात्रो श्र म्मसेविगो, संभिन्न-वित्तस्स य हेट्टक्यो गई ॥१३॥ भुंजित्तु भोगाई पसन्भ चेयसा, तहाविहं कट्ड असंजमं वहुं। गई च गच्छे अणहिज्भियं दुई, ्बोहीय से नो सुलमा पुणो पुणो ॥१४॥ इमस्स ता नेरइयस्स जंतुणो, दुहोवणीयस्स किलेसवत्तिणो । पलिश्रोवमं भिज्भइ सागरोवसं, 🕆 किमंग पुण मज्म इमं मणोदुहं १॥१५॥ 🔩 न मे चिरं दुक्खिमणं भविस्सइ, श्रसासंया भोगपिवास जंतुणी। न चे सरीरेण इमेणऽवस्सइ, ्रैश्रवस्सइ जीविय-पन्जवेग मे ॥१६॥

जस्सेवमप्पा उ हवेज्ज निच्छित्रो, चएज्ज देहं न उ धम्मसासणं। तं तारिसं नो पयलेंति इंदिया, उवंतवाया व सुदंसणं गिरिं॥१७॥ इच्चेव संपस्तिय बुद्धिमं नरो, त्रायं उवायं विविहं वियाणिया। काएण वाया अदु माणसेणं, तिगुत्तिगुत्तो जिणवयणमहिड्डिजासि॥१८॥ ॥ ति चेमि॥

विवित्त-चरिआ णामा बीया चूलिया

चूलियं तु पवक्लामि, सुयं केवलिभासियं। जं सुणित्तु सपुजार्या, धम्मे उप्पज्जए मई॥१॥ अग्रुसोयपट्टिए वहुजणिम्म,पिंडसोय-लद्धलक्खेगां। पिंडसोयमेव अप्पा, दायव्वो होउ कामेगां॥२॥ अग्रुसोयसहो लोगो, पिंडसोओ आसवो सुविहियागां। अग्रुसोयो संसारो, पिंडसोओ तस्स उत्तारो॥३॥ तम्हा आयारपरक्षमेगां, संवर-समाहि-बहुलेगां। चिरया गुणा य नियमा य, होंति साहूण दहुव्वा॥४॥ अश्रिपय-वासो सम्रुयाणचिर्या, अवायउंछं पहरिक्षया य । अप्योवही कलहविवज्ञगा य,

विहारचरिया इसिएं पसत्था।। ४।।

श्राइएण-श्रोभागविवज्जणा य, श्रोसन-दिंडाहड-भत्तवाणे । संसद्दकप्पेण चरेडन भिक्खू, तजायसंसद्घः जई जएजा ॥ ६ ॥ श्रमन्जमंसासि श्रमच्छरीया. श्रभिक्खणं निन्विगइं गया य। अभिवख्णं काउस्सम्मकारी, संज्यायजोगे पयत्रो हवेजा ॥ ७॥ न पडिन्नवेजा सयणासगाई, सेज्जं निसेज्जं तह मत्तवाणं। गामें कुले वा नगरं व देसे, ममत्तभावं न कहिंचि कुजा॥ ८॥ गिहिसो वेयावडियं न कुजा, अभिवायगां वंदण-पूयगां वा। , त्रसंकिलिट्टेहिं समं वसेजा, मुखी चरित्तस्स जश्रो न हाणी ॥ ६ ॥ न या लमेज्जा निउगं सहायं, गुणाहियं वा गुणश्रो समं वा-। ं एक्को वि पावाई विवज्जयंती, विहरेज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥१०॥ संवच्छरं वावि परं पमागां, बीयं च वासं न तहिं वसेजा। सुत्तस्स मग्गेण चरेज्ज भिक्खू. सुत्तरस अत्यो जह आण्वेइ ॥११॥

जो पुन्यरत्तावरत्तकाले, संपेहड् अप्यगमप्पएगां । कि मे कडं कि च मे किचसेसं, किं सक्षणिड न समायरामि ॥१२॥ किं मे परो पासइ किं च श्रप्पा, किं वाहं खिलयं न विवज्जयामि। इचेव सम्मं त्रखुपासमाणो, त्रणागयं नो पहिवंध कुन्जा ॥१३॥ जत्थेव पासे कइ दुप्पउत्तं, काएण वाया श्रदु माणसेणं। तत्थेव धीरो पहिसाहरेज्जा, श्राइएणश्रो खिप्पमिव क्खलीगां ॥१४॥ जस्सेरिसा जोग जिइंदियस्स धिइमञ्रो सपुरिसस्स निच्चं। तमाहु लोए पडिबुद्धजीबी, सो जीवइ संजमजीविएण ॥१४॥ श्रणा खलु सययं रिक्खयन्त्रो, सन्विदिएहिं सुसमाहिएहिं । श्ररिक्खश्रो जाइपहं उवेइ, सुरक्खित्रो सन्बद्हाण सुन्चइ ॥१६॥ ं ॥ ति वेमि ॥

॥ मूल युत्ताणि ॥

(?)

उत्तरज्मयगासुत्तं

[कालियं]

उत्तरज्भयगा-महत्तं

जे किर भव-सिद्धीया, परित्त-संसारित्राय भवित्राय।
ते किर पढंति धीरा, छत्तीसं उत्तरज्मयगे॥
जे हंति श्रभव-सिद्धीया, गंथिश्र-सत्ता श्रगंत-संसारा।
ते संकिलिइ-कंम्मा, श्रभविय उत्तरज्माए॥
- 'जोग-विहीए विहया, एए जो लहइ सुत्तमत्थं वा।
भासेइ भविय-जणो, सो पावेइ निजरा बहुश्रा॥
जस्सारद्धा एए, कहिव समत्तंति निग्वरिहयस्स।
सो लिख्छजइ भव्यो, पुव्वरिसी एवं भासंति॥
तम्हा जिण-पर्णात्ते, श्रगंत-गम-पङ्जवेहि संजुत्ते।
श्रज्माए जहाजोगं, गुरूपसाया श्रहिज्मिजा॥
-श्री भद्रवाहु निर्युक्ति—४४७, ४४८, (दीपिका १-२) ४४६।

नामकरगां—

कमउत्तरेण पगयं, श्रायारस्तेव उवरिमाई तु । तम्हा उ उत्तरा खलु, श्रद्धसयगा हुंति णायच्या ॥

उद्धर्गं—

स्रंगप्यभवा जिगा,—भासिया य पत्तेयगुद्धसंवाया । बंधे मुक्खे य कया, छत्तीसं उत्तरज्भयणा ।।

विसयनिद्देसो ---

पढमे विणश्रो बीए, परीसहा दुल्लहंगया तहए।
श्रहिगारो य चउत्थे, होइ पमायप्पमाएति।।
मरणविभत्ती पुण पंचमिम, विज्ञाचरणं च छह अज्भयणे।
रसगेही-परिचाश्रो, सत्तमे श्रहिम श्रलाभे।।
निकंपया य नवमे, दसमे श्रणुसासणोवमा भणिया।
इक्कारसमे प्या, तवरिद्धी चेव बारसमे॥
तेरसमे य नियाणं, श्रिनियाणं चेव होइ चउदसमे।
भिक्खुगुणा पन्नरसे, सोलसमे वंभगुत्तीश्रो।।

पावाण-विज्ञणा खलु, सत्तरसे भोग्गिड्दिविजहण्ऽहारे।
एगुणि अप्परिकम्मे, श्रणाह्या चेव वीसइमे॥
चिरया य विचित्ता इक्कवीसि, बावीसिमे थिरं चरगां।
तेवीसइमे धम्मो, चउवीसइमे य समिहश्रो॥

वंभगुण पन्नवीसे, सामायारी य होइ छव्वीसे। सत्तावीसे असदया, अहावीसे य मुक्खगई।। एगुणतीसे आवस्सगण्यमाओ, तवो आ होइ तीसंइमे। चरणं च इक्कतीसे, वत्तीसि प्रमायठाणाई।।

तेचीसइमे कम्मं, चडतीसइमे य हुंति लेसाओ। भिक्खुगुखा पणतीसे, जीवाजीवा य वसीसे॥

श्री भद्रबाहु नियुक्ति—३, ४, १८, १६, २०, २१, २२, २३, २४, २४ २६

विषय-संबंध-निर्देश:-

प्रथमेऽध्ययने त्रिनयस्य वर्णनम् । 'विनयो हि परीषह-महासैन्य-समर-समा-कुलितमनोभिरिष कदाऽषि नो लङ्वनीयः' इत्यनेन सम्बन्धेनायातं— द्वितीयं परीपहाध्ययनम् ।

द्वितीयेऽध्ययने परीपह-सहन-नर्गानम् । परीषह-संहनं च मानुषत्वादि-चतुरंग-दुर्लभत्वं विज्ञायेव भवतीति सम्बन्धेन.ऽऽयातं तृतीयं चतुरंगीयमध्ययनम् । तृतीयेऽध्ययने मानुपत्वादि चतुरंगदुर्लभत्वस्य वर्गानम् । 'दुर्लभानि मानुषत्वादि चतुरंगानि प्राप्य धीधनैःप्रमादो हेयोऽप्रमादश्चोपादेयः' इत्यनेन सम्बन्धेनायातं— चतुर्थं प्रमादाप्रमादनामकमध्ययनम् ।

चतुर्थेऽध्ययने प्रमादाप्रमादहेयो गदेयवर्शनम् । प्रमादःसर्वदा सर्वथा हेयः, अप्रमादभ मर्गाकालेऽपि विधेयः, स च मरगाविभागपरिज्ञानत एव भवति, ततो हि बाल-मरगादि हेयं हीयते पंडितमरगादि चोपादेयमुपादीयते, तथा च तत्त्वतोऽप्रमत्तता जायते इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—पंचमसकासमरणीयमध्ययनम् ।

पंचमेऽध्ययने वालमरगापिरत्यागस्य पंडितमरगास्वीकृतेरच वर्गानम् । पंडितमरगां च विरतानःमेव । न चेते विद्याचरगाविक् ला इति तत् स्वरूपमने-नोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धेनाय रं—पण्ठं जुल्लकनिर्प्रन्थीयमध्ययनम् ।

पप्ठेऽध्ययने निर्श्रन्थत्वस्य वर्णनम् ।

निर्धन्थत्वं च रसगृद्धिपरिहार,देव जायते -- स च विपत्ते Sपायदर्शनात् तच्च हष्ट न्तो ग्न्यासद्वारेगीव परिस्फुटं भवतीति रसगृद्धिदोपदर्शकोरआदिहष्टान्तप्रति-पादकं सत्तममुरक्षीयसध्ययनम् ।

्र सनेऽ वयने रसगृद्धेरपायबहुलत्वमभिधाय तत्त्यागस्य वर्धानम् । च निर्लोगन्येव भदतीति इह निर्लो+त्वमुच्यते, इत्यनेन सम्बन्धेनायात— १८ सापिलीयमध्ययनम् । त्रष्टमेऽध्ययने निर्लोभत्वस्य वर्णनम् । निर्लोभिनश्च, इहैव देवेन्द्र।दिपूजोपजायत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—निमप्रव्रज्येति नवममध्ययनम् ।

नवमेऽध्ययने धर्मचरणं प्रति निष्कम्पत्वस्य वर्णनम् । तच्चानुशासनादेव प्रायो भवति, न च तदुपमां विना स्पष्टमिति प्रथमतः उपमाद्वारेगानुशासनाभिधायकं— इसपत्रकाभिधानं दशममध्ययनम् ।

दशमेऽध्ययने, अप्रमादार्थमनुशासनस्य वर्णनम्, तच्च विवेकिनैव भावयितुं शक्यं विवेकश्च बहुश्रुत-पूजात उपजायत इति बहुश्रुत-पूजोच्यते—इत्यनेन सम्बन्धे-नायातमेकादशसध्ययनम्।

एकादशेऽध्ययने वहुश्रुत्-पूजाया वर्णनम् । बहुश्रुतेनापि तपसि यत्नो विधेय इति ख्यापनार्थं तपःसमृद्धिरुपवर्णयेत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—

हरिकेशीयं द्वादशमध्ययनम् ।

ब्रुदशेऽध्ययने तपसः समृद्धेवर्गानम् ।

तपःसमृद्धि प्राप्ताविष निदानं परिहर्तव्यमिति दर्शयितुं यथा तन्महापायहेतुस्तथा चित्तसंभूतोदाहरणोन निदर्श्वत इत्यनेन सम्बंधेनायातं चित्तसंभूतीयं

त्रयोदशमध्ययनम् ।

त्रयोदशेऽध्ययने निदानदोषस्य वर्णनम्। प्रर ङ्गतो निर्निदानतः-गुगाम्यापि, त्रत्र त मुख्यतः स एवोच्यते इत्यनेन सम्बन्धेनायत चतुर्दशिमषुकारीयमध्ययनम् । चतुर्दशेऽध्ययने निर्निदानतागुगावर्णना, सा च मुख्यतो भिन्नोरेव, भिन्नश्र्य

गुण्त इति तद्गुणा श्रनेनोच्यन्ते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं पंचेदरां सिमजुकमध्ययनम् ।
पचदशेऽध्ययने भिज्जुगुणानां वर्णनम् ।

भिन्नुगुगाश्च तत्त्वतो ब्रह्मचर्यव्यवस्थितस्यैव भवंति ब्रह्मचर्य च ब्रह्मगुप्तिपरिज्ञानत् इति ब्रह्मचर्यसमाध्य इहाभिधीयन्ते इत्यनेन सम्बन्धेनायात

षोडशं त्रह्मचर्यसमाधिनामकमध्ययनम्।

सेवोच्यत

S

षोडशेऽध्ययने ब्रह्मचर्यगुप्तीनां वर्शनम् ।

ब्रह्मचर्यगुप्तयश्च पापस्थानवर्जनादेवासेवितुं राक्यन्ते इति पापश्रमग्रास्वरूपाभिधान-

तस्तदेवात्र काकोच्यत इत्यनेन सम्बंधेनायातं सप्तदशं पापश्रमणीयमध्ययनम्। सप्तंदशेऽध्ययने पापवर्जनस्य वर्णनम् ।

तच संयतस्येव, स च भोगद्धित्यागत एवेति स एव संयतेहदाहरणत इहोच्यत ५

इत्यनेन सम्बन्धेनायात मष्टादशं संयतीयाख्यमध्ययनम् ।

श्रष्टादशेऽध्ययने भोगर्द्धित्यागवर्णनम् ।

भोगर्द्धित्यागः च श्रामएयमुपजायते तचाप्रतिकर्मतया प्रशस्यतरं भवतीत्यप्रतिकर्म-

तोच्यते--इत्यनेन सम्बन्धेन।य।तमेकोनविशं मृगापुत्रीयमध्ययनम्।

पकोनविंशेऽध्ययने निष्प्रतिकर्मताया वर्णनम् ।

निष्प्रतिकर्भता च त्र्यनाथत्वपरिभावनेनैव पालियतुं शक्येति महानिप्रन्थिहतम-

मिषातुमनाथतैवानेकघाऽनेनोच्यत इत्यनेन सम्बंधेनायातं विंशतितमं-महानिग्रन्थीयमध्ययनम् ।

विंशतितमेऽध्ययनेऽनाथत्द-इर्णनम् । श्चनाथत्वं च-त्रालोचनाद्विविक्तचर्ययैव चरितत्र्यभित्यभिप्रायेगा

इत्यनेनाभिसम्बंधेन।यातमेकविंशं समुद्रपालीयमध्ययनम् । एकविंशेऽध्ययने विविक्तचर्यावर्णनम् ।

विविक्तचर्यां च चरण्सिहतेन धृतिमता चरग् एव शक्यते कर्तुमतो रथनेमिन-चरगं तत्र च कथंचिदुत्पन्नविश्रो :सिकेनापि धृतिश्चाधेया इत्यनेन सम्बंधेनायातं

द्वाविशं रथनंमीयमध्ययनम्। द्वाविशेऽध्ययने कशंचिद्दरपदाविश्रोतसिकेनापि रथनेमिवद् मृतिश्चरणे विधेयतिवर्णनन्

इह तु परेषः नि चिचवित्यतिमुपलभ्य केशिगौनमवद्दपनयनाय यतिनव्यमित्य-निप्रायेण यथा शिष्यसंशयोसकी केशिष्ट्रष्टेन गौतमेन धर्मन्दुण्योगि च निगादि विशितं तथा श्रनेनाभिषीयत इत्यमुना सम्बन्धेनायातं—

त्रयोविशं केशिगीतमीयमध्यपनम्।

त्रयोविशेऽध्ययने परेषामि चित्तविष्तुतिमुपलभ्य तदपनयनाय केशिगौतमवद्य-तितव्यमितिवर्णानम् । इह तु तदपनयनं सम्यग् वाग्योगत एव, स च प्रवचन-मातृस्वरूपपरिज्ञानत इति तत्स्वरूपमुच्यत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं—

चतुर्विंशतितममध्ययनम् ।

चतुर्विशेऽध्ययंने प्रवचनमातृगां वर्णनम् । प्रवचनमातरश्च ब्रह्मगुगास्थितस्यव तत्त्वतो भवन्तीति जयघोषचरितवर्णनाद्वारेगा, ब्रह्मगुगा उच्यन्त इत्यनेनाभिसम्बन्धेनायातं पश्चविंशतितमं यज्ञीयाख्यमध्ययनम् । पंचविंशतितमेऽध्ययने ब्रह्मगुगानां वर्णनम् । ब्रह्मगुगानाश्च यतिरेव तेन चावश्यं

समाचारी विधेयेति, साऽस्मिन्नभिधीयते—इत्यनेन सम्बन्धेनायातं— पड्विंशतितमं समाचारीतिनामकमध्ययनम् ।

षड्विंशतितमेऽध्ययने समाचारीवर्गानम् ।

समाचारी च त्रशठतयेव पालियतुं शक्या, तिद्वपद्मभूतशठता-त्रज्ञान एव च तिद्विवेकेनासौ ज्ञायत इत्याशयेन दृष्टान्ततः शठतास्वरूपनिरूपणद्वारेणाशठते-वानेनाभिधीयत इत्यनेन सम्बन्धेनायातं सप्तविंशं खलुङ्कीयमध्ययनम्।

सप्तविशेऽध्ययने त्रशठतयैव समाचारी परिपालियतुं शक्यत—इति वर्ग्नम् । समाचारी व्यवस्थितस्य न्यायप्राप्तेव मोक्तमार्गगतिप्राप्तिरिति तदिभिधायक—

मष्टाविंशतितमम् मोत्तमार्गगत्याख्यमध्ययनम्।

- श्रष्टविंशतितमेऽध्ययने ज्ञानादीनां मुक्तिमार्गत्वेन वर्णानम् । ज्ञानादीनि च संवेगादिम्लान्यकर्मताऽवसानानि च तथा भवन्तीति तानीहोच्यंते श्रिद्धा मोक्तमार्गगतेविर्णानम् ।

इह पुनरप्रमाद एव तत् प्रधानीपायो ज्ञानादीनामपि तत् पूर्वकरवादिति, स एव वर्ण्यते ।

श्रथवा मुक्तिमार्गगतेर्वर्गानम् ।

सा च वीतरागप्विकेति यथातद् भवति तथा ऽनेनाभिषीयत इत्यनेन सम्बंधेन।यातमेकोनत्रिशं सम्यक्तवपराक्रममध्ययनम् ।

·एकोनत्रिंशेऽध्ययने—-ग्रप्रमादवर्णनम् ।

श्रप्रमादवता तपोविधयमिति तत्स्वरूपमुच्यते इत्यनेन सम्बंधेनायात

त्रिशं तपोमार्गगत्यध्ययनम् ।

त्रिरोऽध्ययने तपसो वर्णनम् ।

तचरण्वत एव सम्यग् भवतीति चरण्मुच्यत इत्यनेन सम्बंधेनायात-

मेकत्रिशत्तमं चरणाख्यमध्ययनम्।

एकत्रिंशत्तमेऽध्ययने चरणस्य वर्णनम् ।

चरणं च प्रमादस्थानपरिहारत एवासेवितुं शक्यं, तत्-परिहारश्चतत्परिज्ञानपूर्वक-मित्यनेन सम्बंधेनायात ढात्रिंशं प्रमादस्थाननामकमध्ययनस्।

द्वात्रिरोऽध्ययने प्रमादस्थानानां वर्णानम् ।

प्रमादस्थानश्च 'मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकपाययोगावंधहेतवः! (तत्त्वा०

प्रमादस्थानश्च 'मिथ्यात्वाविरातप्रमादकपाययागावधहतवः' (तत्त्वा० अ० . =-स्र० १) इति वचनात् कर्म वध्यते, तस्य च का प्रकृतयः, कियती वा

त्रयिंशत्तमेऽध्ययने कमप्रकृतीनां वर्णनम् । कर्भस्थितिश्च लेश्यावशत इत्यतस्तद्भिधानार्थं चतुः स्त्रिशं लेश्याख्यमध्ययनम्।

चतुक्षिशत्तमे ऽध्ययने लेश्यावर्णनम् । लेश्याभिधानेचायमाशयः—- त्रशुभानुभावलेश्याः परित्यज्याः शुभानुभावा एव लेश्या

श्रिष्ठिशतञ्याः । एतच्च भिद्धगुण्ययस्थितेन सम्यग्विषातुं शक्यं, नद् व्यवस्थानं च तत् परिज्ञानत इति नदर्थमिद्रमारभ्यते, एतत्सम्बन्धागतं—

स्थितिः ? इत्यादि सन्देहापनोदाय त्रयस्त्रिशत्तमं कर्मप्रकृतिरित्यध्ययनम् ।

पश्चित्रशत्तममनगारमार्गगतिरित्यध्ययनम् । पंचित्रराजनेऽध्ययने हिंसापरिवर्जनादिशिज्जुगुणानां वर्णनम् ।

भिद्धगुणाश्च जीवाजीवस्त्ररूप।रिज्ञानत एवासेवितुं शक्यन्त इति तज्ज्ञापनार्थे पट्चिंदाचमं जीवाजीवविभक्तिरित्यध्ययनम् ।

—क्षी शान्तिस्रिक्शवटीकाया ध्याधारेण—स्मार्कः

उत्तरदायण-सुतं

अह विण्यसुय नामं पढमज्मयणं

संजोगा विष्यमुकस्स, श्रणगारस्स भिक्ख्णो । विणयं पाउकिरस्मामि, आणुपुन्वि सुगोह मे ॥ १॥ श्राणानिद्देसकरे, गुरूणमुववायकारए । इंगियागारसंपने, से 'विसीए' ज्ञि बुच्चइ ॥ २ ॥ श्राणाऽनिद्सेसकरे, गुरूणमणुववायकारए। पिंडणीए असंबुद्धे 'अवीगीए' ति वुच्चइ ॥ ३ ॥ जहा सुणी पूर्करणी, निकसिज़ह सन्वसो । एवं दुस्सीलपिंडणीए, मुद्दरी निकसिञ्जह ॥ ४॥ कणकुराहरां चइतार्यं, विद्वं मुंजइ सूयरें। एवं सीलं चइत्ताणं, दुस्सीलें रमइ मिए।। ४।। सुणिया भावं साग्यस्सं, स्यरस्सं नरस्सं य। विणए ठवेज अप्यागां, इन्छंतो हियमप्यगो ॥ ६ ॥ तम्हा विग्रयमेसिजा, सीलं पिंडलमे जन्नो। बुद्धपुत्ते नियागद्वी, न निकसिज़इ काएहुई ॥ ७॥ निस्संते सियाऽम्रहरी, बुद्धार्ण झंतिए सया। अद्भुत्तािषा सिक्षिजा, निर्झािषा उ वृज्जए ॥ ८ ॥

श्रणुसासित्रो न कुप्पिजा, खंति सेविज पंडिए । खुड्डेहिं सह संसिंग, हासं कीड च वजाए ॥ ६ ॥ मा य चंडालियं कासी, बहुयं मा य त्र्रालवे। कालेण य श्रहिजित्ता, तस्रो भाइज एगगो ॥१०॥ त्राहच चंडालियं ऋट्ड,न निएहविज कयाइ वि । कड कडे ति भासेजा, अकडं नो कडे ति य ॥११॥ मा 'गलियस्सेव कसं,' वयणमिन्छे पुणो पुणो । 'कसं व दट्छुमाइएए।' पावग परिवज्जए ॥१२॥ अणासवा धूलवया कुसीला, मिउंपि चंडं पकरंति सीसा। चित्ताखुया लहु दक्लोववेया, पसायए ते हु दुरासयंपि ॥१३॥ नापुद्वी वागरे किचि, पुट्टी वा नालियं वए। कोहं असर्च्चं कुवेज्जा, धारेज्जा पियमव्पियं ॥१४॥ अप्पा चेव दमेपन्वो, अप्पा हु खलु दुइमो। अप्पा दंतो सुही होइ, अस्सि लोए परत्य य ॥१५॥ वरं मे श्रप्पा दंतो, संजमेण तवेण य। माहं परेहि दम्मंतो, वंधगोहिं-बहेहि य ॥१६॥ पिंडणीयं च बुद्धार्णं, वाया श्रदुव कम्मुणा। श्रावि-वा जइ वा रहस्से, नव कुज्जा कयाइ वि ॥१७॥ न पक्खक्रो न पुरश्रो, नेव किचाण पिद्वश्रो। न जुंजे ऊरुणा ऊरुं, सयगं नो पहिस्सुणे ॥१८॥ नेव पन्हित्ययं कुजाः, प्रवादिं च मंजए। पाण पसारिए बाबि, न चिट्ठे गुरूएंतिए ॥१६॥ श्रायरिएहिं एहिचो, तुसिणीश्रो न क्याइवि । पमायवैद्दी नियागद्वी, उवनिद्वे गुरुं सया ॥२०॥

श्रालवंते लवंते वा, न निसीएज कयाई वि। चइऊग्रमासगं धीरों, जन्नो जत्तं पडिस्सुग्रे ॥२१॥ त्रासणगत्रो न पुच्छेजा, नेव सेजागत्रो कपाइवि । ं त्रागम्भुकडुत्रों संतो, पुच्छेन्जा पंजलीउडो ॥२२॥ एव विग्यजुत्तस, सुत्तं ऋत्थं च तदुभयं । ं पुच्छमाण्यस्स स्तीसस्स, वागरिज्ज जहासुयं ॥२३॥ मुसं परिहरे भिक्खू, न य त्रोहारिणि वए। , मासादोसं परिहरे, मायं च वज्जए सया ॥२४॥ न लवेज पुट्टो सावज्जं, न निरट्टं न मम्मयं। त्रप्यग्रहा परहा वा, उभयस्संतरेगा वा **॥२५॥** समरेसु अगारेसु, संघीसु य महापहे । एगो एगित्थीए सद्धि, नेव चिट्ठे न संलवे ॥२६॥ जं मे बुद्धाऽसासंति, सीएण फरुसेण वा। मम लाहो ति पेहाए, पयत्रो तं पिहस्सुणे ॥२७॥ श्रगुसासणमोवायं, दुक्कडस्स य चोयगं। हियं तं मरणइ परणो, वेसं, होइ श्रसाहुगो ।।२८॥ हियं विगयभया बुद्धा, फरुसंपि द्यगुसासगां। वेसं तं होइ मूढाणं, खंतिसोहिकरं पयं ॥२६॥ त्रासणे उवचिट्ठेजा, त्रग्राचेऽकुक्ए थिरे। त्र पुड़ाई निरुष्ठाई, निसीएजाप कु क्कुए ।।३०॥ कालेण निक्समे भिक्खू, कालेख य पिंकमे । श्रकालं च विविक्षित्ता, काले कालं समायरे ॥३१॥ परिवाडीए न चिट्ठेजा, भिक्खू, दत्तेसगां चरे। पडिरूवेण एसिचा, मियं कालेण भक्खए॥३२॥ नाइद्रमणासने, नऽनेसि चक्खुफासम्रो। एगो चिट्ठेज भचड़ा, लंबिता तं नऽइक्कमे ॥३३॥

नाइउच्चेव नीए वा, नासने नाइद्रश्रो। फासुयं परकडं पिंडं, पिंडगाहेज संजए ॥३४॥ श्रप्पपारोऽप्पत्रीयम्मिः, पहिच्छन्नम्मि संबुहे। समयं संजर भुंजे, जयं ऋपिरसाहियं ॥३४॥ सुकडित्ति सुपिकति, सुच्छित्रे सुहडे मडे। सुणिड्रिए सुलिट्टिति, सावज्जं वज्जए सुणी ॥३६॥ रमए पंडिए सासं, 'हयं भद्दं व वाहए'। नालं सम्मइ सासंतो, 'गलियस्यं व वाहए' ॥३७॥ खड्डुया मे चवेडा मे, श्रकोसा य वहा य मे। कल्लाणमणुसासंतो, पावदिहित्ति मन्नई ॥३=॥ पुत्तों में भाय नाइ त्ति, साहू कल्लाग मन्नई। पावदिद्विउ श्रप्पाणं, सासं दासि त्ति मन्नइ ॥३६॥ न कोवए आयरियं, अप्पार्णि न कोवए। बुद्धोवषाई न सिया, न सिया तोत्त-गवेसए ॥४०॥ श्रापरियं कुवियं नचा, पत्तिएण पसायए। विज्मवेजन पंजलीडहो, वएजन न पुर्णो ति य ॥४१॥ धम्मिन्त्रयं च ववहारं, बुद्देहायरियं सया। तमायरंती वचहारं, गरहं नामिगच्छइ॥४२॥ मगोगयं वक्रगयं, जाणित्रायरियसम उ। तं परिगिजम वायाए, कम्मुणा उत्रवायए ॥४३॥ वित्ते श्रचोद्द्रा निचं. खिप्पं हबड् सुचोद्द्रा । नहोदद्धं सुक्यं, किच्चाई कुव्वई मया ॥४४॥ नच्या नमइ मेहानी, लीए किसी से जाइए। हर्व्हे किचारां मरगं 'भृयागं जगई जहा' ॥४५॥ पुन्जा जभ्स पर्सीचंति, रांबुद्धा पुन्यगंधुया। पत्रभा लामहस्मैति, विडलं छट्टियं सुयं ॥४६॥

स पुन्जसत्थे सुविणीयसंसए,
मणोर्ह्ड चिट्टई कम्मसंपया ।
तवो-समायारि-समाहिसंबुढे,
महन्जुई पंच वयाइं पालिया ॥४७॥
स देव-गंधव्व-मगुस्सपूइए,
चइत्तु देहं मल्एंकपुव्वयं।
सिद्धे वा हर्वड् सासए,
देवे वा श्रेप्यरए महिड्ढीए ॥४८॥
॥ ति वेमि ॥

अह परिसह नामं दुइअमज्मत्यणं

सुयं मे श्राउसं!
तेणं भगवण एवमक्खायं—
इह खलु वावीसं परिसहा—
समग्रेणं भगवण महावीरेणं कासवेणं पवेइया।
जे भिक्लू सोचा नच्चा जिच्चा श्रामभूय—
भिक्लायरियाए परिच्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा।
कयरे खलु ते वावीसं परीसहा—
समग्रेणं भगवण महावीरेणं कासवेणं पवेइया—
जे भिक्लू सोचा नचा जिच्चा श्रामभूय—
भिक्लायरियाए परिच्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेजा?
इमे खलु ते वावीसं परीसहा—
समग्रेणं भगवण महावीरेणं कासवेण पवेइया—
जे भिक्लू सोच्चा नच्चा जिच्चा श्रामभूय—
पिक्ल्लू सोच्चा नच्चा जिच्चा श्रामभूय—
जे भिक्लू सोच्चा नच्चा जिच्चा श्रामभूय—
भिक्लायरियाए परिच्वयंतो पुट्ठो नो विनिहन्नेज्जा

तं जहा---

दिगिछ।परीसहे १ पिवासापरीसहे २ सीयपरीसहे ३ उसिग्पपरीसहे ४ दंसमसयपरीसहे ५ अचेलपरीसहे ६ अरइपरीसहे ७ इत्थीपरीसहे ८ चिर्यापरीसहे ६ निसीहियापरीसहे १०सेज्जापरीसहे१२ अक्तासपरीसहे१२ वहपरीसहे १३ जायणापरीसहे १४ अलाभपरीसहे १५ रोगपरीसहे १६ तगाफासपरीसहे १७ जल्लपरीसहे १८ सक्तारपुरकारपरीसहे १६ पन्नापरीसहे २० अलाणपरीसहे २१ दंसगापरीसहे २२।

परीसहाणं पविभत्ती, कासवेणं पवेइया। तं भे उदाहरिस्सामि, आणुपुन्वि सुगोह मे॥१॥

- (१) दिगिंछापरिगए देहे, तबस्सी भिक्खू थामवं। न छिंदे न छिंदावए, न पए न पयावए॥२॥ कालीपव्वंग-संकासे, किसे धमणिसंतए। मायने असण-पाणस्स, अदीण-मणसो चरे॥३॥
- (२) तत्रो पुट्टो पिवासाए, दोगुंच्छी लज्जसंजए।
 सीत्रोदगं न सेविज्जा, वियहस्सेसणं चरे॥४॥
 छिनावाएसु पंथेसु, आउरे सुपिवासिए।
 परिसुक्तमुहाऽदीणे, तं तितिक्खे परिसहं॥४॥
 (३) चरंतं विरयं लूहं, सीयं फुसइ एगया।
 नाइवेलं सुणी गच्छे, सोच्चाणं जिणसासणं॥६॥
 न मे निवारणं ऋत्थि, छवित्ताणं न विज्जह।

श्रहं तु श्रिगां सेवामि, इह भिक्खू न चितए ॥ ७॥

(४) उसिणं परियावेगं, परिदाहेग तिज्जए। षिसु वा परियावेगां, सार्यं नो परिदेवए ॥ **८ ॥** उएहाहितत्तो मेहावी, सिगागां नो वि पत्थए। गायं नो परिसिंचेज्जा, न वीएज्जा य ऋष्ययं ॥ ६ ॥ (५) पुट्टो य दसमसएहिं, समरे व महामुगी। नागो संगामसीसे वा, सरो श्रभिहणे परं ॥१०॥ न संतसे न वारेज्जा; मर्गं पि न पश्चोसए। उवेहे न हर्णे पाणे, भुंजंते मंससीणियं ॥११॥ (६) परिजुएगोहि वृत्थेहिं, होक्खामि ति अचेलए। श्रदुवा सचेले होक्खामि, इह भिक्खू न चितए ॥१२॥ एगयाऽचेलए होइ, सचेले आवि एगया। एथं धम्मं हियं नच्चा, नाणी नो परिदेवए ॥१३॥ (७) गामासुगामं रीयंतं, श्रसगारं श्रकिचर्या । अरई अणुष्पवेसेज्जा, तं तितिक्खे परीसहं ॥१४॥ श्ररहं पिट्टश्रो किचा, विरए श्रायरिक्षए। धम्मारामे निरारम्भे, उवसंते मुणी चरे ॥१५॥ (c) संगो एस मण्सांगं, जाओ लोगम्मि इत्थित्रो। जस्स एया परिचाया, सुकडं तस्स सामग्र्णं ॥१६॥ एवमादाय मेहावी, पंक-भूया उ इत्थिश्रो। नो ताहिं विशाहन्नेज्जा, चरेज्जत्तगवेसए॥१७॥ (E) एग एव चरे लाहे, श्रमिभूय परीसहे। गामे वा नगरे वावि, निगमे वा रायहाणिए ॥१८॥ असंमागो चरे भिक्ख् , नेव कुज्जा परिगाहं। श्रसंसत्तो गिहत्थेहिं, श्रिगएश्रो परिव्वए ॥१८॥

(१०) सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व एगञ्रो। श्रकुक्कुश्रो निसीएजा, न य वित्तासए परं ॥२०॥ तत्थ से चिट्ठमाण्स्स, उवसग्गाभिधारए। संकाभी हो न गच्छेजा, उद्वित्ता श्रन्नमासणं ॥२१॥ (११) उचावयाहिं सेजाहि,तवस्सी भिक्खू थासवं। नाइवेल विहन्निज्जा, पावदिद्वी विहन्नई ॥२२॥ पइरिक्कुव्स्सयं लड्ढं, कल्लाणमदुवा पावयं। ंकिमेगराइं करिस्सइ, एवं तत्थऽहियासए।।२३॥ (१२) अक्कोसेजा परे भिक्खं,न तेसि पडिसंजले । सरिसो होइ वालागं, तम्हा भिक्खू न संजले ॥२४॥ मोच्चार्णं फरुसा भासा, दारुणा गामकंटगा। तुसिणीओ उवेहेज्जा, न ताओ मणसीकरे ॥२५॥ (१३) हन्रो न संजले भिक्खू, मर्गाप न पत्रोसए। तितिक्खं परमं नच्चा, शिक्ख् धम्मं विचितए ॥२६॥ समगं संजयं दंतं, हणिज्जा कोइ कत्थई। नितथ जीवस्स नासुत्ति, एवं पेहेन्ज संजए ॥२७॥ (१४) दुकरं खलु मो निच्चं, अणगारस्स भिक्खुणो । सर्वं से जाइयं होइ, नितथ किंचि अजाइयं ॥२८॥ गोयरगगपविद्वस्य पाणी नो सुप्पसारए। सेत्रो श्रगारवासुत्ति, इह भिक्खू न चितए॥२६॥

(१५) परेसु घासमेसेडजा, भोयणे परिणिहिए। लद्धे पिंडे अलद्धे वा, नाणुनप्पेडज पंडिए॥३०॥ भाडजेवाहं न लब्भामि, अवि लामो सुए सिया। जो एवं पडिसंचिक्खे, अलामो तं न तन्त्रए॥३१॥

(१६) नचा उप्पइयं दुवर्खं, वेयगाए दुहद्विए। **ग्रदीणो थावए पनं,** पुड्डो तत्यऽहियासए ॥३२॥ तेइच्छं नाभिनंदेज्जा, संचिक्खत्तगत्रेसए। एवं खु तस्स सामएगं, जं न कुन्जा न कारवे ॥३३॥ (१७) श्रचेलगस्स लूहस्स, संजयस्स तवस्सिगो । ्तगोसु सपमाण्यस, हुज्जा गायविराह्णा ॥३४॥ श्रायवस्स निवाएण, श्रउला हवइ वेयगा। एवं नच्चा न सेवंति, तंतुजं तण्तिज्जया ॥३४॥ ् (१८) किलिन्नगाए मेहावी, पंकेगा व रएगा वा । विसु वा परियावेण, सायं नो परिदेवए ॥३६॥ वेएउज निज्जरापेही, स्रारियं धम्मणुत्तरं। जाव सरीरमेउत्ति, जल्लं काएण धारए॥३७॥ (१६) अभिवायणमन्धुद्वाणं, सामी कुज्जा निमंतणं। े जे ताई पडिसेवंति, न तेसि पीहए मुणी ॥३८॥ श्रगुकसाई अप्पिच्छे अन्नाएसी अलोलुए। ं रसेसु नाणुगिजमेजजा, नाणुतप्पेजज पत्रवं ॥३६॥ (२०) से न्णं मए पुन्वं, कम्माऽणाणफला कडा। नेणाहं नामिजाणामि, पुट्टो केणड् क्रण्हुई-॥४०॥ श्रह पच्छा उइन्जंति, कम्माऽगाणफला कडा । एवमस्सासि श्रप्पाणं, नच्चा कम्मविवागयं ॥४१॥ (२१) निरहगम्मि विरश्रो, मेहुणाश्रो सुसंघुडो । 🚟 ् जो सक्लं नाभिजाणामि, धम्मं कल्लाणपादमं ॥४२॥ तवीवहारामादाय, पडिमं पडिवर्ज्ञश्री।

प्वं पि विद्रमो मे, छउमं न नियद्वद् ॥४३॥

(२२) नितथ न्यां परे-लोए, इंड्ढी वावि तवस्मिणो । अदुवा वंचिश्रोमित्ति, इंड्डी वावि तवस्मिणो । अपु विद्या वंचिश्रोमित्ति, इंड्डिमेक्खू न चितए ।।४४॥ अपू जिया अतथ जिया, अदुवावि भविस्सई । असं ते एवमाहंसु, इंड्डिमेक्खू न चितए ।।४४॥ एए परीसहा सन्वे, कानवेण पवेइया । जे भिक्खू न विहक्षेजा, पुट्ठो केणइ कएहुई ।।४६॥ ति वेमि ॥

अह नाउरंगिज्जं नामतइयङ्मयणं

चत्तारि परमंगाणि दुल्लहाणीह जंतुगो। माणुसत्तं सुई सद्धाः, संजमम्मि य वीरियं ॥ १॥ समावनाण संसारे, नाणागोत्तासु जाइसु। कम्मा नाणाविहा कट्ड, पुढो विरुपंभिया पया।। २॥ एगया देवलोएसु, नरएसु वि एगया। एगया त्रासुरं कायं, अहाकम्मेहिं गच्छइ ॥ ३॥ एगया खत्तिओ होइ, तश्रो चंडाल-बुक्सो। तस्रो की ख-पयंगी य, तस्रो कुंधु-पिवीलिया ॥ ४॥ एवमावद्वजोणीसु, पाशिणो कम्मकिव्विसा। न निन्त्रिज्जिति संसारे, सन्त्रहेसु व खत्तिया ॥ ४ ॥ कम्मसंगेहिं मंमृहा, दुनिखया बहुवेयणा। श्रमाणुसासु जोणीसु, विणिह्म्मंति पाशिणो ॥६॥ कम्माणं तु पहासाय, आसपुन्नी कयाह उ। जीवा सोहिमणुष्पत्ता, त्राययंति मणुस्सयं ॥ ७॥

माणुस्सं विग्गहं लद्भं, सुई धम्मस्स दुल्लहा । जं सोचा पडिवडजंति, तवं खंतिसहिंसयं॥ = ॥ आहच सवर्ण लद्धुं, सद्धा परमदुन्लहा। सोच्चा नेत्रांउयं मर्गं, बहवे परिभस्सइ॥१॥ सुइं च लद्धं सद्धं च, वीरियं पुण दुल्लहं। वहवे रीयमागावि, नो य गां पडिवजाए।।१०॥ माग्रसत्तंमि आयात्रों, जो धम्मं सोचा सद्हे। तवस्सी वीरियं लडुं, संबुडे निद्धुणे रयं।।११॥ सोही उन्जुयभृयस्स, धम्मो सुद्धस्स चिट्टइ। निन्वार्गं परमं जाइ, 'घयसित्तिन्व पावए' ॥१२॥ विभिन्न कम्मुणो हेउं, जसं संचिशु खंतिए। सरीरं पाढवं हिचा, उड्ढं पकमए दिसं ॥१३॥ विसालसेहिं सीलेहिं, जक्खा उत्तरउत्तरा। 'महासुका व दिप्णंता', मझंता ऋषुणचयं ॥१४॥ श्रप्पिया देवकामाणं, कामरूवविउविवणो। उद्दं कप्पेसु चिट्ठंति, पुन्वावाससया बहु ॥१५॥ तत्य ठिचा जहाठाणं, जक्खा श्राउक्खये चुया। उवेंति माणुसं जोणि, से दसंगे ऽभिजायए ॥१६॥ (१) खेत्तं-वत्थुं हिरएण्येच, पसवो दास-पोरुसं । 'चतारि कामलंधाणि' तत्थ से उववजाइ ।।१७॥ मित्तवं नाइवं होइ, उच्चागोए य वरणवं । श्रप्पायंके महापकं, श्रभिजाए जसो वले ° ।।१८॥ मुच्चा माणुस्सए भोए, श्रपिडिह्नवे श्रहाउयं। पुच्वं विसुद्धसद्धम्मे, केवलं बोहिं बुज्भिया ॥१६॥ पउरंगं दुल्लइं नच्चा, संजमं पद्धिविज्ञिया। तवसा धुयक मंसे, सिद्धे हवइ सासए ॥२०॥ ति वेमि ॥

अह असंखयं नामचउत्थमज्मयणं

श्रसंखयं जीविय मा पमायए, जरोवणीयस्स हु नित्थ तार्गं। एवं वियाणाही जर्गे पमत्ते, किं नु विहिंसा अजया गहिति ॥ १ ॥ जे पावकम्मेहिं धर्णं मणुसा, समाययंती श्रमईं गहाय । पहाय ते पासपयट्टिए नरे, वेराखुवद्धा नरयं उविति ॥ २ ॥ 🖰 'तेषो जहा' संधिम्रहे गहीए, सकम्मुणा किच्चइ पावकारी। एवं पया पेच्च इहं च लोए, कडाण कम्मागा न मोक्ख श्रितथ ॥ ३ ॥ संसारमावन परस्से श्रद्धा, साहारणं जं च करें इ कम्मं। कम्मस्स ते तस्स उ वेयकाले, न बंधवा बंधवयं उविति ॥ ४ ॥ वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते. इमंमि लोए अदुवा परत्था। 'दीवप्पणहेव' धर्णतमोहे, ने या उयं दर्ड मदर्ड मेव ॥ ४ ॥ सुत्तेसु यावि पडिवृद्धजीवी, न बीससे पंडिय श्रासुपएखे। घोरा मुहुत्ता अवलं सरीरं. 'मारंडपनखीव' चरेऽपमत्ते ॥ ६॥

चरे पयाई परिसंकमाणो, जं किंचि पासं इह मन्नमाणो । लाभंतरे जीविय वृहइता, पच्छा परिकाय मलावधंसी ॥ ७ ॥ छंदं निरोहेण उनेइ मोक्खं, 'श्रासे जहा सिक्खिय-वम्मधारी।' पुठवाईं वासाईं चरेऽप्पमत्तो, तम्हा मुणी खिप्पमुवेइ मुक्लं॥ ८॥ स पुच्चमेवं न लभेज पच्छा, एसोवमा सासयवाइयाणं। . विसीयई, सिढिले श्राउयम्मि, कालोवणीए सरीरस्स भेए ॥ ६॥ खिप्पं न सक्केंड विवेगमेर्ज, तम्हा समुद्राय पहाय कामे। समिश्व लोयं समया महेसी, श्रप्पाणगारक्की चरमप्यमत्तो ॥१०॥ मुहुं मुहुं मोहगुगो जयंतं, श्रगोगरुवा समग्रं चरंतं । फासा फुसंति असमंजसं च, ं न तेसिं भिक्ख् मणसा परसे ॥११॥ ं मंदा य फासा बहुलोहणिजा, 🧓 तहप्पगारेसु मर्गा ने कुजा । ्रक्षिज कोइं विणएन्ज माणं, मार्यं न सेनेख पहें जाहं ॥१२॥

[83

जे ऽसंखया तुच्छपरप्पवाई, ते पिन्नदोसाग्रुगया परन्का। एए ऋहम्मे ति दुर्गुद्धमाणो, कंखे गुणे जाव सरीर भेउ ॥१३॥ ॥ ति वेमि ॥

अह अकाममरणिजां नामं पंचमज्भयणं

श्रयणवंसि महोहंसि, एमे तिएगे दुरुत्तरे। तत्थ एगे महापने, इमं पण्हमुदाहरे ॥ १ ॥ संतिमे य दुवे ठाणा, अवखाया मरणंतिया। अकाममरणं चेव, सकाममरणं तहा ॥२॥ चालाणं अकामं रतु. मरणं असई मने । पंडियाणं सकामं तु, उक्षोसेण सइं भवे ॥ ३॥ तित्थमं पढमं ठाणं, महावीरेण देसियं। कामगिद्धे जहा वाले, भिसं क्रूराइं कुव्वई ॥ ४॥ ने गिद्धे कामभोगेसु, एगे कूडाय गच्छई। म मे दिहें परे लोए, चक्खुदिहा इमा रई।। प ।। हत्थागया इमे कामा, कालिया जे त्राणागया। को जागाइ परे लोए, श्रित्थ वा नित्थ वा पुणो ॥ ६ ॥ जिएेश सिद्धं होक्खामि, इइ वाले पगन्भई। कामभोगासुराएगं, केसं संपिडवर्डि ॥ ७॥ तस्रो से दंडं समारभई, तसेसु यावरेसु य। श्रद्वाए य त्रशहाए, भृयगामं विहिसई॥ ⊏॥

हिंसे वाले मुसावाई. माइल्ले पिसुगो सहै। मुंजमाणे सुरं मंसं, सेयमेयं ति मन्नई।। ६।। कायसा वयसा मसे, वित्ते गिद्धे य इत्थिसु । दुहस्रो मलं संचिणइ, 'सिसुगागुन्व' मट्टियं ॥१०॥ तस्रो पुट्टो स्रायंकेणं, गिलाणो परितप्पई। पभोत्रो परलोगस्स, कम्माग्रुप्पेहि अप्पणो ॥११॥ सुया मे नरए ठाणा, असीलागं च जा गई। बालागं कुरकम्मागं, पगाढा जत्थ वेयगा ॥१२॥ 'तत्थोववाइयं ठाणं, जहा मेयमणुस्सुयं। त्रहाकम्मेहिं गच्छंतो, सो पच्छा परितप्पइ ॥१३॥ 'जहां सागडिश्रो' जागं, समं हिच्चा महापहं। विसमं मग्गमोइएणो, श्रवखे भग्गम्मि सोयई ॥१४॥ एवं धरमं विउक्तममं, अहममं पिडविजिया। वाले मच्चुग्रहं पत्ते, अवस्वे भग्गे व सोयई ॥१५॥ तत्रो से मरगांतिमा, बाले संतसई भया। श्रकाममरणं मरइ, धुत्ते व कलिणा जिए ॥१६॥

एयं श्रकाममरणं, वालाणं तु पवेह्यं।

इत्तो सकाममरणं, पंडियाणं सुणेह मे।।१७॥

मरणं पि सपुरणाणं, जहा मेयमणुस्सुयं।
विष्पसरणमणाधायं, संजयाण वसीमश्रो।।१८॥

न इमं सव्वेसु भिक्ख्सु, न इमं सव्वेसुऽगारिसु।

नाणासीला श्रगारत्था,विसमसीला य भिक्खुणो।।१६॥

संति एगेहिं भिक्ख्हिं, गारत्था संजयुत्तरा।

गारत्थेहि य सव्वेहिं, साहवो संजयुत्तरा।।२०॥

चीराजिणं निगिणिणं, जडी मंघाडि मुंडिणं। एयाणि वि न तायंति, दुस्सीलं परियागयं ॥२१॥ पिंडोलएव्य दुस्सीले, नरगात्री न मुच्चइ। भिक्खाए वा गिहत्थे वा, सुन्वए कम्मइ दिवं ॥२२॥ श्रगारिसामाइयंगाणि, सब्दी काएण फासए। पोसहं दुहन्रो पक्खं, एगरायं न हावए ॥२३॥ एवं सिक्खासमावने, गिहीवासे वि सुन्वए। मुच्चइ छविपच्यात्रो, गच्छे जक्खसलोगयं ॥२४॥ श्रह जे संबुडे भिक्खू, दोग्रहं श्रन्नयरे सिया। सन्बदुक्खपहीगो वा, देवे वावि महिंब्हीए।।२५॥ उत्तराई विमोहाई, जुईमंताणुपुञ्चसो। समाइएणाईं जक्खेहिं, श्रावासाईं जसंसिखो ॥२६॥ दीहाउया इडि्डमंता, समिद्धा कामरूविगो। त्रहुणोववन्नमंकासा, भुजो श्रन्धिमालिप्यमा ॥२७॥ ताणि ठाणाणि गच्छंति, सिक्खिचा संजमं तवं। भिक्खाए वा गिहत्थे वा, जे संति परिनिव्बुडा।।२८॥ तेसि सोच्चा सपुज्जाणं, संजयाण बुसीमस्रो। न संनसंति मरणंते, सीलवंता बहुस्सुया ॥२६॥ तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खंतिए। विष्यसंग्रिज मेहाबी, तहाभूष्ण अष्पणा ॥३०॥ तश्रो काले श्रभिप्पेए, सब्ही तालिसमंतिए। विणएजन लोमहरिसं, भेयं देहस्स कंखए ॥३१॥ ग्रह कालम्पि संपत्ते, श्रापायाय समुस्सयं। सकाममरणं मरइ, तिएहमन्नयरं मुणी ॥३२॥ त्ति बेमि॥

अह खुड्डागनियंठिज्जं नामं छट्टमज्भयणं

जावंतऽविजापुरिसा, सन्वे ते दुक्खसंभवा। लुप्पंति बहुसो मूढा, संसारंमि ऋगंतए॥१॥ समिक्ख पंडिए तम्हा, पास-जाइ-पहे बहू । श्रपणा सन्चमेसेजा, मित्ति भूएसु कप्पए ॥ २ ॥ ्रमाया पिया एहूसा भाया, भज्जा पुत्ता य श्रोरसा । नालं ते मम ताणाए, लुप्पंतस्स सकम्प्रणा ॥ ३॥ एयमट्टं सपेहाए, पासे समियदंसणे। छिंद गिद्धि सिगोहं च, न कंखे पुन्वसंथवं ॥ ४ ॥ गवासं मणि-कुंडलं, पसवो दास-पोरुसं। सन्वमेयं चइत्तार्णं, कामरूवी भविस्ससि ॥ ५॥ (थावरं जंगमं चेव, धर्णं धन्नं उवक्खरं। पचमाणस्स कम्मेहिं, नालं दुक्खाउ मोयगो ॥) श्रनभत्थं सन्वश्रो सन्वं, दिस्स पागो पियायए। न हुगो पाणिगो पागो, भयवेरास्रो उवरए ॥ ६ ॥ श्रायाणं नरयं दिस्स, नायएज तणामवि। दोगुंछी ऋषणो पाए, दिन्नं भुंजेज मोयणं ॥ ७॥ इहमेगे उ मन्नंति, श्रपच्चक्खाय पावगं। श्रायियं विदित्ता गां, सन्बदुक्खा विग्रुच्चए ॥ = ॥ भगांता अकरेता य, बंध-मोंक्खपइिएणगो । वायावीरियमेत्रेण, समासासेति श्रप्ययं ॥ ६ ॥ न चित्ता तायए भासा, कुत्रो विजाणुसासणं। विसन्ना पावकम्मेहिं, बाला पंडियमाणिगो ॥१०॥ जे केइ सरीरे सत्ता, वरागो रूवे य सन्वसो। मग़ासा काय-वक्केगां, सन्वे ते दुक्खसंभवा ॥११॥ श्रावना दीहमद्धार्णं, संसारंमि श्रगंतए। तम्हा सन्वदिसं पस्स, श्रप्यमत्तो परिन्वए ॥१२॥ वहिया उड्दमादाय, नावकंखे कयाइ वि। पुर्वि—कम्म-क्लयद्वाए, इमं देहं समुद्धरे ॥१३॥ विशिच कम्मुणो हेउं, कालकंखी परिच्वए। मायं पिंडस्स पाग्णस्स, कडं लडूण भक्खए।।१४॥ सिमिहिं च न कुन्वेजा, लेवमायाए संजए। 'पक्खी-पत्तं समायाय' निरवेक्खो परिव्वए ॥१५॥ एसणासिम् ले लिज्, गामे अणियश्रो चरे। श्रप्यमत्तो पमत्तेहिं, पिंडवायं गवेसए ॥१६॥ एवं से उदाहु श्रणुत्तरनाणी, श्रणुत्तरदंसी श्रणुत्तरनाग्यदंसणधरे-अरहा नायपुत्ते भगवं, वेसालिए वियाहिए ॥१७॥ ॥ ति वेसि ॥

अह एलइज्ज नामं सत्तमज्भयणं

%(१) जहाएसं समुद्दिस, कोइ पोसेज एलयं।
श्रोयगं जवसं देजा, पोसेजावि सयंगणे॥ १॥
तश्रो से पुट्टे परिवृढे, जायमेए महोदरे।
पीणिए विउले देहे, श्राएसं परिकंखए॥ २॥

श्योरच्ये श कागिणी,श्रंयए श्रववहारे सागरे नंव। पंचेए दिष्टता. उरिध्यज्वंमि घरनस्यणे॥

जाव न एइ आएसे, ताव जीवइ से ऽदुही। अह पत्तिम श्राएसे, सीसं छेत्तूण भुजह ॥ ३ ॥ जहा से खलु उरन्मे, श्राएसाए समीहिए। एवं बाले ऋहम्मिट्ठे, ईहइ नरयाउयं ॥ ४ ॥ हिंसे वाले मुसावाई, श्रद्धाणंमि विलोवए। श्रनदत्तहरे तेगो, माई कं नु हरे सढे।। ४।। इत्थी-विसयगिद्धे य, महारंभपरिग्गहे मुंजमाणे सुरं मंसं, परिवृढे परंदमे ॥ ६ ॥ श्रयककरभोई य, तुंदिल्ले नियलोहिए । श्राउयं नरए कंखे, 'जहां एसं व एलए' ॥ ७॥ श्रासणं सयणं जाणं, वित्तं कामे य मुंजिया। दुस्साहर्ड धर्ण हिच्चा, बहु संचिणिया रयं ॥ = ॥ तत्रो कम्मगुरू जंतू, पञ्चुप्पन्नपरायगो। 'अएवब' आगयाएसे, मरगांतिम सोयइ॥ ६॥ तस्रो स्राउपश्क्खीगो, चुयदेहा विहिंसगा। श्रासुरियं दिसं वाला, गच्छंति श्रवसा तमं ॥१०॥ (२) जहा कागिणिए हेउं, सहस्सं हारए नरी । (३) अपत्थं अंवगं भोच्चा, राया रज्जं तु हारए ॥११॥ एवं मग्रुस्सगा कामा, देवकामाण श्रंतिए। सहस्सगुणिया भुज्जो, श्राउं कामा य दिन्विया ॥१२॥ श्रगोगवासानउंचा, जा सा पन्नवश्रो ठिई। जािं जीयंति दुम्मेहा, ऊणे वाससयाउए ॥१३॥ (४) जहा य तिनि वाणिया, मूलं वेत्रूण निग्गया।

एगो ऽत्थ लहए लाभं , एगो मूलेण आगओ ॥१४॥

एगो मृलं पि हारित्ता , आगश्रो तत्थ वाणिश्रो। ववहारे उवमा एसा, एवं धम्मे वियाणह ॥१४॥ माणुसत्तं भवे मूलं, लाभो देवगई भवे। मृलच्छेएग जीवाणं नरग-तिरिक्खत्तगां धुवं ॥१६॥ दुहस्रो गई वालस्स, श्रावईवहमूलिया। देवत्तं माणुसत्तं च, जं जिए लोलयासढे ॥१७॥ तत्रो जिए सईं होइ, दुविहं दुग्गइं गए। दुल्लहा तस्स उम्मग्गा, श्रद्धाए सुचिरादवि ॥१८॥ एवं जियं सपेहाए, तुलिया बालं च पंडियं। मृलियं ते पवेसंति, माणुसं जोणिमेंति जे ॥१२॥ वेमायाहि सिक्खाहि, जे नरा गिहिसुच्वया। उवेंति माणुसं जोिंग, कम्मसचा हु पाणिणो ॥२०॥ जे सिं तु विउला सिक्खा, मृलियं ते ऋहच्छिया। सीलवंता सविसेसा, श्रदीणा जंति देवयं ॥२१॥ एवमदीणवं भिक्ख्, श्रगारि च वियाणिया। कहएणु जिचमेलिक्खं, जिचमाणे न संविदे ॥२२॥ (५) जहा कुसग्गे उदगं, समुद्देण समं मिगो। एवं माणुस्सना कामा, देवकामाण श्रंतिए ॥२३॥ कुसग्गमेत्ता इमे कामा, सनिरुद्धिम आउए। कस्स हेलं पुराकालं, जोगक्खेमं न संविदे ॥२४॥ इह कामाणियहस्स, अत्तहे अवरज्भह। सोच्चा नेयाउयं मरगं, जं भुज्जो परिभस्सइ ॥२४॥ इह कामणियहस्स, श्रत्तहे नावरज्मई। प्इदेहनिरोहेगां, भवे देवित्ति मे सुयं ॥२६॥

इंद्रही जुई जसो वएगो, त्राउं सुहमगुत्तरं।
भुजो जत्थ मगुस्सेसु, तत्थ से उववज्जइ ॥२०॥
बालस्स पस्स बालतं, त्रहम्मं पिडविजया।
चिच्चा धम्मं त्रहम्मिट्ठे, नरएस्रववज्जइ ॥२८॥
धीरस्स पस्स धीरत्तं, सव्वधम्मागुवित्तणो।
चिच्चा त्रधम्मं धिम्मिट्ठे, देवेसु उववज्जइ ॥२६॥
तुलियाण बालमावं, त्रबालं चेव पंडिए ।
चइऊगा बालमावं, त्रबालं सेवए सुगी॥३०॥
ति बेमि॥

अह काविलियं नामं अट्टमज्भयणं

श्रधुवे श्रसासयम्म, संसारंमि दुक्खपउराए।
किनाम होन्ज तं कम्मयं १ जेणाहं दुग्गहं न गच्छेन्जा।। १।।
विजिहत्तु पुन्वसंजोयं, न सिग्णेहं किहिंचि कुन्वेन्जा।
श्रसिग्णेह-सिग्णेहकरेहिं,दोस-पश्रोसेहि सुन्चए भिक्खू।। २।।
तो नाण-दंसण-समग्गो, हियनिस्सेसाए सन्वजीवागां।
तेसि विमोक्खणहाए, भासइ सुग्णिवरो विगयमोहो।। ३।।
सन्वं गंथं कलहं च, विष्पजहे तहाविहं भिक्खू।
सन्वेसु कामजाएसु, पासमाणो न लिष्पइ ताई।। ४।।
भोगामिस-दोस-विसन्ने, हिय-निस्सेयस-बुद्धि-वोच्चत्थे।
वाले य मंदिए मुढे, बन्भह 'मन्छिया व खेलिम्म'॥ ४।।
दुष्परिन्चया इमे कामा, नो सुजहा श्रधीरपुरिसेहिं।
श्रह संति सुन्वया साहू, जेतरंति श्रतरं 'विणया वा'।। ६।।

समणा मु एगे वयमाणा, पाणवहं मिया अयाणंता। मंदा निरयं गच्छंति, वाला पावियाहिं दिद्वीहिं॥७॥ न हु पाणवहं त्रणुजाणे, मुचेज कयाइ सन्बद्क्खाणं। एवमायरिएहिं अक्खायं, जेहिं इमो साहुधम्मो पन्नत्तो ॥ = ॥ पाणे य नाइवाएजा, से समीइ त्ति बुच्चइ ताई। तश्रो से पावयं ऋम्मं, निजाइ 'उदगं व थलाश्रो' ॥ ६ ॥ जगनिस्सिएहिं भूएहिं, तसनामेहिं थानरेहिं च। नो तेसिमारभे दंडं, मणसा वयसा कायसा चेव ॥१०॥ सुद्धेंसणात्रो नचाणं, तत्थ ठवेज भिक्ख् त्रप्पाणं। जायाए घासमेसंज्ञा, रसगिद्धे न सिया भिक्खाए ॥११॥ पंतािण चेव सेवेडजा, सीयपिंडं पुराण-कुम्मासं। श्रदु बुकसं पुलागं वा, जवणद्वाए निसेवए मंथुं ॥१२॥ जे लक्खणं च सुविणं च, श्रंगविज्जं च जे पउंजंति। न हु ते समणा बुचंति, एवं श्रायरिएहिं श्रवखायं ॥१३॥ इह जीवियं श्रिणियमेत्ता, पभट्ठा समाहिजोएहिं। ते काम-भोग-रस-गिद्धा, उववज्जंति त्रासुरे काए ॥१४॥ तत्तो वि य उन्बद्धित्ता, संसारं बहु श्रणुपरियहंति । बहु-कम्म-लेव-लिचाणं, वोही होइ सुदुल्लहा तेसि ॥१४॥ कसिर्णिव जो इमं लोयं, पिडपुराणं दलेज्ज एगस्स । तेगाचि से न संतुस्से, इइ दुप्पूरए इमे आया ॥१६॥ जहा लाही तहा लोही, लाहा लोही पवद्दह। दोमासकयं कज्जं, कोडीए वि न निहियं॥१७॥ नो र्ववसीसु गिल्फेंडजा,गंडवच्छासु ऽणेगचित्तासु । जायो पुरिसं पलोभित्ता, खेल्लंति नहा व दासेहिं ॥१=॥

नारीसु नो पगिजमेन्जा, इत्थी विष्पजहे श्रगागारे। धम्मं च पेसलं नच्चा, तत्थ ठवेज्ज भिक्खू श्रप्पाणं ॥१६॥ इश्र एस धम्मे श्रक्खाए, कविलेगं च विसुद्धपनेगं। तरिहिति जे उ काहिति, तेहिं श्राराहिया दुवे लोगा ॥२०॥ ॥ ति वेमि ॥

अह निम-पव्वज्जा नामं नवमज्भयणं

चइऊण देवलोगात्रो, उववन्नो माणुसंमि लोगंमि ।
उवसंत-मोहणिज्जो, सरइ पोराणियं जाइं ॥ १ ॥
जाइं सरित्तु भयवं, सयं-संबुद्धो अणुत्तरे धम्मे ।
पुत्तं ठिवत्तु रज्जे, श्रिमिणिक्खमइ नमी राया ॥ २ ॥
सो देवलोगसिरसे श्रंतेउर-वरगश्रो वरे मोए ।
मुंजित्तु नमी राया, बुद्धो भोगे परिच्चयइ ॥ ३ ॥
मिहिलं सपुर-जणवयं, बलमोरोहं च परियणं सव्वं ।
चिच्चा श्रिमिनिक्खंतो, एगंतमिहिहिश्रो भयवं ॥ ४ ॥
कोलाहलग-भूयं, श्रासी मिहिलाए पव्वयंतंमि ॥ ४ ॥
तइया रायरिसिंमि, निर्मिम श्रिमिणिक्खमंतंमि ॥ ४ ॥
श्रब्धित्रं रायरिसिं, पवन्जाद्दाणमुत्तमं ।
सक्षो माहण्डवेण, इमं वयणमब्बवी ॥ ६ ॥
(१) किंतु भो अन्ज मिहिलाए,कोलाहलगसंकुला।

सुन्वंति दारुणा सद्दा, पासाएसु गिहेसु य ॥ ७ ॥

तत्रो नमी रायरिसी, देविंदं इग्रमञ्जवी ॥ = ॥

एयम इं निसामित्ता, हेऊ-कार गा-चो इस्रो।

मिहिलाए चेइए वच्छे, सीयच्छाए मगोस्मे। पत्त-प्रप्फ-फलोवेए, बहुर्गं बहुगुर्गे सया ॥ ६ ॥ वाएण हीरमाण्यिम, चेइयम्मि मणोरमे। दुहिया श्रसरणा श्रत्ता, एए कंदंति भो । खगा ॥१०॥ एयम इं निसामित्ता, हे ऊ-कार ग्य-चो इ श्रो। तश्रो निमं रायरिसं, देविंदो इण्मव्ववी ॥११॥ (२) एस अग्गी य वाऊ य, एयं डन्मइ मंदिरं। भयवं ऋंतेउरं तेणं, कीस णं नावपेक्खह ॥१२॥ एयम इं निसामित्ता, हेऊ-कार ग्-चो इ श्रो। तस्रो नमी रायरिसी, देविंदं इण्मव्ववी ॥१३॥ सुहं वसामो जीवामो, जेसि मो नित्थ किंचणं। मिहिलाए डज्भमागीए, न मे डज्भइ किंचणं ॥१४॥ चत्त पुत्त-कलत्तरस, निन्वावारस्स भिक्खुणो । पियं न विज्जइ किंचि, श्रप्पियं पि न विज्जइ ॥१५॥ वहुं खु मुणियो भदं, अणगारस्स भिक्खुणो। सन्वत्रो विष्पमुक्स्स, एगंतमग्रुपस्सत्रो ॥१६॥ एयम हं निसासि चा, हे उन्कार गा-चो इस्रो। तत्रो नमी रायरिसिं, देविंदो इग्रमञ्ज्वी ॥१७॥ (३) पागारं कारहत्ताणं, गोपुरद्वालगाणि य। उस्दलग-सयग्दीयो, तथ्रो गच्छिस खितया !।।१८॥ एयम हं निसामित्ता. हे उ-कार ए-चो इ श्रो। तत्रो नमी रायरिसी, देविदं इरामन्ववी ॥१६॥ सद्धं नगरं किञ्चा, तव-संवरमग्गलं। स्रंति निउणपागारं, तिगुत्तं दुप्पघंसयं ॥२०॥

धर्मा परकमं किचा, जीवं च इरियं सया। धिई च केयणं किच्चा, सचेगां पलिमंथए॥२१॥ तव-नाराय-जुत्तेगां, भित्तूगां कम्म-कंचुयं। मुणी विगय-संगामी, भवाश्री परिमुच्चइ ॥२२॥ एयम हं निसामित्ता, हेऊ-कारण-चोइस्रो । तस्रो निमं रायरिसि, देविंदो इग्णमब्बवी ॥२३॥ (४) पासाए कारइत्तागं, वड्डमाणगिहांगि य। बालग्गपोइयास्रो य, तस्रो गच्छिस खत्तियाँ ।।।२४॥ एयम हं निसामित्ता, हे उन्कार गा-चो इ स्रो। तस्रो नमी रायरिसी, देविदं इग्रामब्बवी ।।२५॥ संसयं खलु सो कुण्ड, जो मण्गे कुण्ड घरं। न् जत्थेव गंतुमिच्छेज्जा, तत्थ कुव्विज सासर्य ॥२६॥ एयम हं निसासि चा, हे ऊ-कार गा-चो इत्रो ! तत्रो नमी रायरिसिं, देविंदो इण्मव्यवी ॥२७॥ (५) श्वामोसे लोभहारे य, गंठिभेए य तक्करे। नगरस्स खेमं काऊगं, तश्रो गच्छिस खित्रया!।।२८॥ एयम इं निसामित्ता, हे ऊ-कार ग्-चो इ श्रो। तश्रो नमी रायरिसी, देविंदं इण्मब्बवी ॥२६॥ श्रसइं तु मणुस्सेहिं, मिच्छा दंडो पउंजए। श्रकारिणोऽत्थ बन्भंति, मुच्चए कारश्रो जगो ॥३०॥ एयम इं निसामित्ता, हे ऊन्कार ग्य-चो इ स्रो। तश्रो निमं रायरिसिं, देविंदो इगामब्बवी ॥३१॥ (६) जे केइ पत्थिवा तुन्मं, नानमंति नराहिवा!

वसे ते ठावइत्तार्ण, तश्रो गच्छसि खत्तिया ! ॥३२॥

एयम इं निसामित्ता, हे ऊ-कार ग्-चो इ श्रो। तस्रो नमी रायरिसी, देविंदं इण्मव्ववी ॥३३॥ जो सहस्सं सहस्साग्रं, संगामे दुज्जए जिगे। एगं जिगोज अप्पागं, एस से परमो जश्रो ॥३४॥ श्रपाणमेव जुल्साहि, किं ते जुल्सेण वल्सश्रो। अप्पणा चेव अप्पार्ण, जइत्ता सुहमेहए।।३४॥ पंचिदियाणि कोहं, माणं मायं तहेव लोहं च। दुज्जर्य चेव श्रप्पागं, सन्वमप्पे जिए जियं ॥३६॥ एयम हं निसामित्ता, हे उन्कार गा-चो इ श्रो। तत्रो निमं रायरिसं, देविंदो इण्मट्यवी ॥३७॥ (७) जइचा विडले जन्ने, भोइचा समग्र-माह्यो । दच्चा भोच्चा य जिद्धा य, तश्रो गच्छिस खित्तया !।।३८॥ एयम हं निसामित्ता, हे उ-कार गा-चो इ श्रो। तस्रो नमी रायरिसी, देविंदं इण्मव्यवी ॥३६॥ जो सहस्सं सहस्साणं, मासे मासे गवं दए। तस्स वि संजमो सेश्रो, अदितस्स वि किंचणं ॥४०॥ एयम हं निसामिता, हे उन्कार गा-चो इ छो। तस्रो निमं रायरिसिं, देविंदो इरामव्यवी ॥४१। (=) घोरासमं चइत्तागं, अन्नं पत्थेसि श्रासमं। इहेव पोसह-रश्रो, भवाहि मसुवाहिवा ! ॥४२॥ एयम हं निसामिचा, हे उन्कार ए-चो इश्रो। तश्रो नमी रायरिसी, देविंदं इग्एमव्ववी ॥४३॥

मार्ग मार्ग तु जो वाली, कुमरोगं तु मुंजए। न सो मुख्रक्दाय-घरमम्म, कलं धरघड् मोलमि ॥४४॥ एयम हं निसामित्ता, हे ऊ-कार ग्य-चो इ स्रो।
तिस्रो निमं रायरिसं, देविंदो इग्यमब्बवी ॥४॥॥
(६) हिरएगं सुवएगं मणि-सुत्तं, कंसं दूसं च वाहगं।
कोसं वड्हावइत्तागं, तस्रो गच्छिस खित्तया!॥४६॥
एयम हं निसामित्ता, हे ऊ-कार ग्य-चो इ स्रो।
तस्रो नमी रायरिसी, देविदं इग्यमब्बवी॥४७॥

सुवरगा-रूप्पस्स उ पव्वया भवे, सिया हु केलास-समा असंख्या। नरस्स लुद्धस्स न तेहि किंचि, इच्छा हु आगास-समा अग्रांतिया॥४८॥

पुढ्वी साली जवा चेव, हिरएगां पसुभिस्सह ।
पिडपुरगां नालमेगस्स, इइ विज्ञा तवं चरे ॥४६॥
एयम इं निसामि ता, हे ऊकार गा चो इ श्रो ।
तश्रो निमं राथरिसं, देविंदो इग्रामव्यवी ॥४०॥
(१०) अच्छेरपमब्भुदए, भोए चयसि पिरथवा ।
असंते कामे पत्थेसि, संकप्पेगा विह्वासि ॥५१॥
एयम इं निसामि ता, हे ऊकार गा-चो इ श्रो ।
तश्रो निमा रायरिसी, देविंदं इग्रामव्यवी ॥५२॥
सद्धं कामा विसं कामा, कामा आसी-विसोचमा ।
कामे पत्थेमाणा, अकामा जंति दुग्गइं ॥५३॥
अहे वयइ कोहेगां, मागोगां अहमा गई।
माया गई पिडग्वाश्रो, लोहाश्रो दुहश्रो भयं ॥५४॥

श्रवउन्मिल्या माहमारुवं, विउन्विल्या इंदत्तं। वंदइ श्रमित्युगंतो, इमाहिं महुराहिं वग्गूहिं ॥५५॥ ग्रहो ते निजित्रो कोहो, ग्रहो मागो पराजित्रो। श्रहो ते निरक्षिया साया, श्रहो लोहो वसीकश्रो ॥५६॥ श्रहो ते अन्जवं साहु ! श्रहो ते साहु ! मद्दं । श्रहो ते उत्तमा खंती, श्रहो ते मुत्ति उत्तमा ॥५७॥ इहं सि उत्तमी भंते, पेच्चा होहिसि उत्तमो। लोगुत्तमुत्तमं ठागां, सिद्धि गच्छसि नीरस्रो ॥५८॥ एवं अभित्थुणंती, रायरिसि उत्तमाए सद्घाए। पयाहियां करंतो, पुणो पुणो वंदए सकी ॥४६॥ तो वंदिङ्गा पाए, चक्-कुस-लक्ख्यो मुग्गिवरस्स। श्रागासेगुप्पर्यो, ललिग-चवल-कुंडल-तिरीडी ॥६०॥ नमी नमेइ छप्पार्श, सक्खं सकेश चोइयो। चह्ऊण रोहं वइदेही, सामएणे पव्जुवद्वियो ॥६१॥ एवं करेति संबुद्धा, पंडिया पवियक्खणा। विणियङ्ंति भोगेस, जहां से नभी रायरिसि ॥६२॥ ॥ ति वेमि ॥

अह दुमपत्तय नामं दसमन्भयणं

'दुमपत्तए पंढुरए जहा,' निवडह राइगणाण श्रच्चए। एवं मणुयाण जीवियं, समयं गोयम ! मा पमायए।। १।। 'कुसमा जह शांमविंदुए' थोवं चिद्दह लंबमाणाए। एवं मणुयाण जीवियं, सगयं गोयम। मा पमायए।। २।। इइ इत्तरियमिम श्राउए,
जीवियए बहुपच्चवायए ।
बिहुणाहि रयं पुरे कहं,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ३ ॥
दुल्लहे खलु माणुसे भवे,
चिरकालेण वि सच्चपाणिणं।
गाहा य विवाग कम्मुणो,
समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ४ ॥

पुढविकायमइंग्झो, उक्तोसं जीवो उ संवसे। कालं संखाईयं, समयं गोयम । मा पमायए ॥ ५ ॥ श्राउकायमइगश्रो, उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ६॥ तेउ कायमइग्छो, उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालं संखाईयं, समय गोयम ! मा पमायए ॥ ७ ॥ वाउकायसइग्रह्मों, उक्कोसं जीवो उ संवसे । कालं संखाईयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ 🗷 ॥ -वणस्सइकायमइग्द्रों, उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालमणंतदुरंतयं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥ ६ ॥ वेइंदियकायमइगञ्जो, उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१०॥ तेइंदियकायमइग्र्यो, उक्कोसं जीवो उ संवसे। कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम । मा पमायए ॥११॥ चउरिदिंयकायमङ्गञ्जो, उनकोसं जीवो उ संबसे। कालं संखिज्जसन्नियं, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१२॥ पंचिदियकायमइगश्रो, उनकोसं जीवो उ संवसे। 'सत्त-हु-भव-गृह्गो, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१३॥ 🔧 देवं नेरइए य अइगओ, उक्कोसं जीवो उ संबसे। इक्के-क-भवगहणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१४॥ एवं भवसंसारे, संसर्ह सुहासुहेहि कम्मेहिं। जीवो पमायबहुलो, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१४॥

लद्धृण वि माखुसत्तगं, श्रारिश्रनं पुणरिव दुल्लहं। वहवे दसुया मिलक्खुया, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१६॥ लद्धृण वि श्रारियत्तर्णं, श्रहीण-पंचेंदियया हु दुल्लहा। विगलिंदियया हु दीसई, समयं गोयम । मा पमायए ॥१७॥ श्रहीण-पंचेदियत्तं पि से लहे, उत्तम-धम्म-सुई हु दुल्लहा। कुतित्थि-निसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायए ॥१८॥ लद्ध्या वि उत्तमं सुई, सद्हरा। पुणरावि दूल्लहा। मिच्छत्त-निसेवए जणे, समयं गोयम ! मा पमायण ॥१८॥ धम्मं पि हु सइहंतया, दूब्रह्या काल्ण फासया। इह-काम-गुलेहि मुच्छिया, समयं गोनम ! मा पमादम् ॥२०॥

परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से सीयबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२१।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से चक्खुबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२२।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से घाणबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२३।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से जिब्भबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२४।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से फासबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२४।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से फासबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२४।।
परिजूरइ ते सरीरयं, केसा पंडुरया हवंति ते ।
से सव्बबले य हायई, समयं गोयम ! मा पमायए ।।२६।।

अरई गंडं विस्र्ह्या,
आयंका विविद्या फुसंति ते।
विह्ड विद्धंसह ते सरीरयं,
समयं गोयम! मा पमायए ॥२७॥
वोच्छिद सिगोहमप्पणो,
'कुमुयं सारइयं व पाणियं।'
से सच्व सि गोह व जिज ए,
समयं गोयम! मा पमायए ॥२८॥
चिच्चाण धगां च भारियं,
पव्वइत्रो हि सि अणगारियं।
मा वंतं पुणो वि आविष्,
समय गोयम! मा पमायए ॥२६॥

अवउज्भिय मित्त-बंधवं, विउलं चेव धणोहमंचयं । मा तं विइयं गवेसए, समयं गोयम ! मा पमायए ॥३०॥ न हु जिए अञ्ज दिस्सई, वहुमए दिस्सइ मग्ग-देसिए। संपइ नेयाउए पहे. समयं गोयम ! मा पमायए ॥३१॥ 'श्रवसोहिय कंटगापहं,' त्रोइएणो सि पहं महालयं। गच्छसि मग्गं विसोहिया, समयं गोयम ! मा पमायए ॥३२॥ 'थ्रवले जह भार-वाहए,' मा मग्गे विसमेऽवगाहिया। पच्छा पच्छा गुता व ए, समर्य गोयम ! मा पमायए ॥३३॥ 'तिएणो हु सि अएएएवं महं,' किं पूण चिइसि नीरमागत्रो। श्रभितुर पारं गमित्तए, समयं गोयम ! मा पमायण ॥३४॥ श्रकलेथरसेणि उस्सिया, सिद्धि गोयम। लोयं गच्छित। र्वमं च सिवं यशुत्तरं, सगरं गोयम मा प्रमायत् ।३५॥

बुद्धे परिनिन्बु हे चरे, गामगए नगरे व संजए। संति मग्गं च वृहए, समयं गोयम! मा पमायए ॥३६॥ बुद्धस्स निसम्म मासियं, सुक हियम दृप त्रोव सो हियं। रागं दोसं च ब्लिंदिया, सिद्धिगईं गए गोयमे ॥३७॥

अह बहुस्सुयपुया-णामं एगारसमङ्भयणं

संजोगा विष्पमुक्तस्स, अणगारस्स भिवखुणो। आयारं पाउकरिस्सामि, आगुपुन्वं सुणोह मे ॥ १ ॥ जे यावि होइ निन्विज्जे, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे। अभिक्खणं उल्लवइ 'अविणीय' अबहुस्सुए ॥ २ ॥ अह पंचिहं ठाणेहिं, जेहिं सिक्छा न लब्भइ। थम्मा कोहा प्माएणं, रोगेणा लस्सएण य ॥ ३ ॥

अह अट्टि ठागेहिं, 'सिक्खासीलि' ति बुच्चइ । अहस्सिरे' सया दंते, न य मम्ममुदाहरे ॥ ४ ॥ नासीले न विसीले, न सिया अइलोलुए ॥ अकोहगे सचरए, 'सिक्खासीलि' ति बुच्चइ ॥ ५ ॥ अह चोह्सिहं ठागेहिं, वट्टमागे उ संज्ञण ॥

अविणीए वुचई सो उ, निव्वायां च न गच्छई ॥ ६ ॥

श्रभिक्षणं कोही हवइं, पर्वंघं च पकुन्वईं। मेत्तिञ्जमाणो वमई³, सुयं लद्भूण मञ्जई ॥ ७॥ श्रवि पावपरिक्खेवी, श्रविमित्तेसु कुप्पइ । सुप्पियस्सावि मित्तस्स, रहे भासइ पावर्यं ॥ = ॥ पहएणवाई दुहिलें, थद्धे ' खुद्धे ' श्रिणिगाहे ' । श्रसंविभागी के अवियत्ते के, 'श्रविणीए' ति बुचइ ॥ र ॥ श्रह पन्नरसिंह ठागोहिं, 'सुविग्गीए' ति बुच्चइ । नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले ॥१०॥ भ्रप्यं च श्रहिक्खिवइ^५, प्रयंधं च न कुन्वइ^६। मेत्तिजनाणे भयइँ, सुयं लढुं न मज़इँ ॥११॥ न य पावपरिक्खेवीं, न य मित्तेसु कुप्पइंै। श्रिष्यस्सा वि मित्तस्स, रहे कल्लाग भासइ" ॥१२॥ कलह—डमरविजए इद्धे श्रभिजाइए । हिरिमं^भ पडिसंलीगों^भ, 'सुविग्गीए' ति बुचइ ॥१३॥ वसे गुरुकुले निचं, जोगवं उवहाणवं। पियंकरे पियंवाई, से सिवखं लद्भुमरिहइ॥१४॥ (१) जहा संखंमि पयं, निहियं दूहश्रो वि विरायइ। एवं वहुस्सुए भिक्खू, धम्मो कित्ती तहा सुयं ॥१५॥ (२) जहां से कंत्रीयाणं. श्राइएणे कंत्रए सिया। आसे जवेश पबरे, एवं हवद बहुत्सुए ॥१६॥ (३) जहाइएण्समास्डे, धरं दढपरफमे । उमभो नंदिघोसेगां, एवं हवह बहुम्युए ॥१७॥ (४) जहा करेखपरिकिएएं, कुंजरे सहिहायएं। यत्तर्यते प्रत्यतिहण्, एवं हवह नहुत्सुण् ॥१=॥

(५) जहा से तिक्खसिंगे, जायखंधे विरायह। वसहे जूहाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥१६॥ (६) जहा से_तिक्खदाहे, उदग्गे दुप्पहंसए। सीहे मियाण पवरे, एवं हवइ बहुत्सुए ॥२०॥ (७) जहा से वासुदेवे, संख-चक-गयाधरे। श्रपिडहय-बले जोहे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२१॥ (c) जहा से चाउरंते, चक्कव**ट्टी-महि**ड्डिए। चोद्दस-रयगाहिवई, एवं हवइ बहुत्सुए ॥२२॥ (६) जहा से सहस्तक्खे, वज्जवाणी पुरंदरे । देवाहिवई, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२३॥ (१०) जहा से तिमिरविद्धंसे, उच्चिद्धंते दिवायरे। जलंते इव तेएगा, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२४॥ (११) जहा से उडुवई चंदे, नक्खत्त-परिवारिए। पिंधुएगो पुराणमासिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२४॥ (१२) जहा से सामाइयाणं, कोड्डागारे सुरक्खिए। नागा-धन्न-पिंपुरागे, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२६॥ (१३) जहा सा दुमाण पवरा, जंबू नाम सुदंसणा। श्रणाढियस्स देवस्स, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२७॥ (१४) जहां सा नईगा पवरा, सिलला सागरंगमा | सीया नीलवंतपवहा, एवं हवइ बहुस्सुए।।२८॥ (१५ जहां से नगाण पवरं, सुमहं मंदरे गिरी। नाणोसिह-पञ्जलिए, एवं हवइ बहुस्सुए ॥२६॥ (१६) जहा से सयंभुरमणे, उदही अन्ख्योदए। नागा-रयण-पडिपुगगो, एवं हवइ बहुस्सुए ॥३०॥

सग्रद-गंभीरसमा दुरास या,
ग्रचिक्या केणइ दुप्पहंसया।
ग्रयस्स पुष्णा विडलस्स ताइणो,
खिवत्तु कम्मं गइग्रत्तमं गया।।३१।।
तम्हा सुयमहिद्विज्ञा, उत्तमहुगवेसए।
नेणप्पाणं परं चेव, सिद्धि संपाउपोज्ञासि।।३२।।
ति वेमि।।

श्रह हरिएसिजां नामं दुवालसमज्मयणं

सोवागकुलसंभूत्रो, गुगुत्तरघरो मुणी।
"हरिएसवलो" नाम, श्रासी मिक्खू जिइंदिश्रो॥ १॥
इरि-एसण-भासाए, उच्चारसिमईसु य।
जन्नो श्रायाण-निक्खेवे, संजन्नो सु-समाहिन्नो॥ २॥
मणगुत्ती- वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिश्रो।
भिक्खद्वा वंभइज्जिम्म, जन्नवाडमुविह्ने ॥ ३॥
तं पासि ऊण मे ज्जं तं, तवेण परिसोसियं।
पंतोवहि-उवगरणं, उवहसंति श्रणारिया॥ ४॥
जाइमय-पिह्यद्धाः, हिंसगा श्रजिइंदिया।
श्रवं भ चारिणो वाला, इमं वयग्रमव्यवी॥ ४॥
नाह्मणाः—
कयरे श्रागच्छइ दित्तरुवे १

काले विकराले फोक्कनासे ।

श्रोमचेलए पंसुपिसायभूए,

संकरदूसं परिहरिय ं कंठे ॥ ६॥

कयरे तुमं इय श्रदंसणिज्जे ? काए व त्रासा इहमागश्रोसि ? श्रोम-चेलया पंसु-पीसायभूया, गच्छ क्खलाहि किमिहं ठित्रों सि ॥ ७ ॥ जक्ले तहिं तिंदुय रुक्खवासी, अणुकंपश्रो तस्स महाम्रुणिस्स । पच्छायइत्ता नियगं सरीरं, इमाइं वयगाइमुदाहरित्था ॥ 🗷 ॥ यत्तः-समणो श्रहं संजञ्जो बंभयारी, विरस्रो धण-पयग्य-परिग्गहास्रो । परप्यवित्तस्स उ भिक्खकाले, **अन्नस्स** श्रद्घा इहमागश्रोमि ॥ ६ ॥ वियरिज्ञइ खज्जइ भुज्जइ य, श्रनं पभूयं भवयाणमेयं । जागाहि में जायण-जीविश्व ति, सेसावसेसं लहउ तवस्सी ॥१०॥ बाह्यसा ।-उवक्खडं भोयमा माहगागं, श्रचिष्यं सिद्धमिहेगपक्सं । न ऊवयं एरिसमञ्जपार्गं, दाहामु तुज्मं किमिहं ठित्रो सि ? ॥११॥ यद्यः-''थलेसु वीयाइ ववंति कासगा,'' तहेव निन्नेसु य त्राससाए । एयाए सद्धाए दलाह मज्मं, श्राराहर पुराणिमणं खु खित्तं ॥१२॥

```
नाह्मणाः —
रहे
```

खेत्ताणि श्रम्हं विइयाणि लोए, जहिं पिक्रणा विरुहंति पुराणा।

जे माहणा जाइ—विज्ञोववेया, ताइं तु खेत्ताइं सुपेसलाइं ॥१३॥

यत्तः--

नाह्मणा:-

कोहो य माणो य वही य जेसि, मोसं ग्रदत्तं च परिश्गहं च। ते माहणा जाइ-विज्ञा-विहीणा,

ताइं तु खेत्ताइं सुपावयाइं ॥१४॥ तुब्मेत्थ मो भारधरा गिरागं,

श्रहं न जागाह श्रहिज वेए। उचावयाई मुगिगो चरंति, ताई तु खेचाई सुपेसलाई ॥१५॥

श्रन्मावयागां पिडकूल्मासी, पभाससे किं नु सगासि श्रम्हं १

त्रवि एयं विणस्सउ श्रन्नपाणं, न य णं दाहामु तुमं नियंठा ॥१६॥

सिमईहि गज्मं सुसमाहियस्स, गुत्तीही गुत्तस्स जिइंदियस्स।

जइ मे न दाहित्थ श्रहेसणिज्जं, किमज जनाण लहित्य लाहं ॥१७॥ सोमदेवः— के इत्थ खत्ता ज्वजोइया वा,

> श्रन्भावया वा सह खंडिएहिं। एयं खु दंडेग फलएण हंता, कंठंमि घेत्तूण खलेख जो गं॥१८॥

श्राज्यायां वयणं सुगेतां,
उद्घाइया तत्थ बहु कुमारा ।
दंडेहि वित्तेद्वि कसेहि चेव,
समागया तं इसि तालयंति ॥१६॥
रन्नो तहिं कोसलियस्सं ध्या,
'महत्ति' नामेण श्राणिदियंगी।
तं पासिया संजय—हम्ममाणं,

कुमारे परिनिच्यवेइ ॥२०॥ क्रद्धे देवाभित्रोगेण नित्रोहएणं, दिना मुरना मणसा न साया। निरंद-देविंद-भिवंदिएगां, जेगिम्ह वंता इसिगा स एसो ॥२१॥ एसो हु सो उग्गतवो महप्पा, जिइंदिश्रो संजश्रो वंभयारी । जो मे तया नेच्छइ दिखमाणि, **पिउणा सर्य कोसलिएग्रा रन्ना ।।२२।।** महाजसो एस महासुभागी, घोरच्यश्रो घोरपरक्सी य ।

घोरन्वश्रो घोरपरक्तमी य । मा एयं हीलेह श्रहीलणिडजं, मा सन्वे तेएण मे निहहेजा ॥२३॥ एयाई तीसे वयगाई सोचा,

पत्तीइ भहां इसमासियाई-। इसि स्स वेयां विखय द्वया ए, जक्ला कुमारे विणिवारयंति ॥२४॥

ते घोररुवा ठिय श्रंतलिक्खे, 👵 श्रमुरा तहिं तं जगं तालयंति । ते भिन्नदेहे रूहिरं वमंते, पासित्तु भद्दा इग्रामाहु मुज्जो ॥२५॥ गिरिं नहेहिं खणह, श्रंय दंतेहिं खायह। जायतेयं पाएहि हणह, जे भिक्खुं श्रवमन्नह ॥२६॥ श्रासीविसो उग्गतवो महेसी, घोरच्यश्रो घोरपरक्समे य । 'श्रगणि व पक्लंद पयंगसेगा,' जे भिक्खुयं भत्तकाले वहेह ॥२७॥ सीसेण एयं सरगं उवेह, समागया सन्वजगोण तुब्मे। जइ इच्छह जीवियं वा धगां वा, लोगंपि एसो कुवित्रो हहेन्जा ॥२८॥ त्रवहेडिय-पिट्डि-सउत्तमंगे, पसारियां वाहु श्रकम्मचेट्ठे । निब्भेरियच्छे रुहिरं वमंते, उद्धं मुहे निग्गय—जीह—नेत्ते ॥२६॥ ते पासिया खंडियकहुभूए, विमगो विसएणो अह माहगो सो। इसि पसाएइ सभारियात्री, हीलं च निंदं च खमाह भंते ! ॥३०॥ सोमदेव:- वालेहिं मूढेहिं श्रयाणएहिं, जं हीलिया तस्स खमाह भंते! महप्पसाया इसिणो हवंति, न हु मुणी कोवपरा हवंति ॥३१॥

मुनि :--

पुटिव च इसिंह च श्रणागयं च,

मणपत्रोसो न मे अस्थि कोइ।

जक्खा हु वेयाविडयं करेंति, तम्हा हु एए निहया क्रमारा ॥३२॥

सोमदेव :—

अत्थं च धम्मं च विपाणमाणा,

तुब्भे न वि कुप्पह भूइपना। तुब्भं तु पाए सरगं उवेमो,

समागया सन्वजगोण श्रम्हे ॥३३॥

श्रह्मेमु ते महाभाग !, न ते किंचन श्रह्मिशे । श्रंजारि सालियं करं नागा-वंजग-संजयं ॥

मुंजाहि सालिमं क्ररं, नाणा-वंजण-संजुयं ॥३४॥ इमं च मे अत्थि पभूषमन्नं,

तं मुंजसु अम्ह श्रणुग्गहट्टा। वाढं-ति-प डिच्छ इ भ त्त पा गां,

मासस्स ऊ पारग्य महप्पा ॥३५॥ तहियं गंधोदय-पुष्कवासं,

दिन्ना तहि वसुहारा य बुद्धा । पहपात्रो दुंदुहीश्रो सुरेहिं,

त्रागासे श्रहो दागां च घुट्टं ॥३६॥ नाहाणाः—

> सक्तं खु दीसइ तवोविसेसो, न दीसइ जाइविसेस कोई। सोवागपुत्तं हिएससाहुं,

जस्तेरिस्सा इड्डि महासुभागा।।३७॥

41.1

किं माहणा ! जोइससारभंता, उदएण सोहिं वहिया विसग्गहा ?

जं मग्गहा बाहिरियं विसोहिं, न ते सुदिहं कुसला वयंति॥

न ते सुदिहं कुसला वयंति ॥३८॥ कुसं च जूवं तणकहमिंग, सायं चपायं उदगं फुसंता।

पाणाइ भृयाइ विहेडयंता, भुजो यि मंदा! पगरेह पावं ॥३६॥

भुज़ो यि मंदा ! पगरेह पार्व ॥३६॥ सोमदेवादयः— कहं चरे भिद्यखु ? वयं जयायो, पावाइ कम्माइ पणुल्लयामो ।

पावाइ कम्माइ पणुल्लयामा । अक्खाहि गो संजय! जन्खपूड्या, कहं सुजहुं कुसला वयंति ॥४०॥ मनि:—

जुल .— छुजी व का ए अ स मा र मं ता, सोसं अदत्तं च असेवमाणा। परिगाहं इत्थिओ माणमायं,

एवं परिचाय च्रंति दंता ॥४१॥
सुमंगुडा पंचहिं संबरेहिं,
इह जीवियं द्यापकंखमाणा ।
वो सहकाया सुइचत्त देहा,

महाजयं जयइ जन्नसिट्टं ॥४२॥ मोमनेवादयः— के ते जोई के व ते जोइठाणो ?

> का ते सुया कि च ते कारिसंगं ? एहा य ते कयरा संति भिक्खु ? कयरेण होमेण हुणासि जोइं ? ॥४३॥

तवो जोई जीवो जोइठागं, े जोगा सुया सरीरं कारिसंगं। क म्मेहा संजय जो गसंती, होमं हुगासि इसिगां पसत्थं ॥४४॥ सोमदेवादयः-के ते हरए के य ते संतितित्थे ? कहिं सिणाओं व रयं जहासि ? त्राइक्ख यो संजय ! जक्खपूइया, इच्छामो नाउं भवश्रो सगासे ॥४५॥ धम्मे हरए बंमे संतितित्थे, अणाविले अत्तपसन्नलेसे। जहिंसि पहात्रो विमलो विसुद्धो, सुसीइभूत्रों पजहासि दोसं ॥४६॥ एयं सिगागं कुसलेहि दिई, महासिणागां इसिगां पसत्थं। जहिंसि एहाया निमला निसुद्धा, महारिसी उत्तमं ठाणं पत्ता ॥४७॥ त्ति बेमि ॥

अह चित्तसंभूइज्ज नामं तेरहमज्भयणं

जाईपराजिओ खलु, कासि नियाणं तु 'हत्थिणपुरिम्म'। 'चलगीए वंभदत्तो,' उनवन्नो 'पडमगुम्माओ'॥ १॥ 'कंपिल्लो' संभूओ, 'चित्तो' पुण जाओ 'पुरिमतालिम्म'। सेट्रिकुलिम्म विसाले, धम्मं सोऊग पन्नइओ ॥ २॥ कंपिलिम्म य नयरे, समागया दो वि चित्तसंभुया।
सह-दुक्ख-फलिववागं, कहेंति ते एकमेकस्स ॥ ३॥
चक्रवद्दी महिड्ढीओ, वंभदत्तो महायसो।
भायरं वहुमाणेणं, इमं वयणमवन्त्री ॥ ४॥
श्रासीस्र भायरा दोवि, अन्नसन्त्रसाणुगा।
अन्न म न म स स र ता, अन्नमन्न-हिएसिणो ॥ ४॥
दासा 'दमएणे' आसी, मिया 'कालिजरे नगे'।
हंसा 'मयंगतीराए', सोवाधा 'कासिभूमिए'॥ ६॥

देवा य देवलोगिम्म, श्रासि श्रम्हे महिड्डिया। इमा णो इहिया जाई, श्रन्नसन्नेण जा विणा॥७॥ चित्तमुनिः—

कम्मा नियाणपयडा, तुम राय । विचितिया।

तेसिं फलविवागेण, विष्यत्रोगमुवागया ॥ = ॥ वहादत्तः— सच्च-सोय-ष्पगडा, कम्मा मए पुरा कहा । ते अज परिभुंजामो, किं तु चित्तेवि से तहा १॥ ६॥

> सन्वं सुचिएणं सफलं नराणं, कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि। अत्थेहि कामेहि य उत्तमेहिं,

चित्तगुनिः—

श्चागा ममं पुरागफलोववेष ॥१०॥ जाणाहि संभूय ! महाणुभागं, महिड्दियं पुरागफलोववेयं ।

चित्तं पि जागाहि तहेव रायं! इड्डी जुरे तस्स विय प्यभूया ॥११॥ बहादताः-

महत्य रूवा वयण ऽप्प मूया, गाहागुगीया नरसंघमजमें । जं भिक्खुणो सीलगुणोववेया, इह ऽज्जयंते समगों मि जास्रो ॥१२॥ उच्चोयए सहु कक्के य वंभे, पवेइया आवसहा य रम्भा । इमं गिहं चित्तधगणभूयं, पंचालगुँगोववेयं ॥१३॥ पसाहि नट्टेहि गीएहि य वाइएहिं, नारीजणाहिं परिवारयंतो। भुंजाहि भोगाइ इमाइ मिक्खू! मम रोयई पन्बन्जा हु दुक्खं ॥१४॥ चित्तमुनिः-

तं पुन्वनेहेण क्याणुरागं, नराहिवं कामगुर्णेसु गिद्धं। धम्मस्सित्रो तस्स हियाणुपेही,

चित्तो इमं वयगामुदाहरिःथा ॥१५॥ सन्वं वित्तवियं गीयं, सन्वं नट्टं विडंवियं। सन्वे/श्रामरणा भारा, सन्वे कामा दुहावहा ॥१६॥ 🕙

> न तं सुहं कामगुणेसु रायं! विरत्तकां सागा तवो घणा ग्रं, जं भिक्खुगं सीलगुणे रयाणं ॥१०॥

बाला भिरामे सु दुहा व हे सु,

नरिंद ! जाई ऋहमा नरागं, सोवागजाई दुहस्रो गयाणं। जहिं वयं सन्त्रजणस्स वेसा, वसीय सो वा गनि वे स शो सु ॥१८॥ तीसे य जाईइ उ पावियाए, बुच्छामु सोवागनिवेसणेसु । सन्वस्सं लोगस्स दुगंछिणिजा, इहं तु कम्माइं पुरे ऋडाईं ॥१६॥ सो दाणिसि राय! महाशुभागो, महिड्दियो पुरणफलोवनेत्रो । चइत्तु भोगाइं असासयाइं, त्रादाग्रहेउं श्रभिणिदखमाहि ॥२०॥ इह जीविए राय! श्रसासयम्म, धणियं तु पुराणाइ श्रकुन्वमाणो । से सोयइ मच्चुमुहोवणीए, धम्मं श्रकाऊण परंसि लोए ॥२१॥ 'जहेह सीहो व मियं गहाय', मच्चू नरं नेइ हु श्रंतकाले। न तस्स माया व पिया व भाया, कालस्मि तम्मंसहरा भवंति ॥२२॥ न तस्स दुक्खं विभयंति नाइश्रो, न मित्तवग्गा न सुया न वंधवा। एको सर्य पच्छाहोइ दुवखं, कचारमेवं अणुजाह कम्मं ॥२३॥

चिचा दुप्पयं च चउपयं च, खेत्तं गिहं धणधनं च सर्व्यं। सकम्मबीत्रो त्रवसो पयाइ, परं भवं सुंदरपावगं वा ॥२४॥ तं एकगं तुच्छसरीरगं से, चिईगयं दहिय उ पावगेगां । भञ्जा य पुत्तावि य नायश्रो य, दायारमनं श्रगुसंकमंति ાારયા उविाज्जई जीवियमप्पमायं, वएणं जरा हरइ नरस्स रायं! पंचालराया ! वयगां सुणाहि, मा कासि कम्माइ महालयाई ॥२६॥ बहादत्तः :-श्रहं पि जाणामि जहेह साहू, जं मे तुमं साहिस वक्तमेयं। भोगा इसे संगकरा हवंति, जे दुज्जया श्रन्ज ? अम्हारिसेहिं ॥२७॥

ज पुरजना अपज र अम्हारसाह ॥२७॥ हित्थणपुरिम चित्ता! दट्ठूगां नरवई महिडि्हयं। कामभोगेसु शिद्धेगां, नियाणमसुहं कडं।।२८॥ तस्स मे अप्पडिकंतस्स, इमं एयारिसं फलं। जाणमाणो-वि जं धरमं, कामभोगेसु सुच्छित्रो।।२६॥

''नागो जहा'' पंकजलावसन्नी; दट्डुं थलं नाभिसमेइ तीरं। एवं वयं कामगुणेसु गिद्धा, न भिक्खुणो सग्गमणुव्वयामो॥३०॥ चित्तमुनि:-

श्रचेइ कालो त्रंति राइश्रो, न यावि भोगा पुरिसाण निचा। उविच्च भोगा पुरिसं चयंति, दुमं जहा खीगफलं व पक्खी ॥३१॥ जई सि भोगे चइउं श्रसत्तो, श्रज्जाइ कम्माइ करेहि रायं ! धम्मे ठिश्रो सन्व-पयाणुकंषी, तो होहिसि देवो इत्रो विउव्वी ॥३२॥ न तुल्क मोगे चइऊण बुद्धो, गिद्धो सि श्रारंभ-परिग्गहेसु । योहं कन्रो एत्तिउ विष्पलावो, गच्छामि रायं ! आमंतिश्रोसि ॥३३॥ पंचालराया वि य वंभदत्तो, साहुस्स तस्स वयगं श्रकाउं। श्रणुत्तरे भुंजिय कामभोगे, श्रयुत्तरे सी नरए पविद्वी ॥३४॥ चित्तो वि कामेहि विरत्तकामी, उद्गाचरित्तत्वो महेसी। श्युत्तरं संजमं पालइता, त्रणुत्तरं सिद्धिगईं गन्त्रो ॥३४॥ ॥ ति वेमि॥

अह उसुयारिज्जं नामं चउदसमज्भयणं

देवा भवित्ताण पुरे भवस्मि, केइ चुया एगविमाश्यवासी । पुरे पुरागो 'उसुयारनामे,' खाए समिद्धे सुरलोगरम्मे ॥ १ ॥ सकम्मसेसेण पुराकएणं, कुलेसुदग्गेसु य ते पस्या । निन्विएण-संसारभया जहाय, जिणिद्मग्गं सर्**गं पवना ॥२॥** पुमत्तमागम्म कुमार दो वि, पुरोहिस्रो तस्स जसा य पत्ती। विसालिकत्ती य तहे ''सुयारो'', रायत्थ देवी ''कमलावई'' य ॥ ३ ॥ जाई-जरा-मच्च-भयाभिभूया, वहिं विहाराभिनिविद्व-चित्ता । संसार-चक्स्स विमोक्खणहा, दट्ठूण ते कामगुणे विरत्ता ॥ ४॥ पियपुत्तगा दुन्नि वि माहण्स्स, सकम्मसीलस्स पुरोहियस्स । सरित्तु पोराणिय तत्थ जाई, तहा सुचिएगां तवसंजमं च ॥ ५॥ कुमारौ--ते काममोगेसु श्रसज्जमाणा, माग्रुस्सएसुं जे यावि दिव्वा। मोक्खामिकंखी अभिजायसङ्हा, तायं उवागम्म इमं उदाहु ॥ ६ ॥

त्रसासयं दट्**छ इमं** विहारं, बहुर्श्वतरायं न य दीहमाउं। तम्हा गिहंसि न रइं लहामा, आमंतयामी चरिस्सामु मोर्गा।। ७।। भृगुः---ंत्रप्रह तायगो तत्थ सुणीस तेसिं, तदस्य वाघायकरं वयासी । इमं वयं वेयविश्रो वर्यति, जहा न होई श्रसुयाण लोगो ॥ ८ ॥ श्रहिज वेए परिविस्स विष्पं, पुत्ते परिद्वप्य गिहंसि जाया !। भोचा ग भोए राह इत्थियाहिं, श्रारएणगा होह मुगी पसत्था ॥ ६ ॥ भुमारी-सो य रिग गा श्रायगुणिध्योण, मोहाशिला पजलणाहिएएां । संतत्तभावं परितष्यमाणं, लालप्पमार्थं बहुहा वहुं चु॥१०॥ पुरोहियं तं कमसोऽखुणंतं, निमंतर्यतं च सुए घणेण । जहक्सं कामगुर्गिहि चेव, कुमारगा ते पसमिक्ख वक्कं ॥११॥ वेवा श्रहिया न भवंति नार्श. भुत्ता दिया निंति तमं तमेगां। जाया य पुत्ता न हवंति नाणं, की णाम ते अणुमन्त्रेज्ज एयं ॥१२॥

खगिमत्तसुक्खा बहुकालदुक्खा,
पगामदुक्खा अणिगामसुक्खा ।
संसार-मोक्खरस विपक्खमूया,
खाणी अणत्थाण उ काममोगा ॥१३॥
परि व्ययंते अणियत्तकामे,
अहो य राओ परितप्यमाणे।
अञ्चप्यमत्ते धणमेसमाणे,
पप्पोति मच्चुं पुरिसे जरं च॥१४॥
इमं च मे अत्थि इमं च नत्थि,
इमं च मे किच इमं अकिचं।
तं एव मे वं लाल प्यमाणं,
हरा हरंति ति कहं पमाओ ॥१४॥
धणं पथ्यं सह इत्थियाहिं,

सयगा तहा कामगुगा पगामा। तवं कए तप्पइ जस्स लोगो, तं सन्वसाहीगमिहेव तुन्मं ॥१६॥

भृगुः --

कुमारी-

भुगुः-

धयोण कि धम्मधुराहिगारे, सयगोण वा कामगुगोहि चेव। समणा भविस्सामु गुणोहधारी, वर्हिविहारा श्रमिगम्म भिक्खं॥१७॥

'जहा य अग्गी अरणी असंतो, 'खीरे घयं तेल्लमहातिलेसु ।' एमेव जाया सरीरंसि सत्ता, संग्रुच्छह नासह नावचिट्टे ॥१८॥ कुमारी—

न इंदियगोज्म ग्रमुत्तभावा, ग्रमुत्तभावा विय होइ निच्चो । ग्रज्यत्थहेउं निययस्त वंधो, संसारहेउं च नयंति वंधं ॥१६॥ जहा वयं धम्ममजाणमागा,

पावं पुरा कम्समकासि सोहा : श्रोरूज्मधाणा परिरक्खयंता, तं नेव भुजो वि समायरामो ॥२०॥

श्रन्माहयम्मि लोगम्मि, सन्दश्रो परिवारिए। श्रमोहाहि पडंतीहिं, गिहंसि न रहं लमे॥२१॥ भृगुः—

केण अन्भाहश्रो लोगो ? केण वा परिवारिश्रो ? का वा अमोहा बुत्ता ? जाया चिंतावरो हुमि ॥२२॥ कुमारी—

मन्जुणाऽन्भाह्यो लोगो, जराए परिवारियो ।

श्रमोहा रयणी वुत्ता, एवं ताय विजाणह ॥२३॥

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पिडनियत्तइ ।

श्रहममं कुणमाणस्स, श्रमला जंति राइत्रो ॥२४॥

जा जा वच्चइ रयणी, न सा पिडनियत्तइ ।

धममं च कुणमाणस्स, सफला जंति राइत्रो ॥२४॥

भगः--

एगश्रो संवसित्ताणं, दुदश्रो सम्मत्तसंज्ञया।
पच्छा जाया! गमिस्सामी, भिष्यमाणा कुले कुले ॥२६॥
हुमारी—

जस्सित्थ मञ्जुगा मक्खं, जस्य इडिन्थ पत्नायगां। जो जागो न मरिस्सामि, सो हु मंदी सुए सिया ॥२७॥

त्रान्डोव धम्मं पिंवज्ञयामो, जहिं पवना न पुणब्भवामो। अगागयं नेव य अत्थ किंची, सद्धाखमं णो विणइत्तृ रागं ॥२८॥ भार्यो प्रति सृगुः-पहीरापुत्तस्स हु नित्थ वासो, वासिद्धि ! भिक्खायरियाइ कालो । 'साहाहि रुक्खो लहए समाहिं, छिन्नाहि साहाहि तमेव खाणुं''।।२८।' "पंखाविहूणोव जहेव पक्खी'', ''भिचिव्वहूणोव्य रणे नरिंदो ।'' ''विवन्नसारो विशास्त्रोव्व पोए,'' पहीणपुत्तो मि तहा अहंपि ॥३०॥ भूगु प्रति जसाः— सुसंभिया कामगुर्गे इमे ते, संपिंडिया श्रग्गरसप्पभ्या भुंजाम् ता कामगुणे पगामं, पच्छा गमिस्सामु पहारामग्गं ॥३१॥ भार्यो प्रति भृगुः-भ्रुता रसा भोइ! जहाइ गो वश्रो, न जीवियद्वा पजहामि भोए। लामं त्रलामं च सुहं च दुक्खं, संचिक्खमाणो चरिस्सामि मोणं ॥३२॥ भृगु प्रति जसाः-मा हू तुमं सोयरियाण संमरे, ''जुएसो व हंसी पडिसोत्तगामी।'' मुंजाहि भोगाहि मए समागं, दुवसं खु भिवसायरियाविहारो ॥३३॥

भार्याप्रतिसृगुः—

'जहा य भोई तृख्यं स्यंगो, निम्मोयंणि हिच पलेइ सुत्तो।' एमेए जाया पयहंति भोए,

तं हं कहं नाखुगमिस्समेको ? ॥३४॥ 'छिंदित्तु जालं अवलं व रोहिया,

मच्छा जहा कामगुगो पहाए।'

धोरे य सीला तवसा उदारा, धीरा हु भिक्खायरियं चरंति ॥३५॥

न ताया स्वगतम्— 'महेव कुंचा समइक्तमंता, तयाणि जालाणि दलिचु हंसा।'

> पलिति पुत्ता य पई य मन्भं, ते हं कहं नागुगिससमेका ? ॥३६॥

कमलावती— पुरोहियं तं ससुयं सदारं,

सोचाऽभिनिक्खम्म पहाय भोए। कुडुं व सारं विडलुत्तमं च,

रायं श्रभिक्खं समुवाय देवी ॥३७॥ वंतासी पुरिसो रायं । न सो होई पसंसित्रो ।

माहरोण परिचर्त्त, धर्ण ग्रायाउमिन्छसि ॥३८॥ सन्वं जगं जइ तुहं, सन्वं वावि धर्णं भवं।

सन्वं पि ते अपज्जत्तं, नेव तागाय तं तव ॥३६॥
मरिहिसि रायं! जया तया वा,

मणोरमे कामगुणे पहाय । एको हु धम्मो नरदेव ! ताणं,

न विजर्द अभिनेहेह किंचि ॥४०॥

"नाहं रमे पिक्खणि पंजरे वा," संतासिका चरिस्सामि मोर्सा। अकिचका उज्जुकडा निरामिसा, परिग्महारं म नियत्त दोसा ।।४१॥

दविगणा जहा रएगो, डन्भमागोसु जंतुसु। श्रने सत्ता पमोयंति, रागद्दोसवसं गया'' ॥४२॥ एवमेव वर्यं मूढा, काम-मोगेसु सुच्छिमा। डन्भमागं न बुन्भामो, रागदोसग्गिणा जगं ॥४३॥ भोगे भोच्चा विमत्ता य, लहुभूयविहारिणो। श्रामोयमाणा गच्छंति, 'दिया कामकमा इव' ॥४४॥ इमे य बद्धा फंदंति, सम हत्यऽज्ञमागया। वयं च सत्ता कामेसु, भविस्सामो जहा इमे ॥४५॥ 'सामिसं कुललं दिस्स, वन्भमागं निरामिसं।' त्रामिसं सञ्बम्रिज्भत्ता, विहरिस्सामि निरामिसा ॥४६॥ 'गिद्धोवमा' उ नच्चार्णं, कामे संसारविड्ढणे। 'उरगो सुवर्णपासेव्व,' संक्रमाणो तर्णु चरे ॥४७॥ 'नागोव्व' बंधगां छित्ता, अप्पगो असहिं वए। एर्यं पत्थं महारायं, उस्सुयारि त्ति मे सुयं ॥४८॥ चइत्ता विउलं रज्जं, कामभोगे य दुच्चए। निव्यसया निरामिसा, निनेहा निष्परिगाहा ॥४६॥ सम्मं धम्मं वियागिता, चिच्चा कामगुगो वरे। - तवं पगिज्महक्खायं, घोरं घोरपरकमा ॥५०॥ , एवं ते कमसो बुद्धा, सन्वे धम्मपरायगा। लम्म-सच्चु-सउव्विष्शा, दुवखस्तंतगवेसिगो ॥५१॥

सासगे विगयमोहाणं, पुन्ति भावणभाविया।
श्रिचरेगोव कालेणं, दुक्खसंतम्रवागया ॥५२॥
राया सह देवीए, माहणो य पुरोहिश्रो।
माहणी दारगा चेव, सन्त्रे ते परिनिन्बुडा ॥५३॥
- ॥ ति वेमि ॥

अह सभिनंखू नामं पंचदसमज्भयणं

मोगं चिरस्सामि समिच धम्मं, सिहए उज्जुकडे नियाणिछिने। संथवं जिह्न अकामकामे, अनायएसी परिन्वए स मिक्सू॥ १॥

राश्रो वर यं चरं छ ला है, वि ग ए वेयवियायरिक्खए । पने श्रिभियुय सन्वदंसी, ने कस्हि-वि न मुन्छिए स भिक्खू ॥ २ ॥

श्रको स-न हं विइत्तु धीरं, मुणी चरे लाढे निच्चमायगुत्ते। श्रब्ध स्मास से श्रमंप हिट्ठे, जे कसिगां श्रहियासए स मिनस्तू॥ ३॥

पंतं सयणासणं भइत्ता, सीउएहं विविहं च दंस-मसगं। या व्यागमणे या मंपहिट्टे, जेकसिणं यहियासए सभिक्जू ॥ ४॥

नो सिक्स्यियच्छई न पूर्यं, ेनो वि य वंदगागं कुछो पसंसं १ से संजए सुन्वए तबस्ती, सहिए त्रायगवेसए स भिनलू ॥ ४ ॥ जेण पुण जहाइ जीवियं, मोहं वा कसिगां नियच्छइ । नरनारिं पजहे सया तबस्सी, न य कोऊहलं उवेइ स भिऋवू ॥ ६॥ छित्रं सरं भो मं अंत लिक्खं. सुमिणं-लक्खण-दंड-वत्थुविज्जं। श्रंगवियारं सरस्स विजयं, जे विज्ञाहिं न जीवइ स भिक्खू ॥ ७॥ मंतं मूलं विविहं वेजिचितं, वमण-विरेयगा-धूम-गोत्त-सिसागां। **ब्राउरे सरगां** तिगिच्छियं च, तं परिनाय परिव्वए स मिक्खू ॥ 🗸 ॥ खत्तियगण-उग्ग-गयपुत्ता, माहरा-भोई य विविहा य सिप्पिगो। नो तेसिं वयइ सिलोगपूर्यं, तं परिकाय परिव्वए स भिक्खू || ६ ॥ गिहिणो _जे पन्बइएण दिद्वा, अप्पन्बइएस व संथुया हविजा। ते सिं इह लो इय-फ ल हा,

जो संथवं न करेइ स भिक्खू ॥१०॥

```
सयणासण पाण-भोयणं,
विविहं खाइम साइमं परेसि ।
             श्रदए पहिसेहिए नियंठे,
              जे तत्थ न पउस्सइ स भिक्खू ॥११॥
जं किंचि
             श्राहार-पाणगं,
विविहं खाइस-साइमं परेसि लद्धं।
              जो नं तिविहेश नाशुकंपे,
              मण-वय-काय-सुसंबुडे स भिक्लू ॥१२॥
श्रायामगं चेव जवोदणं च,
सीयं सोबीर-जवोदगं च ।
              नो हीलए पिंडं नीरसं तु,
              पंतकुलाई परिन्वए स भिक्खू ॥१३॥
सदा विविहा भवंति लोए,
दिन्या माणुस्सगा तिरिच्छा,
              भीमा भयभेरवा उराला,
              जो सोचा न विहिज्जह स भिनख् ॥१४॥
वायं विविहं समिच्च लोए,
सहिए खेयाणुगए य कोवियपा।
              पन्ने अभिभृय सन्वदंसी,
              उवसंते श्रविहेडए स भिक्लू ॥१४॥
श्रमिषजीवी श्रमिहे श्रमित्ते,
जिइंदिए सन्दश्रो विष्यमुके ।
              श्रणुक्साई लहु-श्रप-भक्सी,
               विच्वा गिहं एगचरे स भिक्खू ॥१६॥
```

॥ ति वंगि ॥

अह बंभचेरसमाहिठाणा णामं सोलसमज्भयणं

सुयं मे आउसं ! तेगां भगवया एवमक्खायं-इह खलु थेरेहि भगवंतेहि दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नता। जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्त बंभयारी सया ऋपमत्ते विहरेजा। कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पक्ता। जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संबरबहुले,समाहिबहुले, गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त बंभयारी सया अप्यमत्ते विहरेजा ? इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिठाणा पन्नता। से भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले, संवरबहुले, समाहिबहुले, गुत्ते गुत्तिदिए गुत्त वंभयारी सया अप्यमत्ते विहरेजा। तं जहा---विवित्ताई सयणासगाई सेवित्ता हवइ से निग्गंथे। नो इत्थी-पसु-पंडग-संसत्ताई सयगासगाई सेवित्ता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे-श्रायरियाह----निग्गंथस्स खलु इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताई सयगासणाई-सेवमाणस्स वंभयारिस्स वंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा, समुप्यिज्जिज्जा— भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहका लियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केविलिपन्नतात्रो वा धम्मात्रो भंसेज्जा। तम्हा नो इत्थि-पसु-पंडग-संसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे। १ नो इत्थीर्ण कहं कहित्ता हवइ से निग्गंथे।

तं कहमिति चं-श्रायरियाह-

भेदं वा लभेजा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-दीहकालियं ना रोगायंकं हवेडजा---केवलिपवत्ताओं वा धम्मात्रो भंरोज्जा-

तं कहमिति चे-

श्रागरियाह—

भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा-

तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सिद्धं सिन्निमेजागए विहरेजा। ३। नो इत्थीगां इंदियाई मणोहराहं, मणोरमाई,

तं कहिमति चे ध्यायरियाह---

निग्गंथस्स खलु इत्थीर्णं कहं कहेमाणस्स वंभयारिस्स वंभचेरे-संका वा. कंखा वा, विड्गिच्छा वा समुप्पिन जना-

तम्हा खलु नो इत्थीणं कहं कहेज्जा ॥ २ ॥

नो इत्थीणं मद्धि सनिसेन्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गंथ। निग्गंथस्य खलु इत्थीहिं सद्धिं सिन्सेन्जागयस्स वंभयारिस्स वंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विद्गिच्छा वा समुप्पिजनजा---केवलिपनतात्रो वा धम्मायो भंसेजा--

श्रालं।इता निज्माइता द्वइ में निग्गंथे।

निर्माथस्य खलु इत्यीगं इंदियाई मणीहराई, गणीरमाई, ष्यालीएमाणस्यः निज्कायगाणस्य यंभयारिम्म वंभवेरे-संका वा, कंखा ना, विद्गिच्छा वा समुप्पजिज्ञा-

मेदं वा लभेजा, उम्मायं वा पाउणिजा दीहकालियं वा रोगायंकं हवेजा, केवलिपनतात्रो वा धम्मात्रो भंसेजा, तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीर्णं इंदियाइं मणोहराइं, मणोरमाइं, त्रालोएजा निज्माएज्जा ॥ ४ ॥ नो इत्थीणं कुड़ तरंसि वा, दूसंतरंसि वा, मित्तंतरंसि वा, कूइयसद्दं वा, रुइयसद्दं वा, गीयसद्दं वा, हसियसद्दं वा, थियसई वा, कंदियसई वा वित्तवियसई बा-सुशिता हवइ से निग्गंथे। तं कहमिति चे-**त्र्रायरियाह**— निग्गंथस्स खंद्य इत्थीर्ण-कुड्डंतरंसि चा, दूसंतरंसि चा, भित्तंतरंसि वा, कूइयसदं वा, रुइयसदं वा, गीयसदं वा, हिसयसदं वा, थिणियसई वा, कंदियसई वा, विलवियसई वा, सुणेमाणस्स वंभयारिस्स वंभचेरे-संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा, सम्रूप्विज्जा मेदं वा लभेन्जा, उम्मायं वा पाउणिन्जा, दीहकालियं वा रागायंकं हवेज्जा, केवलिपन्नताश्रो वा धम्माश्रो भंसेज्जा तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीर्गं— कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तंतरंसि वा, क्र्इयसद् वा, रुइयसद् वा, गीयसद् वा, हसियसद् वा, थणियसदं वा, कंदियसदं वा, विलवियसदं वा, सुगोमागो विहरेज्जा ॥ ४ ॥

१४२]

उत्तरक्मयण्भुत्तं

श्चि० १६

नो इत्थीर्ण पुन्वरयं पुन्वकीलियं श्रासुसरित्ता हवइ से निग्गंथे।

तं कहमिति चे-

श्रायरियाह—

वंभयारिस्स वंभचेरे-

संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा सम्रुप्यञ्जिजा— भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा— दीहकालियं वा रोगयंकं हवेज्जा-

केवलिपनतात्रो वा धम्मात्रो भंदेन्जा-तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं पुन्वरयं पुन्वकीलियं त्रगुसरेन्जा ॥६॥ नो पणीयं श्राहारं श्राहरित्ता हवइ से निग्गंथे।

तं कहमिति चे---श्रायरियाह—

मेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा—

तम्हा खलु नो निग्गंथे पणीयं आहारं आहरेज्जा ॥ ७ ॥

तं कहमिति चे-श्रायरियाह—

निग्गंथस्स खलु ऋइमायाए पाणभोयएां-श्राहारेमाण्स्स वंभयारिस्स वंभचेरे-संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पिजनजा-

निगांथस्स खलु इत्थीगां पुन्वरयं पुन्वकीलियं ऋगुसरमाणस्स

निग्गंथस्स खलु पणीयं त्राहारं त्राहारेमाणस्स वंभयारिस्स वंभचेरे संका वा, कंखा वा, विद्गिच्छा वा समुप्पिजन्जा---

दीहकां लियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलिएनतात्रो वा धम्माश्रो भंसेज्जा नो अइमायाए पाणभोयणं आहारेत्ता हवइ से निग्गंथे ।

मेदं वा लमेजजा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा,केवलियनतां को वा धरमाक्री भंसेज्जा तम्हा खलु नो निगांथे अइमायाए पाणभोयगं आहारेज्जा ॥ ८॥ नो विभूसाख्यवाई हवइ से निंग्गंथे। तं कहमिति चे-त्रायरियाह— निग्गंथस्य खलु विभूसावित्तए विभूसियसरीरे— इत्थिजणस्स अभिलसणिज्जे हवइ-तुओं गं इत्थिजगोगं अभिलिसिज्जमाणस्स वंभयारिस्स वंभचेरे-संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा सम्रुप्पिजन्जा---भेदं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा-दीहकालियं वा रोगायंकं हवेजा,केवलिपन्नताओ वा धम्माओ भंसेज्जा तम्हा खलु नो निगांथे विभूसासुवाई हवेन्जा ॥ ६॥ नो सद्द-ह्व-रस-गंध-फासाखुवाई हवई से निगांथे। तं कहमिति चे---श्रायरियाह— निग्गंथस्स खलु सद्द-रूव-रस-गंध-फासाखुवाईस्स वंभयारिस्स वंभचेरे-संका वा, कंखा वा, विइगिच्छा वा समुप्पिङजङजा— भेदं वा लभेनजा, उम्मायं वा पाउणिन्जा-दीहकालियं वा रोगायंकं हवेज्जा, केवलियनतात्रो वा धम्मात्रो भंसेज्जा तम्हा खलु नो निग्गंथे सद्द-रूव-रस-गंध-फासाखुवाई हवेज्जा। दसमे वंभचेरसमाहिठागो हवइ ॥१०॥ भवंति इत्थ सिलोगा।

तं जहा--

जं विवित्तमगाइएगं, रहियं इत्थिजगोण य। वंभचेरस्स रक्खहा, स्राज्यं तु निसेवए ॥१॥ मणपल्हायजणणी, का सरा ग वि व ड्ढ गी। बंभचेररत्रो भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥२॥ समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं। वंभचेररश्रो भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ३ ॥ श्रंगप चंगसंठा णं, चारु हावियपे हियं। वंभचेररत्रो थीगां, चक्खुगिनमं विवन्जए ॥ ४॥ कूइयं रुइयं गीयं, हिसयं थिंगिय-कंदियं । बंभचेररश्रो थीगां, सीयगिज्मं विवज्जए ॥ ५॥ हासं किंड्डं रइं दप्पं, सहसावित्तासियाणि य। वंभचेररस्रो थीणं, नासुचिते कयाइ वि ॥६॥ पणीयं भत्तपाणं तु, खिप्पं मयविवड्दणं। वंभचेररत्रो भिनखू, निचसो परिवज्जए ॥ ७॥ धम्मलद्धं मियं काले, जत्तत्थं पशिहाग्यवं। नाइमत्तं तु भुंजेजा, वंभचेररत्रो सया ॥ = ॥ विभूसं परिवज्जेज्जा, सरीर-परियंखणं । वंभचेररश्रो भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए।। ६॥ सदे रूवे य गंधे य, रसे फासे तहेव य। पंचिवहे कामगुणे, निचसो परिवन्जए ॥१०॥ त्रालको भी द्रणाइएणो , श्रीकहा य मगोरमा । संथवो चेव नारीगां , तासि इंदियदरिसगां ॥११॥ कूइयं रुख्यं गीयं, हसियंग्रताऽऽसियाणि य । वणीयं भत्तवार्णं च, छह्मायं पाणभोयर्णं ॥१२॥

गत्तभूसणिसहं च, कामभोगा य दुर्जयां ।

नरस्सत्तगवेसिस्स, 'विसं तालउढं जहा' ।।१३।।

दुज्जए कामभोगे य, निचसो परिवज्जए।

संकट्ठाणाणि सन्वाणि, वज्जेन्जा पणिहाणवं ।।१४।।

धम्मारामे चरे भिक्ख, धिइमं धम्मसारही।

धम्मारामे चरे भिक्ख, धिइमं धम्मसारही।

धम्मारामे चरे भिक्ख, बंभचेर—समाहिए ।।१५।।

देव—दाणव-गंधन्त्रा, जक्ख-रक्खस-किन्नरा।

बंभयारि नरंसंति, दुकरं जे करंति तं ।।१६॥

एस धम्मे धुवे निचे, सासए जिणदेसिए।

सिद्धा सिन्भंति चाणेण, सिन्भिस्संति तहावरे ।।१७॥

ति वेमि ।।

अह पावसमणिज्जं नाम सत्तदसमज्भयणं

जे केंद्र उ पंच्यहए नियंठे,
धम्मं सुणिता विणश्रीववसे ।
सुदृल्लहं लहिउं बोहिलामं,
विहरेडज पच्छा य जहासहं तु ॥ १ ॥
सेडजा दढा पाउरणं मि श्रित्थ,
उप्पड्डि मोत्तुं तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ श्राउस त्ति,
कि नाम काहामि सुएण मंते ! ॥ २ ॥
जे केंद्र उ पच्चइए, निहासीले पगामसो ।

भोच्चा पिच्चा सुंहं सुवइ, पावसमिशा ति वुचइ ॥ ३ ॥

ते चेव खिसई वाले, पावसमिण ति वुचइ ॥ ४॥

श्रायरिय-उवज्साएहिं, सुयं विशायं च गाहिए।

श्रायरिय-उवज्भायागं, सम्मं न पहितप्पइ। अप्यहिपूयए थद्धे, पावसमिण ति वुच्च ॥ ४ ॥ सम्मद्याणे पाणाणि, वीयाणि हरियाणि य। असंजए संजयमञ्चमार्थो, पावसमिए ति वुच्च ।। ६ ॥ संथारं फलगं पीढं, निसेड्जं पायकंवलं। श्रपमिक्तियमारुहइ, पावसमिणि ति वुच्चइ ॥ ७॥ दव-दवस्स चरई, पमत्ते य अभिक्खर्गं। उल्लंघगो य चंडे य, पावसमिगा ति वुचइ ॥ ⊏ ॥ पिं एडिलेहेड् पमत्ते, श्रवउन्माइ पायकंवलं । पिंडलेहा-त्राणाउत्ते, पावसमिणि ति वुच्च ॥ ६॥ प डिलेहेइ पमत्ते, से किंचि हु निसामिया। गुरुं परिमावए निच्चं, पावसमिण ति वुचइ ॥१ ॥ बहुमाई पम्रहरी, थद्धे लुद्धे श्रिणग्गहे । श्रसंविभागी श्रचियंत्रे, पावसमिए। ति वुच्च ॥११॥ विवादं च उदीरेइ, श्रहममे श्रत्तपन्नहा। बुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमिए। ति बुच्चइ ॥१२॥ श्रथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीयइ। आसणस्मि अणाउत्ते, पावसमणि ति वुच्वह ॥१३॥ ससरक्खपाए सुबह, सेन्जं न पहिलेहह। संथारए ऋणाउत्ते, पावसमिण ति वुच्चह ॥१४॥ दुद्धदही-विगईत्रो, श्राहारेड् श्रभिक्खणं। अरए य तवोकम्मे, पावसमिण ति वुच्चइ ॥१४॥ अन्थंतिम्म य स्रम्मि, आहारेड् अभिक्खणं। चोइयो पिंडचोएइ, पावसमिण ति वुच्चह ॥१६॥

त्राय रियप रिच्चाई, परपासं ह से वए।
गाणंगिणए दुन्भूए पावसमिणि ति वुच्चइ ॥१७॥
सयं गेहं परिच्चज, परगेहंसि वावरे।
निमित्तेशा य ववहरइ, पावसमिणि ति वुच्चइ ॥१८॥
सन्नाइपिंडे जेमेइ, नेच्छई साम्रदाणियं।
गिहिनिसेज्जं च बाहेइ, पावसमिणि ति वुच्चइ ॥१६॥

एयारिसे पंचक्रसीलसंबुढ़े, रूबंघरे मुणिपवराण हेड्रिमे। श्रयंसि लोए विसमेवगरहिए, न से इहं नेव परत्थ लोए ॥२०॥ जे वज्जए एए सया उ दोसे, से सुन्वए होइ मुणीण मज्मे। श्रयंसि लोए 'श्रमयं व पूइए' श्राराहए लोगिमणं तहा परं ॥२१॥ ॥ चि बेमि ॥

श्रह संजइज्ज नामं अठारसम्मज्भयणं

'कंपिल्ले नयरे' राया, उदिग्णग्लवाह्यो। नामेणं 'संजए' नाम, मिग्व्वं उविणग्गए॥१॥ ह्याणीए ग्याणीए, रहाणीए तहेव य। पायत्ताणीए मह्या, सन्वन्नो परिवारिए॥२॥ मिए छुहित्ता ह्यगन्नो, कंपिल्लुज्जाणकेसरे। भीए संते मिए तत्थ, वहें रसमुन्छिए॥३॥ श्रह 'केसरिम' उज्जाखे, श्रखगारे तवीधयो।
सन्भायन्भाखसंज्ञते, धम्मन्भाखं भियायइ॥ ४॥
श्रफोवमंडवंमि, भायइ खिवयासवे।
तस्सागए मिए पासं, वहेइ से नराहिवे॥ ४॥
श्रह श्रासगत्रो राया, खिप्पमागम्म सो तिहं।
हए मिए उ पासिन्ता, श्रखगारं तत्थ पासइ॥ ६॥
श्रह राया तत्थ संभंतो, श्रणगारो मणाहश्रो।
मए उ मंदपुरखेखं, रसगिद्धेण घंतुखा॥ ७॥
श्रासं विसन्जइत्ताखं, श्रणगारस्स सो निवो।
विणएण वंदए पाए, भगवं! एत्थ मे खमे॥ ८॥
श्रह मोखेण सो भगवं, श्रखगारे भाखमस्सिए।
रायाखं न पडिमंतेइ, तश्रो राया भयद्दुश्रो॥ ६॥

संज्ञा ग्रहमम्मीति, भगवं ! वाहराहि मे ।
जुद्धे तेएण श्रणगारे, डहेज्ज नरकोडिश्रो ॥१०॥
गर्दमालिम्निः—
श्रभश्रो परिश्रवा ! तहमं. श्रभग्रहाथा भवाहि य ।

श्रभश्रो पित्थवा! तुन्भं, श्रभयदाया भवाहि य। श्रिण्चे जीवलोगंमि, किं हिंसाए पसज्जिस ?।।११॥ जया सन्वं परिन्चज्ज, गंतन्यमवसस्स ते। श्रिण्चं जीवलोगंमि, किं रज्जंमि पसज्जिस ?।।१२॥ जीवियं चेव रूवं च, विज्जुमंपायचंचलं। जत्थ तं मुज्मिसि रायं! पेन्चत्थं नावबुज्मिसे।।१३॥ दाराणि य सुया चेव, मिना य तह वंधवा। जीवंत म खुजी वंति, मयं नाखुवयंति य।।१४॥ नीहरंति मयं पुत्ता. पियरं परमदुविखया। पियरो वि तहा पुत्ते, वंधृ रायं! तवं चरे।।१४॥ तत्रो तेगाजिए दन्ने, दारे य परिरक्षिए। कीलंतिऽने नरा रायं! हर्द्वतुरुमलंकिया ॥१६॥ तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वा दुहं। कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छई उ परं भवं ॥१७॥

संजयः---

सोऊण तस्स सो धर्मं, अणगारम्स अंतिए।
मह्या संवेगनिव्वेयं, समावन्नो नराहिवो।।१८॥
संजश्रो चइउं रज्जं, निक्खंतो जिग्रसासग्रे।
गत्दमालिस्स मगवश्रो, श्रग्रागारस्स अंतिए।।१६॥
चिच्चा रहं पव्वइए,

च्चत्रियमुनिः—

खत्तिए परिभासइ। जहा ते दीसइ रूवं, पसन्नं ते तहा मगो।।२०॥

कि नामे कि गोत्ते कस्सद्वाए व माहर्णे। कहं पिडयरिस बुद्धे, कहं विणीए त्ति बुचिसि १।'२१॥ संजयमुनिः—

संज्ञो नाम नामेगां, तहा गोत्तेण गोयमो १ गहभाली ममायरिया, विज्ञाचरणपारगा ॥२२॥ चत्रियमुनिः क्रियावादादि मिथ्यामिमतानामनात्मनीनतां प्रदर्शयति किरियं अकिरियं विणयं, अन्नागां च महामुणी।

एएहिं चउहिं ठागोहिं, मेयने कि प्रभासइ ॥२३॥ इह पाउकरे बुद्धे, नायए परिणिट्युए । विज्ञा-चरग्य-संपन्ने, सच्चे सञ्चपरक्कमे ॥२४॥ पढंति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो । दिव्यं च गई गच्छंति, चरित्ता धम्ममारियं ॥२४॥

मायाबुइयमेयं तु, ग्रुसा भासा निरत्थिया। संजममाणो वि श्रहं, वसामि इरियामि य ॥२६॥ सन्वेए विइया मन्मं, मिन्छादिद्वी श्रणारिया । विज्जमार्गे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पर्य ॥२७॥ च्नत्रियमुनिः स्वपूर्वभवं वर्ण्यति श्रहमासि महापागो, जुइमं वरिससश्रोवमे । ना सा पालि-सहापाली, दिन्ना वरिससऋोवमा।।२८।। ः से चुए, 'बंभलोगाश्रो', माणुरूसं भवमागए। श्रपणो य परेसिं च, श्राउं जाणे जहा तहा ॥२६॥ नाणारुइं च छंदं च, परिवज्जेज्ज संजए। त्रणहा जे य सन्वत्था, इइ विज्जामगुमंचरे ॥३ ॥ पिकमामि पित्याणं. परमंतेहिं वा पुर्यो। त्रहो उद्विए त्रहोरायं, इइ विज्ञा तवं चरे ॥३१॥ जं च मे पुच्छसी काले, समं सुद्धेण चेयसा। ताई पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसाणणे ॥३२॥ किरियं च रोयइ धीरे, अकिरियं परिवज्जए। दिद्वीए दिद्विसंपन्ने, धम्मं चरसु दुन्चरं ॥३३॥ च्चत्रियमुनिः प्रविजतान् चक्रवर्त्यादीन् वर्ण्यति एयं पुराणपयं सोचा, अत्थ-धम्मोवसोहियं। "भरहो" वि भारहं वासं, चिचा कामाइं पव्यए॥३४॥ "सगरो" वि सागरंतं, भरहवासं नराहिवो। इस्सरियं केवलं हिच्चा, दयाए परिनिच्चुडे ॥३५॥ चड्चा भारहं वासं, चकवट्टी महिड्डिश्रो। पच्चजमच्भुवगद्यो, "मध्वं" नाम महाजसो ॥३६॥

''सर्गंकुमारो'' मणुस्सिदो, चक्कबड्डी सहिड्ढियो । पुत्तं रज्जे ठवेऊगां, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥ चइत्ता भारहं वासं चकवट्टी महिड्डिओ । "संति" संतिकरे लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३८॥ इक्खागरायवसभो, 'कुंथू' नाम नरीसरो। विक्खायिकत्ती भगवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥३६॥ सागरंतं चइत्तागं. भरहवासं नरेसरो । 'श्ररो' य श्ररयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४०॥ चइत्ता भारहं वासं, चइत्ता बलबाहणं। चइत्ता उत्तमे मोए, 'महापउमे' तवं चरे ॥४१॥ एगच्छत्तं पसाहित्ता, भहिं माण-निस्ररणो । 'हरिसेणो' मणुस्सिदो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥४२॥ श्रित्रश्रो रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाई दमं चरे। 'जयनामो' जिगावखायं, पत्तो गइमग्रात्तरं ॥४३॥ 'दसएणरज्जं' ग्रुदियं चइतागां ग्रुणी चरे। 'दसर्णमद्दो' निक्संतो, सक्खं सक्केण चोइग्रो ॥४४॥ 'नमी' नमेइ श्रप्पागं, सक्खं सक्केण चोइश्रो। चइऊर्ण गेहं 'वहदेही', सामएर्णे पन्जुवष्टिश्रो ॥४४॥ 'करकंडू' कलिंगेसु, पंचालेसु य 'ढुम्मुहो'। नमी राया विदेहेसु गंधारेसु य 'नग्गई' ॥४६॥ एए नरिंदवसभा, निक्खंता जिग्रसासग्रे । पुत्ते रज्जे ठवेऊगं, सामग्गं पन्जुवड्डिया ॥४७॥ 'सोवीररायवसमो', चइत्ताण मुणी चरे । 'उदायणो' प्व्वइत्रो, पत्तो ग्इमग्रुत्तरं ॥४८॥

तहेव 'कासिराया' वि, सेश्रो सचपरकमे।
कामभोगे परिचल, पहणे कम्ममहावणं ॥४६॥
तहेव 'विलश्रो राया', श्रणद्वाकित्ति पव्वए।
रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महालसो॥४०॥
तद्देवुग्गं तवं किच्चा, श्रव्यविखत्तेण चेयसा।
'मह्व्यलो' रायरिसी, श्रादाय सिरसा सिरिं॥४१॥
कहं घीरो श्रहेलहिं, उम्मत्तो व महिं चरे १
एए विसेसमादाय, स्रा दहपरक्तमा ॥४२॥
श्रचंतियाणल्यमा, सच्चा मे भासिया वई।
श्रत्रिंसु तरंतेगे, तरिस्संति श्रणागया ॥४३॥
कहिं घीरे श्रहेलहिं, श्रत्ताणं परियावसे।
सव्यसंग-विनिम्नके, सिद्धे मवइ नीरए ॥४४॥

अह मियापुत्तीयं नामं एगूणवीसइमं अज्भयणं

'सुग्गीवे' नयरे रंमे, काणणुज्जाणसोहिए।
राया 'वलमिहित्ते', 'मिया' तस्सग्गमहिसी।। १।।
तेसिं पुत्ते 'वलसिरी', 'मियापुत्ते' ति विस्सुए।
ग्रम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे।। २।।
नंदयो सो उपासाए, कीलए सह इत्थिहिं।
देवो दोगुंदगो चेव, निच्चं मुहय—माणसो।। ३।।
मिणि-रयण-कोडिमतले, पासायालोयणिडिग्रो।
धालोएइ नगरस्स, चुडक—तिय—चच्चरे।। १॥

श्रह तत्थ श्रइच्छंतं, पासइ समण-संजयं।
तव-नियम-संजमधरं, सीलड्ढं गुणश्रागरं ॥ ॥ ॥
तं पेहई मियापुत्ते, दिट्ठीए श्रिणिमिसाए उ।
कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुट्वं मए पुरा ॥ ६॥
साहुस्स दरिसणे तस्स, श्रज्भवसाणिम सोहणे।
मोहं गपस्स संतस्स, जाइसरणं समुप्पनं ॥ ७॥
देवलोगचुश्रो संतो, माणुसं भवमागश्रो ।
सन्नि-नाण-समुप्पने, जाई सरई पुराणियं॥
जाईसरणे समुप्पने, मियापुत्ते महिड्ढिए ।
सरइ पोराणियं जाई, सामएणं च पुरा क्यं॥ ८॥

मृगापुत्रः—

विसएहि श्ररज्जंतो, रज्जंतो संजर्ममि य । श्रम्मा-पियरम्रवागम्म, इमं वयेणमञ्जवी ॥ ६ ॥

> सुयाणि में पंच महव्वयासि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्ख-जोणिसु। निव्विरणकामो मि महएस्वात्रो, असुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो । ॥१०॥

श्रमताय! मए भोगा, अत्ता ''विसफलोवमा।'
पच्छा कडुयविवागा, श्रणुबंध दुहावहा ॥११॥
इमं सरीरं श्रणिचं, श्रसुहं श्रसुहसंभवं।
श्रसासयावासिमणं, दुक्खकेसाण भायणं॥१२॥
श्रसासए सरीरंमि, रइं नोवलभामहं।
पच्छा पुरा व चइयव्वे, ''फेणबुब्बुयसिन्भे''॥१३॥
माणुसत्ते श्रसारंमि, वाहीरोगाण श्रालए।
जरा-मरणबन्धंमि, खणंपि न रमामहं॥१४॥

जम्मं दुवखं जरा दुवखं, रोगा य मरणाणि य। श्रहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो ॥१५॥ खेत्तं वत्थं हिरएगां च, पुत्तदारं च बंधवा। चइत्राणं इमं देहं, गंतन्वसवसस्स मे ॥१६॥ ''जहा किंपागफलाणं,'' परिणामो न सुंदरो। एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥१०॥ ''श्रद्धार्गं जो महंतं तु, श्रप्पाहेश्रो पवज्जह। गच्छंतो सो 'दुही होइ,' छुहा-तएहाए पीड़िश्रो ॥१८॥ एवं धम्मं अकाऊगं, जो गच्छइ परं भवं। गच्छंतो सो 'दुही होइ', वाहीरोगेहिं पीड़ियो।।१६॥ "श्रद्धार्यं जो महंतं तु, सपाहेश्रो पवज्जइ।" गच्छंतो सो 'सुही होइ', छुहातएहाविविष्ठियो।।२०॥ एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं। गच्छंतो सो 'सुही होइ', अप्पकम्मे अवेयगो ॥२१॥ 'जहा गेहे पलिंत्तिमा', तस्स गेहस्स जो पहू। सारभंडाणि नीगोइ, श्रसारं श्रवउन्भइ ॥२२॥ एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरखेण य। श्रप्पाणं तारइस्सामि, तुन्मेहि श्रणुमित्रश्रो ॥२३॥ पितरी-तं वितम्मापियरो, सामराणं पुत्त ! दूच्चरं। गुणाणं तु सहस्साइं, धारेयन्वाइं भिक्खुणा ॥२४॥ (१) समया सन्वभूएसु, सत्त्मित्तेसु वा जगे। पाणाइवाय-विरई; जावजीवाए दुकरं ॥२५॥ (२) निच्चकालऽप्यमत्तेर्गं, मुसावायविवज्रांगं । भारियव्यं हियं सन्यं, निन्याउचेयां दुकरं ॥२६॥

(३) दंतसोहरामाइस्स, अदत्तस्स विवजांग । त्र्यावन्जेसिणजस्स, गिर्णहणा श्रवि दुविकरं ।।२७॥ (४) विरई अवंभचेरस्स, कामभोगरसनुगा। उग्गं महन्वयं वंभं, धारेयन्वं सुदुककरं ॥२८॥ (४) **धगा-धन्न-पेसनगोसु,** परिगगह-निवज्जांग । सन्वारंभ-परिच्वात्रो, निम्ममत्तं सुदृक्करं ॥२८॥ (६) चउन्विहे वि श्राहारे, राईमोयग्वजागा। सिन्ही-संच्छो चेव, वज्जेयन्त्रो सुदुक्करं ॥३०॥ छुहा तगहा ए सीउगहं, दंस-मसश्रवेयणा। अकोसा दुक्खसेजा य, तणफासा जल्लमेव य ॥३१॥ - ताल्या तज्जगा चेव, वह-बंधपरीसहा। दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य श्रलाभया ॥३२॥ 'कावोया' जा इमा विची, केसलोस्रो यदारुगो। दुक्खं बंभव्वयं घोरं, धारेउं य महप्पणो ॥३३॥ सुहोइश्रो तुमं पुत्ता, ! सुउमालो सुमि श्रो । न हुसि पभू तुमं पुत्ता, सामएणमणुपालियं ॥३४॥ जावजीवमविस्सामी, गुणागं तु महन्मरो। 'गुरुश्रो लोहमारुव्य', जो पुत्ता होइ दुव्वही ॥३५॥ 'श्रागासे गंगसोउन्ब', पहिसोउन्ब दुत्तरो। वाहाहिं सागरो चेव, तरियव्वो गुणोदही ॥३६॥ ''वालुया कवलें' चेव, निरस्साए उ संजमे । 'श्रसिधारागमणं' चेव, दुक्तरं चरिउं तवी ॥३७॥ 'श्रहीवेगंतदिद्वीए', चरित्ते पुत्त ! दुक्तरे । 'जवा लोहमया चेव', चावेयव्वा सुंदुक्तरं ॥३८॥ 'जहा श्रगिसिहा दित्ता', पाउं होइ सुदुकरा। तहा दुकरं करेडं जे, तारुएणे समग्रत्तगां ॥३६॥

मृगापुत्रः--

'जहा दुक्लं भरेउं जे, होइ वायस्स कोत्थलो ।' तहा दुक्खं करेडं जे, कीवेगं समणत्तगं ॥४०॥ 'जहा तुलाए तोलेडं, दुकरो मंदरो गिरी।' तहा निहुयनी संकं, दुक्तरं समगत्त गं॥४१॥ 'जहा भुयाहि तरिजं, दुक्करं रयणायरो। तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसागरो ॥४२॥ मुंज भागुस्सए मोए, पंचलक्खणए तुमं। भुत्तभोगी तुत्रो जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्सिस ॥४३॥ सो बेइ अम्मापियरो, एवमेयं जहा फुडं। इह लोए निप्पिवासस्स, निथ किंचिव दुकरं ॥४४॥ सारीर-माणसा चेव, वेयणाओ अनंतसो। मएसोढाञ्चो भीमाञ्चो. श्रसइं दुक्खभवाणि य ॥४५॥ जरामरणकंतारे, चाउरंते भयागरे। मया सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि य ॥४६॥ नरक वर्णानम्-जहा इहं त्र्याणी उपहो, एत्तोऽणंतगुणो तहिं। नरएसु वेयणा उपहा, असाया वेइया मए ॥४७॥ जहा इहं इमं सीयं, एत्तोऽगंतगुणो तहिं । नरएसु वेयगा सीया, श्रसाया वेइया मए ॥४८॥ कंदंती कंदृकुंभीसु, उड्ढपाछी श्रहोसिरो। हुयासणे जलंतिमम, पक्कपुच्यो श्रणंतसो ॥४६॥ महादविगसंकासे, मरुंमि वहरवालुए । कलंबवालुयाए य. दड्हपुच्वो द्यणंतसो ॥५०॥ रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्हं बद्दो श्रवंघवी।

करवत्त-करकयाईहिं, छित्रपुच्चो अर्गतसो ॥५१॥

ब्रइतिक्खकंटगाइएणे, तु'गे सिंबलिपायवे । खेवियं पासबद्धेशं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥५२॥ महाजंतेसु उच्छू वा, त्र्यारसंतो सुभेरवं । पीलियो मि सकम्मेहिं, पावकम्मो य्यणंतसो ॥४३॥ क्तवंती कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि य । पाडियो फालियो छिन्नो, विप्फुरंतो अगोगसो ॥४४॥ त्रसीहिं त्रगसिवएणाहिं, भल्लेहिं पट्टिसेहि य। छिनो भिनो विभिनो य, ग्रोइएगो पावकम्प्रणा।। ५५॥ श्रवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए। चोइश्रो तोत्तजुत्तेहिं, 'रोन्भो' वा जह पाडिश्रो॥५६॥ हुयासगो जलंतिम्म, चियासु 'महिसो' विव । दड्ढो पको य अवसो, पावकम्मेहि पाविस्रो ॥५०॥ वेला संडासतुंडेहिं, लोहतुंडेहिं पंक्खिहिं। विद्धत्तो वित्तवंतोऽहं, हंकगिद्धेहिंऽण्ंतसो ॥५८। तएहाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेयरणि नई । जलं पाहिं ति चितंतो, खुरधाराहिं विवाइश्रो ॥५६॥ उएहाभितत्तो संपत्तो, त्रसिपत्तं महावर्णं । त्रसिपत्तेहिं पडंतेहिं, छिन्नपुच्वो श्राणेगसो ॥६०॥ मुग्गरेहिं मुसंहीहिं, सूलेहिं मुसलेहि य । गया-संभग्ग-गत्तेहिं, पत्तं दुक्खं त्रगांतसो ॥६१॥ सुरेहिं तिक्खधाराहिं, छुरियाहिं कप्पगीहि य। किपयो फालियो छिनो, उकित्तो य अयोगमो ॥६२॥ पासेहिं कूडजालेहिं, मिश्रो वा श्रवसो श्रहं। वाहित्रो बद्धरुद्धो य, बहुसो चेव विवाइश्रो ॥६३॥ गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं। उन्निभो फालिभो गहिश्रो, मारिश्रो य श्रग्तंतसो ॥६४॥

विदंसएहि जालेहिं, लेप्पाहिं सउणो विव । गहित्रो लग्गो य बद्धो य, मारिक्रो य ऋगंतसो ॥६५॥ कुहाड-फरसु-माईहिं, वड्दईहिं दुमो विव। कुट्टियो फालियो छिनो, तिन्छयो य अणंतसो ॥६६॥ चनेड--ग्रुडिमाईहिं कुमारेहिं, श्रयं पिव । ताडियो क्रिटियो भिन्नो, चुिएणयो य चर्णतसो ॥६७॥ तत्ताई र्तंबलोहाई, तउयाई सीसयाणि य। पाइश्रो कलकलंताई, श्रारसंतो सुभेरवं ॥६८॥ तुई पियाई मंसाई, खंडाई सोल्लगाणि य। खाविस्रो मि स-मंसाई, श्रीगवरणाइऽणेगसो ॥६६॥ तुई पिया सुरा सीहू, मेरश्रो य महूणि य। पाइश्रो मि जलंतीश्रो, वसाश्रो रुहिराणि य ॥७०॥ निचं भीएण तत्थेण, दुहिएण वहिएण य। परमा दुहर्संबद्धा, वेयणा वेह्या मए ॥७१॥ तिन्वचंडप्पगाढाञ्रो, घोराञ्रो ञ्रहदुस्सहा । महञ्मयात्रो भीमात्रो, नरएसु वेह्या मए ॥७२॥ जारिसा माणुसे लोए, ताया । दीसंति वेयणा । एत्तो अर्णतगुणिया, नरएसु दुक्खवेयणा ॥७३॥ सन्वभवेसु श्रसाया, वेयणा वेड्या मए। निमेसंतरमित्तं पि, जं साता नित्य वेयणा ॥७४॥ पितरी-तं विंतऽमापियरो, छंदेशं पुत्त ! पव्यथा । नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पहिकम्मया ॥७४॥ मृगापुत्रः— सो वेह श्रम्मापियरो ! एवमवं जहा फुर्डं।

पिंदिक्रममं को कुण्ड, श्ररएण मियपिक्तरणं ॥७६॥

एगं धम्मं चिरस्सामि, संजमेण तवेण य ॥७७॥ जहा मिगस्स आयंको, महारएणंमि जायइ। अच्छतं रुक्खमूलंमि, को एां ताहे चिगिच्छई ॥७८॥ को वा से श्रोसहं देइ, को वा से पच्छइ सहं १ को से भन्तं च पाएां वा, आहरित्तु पणामए १ ॥७३॥ जया य से सही होइ, तया गच्छइ गोयरं। मन्तपाणस्स अद्वाए. बल्लराणि सराणि य ॥८०॥ खाइना पाणियं पाउं, बल्लरेहिं सरेहि य। मिगचारियं चिरनाणं, गच्छइ मिगचारियं ॥८१॥ एवं सम्रहिश्रो भिक्ख, एवमेव अयोगए। मिगचारियं चिरनाणं, उड्ढं पक्कमई दिसं॥८२॥

जहा मिए एग ऋगोगचारी, श्रगोगवासे धुवगोयरे य । एवं मुगी गोयरियं पविट्ठे, नो हीलए नो वि य खिसएजा ॥⊏३॥

मृगापुत्रस्यदीत्तामहण्यम्—

मिगचारियं चरिस्सामि, एवं पुत्ता ! जहासुहं ।
अम्मापिऊहिऽणुकाओ, जहाइ उविह तस्रो ॥८४॥
मियचारियं चरिस्सामि, सन्वदुक्खिनमोक्खिण ।
तुन्मेहिं अंत्र ! ऽणुकाओ, गन्छ पुत्त ! जहासुहं ॥८४॥
एवं सो अम्मापियरो, अणुमाणित्ताण बहुविहं ।
ममत्तं छिदइ ताहे, 'महानागो न्व कंचुयं ॥८६
इड्ढी वित्तं च मित्ते य, पुत्तदारं च नायओ ।
'रेणुयं व पडे लग्गं,' निधुणित्ताण निग्गओ ॥८७॥

पंचमहव्ययजुत्तो, पंचसिम्बो तिगुत्तिगुत्तो य। सिंक्सित्रबाहिरए, तबोकम्मंमि उज्जुत्रो ॥८८॥ निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो । समो य सन्वभूएसु, तसेसु थावरेसु य ॥=६॥ सामालामे सुहे दुक्खे, जीविए मरगो तहा। समो निंदा-पसंसासु, तहा माणावमाणत्रो ॥६०॥ गारवेसु कसाएसु, दंड-सल्ल-भएसु य। नियत्तो हाससोगात्रो, श्रनियाणो त्रबंधणो ॥६१॥ त्रणिसित्रो इहं लोए, परलोए त्रणिसित्रो। वासीचंदणकप्पो य, श्रमणे श्रणसणे तहा ॥६२॥ श्रप्यसत्थेहिं दारेहिं सन्वत्रो पिहियासवे। श्रन्मप्प-ज्मागजोगेहिं, पसत्थ-दमसासगे ॥६३॥ एवं नागोण चरगोगा, दंसगोगा तवेगा य। भावगाहि य सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु श्रप्पयं ॥८४॥ बहुयाणि उ वासाणि, सामग्णमणुपालिया। मासिएग उ भर्तेण, सिद्धि पत्तो श्रगुत्तरं ॥ १४॥ एवं करंति संबुद्धा, पंडिया पवियवखा।। विणिश्रद्वंति भोगेसु, मियापुत्ते जहारिसी ॥६६॥ महप्यभावस्स महाजसस्स, मियाइपुत्तस्स निसम्म भासियं। तवपहांगं चरियं च उत्तमं, गइप्पहार्यं च तिलोगविस्सुयं ॥६७॥ वियाणिया दुक्ख-विवद्दर्णं धर्णं, ममत्त्रबंधं च महामयावहं । सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेह निवाण-गुणावहं महं ॥१८॥ ति बेमि ॥

अह महानियंठिज-नामं वीसइमं अज्भयणं

सिद्धार्णं नमो किचा, संजयार्णं च भावश्रो। ग्रत्थ-धम्म-गई तचं त्रगुसिद्धि सुगोह मे ॥ १॥ पभूयरयगो राया, 'सेणिश्रो' मगहाहिबो । विहारजनं निजाओ, 'संडिकुचिंछसि चेइए ॥२॥ नाणा-दुम-लयाइएगं, नागा-पिक्ख-निसेवियं। ः नाणाकु सुम-संछन्नं, उज्जार्णनंद गोवमं ॥ ३॥ तत्थ सो पासइ साहुं संजयं सुसमाहियं । निसनं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइयं ॥ ४॥ तस्स रूवं तु पासित्ता, राइश्रो तिम्म संजए। असंतपरमो आसी, अउलो रूवविम्हश्रो ॥ ५॥ श्रहो वएगो श्रहो ह्वं, श्रहो श्रहस्य सोमया। श्रहों खंती श्रहो मुत्ती, श्रहो भोगे श्रसंगया ॥ ६ ॥ तस्स पाए उ चंदित्तां, काऊण य पयाहिगां। ना इद्रमणा सन्ने, पंजली प डिपुच्छ इ।। ७।। श्रेगिक:-तरुणो सि श्रञ्जो ! पन्त्रदृश्रो, मोगकालिम्म संजया । ं उविद्वित्रो सि सामएणे, एवमई सुगोमि ता II ट II श्रनाथी मुनिः—

त्र्रणाहोमि महाराय !, नाहो मन्भ न विष्ठाह । त्र्रणुकंपयं सुहिं वावि, कंचि नामिसमेमहं ॥ ६ ॥

तत्रो सो पहिंतिश्रो राया, सेशिश्रो मगहाहियो। ११, एवं ते, इडि्दमंतुस्त, कहं नाहो न विज्ञह् ॥१०॥

'श्रेणिकः—`

होमि नाहो अयंतार्गं, भोगे भुंजाहि संजया ! मित्त-नाइ-परिबुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥ **श्र**नाथी मुनिः— अपणा वि अगाही सि, सेगिया ! मगहाहिवा! अप्पणा अणाही संतो, कहं नाही भिवस्सिस !।।१२।। श्रेणिकः-एवं बुत्तो नरिंदी सो, सुसंभंतो सुविम्हित्रो। वयणं श्रस्सुयपुन्वं, साहुणा विम्हयनिश्रो ॥१३॥ श्रस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं श्रंतेउरं च मे। मुंजामि माणुसे मोए, त्राणा इस्सरियं च मे ॥१४॥ एरिसे संपयग्गम्मि, सन्वकामसमप्पिए। कहं ऋणाहो भवइ, मा हु भंते ! मुसं वए ॥१४॥ श्रनाथी मुनि:— न तुमं जागो त्रणाहस्स, त्रत्थं पोत्थं च पत्थिवा! जहा श्रणाही भवइ, संगाही वा नराहिवा ! ॥१६॥ सुगोह मे महाराय! अव्वक्खित्तेग चेयसा। जहा श्रणाहो भवई, जहा मेर्य पवत्तियं ॥१७॥ "कोसंबी" नाम नयरी, पुराणपुर भेयणी। तत्थ त्रासी पिया मज्म, पभूय-धण-संचन्रो ॥१८॥ पढमे वए महाराय !, अउला मे अन्छित्रेयणा । श्रहोत्था विउत्तो दाहो, सन्वगत्तेसु पर्श्यिवा ॥१६॥ सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीर-विवरंतरे । 'पविसिज अरी कुद्धो', एवं मे अच्छिवेयणा ॥२०॥ तियं मे श्रंतिरच्छं च, उत्तमंगं च पीडइ। 'इंदासिश्यसमा' घोरा, वेयणा परमदारुणा ॥२१॥

उवद्विया मे श्रायरिया, विज्ञा-मंत-तिगिच्छया।

अवीया सत्थकुसता, मेतमूल विसारया ॥२२॥

ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहियं। न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्भ श्राह्या ॥२३॥ पिया मे सन्वसारंपि, दिखाहि मम कारणा। न यं दुक्खा विमोएइ, एसा मन्म त्रग्णाह्या ॥२४॥ माया वि मे महाराय । पुत्तसोगदुहद्दिया। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्म श्रिशाहिया ॥२५॥ मायरा मे महाराय ! सगा जेड्ड-कणिहुगा। न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्मा श्राणाह्या ।।२६॥ मह्णीत्रो मे महाराय! सगा जेडू-कणिटुगा। न य दुक्खा विमोयंति, एसा मज्भा ऋगाह्या ॥२७॥ भारिया मे महाराय ! ऋगुरत्ता ऋगुव्वया । श्रंसुपुएगोहिं नयगोहिं, उरं मे परिसिच ॥२८॥ अनं पाणं च एहाणं च, गंध-मल्लविलेवणं। मए नायमणार्य वा, सा बाला नोवमुंजइ ॥२६॥ खणं पि मे महाराय ! पासात्रो वि न फिट्टइ । न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्भ अग्णाहया ॥३०॥ तमो हं एवमाहंसु, दुक्खमाहु पुणी पुणी। वेयणा श्रग्रुमविउं जे, संसारम्मि श्रग्रांतए ॥३१॥ सई च जइ मुंचिजा, वेयगा विउला इस्रो। खंतो दंतो निरारंभो, पन्वइए अग्रागारियं ॥३२॥ एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तो मि नराहिवा! परियत्तंतीए राईए, वेयणा मे खयं गया ॥३३॥ तत्रो कल्ले पभायंमि, श्रापुच्छिताण बंधवे। - खंतो दंतो निरारंभो, पन्बइओ ऽणगारियं ॥३४॥

तो हं नाहो जात्रो, श्रपणो य परस्स य । सन्वेसि चैव भूयागं, तसाण थावराण य ॥३४॥ श्रपा नई वेयरगी, श्रपा मे कूडसामली। अप्पा कामदुहा धेगाू, अप्पा मे नंदर्ग वर्गा।।३६॥ ग्रप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहास य सुहास य। अप्या मित्तमिसनं च, दुप्पहिय सुपद्वित्रो ॥३७॥ इमा हु अना वि अगाहया निवा! तमेगचित्रो निहुओ सुगोहि। नियंठधम्मं लहियाण वि जहा, सीयंति एगे बहुकायरा नरा ॥३८॥ जो पन्बद्तागा महन्वयाइं, सम्मं च नो फासयइ पमाया। अनिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलक्रो छिन्नइ बंधगं से ॥३६॥ श्राउत्तथा जस्स न श्रत्थि काइ, इरियाए भासाए तहेसणाए । त्रायाण-निक्खेव-दु गं छ णा ए, न वीरजायं श्रगुजाइ मग्गं ॥४०॥ ंचिरं पि से मुंडरुई भविता, अथिरव्वए तवनियमेहि भट्टे । चिरं पि अपाण किलेसइता, न पारए होइ हु संपराए ॥४१॥ 'पोल्ले व मुद्री जह से असारे,' 'अयंतिए कूड-कहावसे वा।' 'राढामणी वे रु लि य प्य गा से,' अमहग्वए होइ हु जागएसु ॥४२॥

कु सी ल लिंगं इहं धारइ ता, इसिज्भयं जीविय वृहइत्ता । श्रसंजए संजयलपमाणी, विशिषायमागच्छइ से चिरंपि ॥४३॥ 'विसं तु पीयं जह कालकूडं,' 'हणाइ सत्थं जह कुग्गहीयं।' एसो वि धम्मो विसत्रीववन्नो, हगाइ 'वेयाल इवाविवसो' ॥४४॥ जे लक्खगं सुविण परंजमागो, निमित्तको ऊहल संपगा दे। कु हे ड वि जा स व दा र जी बी, न गच्छइ सरगं तम्मि काले ॥४५॥ तमंतमेरोव उ से श्रसीले, सया दुही विष्परियासुवेइ । संधावई नरगतिरिक्खजोगिं, मोगं विराहित्तु श्रसाहुरूवे ॥४६॥ उद्देसियं कीयगढं नियागं, न मुंचई किंचि श्रगोसणिडजं। 'श्रगी विवा सन्वभक्खी' भवित्ता, इतो चुए गच्छइ कट्ड पावं ॥४७॥ न तं अरी कंठछेत्ता करेइ, जं से करे अप्पणिया दुरपा। से नाहिइ मच्चुग्रहं तु पत्ते,

पच्छाखुतावेण दयाविहूणो ॥४८॥

निरद्विया नग्गरुई उ तस्स. जे उत्तम हे विवज्ञास मेइ। इमे वि से नित्थ परे वि लोए, दुहिन्रो वि से भिज्भइ तत्थ लोए ॥४६॥ एमेवऽ हा छंदकू सी ल रू वे, मग्गं विराहेत् जिग्रुत्तमाणं। क्र्ररी विवा मोगरसाखुगिद्धा, निर इसो या परिताव मे इ ॥५०॥ सोचाण मेहावी ! सुभासियं इमं, श्रग्रसासर्गं नाणगुणोववेयं । मग्गं कुसीलाग जहाय सन्वं, महानियंठाण वए पहेला ॥५१॥ चरित्तमायारगुणन्निए तत्रो, अणुत्तरं संजम पालियाणं । निरासवे संखविणाण कम्मं, उवेइ ठाणं विउज्जत्तमं धुवं ॥५२॥ एवुग्गदंते वि महातवोधयो, महामुणी महापइने महायसे । सहा नियं ठिज्ज मि णं महासुयं, से काहए महया वित्थरेणं ॥५३॥ श्रेणिक:-तुट्टो य सेणिश्रो राया, इण्प्रुदाहु कयंजली। श्रणाहत्तं जहाभूयं, सुद्दु मे उनदंसियं ॥५४॥ तुज्भं सुलद्धं खु मगुस्सजम्मं, लामा सुलद्धां य तुमे महेसी। तुन्भे सणाहा य सर्वधवा य, जं मे ठिया मिगा जिस्तुत्तमार्गं ॥४४॥

तं सि नाहो श्रणाहाणं, सन्वभूयाण संजया। खामेमि ते महाभाग, इच्छामि श्रणुसासिडं ॥५६॥ पुच्छिऊण मए तुब्मं, भाणविग्घो उ जो कश्रो। निमंतिया य भोगेहिं, तं सन्वं मरिसेहि मे ॥५०॥

एवं थुणित्ताण स रायसीहो, त्रणगारसीहं परमाइ मत्तिए । सत्रोरोहो सपरियणो सर्वधवो, धम्माखुरत्तो विमलेण चेयसा ॥५८॥

ऊसियरोमक्र्वो, काऊण य पयाहिणं । अभिवंदिऊण सिरसा, अइयाओ नराहिको ॥५६॥ इयरो वि गुणसिमद्भो, तिगुत्तिगुत्तो तिदंडविरओ य । ''विह्म इव'' विष्यमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो ॥६०॥ त्ति बेमि ॥

अह समुहपालीय नामं एगवीसइमं अज्भयणं

चंपाए 'पालिए' नाम, सावए आसि वाणिए।
'महावीरस्स' भगवश्रो, सीसे सो उ महप्पणो ॥ १॥
निग्गंथे पावयणे, सावए से वि कोविए।
पोएण ववहरंते, "पिहुंढं" नगरमागए ॥ २॥
पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिश्रो देह ध्रूयरं।
तं ससत्तं पहिंगिज्स, सदेसमह पत्थिश्रो ॥ ३॥
श्रह पालियस्स घरिणि, सम्रह्मिम पसवह।
अह पालियस्स घरिणि, सम्रह्मिम पसवह।

खेमेण आगए चंपं, सावए वाणिए घरं। संवद्दई तस्स घरे, दारए से सुहोइए ॥ ५॥ वावत्तरी कलाश्रो य, सिक्खई नीइकोविए। जुटवरोगा य संपन्ने, सुरूवे पियदंसगो ॥६॥ तस्स रुववई भन्जं, दिया त्रागोइ रुविणि। पासाए कीलए रम्मे, 'देवो दोगुंदश्रो जहा' ॥ ७ ॥ श्रह अन्नया कयाई, पासायालीयणे ठिस्रो। वज्ममंडणसोभागं, वज्मं पासइ वज्मगं ॥ = ॥ तं पासिऊण संविग्गो, समुद्दपालो इणमञ्जवी। अहोऽसुहाण कम्माणं, निजाणं पावगं इमं ॥ ६॥ संबुद्धो सो तहिं भयवं, परमसंवेगमागत्रो। श्रापुच्छऽम्मावियरो, पटबए श्रणगारियं ॥१०॥ जिहत्तु संगं च महाकिलेसं, महंतमोहं कसिगां भयावहं । परियायधम्मं च ऽ भि रो य ए जा, वयाणि सीलाणि परीसहे य ॥११॥ त्रहिंस-सर्च च श्रतेणगं च, तत्तो य बंभं अपरिगाहं च । प डिव डिंग पंच म ह व्य याणि, चरिज धम्मं ज़िगादेसियं विक ॥१२॥ सन्वेहिं भूएहिं द्याणुकंपी, खंतिक्खमे संजय वंभ यारी। सावज्ञ जोगं परिवज्ज यंतो,

चरिज्ज भिक्ख् सुसमाहिईदिए ॥१३॥

कालेग कालं विहरेज्ज रहे,
- बलावलं जागिय श्रप्पणो य ।
सीहो व सहेगा न संतसेज्जा,
वयजोग सुद्या न श्रसम्ममाहु ॥१४॥

उवेहमाणो उ परिन्वइन्जा, वियमप्पियं सन्त्र तितिकखइन्जा। न सन्त्र सन्त्रस्थऽभिरोयइन्जा, न यावि पूर्यं गरहं च संजए॥१४॥

श्रगोंगछंदा इह माणवेहि, जे भावश्रो से पगरेह भिक्खू। भयभेरवा तत्थ उहंति भीमा, दिन्दा मग्रास्ता श्रदुवा तिरिच्छा।।१६।। परीसहा दुन्त्रिसहा श्रगोगे,

सीयंति जत्था बहुकायरा नरा । से तत्थ पत्ते न वहिन्ज मिक्खू, 'संगामसीसे इव नागराया' ॥१७॥ सीओसिणा ढंस—समा य फामा

सीत्रोसिणा दंस-मसा य फासा, त्रायंका विविहा फुसंति देहं। त्रकुक्कुत्रो तत्थऽहियासहेज्जा, रयाई खवेज्ज पुराकयाई ॥१८॥

पहाय रागं च तहेव दोसं, मोहं च भिक्ख् सययं वियवखणी। 'मेरुव्व' वाएण अकंपमाणो, परीसद्दे भायगुत्ते सहेज्जा ॥१६॥ १७0];

श्रगुन्नए नावगए महेसी, न यावि पूर्य गरहं च संजए। से उज्जुभावं पहिवज्ज संजए, निच्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥२०॥ अरइ-रइसहे पहीणसंथवे, विरए श्रांचहिए पहागावं । परमहुप ए हिं चि हुई, छिनसोए अममे अकिंचणे ॥२१॥ विवित्तलयगाइ भएज्ज ताई, निरोवलेवाइ असंथडाइं। = इसीहिं चिएणाइं महायसेहिं, काएण फासेन्ज परीसहाई ॥२२॥ स आण ना गोव गए महेसी, श्रगुत्तरं चरिडं धस्मसंचयं । अणुत्तरे नाणधरे जसंसी, श्रोभासई स्रिए वंऽतलिक्खे ॥२३॥ दुविहं खवेउंण य पुराणपावं, निरंगणे सन्वत्रो विष्पमुक्के । तरिता "समुद्दं व" महाभवोहं, समुद्दपाले अपुणागमं गए ॥२४॥ त्ति वेसि ॥

अह रहनेमिज-नामं बावीसइमं अङ्मयणं

'सोरियपुरम्मि नयरे', श्रासि राया महिड्ढिए । 'वसुदेव सि' नामेगां, रायलक्खगसंजुए ॥ १ ॥ तस्स भजा दुवे श्रासी, 'रोहिणी-देवई' तहा। तासि दोएहं दुवे पुत्ता, इट्टा 'राम-केसवा' ।। २ ॥ सोरियपुरम्मि नयरे, श्रासि राया महिड्डिएं। 'समुद्दविजय नामं', रायलक्खणसंजुए ॥ ३ ॥ तस्स भञ्जा 'सिवा' नाम, तीसे पुत्ती महायसी । भगवं 'श्ररिट्टनेमि त्ति' लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥ सोऽरिट्टनेमिनामो उ, लक्खण-स्सर-संजुओ। श्रद्वसहस्त-लक्खणधरी, गीयमी कालगच्छवी ॥ ४ ॥ वज्जरिसह-संघयणो, समचउरंसो कसोदरो। तस्स 'रायमईकनं,' भन्नं जायइ केसवी ॥ ६॥ श्रह सा रायवरकना, सुसीला चारुपेहणी। सन्व-त्तक्खण-संपन्ना, विज्जुसीयामणिष्पमा ॥ ७॥ श्रहाह जगश्रो तीसे, वासुदेवं महिड्हियं। इहागच्छउकुमारो, जा से कन्नं ददामि ८ ।। = ॥ सन्वीसहीहिं एहविश्रो, कय-कोउय-मंगलो। दिन्वज्रयत्त-परिहित्रो, त्रामरगेहिं विभूसिस्रो ॥ ६ ॥ मत्तं च गंधहरिंथ च, वासुदेवस्स जेहुगं । श्रारुदो सोहए श्रहियं, सिरे चूडामणि जहा ॥१०॥ श्रह ऊसिएग छत्तेण, चामराहि य सोहिस्रो। दसारचकेण य सो, सन्वश्रो परिवारिश्रो ॥११॥ चउरंगिणीए सेगाए, रह्याए जहकमं । र तुरियासा सिननाएगां, दिन्वेगां गगगां फुसे ॥१२॥

एयारिसीए इड्हीए, जुइए उत्तमाइ य । नियगात्रो भवणात्रो, निजात्रो विषद्पुंगवो ॥१३॥ श्रह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पार्धो भयद्रुद्रए। वाडेहिं पंजरंहिं च, संनिरुद्धे सुदुन्सिए।।१४॥ जीवियंतं तु संपत्ते, मंसद्वा मक्खियव्वए। पासित्ता सं महापने, सारहिं इण्यमञ्जनी ॥१४॥ भ० ऋरिष्ठनेमिः— कस्स अड्डा इमे पाशा, एए सन्वे सुहेसिगो। बाडेहिं पंजरेहिं च, सिन्नस्द्वा य अच्छिया ! ॥१६॥ मारथि:-श्रह सारही तश्रो भगाइ, एए भद्दा उ पाणिणो । तुज्भं विवाहङ्जम्मि, मोयावेडं बहुं जगां ॥१०॥ भ० श्ररिष्ठनेिमः---सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणि-विणासणं। चिंतेइ से महापन्नो, साणुकोसे जिए हिस्रो ॥१८॥ जइ मज्म कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिया। न मे एयं तु निस्सेसं, परलोगे भविस्सई ॥१६॥ सो कुंडलाए जुयलं, सुत्तगं च महायसो। श्राभरणािं य सच्वािंग, सारिहस्स पणामइ ॥२०॥ मणपरिणामी य कत्रो, देवा य जहोइयं समोइएणा। सव्त्रिड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ॥२१॥ देव-मणुस्सपरिवुडो, सीविया-रयगं तत्रो समाहडो। निक्खिमय 'वारगात्रो, रेवययक्मि' ठिश्रो भगवं ॥२२॥ उजार्णं संपत्तो, श्रोइएणो उत्तमाउ सीयाश्रो । साहस्सीयपरिचुडो, अह निक्खमइ उ चित्ताहिं॥२३॥ श्रह से सुगंधगंधीए, तुरियं मउश्रकुंचिए। सयमेव लुंचई केसे, पंचमुद्रीहिं समाहियो ॥२४॥

वासुदेवो य गां भगाइ, लुत्तकेसं जिइंदियं। इञ्छियमणोरहं तुरियं, पावसु तं दमीसरा ।।।२५॥ नायोगं दंसयोगं च, चरित्तेगा तहेव य। खंतीए मुत्तीए, वढ्ढमाणी भवाहि य ॥२६॥ एवं ते राम-केसवा, दसारा य बहु जगा। श्ररिद्वरोमि वंदित्ता, श्रह्मया वारमापुरिः॥२७॥ सोऊण रायकन्ना, पन्वज्जं सा जिण्सस छ। नीहासा य निराणंदा, सोगेण उ समुच्छिया ॥२८॥ राईमई विचितेह, धिरत्थु मम जीवियं। जाऽहं तेण परिचत्ता, सेयं पन्वइउं मम ॥२६॥ श्रह सा ममरसिन्नभे, क्रच-फ्रग्गग-साहिए। सयमेव लुंचइ केसे, धिइमंती ववस्सिया ॥३०॥ वासुदेवी य गां भगाइ, जुत्तकेसं जिइंदियं। संसारसागरं घोरं, तर कने। लहुं लहुं ॥३१॥ सा पव्यइया संती, पव्वावेसी तहिं बहुं। सयगां परिवर्गा चेव, सीलवंता बहुस्सुया ॥३२॥ गिरिरेवययं जंती, वासेखुद्धा उ श्रंतरा । वासंते श्रंघयारंमि, श्रंतो लयग्रस्स सा ठिया।।३३॥ चीवराई विसारंती, जहा जायत्ति पासिया। रहनेमि भग्गचित्तो, पच्छा दिहो य तीई वि ॥३४॥ भीया य सा तहिं दट्डुं, एगंते संज्यं तयं। बाहाहिं काउं संगोप्फं, वेवमाणी निसीयई ॥३४॥ रथनेमि:-अह 'सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगस्रो।

भीयं पवेवियं दट्ठुं, इमं वक्कमुदाहरे॥

'रहनेमी' श्रहं भदे !, सुरूवे ! चारुभासिणी !। ममं भयाहि सुयग्रु, न ते पीला भविस्सइ ॥३७॥

एहि ता मुंजिमो भोए, माणुरसं खु सुदुन्नहं। सुत्तभोगा पुणो पच्छा, जिग्रमग्गं चरिस्सिमो॥३=॥

राजीमती—

रथनेमि:-

रायमई असंभंता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥३६॥
श्रह सा रायवरकत्रा, सुद्विया नियमव्वए ।
जाई कुलं च सीलं च ! रक्खमाणी तयं वए ॥४०॥
जइऽसि रूवेण वेसमाणो, ललिएण नल-कूवरो ।
तहा वि ते न इच्छामि, जइऽसि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥
पक्खंदे जलिश्रं जोई, धूमकेंड दुरासयं ।
नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥
धिरत्थु तेऽजसोकामी, जो तं जीवियकारणा ।
वंतं इच्छिस आवेडं, सेयं ते मरणं भवे ॥४२॥

वंतं इच्छिसि आवेउं, सेयं ते मरणं भवे ॥४२॥ अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगविषहणो। मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥४३॥ जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छिस नारिश्रो।

वायाइद्धो व्व हढो, श्रिष्टिश्रपा भविस्ससि ॥४४॥ गोवालो भंडवालो वा, जहा तद्दव्यिस्सरो ।

एवं श्रिणिस्सरो तं पि, सामएग्रस्स भविस्ससि ॥४४॥ कोहं माणं निगिषिहत्ता, मायं लोभं च सन्वसो। इंदियाइं वसे काउं, श्रप्पाणं उवसंहरे ॥

तीसे सो वयणं सोचा, संजयाए सुभासियं। श्रंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपिडवाइश्रो ॥४६॥ मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिए । सामएणं निच्चलं फासे, जावजीवं दढ्व्वओ ॥४७॥ उग्गं तवं चिरत्ताणं, जाया दुिएण वि केवली। सव्वं कम्मं खिवत्ताणं, सिद्धं पत्ता अगुत्तरं ॥४८॥ एवं करेंति संबुद्धा, पंडिया पवियवखणा। विशायङ्कृति भोगेस, जहां सो पुरिसोत्तमो ॥४६॥ त्ति विमि॥

अह केसिगोयमिजा-नामं तेवीसइमं अज्भयणं

जियो पासित्ति नामेगां, अरहा लोगपूड्यो।
संबुद्धपा य सन्वभू, धम्मितत्थयरे जियो॥१॥
तस्स लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे।
केसी कुमारसमग्रे, विज्ञाचरणपारए॥२॥
ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघ—समाउले।
गामाणुगामं रीयंते, सावित्थं पुरमागए॥३॥
तिंदुयं नाम उज्जागां, तिंम नगरमंडले।
फासुए सिज्जसंथारे, तत्थं वासस्रवागए॥४॥

श्रह तेणेव कालेणं धम्मतित्थयरे जिणे।
भगवं वद्धमाणि ति, सन्वलोगंमि विस्सुए॥ ४॥
तस्स लोगपईवस्स, श्रासि सीसे महायसे।
भगवं गोयमे नामं, विज्ञाचरणपारए॥ ६॥
वारसंगविक बुद्धे, सीससंघ-समाउले।
नामाणुगामं रीपंते, सो वि सावस्थिमागए॥ ७॥

''कोडुगं'' नाम उजाणं, तिम्म नगरमंडले । फासुए सिजसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ = ॥ फेसी कुमारसमणे, गोयमे य महायसे । उभत्रो वि तत्थ विहरिंसु, त्रल्लीणा सुसमाहिया ॥ ६ ॥ उमत्रो सीससंघाणं, संजयाणं तवस्सिणं। तत्थ चिता समुपन्ना, गुणवंताण ताइगां ॥१०॥ केरिसो वा इमो धम्मो, इमो धम्मो व केरिसो। श्रायारधम्मपणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥११॥ चाउजामो य जो धम्मो,जो इमो पंचिसिविख्यो। देसिय्रो वद्धमाणेग, पासेण य महामुणी ॥१२॥ अचेल यो व जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो । एग कज-पवनाणं, विसेसे किं तु कारणं ? ॥१३॥ श्रह ते तत्थ सीसागां, विकाय पवितक्तियं। _ समागमे कयमई, उभञ्जो केसि—गोयमा ॥१४॥ गोयमे पहिस्वन्त्, सीससंघ-समाउले । बेर्ड कुलमवेक्खंतो, "तिंदुयं" व्यामागत्रो ॥१५॥ केसी कुमारसमग्रे, गोयमं दिस्समागयं । पिंडह्वं पिंडवित्तं, सम्मं संपिंडवज्जइ ॥१६॥ पत्नालं फासुयं तत्थ, पंचमं, कुसतणाणि य। गोयमस्स निसेन्जाए, खिप्पं संपगामए ॥१७॥ केसी कुमारसम्यो, गोयमे य महायसे। उमञ्जो निसएका सोहंति, चंद-स्रसमप्यभा ॥१८॥ समागया बहु तत्थ, पासंडा कोउगा मिया। गिह्तथाणं अधेगाओ, साइस्तीओ समागया ॥१६॥ देव-दाणव-गंधव्वा, जक्त रक्तस किसरा । श्रदिस्साणं च भूयागं, श्रासी तत्थ समागमो।।२०॥ पुच्छामि ते महाभाग ! केसी गोयममञ्जवी । तश्रो केसि बुवंतं तु, गोयमो इणमञ्चवी ॥२१॥ पुच्छ भंते ! जहिच्छं ते, केसि गोयममञ्जवी। तंत्री केसि श्रणुकाए, गोयमं इणमञ्चवी ॥२२॥ (१) चाउजामो य जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओं। देसिंग्रो वद्धमारोण, पासेण य महामुणी ! ॥२३॥ एगकअववकार्णं विसेसे कि तु कारणं ? धम्मे दुविहे मेहावी, कहं विष्यच्यो न ते १।।२४॥ तश्रो केसि बुवंतं तु, गोयमो इणमञ्चवी । पना समिक्खए धम्मं, तत्तं तत्तविणिच्छियं ॥२५॥ पुरिमा उज्जुजहा उ, वंकजहा य पच्छिमा। मिक्समा उज्जुपना उ, तेश धम्मे दुहा कए ॥२६॥ पुरिमार्गं दुन्विसुक्को उ, व्यरिमार्गं दुरगुपालश्रो। कप्पो मिक्समगार्गं तु, सुविसुक्सो सुर्पालश्रो ॥२७॥ साहु गोयमं पिन्ना ते, छिन्नो में संसन्त्रो इमो । ं श्रन्तो वि संसन्त्रो मज्भां, तं मे कहसु गोयमा ! ॥२८॥ (२) अचेलगो य जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो । देसिस्रो वद्यमार्योण, पासेग्य, य महासुणी ! ॥२६॥ एगकजापवनागां, विसेसे किं तु कारगां। लिंगे दुविहे मेहावी, कहं विष्यस्त्रों न ते ? ॥३०॥ केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इंगामब्बवी । विकार्येषः समागम्मः, भम्मसाह्यामिच्छ्यं ।।३१॥ पच्चयत्थं च लोगस्स, नागाविह्नविगप्पगं। जत्तत्थं गहणत्थं च, लोगे लिंगपत्रोयगं।।३२॥ श्रह भवे पहना उ, मोक्खसब्भूयसाहणा। नागं च दंसगं चेव, चरित्तं चेव निच्छए।।३३॥ साहु गोयम! पन्ना ते, छिन्नो मे संसन्नो इमे। श्रन्नो वि संसन्नो मज्मं, तं मे कहसु गोयमा!।।३४॥

(३) अयोगायां सहस्सायां, मज्मे चिट्ठसि गोयमा!
ते य ते अभिगच्छंति, कहं ते निष्ठिया तुमे ? ।।३५।।
एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस ।
दसहा उ जिणित्तायां, सन्यसत्तू जियामहं ।।३६।।
सत्तू य इह के बुत्ते ? केसी गोयममन्ववी।
तत्रो केसि बुवंतं तु, गोयमो इर्णमन्ववी ।।३७।।

एगप्पा श्रजिए सत्त्, कसाया इंदियाणि य। ते जिशित्तु जहानायं. विहरामि श्रहं मुशी ॥३०॥ साहु गोयम ! पत्रा ते, छिन्नो में संसन्नो इमे । श्रन्नो वि संसन्नो मज्मं, तं में कहसु गोयमा ! ॥३६॥

(४) दीसंति वहवे लोए, पासबद्धा सरीरिणो ।

मुक्तपासो लहुरूभुमो, कहं तं विहरिस मुणी १ ॥४०॥
ते पासे सन्बसो छित्ता, निहंतुण उवायक्रो ।

मुक्तपासो लहुरूभुमो, विहरामि ऋहं मुणी । ॥४१॥
पासा य इह के बुत्ता १ केसी गोर्यममञ्ज्ञवी ।
केसिमेवं बुवंत तु, गोयमो इणमञ्ज्ञवी ॥४२॥

रागदोसादश्रो तिन्वा, नेहपासा भयंकरा। ते बिदिनु चहानायं, विहरामि खहकमं ॥४३॥

साहु गोयम ! पना ते, जिन्नो में संसन्त्रो इमो । श्रुन्तो वि संसन्त्री मज्भं, तं मे कहसु गोयमा ! ।।४४।। (४) श्रंतोहिययसंभूया, लया चिद्वइ गोयमा। 'फलेइ विसमक्खीगं, सां उ उद्धरिया कहं ?।।४५॥ तं लयं सन्वसो छिता, उद्धरिता समृत्तियं। विद्रामि जहानायं, मुक्तोमि विसमनखर्णं ॥४६॥ लंया य इइ का वुता ? केसी गोयममब्बवी। . केसिमेवं बुवंतं तु, नगोयमो , इर्णमब्ववी ।।४०।। भवतपहा लया बुत्ता, भीमा भीमफलोदया। तमुच्छिता जहानायं, विहरामि जहासुहं ॥४८॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसन्त्रो इमो । ं श्रन्तो वि संसन्त्रो मज्मं, तं मे कहसु गोयमा 🛂 ॥४६॥ (६) संपर्जालया घोरा, श्रम्मी चिट्ठइ गोयमा ! ं जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्ञाविया तुमे ? ॥५०॥ महामेहप्पस्यात्रो, गिज्म वारि जलुत्तमं । सिंचामि संययं तेउं, सित्ता नी व दहंति मे ॥५१॥ अग्गी य इइ, के बुता ं रे केसी गोयममब्बवी । किसिमेव बुवंतं तु, निगोयमो इग्रामञ्ज्वी ।।५२॥ कसाया अरिगणो वुत्ता, सुय-सील-तवो जलं। , सुयधाराभिह्या संता, भिन्ना हु न इहंति मे ॥५३॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसन्नो इमो । अन्नो वि संसन्त्रो नज्भं, तं मे कहसु गोयमा । ॥५४॥ (७) अर्थ साहसिन्नो भीमो, दुहस्सो परिधावई। ं जीसं गोयम ! आहटो, कहं तेण न हीरसि ? ॥४४॥

पधावंतं निगिषहामि, सुयरस्यीसमाहियं । न मे गच्छाइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवजाइ ॥४६॥ श्रासे य इइ के चुत्ते ? केसी गोयममन्त्रवी। केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इगामव्यवी ॥४७॥ मणो साहसिस्रो भीमो, दुहुस्सो परिधावइ। तं सम्मं तु निगिएहामि, धम्मसिक्खाइ कंथगं ॥५८॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसन्त्रो इमो । श्रन्तो वि संसन्त्रो मज्मं, तं मे कह्सु गोयमा । ॥४६॥ (=) कुप्पहा बहवो स्रोप, जेहिं नासंति जंतुणो। श्रद्धार्य कह वर्द्धतो, तं न नासिस गोयमा ? ॥६०॥ जे य मग्गेषा गच्छंति, जे य उम्मग्गपद्विया। ते सन्वे वेइया मन्जं, तो न नस्सामहं मुणी ! ।।६१॥ मग्गे य इइ के बुत्ते ? केसी गोयममब्बवी। केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इण्माब्बवी ॥६२॥ कुप्पवयणपासंडी, सन्वे उम्म गा प हि या। सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥ साहु गोयम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसन्त्रो इमो । अन्नो वि संसन्त्रो मज्कं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥६४॥ (६) महाउदगवेगेण, बुज्कमाणाण पाणिगां । सरणं गई पइडा य, दीवं कं मक्सि मुणी ? ॥६४॥ श्रित्थ एगी महादीवी, वारिमज्मे महालश्री। महाउद्गवेगस्स, गई तत्थ न विजर ॥६६॥ दीये य इइ के बुचे ? केसी गोयमठववी। केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इग्रामञ्चवी ॥६७॥

जरा-मरगवेगेगां, बुज्यतमाणाण पाणिगां। धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥६८॥ साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे संसन्धो इमो । अन्नो वि संसन्धो मज्मं, तं मे कहसु गोयमा । ॥६८॥

(१०) अएगवंसि महोहंसी, नावा विपरिधावह।
जंसि गोयम। आरुढो, कहं पारं गमिस्सिस १।।७०।।
जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिगी।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिगी।।।७१।।
नावा य इइ का चुता १ केसी गोयममञ्जवी।
केसिमेवं बुवंतं तु, गोयमो इग्रमञ्जवी।।७२॥

सरीरमाहु नाव ति, जीवो घुचइ नाविद्यो। संसारो अएगावो चुत्तो, जं तरंति महेसिणो।।७३॥ साहु गोयम।पन्ना ते, छिन्नो मे संसन्त्रो इमो। अन्नो वि संसन्त्रो मज्कं, तं मे कहसु गोयमा।।।७४॥

(११) श्रंघयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिगां ॥७४॥ को करिस्सइ उज्जोयं १ सन्वलोयम्मि पाणिगां ॥७४॥ उग्गश्रो विमलो माणू, सन्वलोयपमंकरो । सो करिस्सइ उज्जोयं, सन्वलोयंमि पाणिगां ॥७६॥ माणू य इइ के चुत्ते १ केसी गोयममब्बवी । केसिमेवं वुवंतं तु, गोयमो इग्रमब्बवी ॥७७॥ उग्गश्रो खीणसंसारो, सन्वन्न् जिग्रमक्खरो ।

साहु गोयम ! पन्ना ते, जिन्नो में संसन्त्रो इमो । अन्नो वि संसन्त्रो मज्यं, तं में कहसु गोयमा ! ॥७६॥

सो करिस्सइ उज्जोयं, सन्वलोयंमि पासिगां ॥७८॥

(१२) सारीरमाणसे दुक्खे, वज्समाणाण पाणिणां। खेमं सिवमणावाहं, ठाणं कि मन्नसे ग्रुणी १॥०॥ प्रात्थ एगं धुवं ठाणं, लोगणांमि दुरारुहं। जत्थ नित्थ जरा मच्चू, वाहिणो वेयणा तहा ॥८१॥ ठाणे य इइ के बुत्ते, १ केसी गोयममञ्जवी। केसिमेवं बुवंतं दु, गोयमो इण्यमञ्जवी।

निच्चार्यं ति श्रवाहं ति, सिद्धी लोगगगमेव य। खेमं सिवं अणाबाहं, जं चरंति महेसिगो।। = ३।। तं ठाणं सासयं वासं, लोयग्गंमि दुरारुहं। जं संपत्ता न सोयंति, भनोहंतकरा ग्रुणीः!।।≈४॥ साहु गोयम । पन्ना ते, छिन्नो मे संसन्त्रो इमो । न मो ते संसयातीत ! सन्त्रसुत्तमंहोदही ॥८४॥ एवं तु संसए छिन्ने! केसी घोरपरकामे। श्रभिवंदित्ता सिरसा, गोयमं तु महायसं।।⊏६॥ पंचमहव्यथममं, पडिवज्जइ भावश्रो । पुरिमस्स पञ्छिमंमि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥८७॥ केसीगोयमञ्जो निर्चं, तंमि त्रांसि समागमे। सुयसीलसमुकरिसो, महत्थत्थविणिच्छत्रो ॥८८॥ तोसिया परिसा सच्वा, संमग्गं समुवद्विया। संथुया ते पसीयंतु, भयवं केसिगोयमे ॥८६॥ ॥ चि बेमि ॥

अह समिईओ नामं चउवीसइमं अज्भयणं

श्रद्ध पवयणमायात्री, समिई गुत्ती तहेव य। पंचेव य समिईश्रो, तश्रो गुत्ती उ श्रहिया ॥ १॥ इरिया भासे सणा दार्गे, उचारे समिई इय। मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ती य श्रद्धमा ॥ २॥ एयाओ अह समिईओ, समासेण वियाहिया। द्वालसंगं जिणक्लायं, मायं जत्थ उ पवयगां ॥ ३ ॥ (१) आलंत्रणेण कालेण नमगोण जयगाइ या चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरियं रिए ॥ ४॥ तत्थ त्रालंबणं नार्णं कृदंसणं चरणं तहा। काले य दिवसे बुत्ते, मग्गे उप्पहविज्ञा ४॥ दव्बश्रो बेत्तश्रो चेव, कालश्रो भावश्रो तहान जयणा चउव्विहा बुत्ता, तं मे कित्तयश्रो सुण्।। ६ ॥ दव्बस्रो चक्खुसा पेहे, जुगिमत्तं च खित्तस्रो। कालम्रो जाव रीइजा, उवउत्ते य मावम्रो ॥ ७॥ इंदियत्थे विविज्जित्ता, सन्भायं चेव पंचहा। तम्मुत्ती तप्पुरकारे, उवउत्ते स्यिं रिए ॥ ८॥ (२)कोहे[°] मागो[°] य मायाए[®],लोमे[°] य उवउत्तयाः। हासे भए मोहरिए, विकहासु तहेव य ॥ ह॥ एयाई अष्टुठाणाई, परिविज्जित्त संजए । असावज्जं मियं काले. भासं भासिज्ज पत्रवं ॥१०॥ (३) गवेसगाए गह्यो य, परिभोगेसणा य जा। आहारो वहि सेखाएं , एए तिचि विसोहए ॥१९॥

उगग्रुप्पायणं पढमे, बीए सोहेझ एसणं। परिभोयम्मि चउक्कं, विसोहेझ जयं जई।।१२॥

(४) श्रोहोबहों वगाहियं, मंडगं दुविहं मुणी। गिएहंतो निक्खवंतो य, पउंजेज इमं विहिं ॥१३॥ चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जेज जयं जई। श्राहए निक्खिवेजा वा, दुहश्रोऽवि समिए सया॥१४॥

(भ) उचारं पासवणं, खेलं सिंघाण-जल्लियं।
आहारं उवहिं देहं, श्रमं वावि तहाविहं॥१५॥
श्रणावायमसंलोएं, श्रणावाए चेव होइ संलोएं।
आवायमसंलोएं, श्रावाए चेव संलोएं॥१६॥
आवायमसंलोएं, परस्स ऽणुष घाइएः
समे अव्कुसिरे वावि, श्रचिरकालकयम्मि य॥१७॥
वित्थिएणे द्रमोगाढे, नासमे बिलविष्णि।
तसपाणवीयरहिए, उचाराईणि वोसिरे॥१८॥
एयात्रो पंच समिईश्रो, समासेण वियाहिया।
इतो य तश्रो गुत्तीश्रो, खुन्छामि श्रणुपुन्वसो॥१६॥

(६) सना तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य। चउत्थी श्रसच्चमोसा य, मणगुत्ती चउ विवहा ॥२०॥ संरंभ-समारंभे, श्रारंभे य तहेव य । मणं पवत्तमाणं तु, नियत्तिज जयं जई ॥२१॥

(७) सच्चा तहेव मोसा य,सच्चामोसा तहेव य। चउत्थी असच्चमोसा य, वहगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥ संरंभ --स मारंभे, आरंभे यतहेव य। वयं पवचमायं तु, नियत्ति ज्ञ जयं जई ॥२३॥ (ट) ठाणे निसीयणे चेव, तहेव य तुयहणे।
उद्घंषण-पद्धंषणे, इंदियाण य खुंजणे ॥२४॥
सरंभ-समारंभे, आरंभे य तहेव य ।
कायं पवत्तमाणं तु, नियत्तिक्त जयं जई ॥२४॥
एयाओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे।
गुत्ती नियत्तणे चुत्ता, श्रसुभत्थेसु सञ्जसो ॥२६॥
एसा पवयणमाया, जे सम्मं श्रायरे सुणी।
सो खिष्यं सञ्वसंसारा, विष्यसुञ्चइ पंडिए ॥२७॥
ति वेमि ॥

अह जन्नइज-नामं पंचवीसइमं अज्भयणं

माहण्यक्रलसंभूत्रो, त्रासि विष्यो महायसो ।
जायाई जमजनंमि, "जयघोसि ति" नामन्रो ॥ १ ॥
इंदियग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महाग्रुणी ।
गामाणुगामं रीयंते, पत्तो वाणारसि पुरि ॥ २ ॥
'वाणारसीए' बहिया, उज्जाणंसि मणोरमे ।
फासुए सेज्जसंथारे, तत्थ वासग्रुवागए ॥ ३ ॥
अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे ।
"विजयघोसि ति" नामेण, जन्नं जयइ वेयवी ॥ ४ ॥
श्रह से तत्थ त्रणगारे, मासन्खमणपारणे ।
विजयघोसस्स जनंमि, भिन्खस्सद्वा उवदृिए ॥ ४ ॥
यहा विजयघोसः—

सम्बद्धियं तहि संते, जायगी पहिसेहए। न हु दाहामि ते भिक्खं, भिक्खं। जायाहि अनुभी ॥६॥ जो य वेयिति विष्पा, जन्नद्वा य जे दिया।
जोइसंगिवि जे य, जे य धम्माण पारगा।।७॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पाणमेव य।
तेसि स्रन्निमणं देयं, भो भिक्खू! सन्वकामियं॥ =॥
सो तत्थ एवं पिडिसिद्धो, जायगेण महामुणी।
न वि रुद्दो न वि तुद्दो, उत्तमद्वगवेसक्यो॥ १॥
नन्नद्वं पाणहेउं वा, निव्वाहणाय वा।
तेसि विमोक्खणद्वाए, इमं वयग्रमन्ववी ॥१०॥

जयघोषमुनिः—

निव जागिस वेयमुहं, निव जनाण जं मुहं।
निवस्ताम मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं।।११॥
जे समत्था समुद्धत्तुं, परमप्पामिन य ।
न ते तुमं वियागासि, अह जाणासि तो भग ।।१२॥
पए। विजयधोषः—

तस्तक्खेत्रपष्टकं तु, श्रचयंतो तिहं दिश्रो।
सपितो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणि ॥१३॥
चेयाणं च ग्रहं बृहिं, बृहि जन्नाण जं ग्रहंं।
नक्खत्ताण ग्रहं बृहिं, बृहि धम्माण वा ग्रहंं ॥१४॥
के समत्था सग्रद्धत्तुं, परमप्पाणमेवं प।
एयं मे संसयं सच्चं, साहू। कह्य पुष्टिक्रश्रो॥१४॥
जयधोषमुनिः—

श्रिगिहत्तमुहा वेया, जन्नही वेयसा मुहं। नक्षत्ताण मुहं चंदों, धम्माणं कासनो मुहं ॥१६॥ जहा चंदं गहाईया, चिहंति पंजलीउडा। षंदयाणा नमंसंता, उत्तमं मणहारिको ॥१७॥

श्रजाणगा जन्नवाई, विज्ञामाहणसंपया । ग्दां संज्मायतवसा, ''भासच्छन्ना इविगणो'' ।।१८॥ जो लोए वंभणो बुत्तो, श्रम्मी वा महिश्रो जहा। सया कुसलसंदिष्टं, तं वयं बूम माहणं ॥१६॥ जो न सज़इ आगंतुं, पन्तयंतो न सोयइ। रमइ श्रज्जवयर्गांमि, तं वयं बूम् माहर्गा ॥२०॥ जायह्वं जहामद्वं, निद्धंतमलपावगं। राग-दोस-भयाईयं, तं वयं बूम माहगां ॥२१॥ तवस्सियं किसं दंतं, अवचिय-मंससोशियं। सुव्वयं पत्तनिव्वार्गं, तं वयं बूम माहर्गा ॥२२॥ तसंपागे वियागेत्ता, संगहेग य थावरे। जो न हिंसइ तिविद्देश, तं वयं बूम माहरां ॥२३॥ कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा मया। मुसं न वयइ जो उ, तं वयं बूम माहरां ॥२४॥ चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं या जइ वा बहुं। न गिएहइ श्रद्तं जो, तं वयं बूम माहर्ण ॥२४॥ , दिच्व-माग्रुस्स-तेरिच्छं, जो न सेवइ सेहुगां। मणसा कायवक्रेणं, तं वयं बूम माहणं ॥२६॥ अहा पोमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिगा। एवं अलित्तो कामेहिं, तं वयं बूम माहर्ण ॥२७॥ अलोलुयं मुहाजीविं, अणगारं अकिचर्णं। असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहगा ॥२८॥ जहिता पुन्वसंजोगं, नाइसंगे य वंघवें । जो न सज़इ भोगेस, तं वयं बूम माहगां ॥२६॥

् श्रु० २४

पसुवंधा सन्ववेथा, जहं च पावकम्मुणा। न तं तायंति दूस्सीलं, कम्माणि बलवंति हि ॥३०॥ न वि मुंडिएण समणो, न श्रोंकारेण वंभणो। न मुणी रएणवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥ समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो। नायोग उ मुणी होइ, तवेग होइ तावसी ॥३२॥ कम्मुणा वैभणो होइ, कम्मुणा होई खतियो । वइस्सो कम्प्रुणा होइ, सुद्दो हवइ कम्प्रुणा ॥३३॥ पए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायको। सव्वक्रमादिणिम्युकं, तं वयं बूम माहणं ॥३४॥ एवं गुणसमाउना, जे भवंति दिउत्तमा । ते समत्था उ उद्धतुं, परमप्पाणमेव य ॥३४॥ यष्टा विजयघोषः— एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे यु माहगो। समुदाय तत्रो तं तु, जथघोसं महामुखि ॥३६॥ तुट्ठे य विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली। माहगात्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उनदंसियं ॥३७॥ तुन्मे जइया जनागं, तुन्मे वेयविक विक। जोइसंगविक तुब्मे, तुब्मे धम्माण पारगा ॥३८॥ तुर्भे समत्था उद्धत्तुं, परमप्पाण्मेव य। तमणुग्गहं करेह ८म्हं, भिष्वखेणं भिवखुउत्तमा। ॥३६॥ जयघोषमुनिः---न करजं मज्स भिक्खेगां, खिप्पं निक्खमसु दिया ! मा भिनिहिसि भयावद्दे, घोरे संसारसागरे ॥४०॥ उवलेवो होइ भोगेसु, श्रभोगी नोवलिप्यइ।

मोगी ममद संसारे, अमोगी विष्युस्बद् ॥ ११॥

'उल्लो सुको य दो छूटा, गोलया मिट्टियामया। दो वि श्राविडिया कुट्टे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गइ।।४२॥ एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा। विरचा उ न लग्गंति, जहां से सुक्रगोलए॥४३॥ एवं से विजयघोसे, जयघोसस्स श्रंतिए। श्राणगारस्स निक्खंतो, धम्मं सोचा श्रगुत्तरं॥४४॥ खिवत्ता पुन्यकम्माइं, संजमेण तवेश य। जयघोस-विजयघोसा, सिद्धि पत्ता श्रगुत्तरं॥४४॥

अह सामायारी नामं छन्वीसइमं अज्भयणं

सामायारि पवक्खामि, सन्वदुक्खिवमोक्खणि । जं चिरताण निग्गंथा, तिएणा संसारसागरं ॥ १ ॥ पदमा आविस्सिया नामं, बिइया य निसीहिया । आपुच्छिणा य तह्या, चउत्थी पिछपुच्छिणा ॥ २ ॥ पंचमी छंदणा नामं, इच्छाकारो य छिष्ठिणा । २ ॥ सत्तमा मिच्छाकारो य, तहकारो य छिष्ठिणा । ३ ॥ अब्धुहाणं च नवमा, दसमा उवसंपया । एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेह्या ॥ १ ॥ समाचारीस्वरूपम्— गमणे आविस्सर्यं छुजा, ठाणे छुजा निसीहियं । आपुच्छिणं सयंकरणे, परकरणे पिछपुच्छिणं ॥ ४ ॥ आपुच्छिणं सयंकरणे, परकरणे पिछपुच्छिणं ॥ ४ ॥

छंदणा दन्त्रजाएगां, इन्छाकारो य सारगे। मिन्छाकारो य निदाए, तहकारो पहिस्सुए ॥ ६ ॥ श्रब्धुद्वार्गं गुरूपूरा, श्रव्छणे उत्रसंपदा । एवं दुपंच संजुत्ता, सामायारी पवेइया ॥ ७ ॥

श्रामराये स्थिताना संद्विप्ता दिनचर्या-

पुव्वित्लंमि चउन्भाए, श्राइचंमि समुद्रिए। मंडयं पडिलेहिता, वंदिताय तस्रो गुरुं।। दा।

पुच्छिजा पंजलीउडो, कि कायव्वं भए इह ।

इच्छं निस्रोइउं भंते ! वेयावचे व सज्माए ॥ ६ ॥ वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्वं अगिलायश्रो। ं सज्भाए वा निउत्तेण, सन्वदुक्खविमुक्खणे ॥१०॥

दिवसस्य चउरो भागे,कुजा भिक्खू वियक्खणो। तयो उत्तरगुणं कुजा, दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥

पढमे पोरिसिं सज्मायं, वीये माणं मियायई। तइयाए भिक्लायरियं, पुणो चउत्थीइ सज्मायं ॥१२॥ पौरुषी-प्रमाण्यम्---

श्रासाढे मासे दुपया, पोसे मासे चडप्पया। चित्तासोएस मासेस, तिष्पया हवइ पोरिसी ॥१३॥ श्रंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्षेणं च दुश्रंगुलं।

वह्दए हायए वावि, मासेशं चउरंगुलं ॥१४॥

च्चयतिथीनां मासाः-श्रासाढ वहुलपनखे, भद्दवए कित्तए व पोसे व। फग्गुण वइसाहेसु य, बोद्धन्वा श्रोमरत्तास्रो ॥१४॥

पादोनपौरुषी-प्रमाण्म् ---नेद्वामूले श्रासाद-सावणे, छहि श्रंगुलेहि पडिलेहा। अहिं विइय-तियंमि, तइए दस अहिं चउत्थे ॥१६॥

श्रामग्ये स्थितानां संद्गिप्ता रात्रिचर्या-रिंच पि चउरो भागे, भिक्खू कुन्जा वियक्खणो।

तभो उत्तरगुणे कुन्जा, राइभाएस चउस वि ॥१७॥

पढमे पोरिसिं सज्मायं, वीये मार्ग कियायई । तह्याए निह्मोक्खं तु, चउत्थी भुज्जो वि सज्मायं ॥१८॥ रात्री स्वाध्यायसमयनिरीक्तणम्—

जं नेइ जया रित्तं, नक्खतं तंभि नहचउब्माए। संपत्ते विरमेज्जा, सज्कायं पश्चोसकालंभि ॥१६॥ तम्मेव य नक्खत्ते, गर्यणचउब्मागसावसेसंमि। वेरित्तयंपि कालं, पिडलेहित्ता मुग्री कुज्जा ॥२०॥

श्रामण्ये स्थितानां निशदा दिनचर्या—

पुनित्र द्वांमि चउन्भाए, पिंडलेहित्ताण भंडयं ।

पुरुं वंदित्तु सज्मायं, कुज्जा दुक्खिनमोक्खिण ॥२१॥

पोरिसीए चउन्भाए, वंदित्ताण तश्रो गुरुं।

श्रपिंडकमित्रा कालस्स, भायगं पिंडलेहए ॥२२॥

प्रतिलेखनाविधः—

ग्रीच्छ्रगलइयंगुलिझो, यत्थाइं पिडलेहए ॥२३॥
गोच्छ्रगलइयंगुलिझो, यत्थाइं पिडलेहए ॥२३॥
उद्दं थिरं अतुरियं, पुठवं ता वत्थमेव पिडलेहें ।
तो विद्य पण्फोडें, तह्यं च पुणो पमिष्ठजन्जां ॥२४॥
अण्वावियं अविलयं, अण्राणुवंधिममोसिल चेव ।
अप्पुरिमा नव खोडा, पाणी-पाणिविसोहणं ॥२५॥

अण्वाविय अवालय, अगाणुवंधिममीसलि चेव।
अप्पुरिमा नव खोडा, पाणी-पाणिविसोहणं ॥२५॥
प्रतिलेखना-द्वणानि—
आरभडां सम्मद्दां, वज्जेयव्वा य मोसली तह्या।
पप्तोडणां चउत्थी, विकित्वत्तां वेह्यां छही ॥२६॥
पसिडिल-प्लंब-लोला, एगा मोसा अणेगस्वधुणा।
अण्य पमाणपमायं, संकिय गणणोवमं कुज्जा ॥२७॥
अण्याणां इरित्तं पहिलेहा, अविविचासा तहेव य।
अर्थमं प्रं प्रस्थं, सेसाणि य अप्पुरुत्थाई ॥२८॥

प्रतिलेखना समये, नैतःकरणीयम्-

पडिलेहर्स कुर्णतो,

मिहो कहं कुणइ जगवयकहं वा।

देह व पश्चक्खार्यं, वाएइ सयं पिडच्छइ वा ॥२६॥

पुढंबी त्राउकाए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसागं। पडिलेहणापमत्तो, छग्हं पि विराहत्रो होइ॥३०॥

पुढवी श्राउकाए, तेऊ-वाऊ-वणस्सइ-तसार्ण।

पिंडलेष्ट्रणाश्राउत्तो, छरहं संरक्खश्रो होह ॥३१॥ तह्याए पोरिसीए, भत्तं पार्णं गवेसए।

छएहं अन्नयरागंमि, कारगंमि समुद्धिए ॥३२॥

वेयण वेयावचे , इरियद्वाए य संजमद्वाए ।

तह पाणवत्तियाएँ, छट्टं पुण धम्मचिताएँ ॥३३॥ निग्गंथो धिइमंतो,

निगांथी वि न करें ज छहिं चेव।

ठाणेहिं उ इमेहिं, अणहकमणाइ से होइ ॥३४॥ आयंके उवसगों, तितिक्खया बंभचेरगुत्तीसुं।

पांशिद्या तबहेउं , सरीरबुच्छेयणहाए ।।३५॥ श्रवसेसं भंडगं गिज्मा, चक्खुसा पिंडलेहए।

परमद्भजोयणात्रो, विहारं त्रिहरए मुणी ॥३६॥

चउत्थीए पोरिसीए, निक्खिवत्ताण भायणं।

सज्मायं तस्रो कुन्जा, सन्वभावविभावणं ॥३७॥ पोरसीए चउन्भाए, वंदित्राण तस्रो गुरुं।

पडिकमित्ता' कालस्त, सेन्जं तु पडिलेहए ॥३८॥

पासवणुकारभूमि च, पिडलेहिङ जयं जई। श्रामग्ये श्यिताना विशदा रात्रिचर्या—

काउसमां तत्रो कुन्जा, सन्बदुक्खविमुक्खगं ॥३६॥ देवसियं च ग्रह्यारं, चितिज्ज श्रेणुव्यसो । नागो य दंसमें चेव, चिरतंमि तहेव य ॥४०॥ पारियकाउसग्गी, वंदिता गा तत्रों गुरुं। देवसियं तु श्रह्यारं, श्रालोएज्ज जहक्रम्मं ॥४१॥ पिंडकिमित्तु निस्सल्ली, वंदित्ता ण तत्रो गुरुं। काउसगा तत्रो कुर्जा, सन्वदुबंखविमोक्खर्य ।। ४२॥ पारियकाउस्सम्गो, वंदित्ता गा तत्रो गुरुं थुइमंगलं च काऊण, कालं संप्रडिलेहए.।।५३॥ पढमे,पोरसिं सुज्भायं, बिये भागं कियायई 🞼 🞏 तइयाए निद्दमोक्खं ृतु, सज्भायं, तु ्चदृत्थिए ॥४४॥ ्षोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पहिलेहिए । 🎏 सज्भागं तु तथ्रो कुञा, श्रवोहंतो श्रुसंज् ॥ १५॥ पोरिसीए चउन्भाए, वंदिऊण तथ्रो गुरु पिंकमित्तु कालस्स, कालं तुः पिंडलेहए ॥ १६॥ भागए कायबुसमो, सन्बदुक्खविमुक्खगो । काउसग्गं तत्रो कुजा, सन्वदुक्खविमुक्ख्यां ॥४७॥ राइयं च श्रह्यारं, चितिन्ज श्रुणुवृत्वसी नार्याम दंसर्याम य, चरित्तंमि तवंमि य ॥१६८॥ पारियकाउस्सम्मो, वंदित्ता ग्रा तत्र्यो गुरु राइयं तु श्रह्यारं, श्रलोएर्ज जहक्रमं ॥४६॥ पिंडकिमित्त निस्सिद्धी, वंदित्तार्थ तुत्री गुरु काउसमा तम्रो इजा, सम्बद्धवस्तिमुक्समा ।।।।

> कि तवं पिडविज्जामि, एवं तत्थ विचित्र । काउस्सम्मं तु पारित्ता, करिज्जा जिणसंथवं ॥५१॥ परियकाउस्सम्मो, वंदित्ता या तत्रो गुरुं। तवं संपिडविज्जत्ता, कुज्जा सिद्धाण-संथवं ॥५२॥ एसा सामायारी, समासेगा वियाहिया। जं चरित्ता बहू जीवा, तिएगा संसारसागरं॥५३॥

अह खलुंकिज्ज-नामं सत्तवीसहमं अज्भयणं

श्री गणहरे गणी, ग्रुणी श्रासि विसारण। १॥ श्राहणी वहमाणस्स, कंतारं श्रहवत्तए। वहमाणस्स, संसारो श्रहवत्तए। १॥ जोगे वहमाणस्स, संसारो श्रहवत्तए। १॥ खलुके जो उ जोएह, विहंमाणी किलिस्सह। श्रममाहि य वेएह, तोत्रश्री से य भजहं॥ ३॥ एगं छसंह पुंच्छंमि, एगं विधह ऽभिक्ख्यां। एगो भंजह समिलं, एगो उप्पहपिष्ठश्रो ॥ १॥ एगो पंडह पासेणं, निवेसह निविज्जह । उक्कुहेह उप्पिडह, सहे वालगवी वए॥ ५॥ माई ग्रहण पडह, कुद्धे गच्छह पहिष्पहं। मयलक्खेण चिट्ठह, वेगेण य पहावह ॥ ६॥ छिनाले छिदह सिद्धा. दुहंतो, भंजह जुगे।

सेवि य अस्सुयाह्या, उच्छहिन्ना प्रसायह ॥ ७॥।

्बंबुका जारिसा जोजा, दुस्सीसा वि हु तारिसा । जोइया धम्मजाणांमि, भज्जंति धिइदुब्बला ॥ ८०॥

इब्हीगारविष ्एगे, एगेऽत्थ रसगारवे । सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥ ६ ॥

भिक्खालसिए एगे, एगे भ्रोमाणभीरुए शद्धे । पगं श्री सुसीसंमि, हेऊहिं कारगेहि य ॥१०॥

सो वि अत्रात्भासिल्लो, दौसमेव पकुटबइ।

व्यायरियांगं तु वयगं, पिडकूलेइ 5भिक्खगं ॥११॥ ं ने सा ममें वियाणाइ, न य सा मज्म दाहिइ।

निगाया होहिइ सने, साहू अनोऽत्थ व्याउ ॥१२॥

,पेसिया ,पिलउंचंति, ते ,परियंति समंतत्रो । रायविद्धि च मनंता, करेंति भिउडि इस्हि।। १३॥

. बाह्या संग्रहिया चेव, भत्तपागेहि- पोसिया।

'जायपनखा जहा हंसा, पक्तमंति दिसी दिसिं'॥१४॥ अह सारहीः विचितेइ, खलुंकेहिं समागश्री।

िकं मुक्क दुइसीसेहिं, श्रपाट में श्रवसीयइ विशेषा जारिसा मम सीसात्रो, तारिसा गलिगद्हा।

गलिंगहहे जिहिताणं, "दढं पेगिएहइ तवं

िमिडमहर्वेसंपंकी, ंगंभीरो खसमाहिश्री विहरइ महिन्महत्या, सीलभूएँण अप्येगा ।।१७॥

अह सोक्खमग्गगई नामं अह्वीसइमं अज्भयणं

मोक्खमग्रागई तचं, सुगोह जिग्रमासियं। चउकारसंस्त्रतं, ना सदंस गल क्ल सं ॥१॥ नार्यं च दंसर्यं चेन, चरित्तं च त्वो तहा। एस मग्गुत्ति पन्नत्तो, जिगोहिं नरदंसिहिं ॥ २ ॥ नाणं च दंसणं चेव, चिरत्तं च तवो तहा। एवं मग्गम्युप्पत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं॥ ३॥ ज्ञानस्वरूपम्-तत्थ पंचिवहं नागं, सुयं आभिनिवोहियं । श्रोहिनार्गं तु तह्यं, मणनार्गं च केवलं ॥ ४॥ ् एयं पंचविहं नागं, दन्वागां य गुगाण य। पञ्जवारा य सन्वेसि, नार्गं नार्गीह देसियं।। ४ ॥ द्रव्य-गुरा-पर्याय लत्तरा।नि-गुणाणमासस्रो दन्वं, एगदन्वस्सिया गुणा। लक्खणं पजनाणं तु, उमछो छस्सिया भने ॥ ६॥ धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गल जंतवो ।

लक्षण पजनाण तु, उमळा आस्तया मन ॥ द ॥ घट्ट्रव्याणि— घम्मो अहम्मो आगासं, कालो पुग्गल जंतनो । एस लोगो ति पत्रत्तो, जिणेहि वरदंसिहि ॥ ७॥ घम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किमाहियं। अणंताणि य दव्याणि, कालो पुग्गलजंतवो ॥ ८॥

वडद्रव्यलक्षणानि— गइलक्षणो उधम्मो , श्रहम्मो ठाणलक्षणो । मायणं सन्ददन्दाणं, नहं श्रोगाहलक्षणं ॥ ६॥ वस्तणालक्षणो कालो ,जीवो उवश्रोगलक्षणो । नाणेणं दंसणेणं चेव, सहेण य दुहेण य ॥१०॥

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा। वीरियं उवश्रोगो य, एयं जीवस्त लक्लगं ॥११॥ संदंधयार-उज्जोब्रो, पहां छायाऽऽतव ति वा। 🥠 वंगण-रस-गंध-फासा, पुग्गलागं तु लक्लगं ॥१२॥ एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाणमेव य। ं संजोगा य विभागा य, पर्ज्ञवार्ग तु लक्लगं ॥१३॥ दर्शन-स्वरूपम्-जीवा जीवा य बंधो य,पुरुषं पावा सवी तहा। संवरों निजरा मोक्खों, संतेए तहिया नव ॥१४॥ सम्यक्त-लत्तराम्-तहियाणं तु भावाणं, सन्भावे उवएसगां। भावेणं सद्दृतस्स, समतं तं वियाहियं ॥१५॥ दशविधा-रुचयः निस्सगु वएसरुई, श्राणरुई सुत्त बीयरुइमेव । श्रमिगम^६वित्याररुई", किरिया^{ट्}संखेव धम्मरुई "॥१६॥ (१) भूयत्थेणाहिगया,जीवाजीवा य पुरणपार्वं च । 🔗 🥴 सहसम्मङ्यासव, संवरो य रोएई उ निस्सगो ॥१७॥ जो जिणदिहे भावे, चडन्विहे सद्हाइ संयमेव । एमेव नमह त्ति य, स निसम्मरुइ त्ति नार्यव्वी ॥ १८॥ (२) एए चेव उ भावे, उवइट्टे जो परेण सहहई । छउमत्थेण जिंगोग व, उवएसरुइ चि नायन्वो ॥१६॥ (३) रागो दोसो मोहो, असार्ग जस्स अवग्यं होई। श्राणाए रोयंतो, सो खलु श्राणारुई, नामं ॥२०॥ (४) जो सुत्तमहिज्जंतो, सुएगा झोगाहइ उसम्मत्तं। श्रंगेश बाहिरेण वा, सो सुत्तरह ति नायवंदी ॥२१॥ (४) एगेण अगोगाइ, प्याइ जो पसरह उसम्मत्तं। उदएवव तेल्लविद्रं, सो वीयरुइं चि नायव्यो,॥२२॥

उत्तरक्मयणसुत्तं

(६) सो होइ अभिगमरुई सुयनागं जेण अत्यक्रो दिई। एकारस अंगाई, पहएएगं दिद्विवात्री य गारशा (७) द्वाण सन्वभावा, सन्वपमांगिहि जस्स उवलद्धा । स्व्वाहिन्यविहीहिं य, वित्थारहइ ति-नायव्वो ॥२४॥ (८) दंसणनाग्यच्रित्ते, त्वविणए सब्वसमिइगुत्तीसु । ,जो, किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुई नाम ॥२४॥ (६) अणभिग्गहियकुदिद्वी, संखेवरुइ ति होइ नायव्यो । श्रविसारश्रो पवयणे, श्रग्मिगगहिश्रो य सेसेसु ॥२६॥ (१०) जो ऋत्थिकायधम्मं, सुयधम्मं खलु चरित्तधम्मं च। सद्दह जिणाभिहियं, सो धम्मरुइ ति नायव्यो ॥२७॥ परमत्थ-संथवी वा सुदिद्ध-परमत्थ्सेवणा वा वि। वावन्न-कुदंसणवजाणां, य सम्मत्तसहहणा नारटा। नित्थ चरित्तं सम्मत्तविहुणं, दंसणे उभइयव्वं। सम्मत्तन्तिहः जुगवं, पुन्वं व संगत्तं ॥२६॥ ना दंस शिस्स ना गं, , नाग्रेस विका-नःहंति वरससुणा 🖟 📜 ्रञ्जसुणिस्स अन्तरिथ मोक्खो, नित्थ अभाक्षस्स निन्वार्गः ॥३०॥ निस्सं किय[ै] निकंखिय**ै, नि**न्वितिगच्छं अ**मुङ्दिद्वीं य।** उववृह"-थिरीकरगो^ह, वञ्**छल"-पभावगो**ं **छड** ॥३१॥ चारित्रस्वरूपम्-सामाइयन्थः पदमं, छेश्रोवद्भावर्गः अवे बिद्यं। परिहारविसुद्धीयं , सुदुमं तह संपराय च ॥३२॥ भकसायमहत्रखार्यं, क्रंडमस्थस्स जिखस्स वा।

्य्यं चयरित्तकरं, चारित्तं होंहं अमहियं ।। १ शा

तपस्तरूपम् त्वो या दुविहो बुन्तो, बाहिरुअंतरो । तहार्या बाहिरो छव्विहो बुत्तो, एवमब्भंतरोः तबो विश्वश्री ्नागोणः जाणकः भावे, - दंसगोणः य सद्दे । 🕬 ्चरित्रेश - निगिएहाइ, ।तवेश (परिसुक्सई ।।३५।। । 🍫 ख़ित्रज्ञाः पुरुवकस्माईहाः संजमेशा ध्तवेणाः य 🛚 🐃 🦈 ्रसन्बदुक्ख्पही गाडाः, 👉 पक्तमंति 🤊 - महेसिणो 🕬 ॥३ स्वा ः त्तिःबेमिधाः

अह सम्मत्तपरकम् नामं एगूणतीसइमं अङ्भयण े सुयं मे त्राउसं ! े तेगं भगवया एवमक्खायं — ं इह खलु समत्त-परकमे-नाम-श्रज्भयगोः—ः असमग्रेणं भगवया महावीरेणं कासवेगां पवेहए जं सम्मं सद्दिता पत्तइता रोयइता फासिता प्रालइता क्रिक्ट वीरिता कित्तइता सोहइता आराहिता आणाए अणुपाल्इता-बहवे जीवा सिज्मंति बुज्मंति मुचंति-परिनिच्यायंति सच्यदुक्खाणमंतं करेति। ंत्स्स गं अयमङ्के एवमाहिज्जइ। तं जहां-संवेगे १ निन्वेए २ धम्मकहा ३ गुरु-साहम्मियसुस्सूसण्या ः श्रीलोयसया ५ निंदसया ६ गरिहस्यया ७ सामाइए ८ चउन्बीसत्थे ६ वंदगाए १० पडिकमणे ११ काउस्सम्मे १२ पचक्खाणे १३ थवथुईम्गले १४ कालपडिलेहणया १ ४ पायच्छित्तकरसो १६ खमावण्या १७ ् सन्भाषः १ द्वायण्याः १ हि पुन्छण्याः २ व प्रियद्वर्णयाः २१ व

अगुप्तेहा १२ भूममहा २३ %

संजमे २६ तवे २७ वोदाखे २८ सुहसाए २८ ी

अपिबद्धया ३० विवित्त-सयगासणसेवगाया ३१ विणियद्वर्णया ३२

खंती ४६ मुत्ती ४७ मह्वे ४८ अजवे ४६ -

भावसच्चे ५० करगासच्चे ५१ जोगसच्चे ५२

मणगुत्तया ५३ वयगुत्तया ५४ कायगुत्तया ५५

जिन्मिदियनिग्गहे ६५ फासिदियनिगाहे ६६

संवेगेणं भंते ! जीवे कि जगायह ?

संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जण्यह ।

नवं च कम्मं न वंधइ।

अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छह

श्रग्ताणुवंधि को ह-माण-माया-लोभे खवेइ।

नागसंपन्नया ५६ दंसगसंपन्नया ६० चरित्तसंपन्नया ६१

पेज-दोस-मिच्छादंसणविजए ७१ सेलेसि-श्रकम्मया ७२ ॥

कसाय-पन्नक्खाणे ३६ जोग-पच्चक्खाणे ३७ सरीर-पच्चक्खाणे ३८ 🗸

संमोग-पचक्खाणे ३३ उवहि-पचक्खाणे ३४ त्राहार-पचक्खाणे ३४

सुयस्स ऋाराहणया २४ एगग्ग-मण्संनिवेसणया २५

सहाय-पच्चक्खाणे ३६ भत्त-पच्चक्खाणे ४० सब्भाव-पच्चक्खाणे ४१

पिड्रिवराया ४२ वेयावच्चे ४३ सव्वगुणसंपन्नया ४४ वीयरागया ४४

मन-समाधारणया ५६ वय-समाधारणया ५७ काय-समाधारणया ५८

सोइंदियनिगाहे ६२ चिंखदियनिगाहें ६३ घाणिदियनिगाहे ६४

कोहविजए ६७ मांगविजए ६८ मांगविजए ६६ लोभविजए ७०

तप्पच्चइयं च गां मिच्छतः विसोहि काऊण दंसणाराहए भवइ।

दंसण-विसोहीए य गां विसुद्धाए अत्थेगइए तेगोन भनगाहगोगां सिज्यद्ध।

विसोधीए य मं विद्वदाए तन्त्रं पुत्रो भवनगढ्यं नाह्यमह ॥ १॥

निन्देएगां भंते ! जीवे किं जगायह ? निव्वेएगं दिव्व-माणुस- तेरिच्छिएसु काममोगेसु निन्त्रेयं हन्व मागन्छइ। सच्च विसएसु विरज्ञह। सन्व विसएसु विरक्षमाणे त्रारंभ- परिचार्यं करेइ। श्रारंभ- परिचार्यं करेमाणे संसारमग्गं वोच्छिंदइ । सिद्धिमग्गं पडिवन्ने य भवइ। ॥२॥ धम्मसद्धाए गां भंते! जीवे कि जग्रयह ? धम्मसद्धाए गं साया-सोक्खेस रजमागे विरजइ। बागार-धम्मं च गां चयइ। श्रग्रगारिएगां जीवे सारीर- माग्रसागां दुक्खागां ---छेयण-भेयण संजोगाइणं वोच्छेयं करेइ। भन्वाबाहं च गां सुहं निन्वचेइ।॥३॥ गुरू-साहम्मिय-सुरस्सरायाए र्णं मंते ! जीवे कि जणयह १ गुरू-साहम्मिय-सुस्सूणयाए विणय-पहिवत्ति जणयइ। विगाय-पहिनको थ गाँ जीवे श्राग्चासायणसीले-नेरइय-तिरिक्खजोणिय-माणुस्स-देवदुग्गइश्रो निरुंभइ । षण-संजलगा-भत्ति-बहुमाणयाए माग्रुस्स-देवसुग्गइश्रो निबंधइ। सिद्धिं सोगाई च विसोहेइ। पसत्थाइं च गां विगायमूलाइं सन्वक्रजाइं साहेइ। श्रमे य बहवे जीवा विणइत्ता भवइ ॥ ४ ॥ श्रासीयणाए गां भंते ! जीवे कि जणयह ? श्रालोयगाए ग्रं माया-नियाग-मिच्छादंसग्रसल्लाग्रं मोक्खमग्ग-विग्धाएां अर्णत-संसारबंधणाणां उद्धरणं करेह । उच्छमावं च जणयह ।

८ ८० २६

२०२]

सामाइए गां सावज-जोग-विरईं जगायह ॥=॥

उज्जुभाव-पहिबन्ने य एां जीवे अमाइ इत्थीवेय-नपुंसग वेयं च न बंधइ। पुट्यबद्धं च गां निज्जरइ ॥४॥ निंदणयाए गां भंते ! जीवे कि जणयइ ? निदणवाए गां पच्छाग्रुताचं जगायई। पच्छाखुतावेगां विरज्ञमागे करण-गुगासेढीं पडिवजई।

करण-गुग्रसेढी पडिवन्ने य गां अणगारे मोहणिज्जं कम्मंउग्घायइ ॥ ६ ॥ गरहणयाए गां भंते ! जीवे किं जणयइ ?

गरहणयाए गां ऋपुरकारं जगयइ। त्रपुरकारगए गां जीवे अप्पसत्थेहिंतो नियत्तेइ—

पसत्थे य पडिवज्जइ। पसत्थ-जोगपडिवन्ने य गां त्रमागारे त्रमांत-षाइ-पजने खनेइ॥७॥ सामाइए गां भंते ! जीवे कि जणयइ ?

चउच्वीसत्थए गां भंते ! जीवे किं जगायइ ? चउन्वीसत्थए गां दंसगा-विसोहिं जगायह ॥ १॥ वंदणएगां भंते ! जीवे कि जग्यइ ?

वंदगएगां नीयागीयं कम्मं खवेड। उचागोयं कम्मं निबंधह। सोहगां च गां श्रप्पिहरयं श्रागाफलं निव्वत्तइ।

दाहिराभावं च र्गं जणयइ ॥१०॥ पिकमणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

पिडकमगोरां वय-छिदागि पिहेइ।

पिहिय-वय छिदे पुण जीवे निरुद्धासवे श्रसवल-चिरते—
श्रष्टसु पवयण-मायासु उवउत्ते श्रपुहत्ते सुप्पणिहिंदिए—
विहरइ ॥११॥
काउरसग्गेणं भंते । जीवे कि जग्रयइ १
काउरसग्गेणं तीय-पहुप्पनं पायच्छितं विसोहेइ ।
विसुद्ध पायच्छित्ते य जीवे निच्नुय-हियए 'श्रोहरिय-भरुव्य

भारवहें पसत्थ-भाणोवगए सुहं सुहेगां विहरइ ॥१२॥ पचक्खागोगां भंते । जीवे कि जणयह ?

पञ्चक्खांग्रेणं आसंवदाराई निरुभह।

पुरुवक्षागोर्ग इच्छानिरोई जणयइ। इच्छानिरोहं गए य एां जीवे सन्वदन्वेसु विग्रीय-तग्हे सीइ भूष विहरइ ॥१३॥

थव-थुइ मंगलेगां भंते ! जीवे कि जगायइ ?

थव-थुइ मंगलेएां नाण-दंसण-चरित्त-बोहिलामं जगायइ। नाग-दंसण-चरित्त-बोहिलाभसंपन्ने य एां जीवे अंतिकिरियं कप्पविमाणीववित्तयं आराहएां आराहेइ ॥१४॥

काल-पिं लेहण्याए गां भंते ! जीवे किं जग्यस् ? काल-पिंडलेहण्याए गां नाणावरणिंडजं कम्मं खवेइ ॥१४॥

पायच्छित्तकरणेणां भंते ! जीवे कि जणयह ?

पायिन्छत्तकरगोणं पावकम्मविसोहिं जणयइ, निरइयारे यावि भवइ। सम्मं च गां पायिन्छत्तं पिटवज्जमागो मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं च आयारफलं च आराहेइ॥१६॥ खमावणयाए गां भंते! जीवे किं जणयइ ?

समावणयाए पन्हायणमावं जगायइ।

पल्हायणभावग्रुवगए य सन्बपाण-भूय-जीव-सत्तेसुं - मेत्ति भावमुप्पाएइ ? मेत्ती भावमुवगए च जीवे भावविसोहिं काऊण निन्मए भवइ॥१७॥ सन्भाएएां भंते ! जीवे किं श्रग्यइ ? सक्साएगां गागावरणीक्जं कम्मं खवेइ ॥१८॥ े वायणाए एां भंते ! जीवे किं जग्रयह १ वायणाए एां निजरं जरायइ। सुयस्स य अगुसन्जणाए अणासायणाए वहुए। सुयस्स श्रगुसन्जणाए श्रणासायगाए वद्दमागो तित्थ्रधममं श्रवलंबइ तित्थधम्मं अवलंबमार्गे महानिज्जरे महापञ्जवसारो भवइ॥१६॥ पिड-पुच्छग्याए एां भंते ! जीवे किं जग्यइ ? पिंड-पुच्छणयाए गां सुत्त-तथ-तदुमयाई विसोहेइ। कंखामोहिणाज्जं कम्मं वोच्छिद् ॥२०॥ परियद्यायाए एां भंते! जीवे किं जगयइ ? परियद्यणयाए वंजणाइं जगायइ, वंजगालद्धि च उप्पाएइ ॥२१॥ श्रगुप्पेहाए एां भंते ! जीवे किं जग्यइ ? श्रयुप्पेहाए गां त्राउय-वन्नाश्रो सत्त-क्रम्मपगडीश्रो---धिणय-वंधणवद्धास्रो सिढिल-वंधणबद्धास्रो पकरेइ। दीहकालिठइयाच्ची हस्सकालिठइयाच्ची पकरेइ। तिन्वाणुभावात्रो मंदाणुभावात्रो पकरेइ। बहुप्पएसग्गाञ्चो अप्प-पएसग्गाञ्चो पकरेइ। श्राउपं च गां कम्मं सिया वंधइ, सिया नो बंधइ। श्रसाया-वेयणिज्जं च एां कम्मं नो भुजो भुज्जो उवचिणइ।

]

श्रगाइयं च गां त्रणवदग्गं दीहमद्धं चाउरत-संसारकंतारं--खिपामेव वीइवयइ ॥२२॥ धम्मकहाए एां भंते ! जीवे किं जरायइ १ धम्मकहाए ए। कम्म-निज्जरं जणयइ। 🐤 धम्मकहाष् गां पवयगां पमावेइ।_ पवयण-पमावेणां जीवे त्रागमेसस्स भइताए कम्मं निवंधइ ॥२३॥ सुयस्त त्राराहण्याए एां भंते । जीवे कि जणयह ? सुयस्त आराहण्याए ृगं श्रानाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ॥२४॥ एगग्ग-मण्य-संनिवेसण्याए णं अंते ! जीवे कि जणयह १००० एगग्ग-मण-संनिवेसणयाए गं चित्तनिरोहं करेइ ॥२५॥ संजमए गां भंते ! जीवे कि जग्यह ? संजमएँ गां श्रणएहेयत्तं जणयइ ॥२६॥ तवेणं भंते ! जीवे किं जणयह ? 🧃 तवेगां वोदागां जणयइ ॥२७॥ वोदाखेखं भंते ! जीवे कि जणयइ १

वादाण्ण भत ! जीव कि जण्यह १ वोदाणेणं श्रकिरियं जण्यह । श्रकिरियाइ भवित्ता तश्रो पच्छा सिज्मह बुज्मह मुच्चइ— परिनिच्चायह सम्बद्धक्खाणमंतं करेइ ॥२८॥ सह-साएणं भंते । जीवे कि जण्यह १

सुह-साएगां श्रामुस्यतां जणयह ।

त्रग्रुस्सुयाए गां जीवे त्रग्रुकंपए त्रग्रुक्मडे विगयसोगे—-चरित्त-मोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥२६॥

अपडिवद्धयाए गां भंते ! जीवे कि. जणयइ ?

श्रपिडबद्धयाए गां जीवे निस्संगत्तं जगयइ। निस्संगत्तेगां जीवे एगग्गचित्ते दिया य राश्रो य— श्रसञ्जमागो श्रपिडबद्धे यावि विहरइ॥३०॥

विवित्त-सयणासण्याए भंते ! जीवे कि जण्यह ?

विवित्त-सयणासणयाए जीवे चरित्तगुत्तिं जग्रयह। चरित्तगुत्ते य ग्रं जीवे विवित्ताहारे दढचंरिते एगंतरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्टविह-कम्मगंठिं निजरेह ॥३१॥

विनियट्ट ग्याए गां भंते ! जीवे कि जणयइ ?

विनियट्टणयाए गां जीवे पावकम्मागां श्रकरणयाए श्रब्धुहेइ.। पुव्ववद्धाण य निष्ठरणयाए पावं नियत्तेह । तश्रो पच्छा चाउरंत-संसारकंतारं वीइ वयइ ॥३२॥

संभोग-पचक्खागेगां भंते ! जीवे किं जगायह ?

संभोग-पन्नक्खायोगं जीवे त्रालंबणाई खवेइ। निरालंबणस्स य त्राययद्विया योगा भवंति। सएगं लाभेगं संतुस्सइ,

परलामं नो आसादेइ नो तकेइ नो पीहेइ नो पत्थेइ नो अभिलसइ। परलामं अणस्साएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे अपत्थेमाणे अणभिलसमाणे दुच्चं सुहसेज्जं उवसंपिजवार्श विहरइ॥३३॥ उवहि-पचक्खाएोणं भंते !ंजीवे किं जणयइं?

उवहि पचक्वागोगं जीवे अपलिमंथं जगयई।

निरुवहिए गं जीवे निक्कंखी उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ ॥३४॥

श्राहार-पचक्खाणेणं भंते ! जीवे कि जणयइ ?

श्राहार-पञ्चक्खाणेणं जीवे जीवियासंसप्पश्रोगं वोच्छिद् । जीवियासंसप्पश्रोगं वोच्छिदित्ता जीवे श्राहारमंतरेण न संकिलिस्सइ ॥३४॥

कसाए-पञ्चक्खाणे णं भंते ! जीवे किं जणयह ?

कसाए-पञ्चक्खाणे णं जीवे वीयरागभावं जणयह।

वीयरागभाव पिंडनमे य गां जीवे सम सुह दुक्खे भवइ ॥३६॥ जोग-पच्चक्खायोगं मंते ! जीवे किं जगायइ ?

🏂 जोग-पच्चक्खायोगं जीवे श्रजोगत्तं जणयइ।

श्रजोगी गां जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुट्वबद्धं निजारेइ ॥३०॥ सरीर-पच्चक्खागोगां भंते ! जीवे कि जगायइ ?

सरीर-पञ्चक्खाग्रेणं जीवे सिद्धाइसय-गुग्ग-कित्तग्रं निञ्वत्तेइ। सिद्धाइसय-गुण संपन्ने य ग्रं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ।।३८॥

सहाय-पच्चक्खायोगं भंते! जीवे कि जगायइ ?

सहाय-पञ्चक्खाणेणं जीवे एगीभावं जणयइ। एगीमावभूए य गं जीवे एगत्तं भावेमाणे—

अप्पसदे अप्पसंभे अप्प-कलहे अप्प-कसाए अप्प-तुमंतुमे-

संजम-बहुले संवर-बहुले समाहिए यावि मवह ॥३६॥ भत्त-पञ्चक्खागोगां भंते ! जीवे कि जगायह ?

मत्त-प्रवन्खार्येणं जीवे अयोगाइं भवसयाईं निरुंभइ ॥४०॥

सब्भाव-पचक्खागोगां भंते! जीवे किं जगायइ? सब्भाव-पचक्वागोगं जीवे अनियद्धं जगयइ। श्रनियद्विपिडवन्नेयं अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ। तंजहा-वेयणिङ्जं ऋाउयं नामं गोयं-तत्रो पच्छा सिज्भइ बुज्भइ ग्रुच्चइ परिनिच्च।यइ सन्व दुक्खाणमंतं करेइ ॥४१॥ पिहरूवयाए गां भंते ! जीवे किं जगायइ ? पिहरूवयाए गां जीवे लाघवं जगायइ। लघुभूए गां जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे-विसुद्धसमत्ते सत्तसमिइसमत्ते सन्वपाण भूय-जीव-सत्तेसु विससिगिज्जरूवे श्रप्पडिलेहे जिइंदिए विउत्त तव-समइ-समन्नागए यावि भवइ ॥४२॥ वेयावच्चेगां भंते ! जीवे कि जगायइ ? वेयावच्चेगां जीवे तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबंधइ ॥४३॥ सन्वगुग्रसंपन्नयाए गां भंते ! जीवे किं जणयइ ? सन्वगुणसंपन्नयाए गां जीवे अपुणरावत्ति जुणयइ। श्रपुणरावर्ति पत्तए य गां जीवे सारीर-माणसार्णं दुक्खार्णं नो भागीभवइ ॥४४॥ वीयरागयाए गां भंते ! जीवे किं जगायइ ? वीयरागयाए णं जीवे नेहाखबंधगाणि तएहाखबंधगाणि य वोच्छिदर, मणुन्नामणुन्नेसु सद्द-फरिस-रूव-रस-गंधेसु चेव विरज्जइ ॥४४॥ खंतीए गां भंते ! जीवे कि जग्रवह ? खंतीए गां जीवे परीसहे जिगाइ ॥४६॥

मुत्तीए गां भंते ! जीवे कि जगयइ ?

मुत्तीए गां जीवे श्रकिचगां जगायइ। श्रकिचगों य जीवे श्रत्थलोलागां पुरिसागां श्रपत्थिगाज्जो भवइ।।४७॥

श्रज्जवयाए गां भंते ! जीवे कि जणयह १

श्रन्जवयाए गां जीवे काउन्जययं भावन्ज्ययं भासन्ज्ययं— श्रविसंवायगं जणयह।

भविसंवायणसंपन्नयाए गां जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥४८॥

मद्दवयाए गां भंते ! जीवे किं जणयइ ?

मद्वयाए ग्रं जीवे अगुस्सियत्तं जग्रयह।

्र अणुसियत्तेण जीवे मिउमद्दवसंपन्ने श्रद्धमयद्वाणाइं निद्वावेद् ।।४९॥ भावसचेणं भंते ! जीवे किं जगायद ?

भावसबेगां जीवे भावे विसोहिं जणयह।

भावविसोहिए वर्डमाणे जीवे अरहंत-पन्नत्तस्स-धम्मस्स-

अरहंत-पश्चत्तस्य-धम्मस्य श्राराहणयाए श्रब्धुद्धिता— परलोग धम्मस्य आराहए भवइ ॥५०॥

करणसचेगां भंते ! जीवे कि जगपइ ?

करणसचेंगं जीवे करणसत्ति जग्रयइ।

करणसच्चे वष्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी यावि भवइ ॥५१॥ जोगसच्चेणं भंते । जीवे कि जणयह १

जोगसच्चेयां जीवे जोगं:विसोहेह ॥४२॥

मण्युत्तयाए णं भंते ! जीवे कि जणयइ ?

मण्गुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ। एगग्गचित्ते णं जीवे मण्गुत्ते संजमाराहए भवई।।५३॥

वयगुत्तयाए गां भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वयगुत्तयाए गां जीवे निव्वियारत्तं जणयह । निव्वियारेगां जीवे वहगुत्ते अन्भप्पजोगसाहणजुत्ते यावि भवई ॥५४॥

कायगुत्तयाए गां भंते ! जीवे किं जगायइ ?

कायगुत्तयाए गां जीवे संवरं जणयइ। संवरेगां कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ॥५५॥

मगा-समाहारणयाए गां भंते ! जीवे किं जणयह ?

मण-समाहारणयाए गां जीवे एगग्गं जगायइ । एगग्गं जगाइत्ता नाणपञ्जवे जणयइ । नागापञ्जवे जगाइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ मिच्छत्तं च निज्जरेह ॥५७।

वय-समाहारणयाए गां भंते ! जीवे किं जणयइ ?

वय-समाहारणयाए गां जीवे वय-साहारण-दंसणपन्जवे विसोहेइ । वय-साहारण-दंसणपन्जवे विसोहित्ता सुलहबोहियत्तं निन्वत्तेइ दुल्लहबोहियत्तं निन्जरेइ ॥५७॥

काय-समाहारणयाए गां भंते ! जीवे कि जणयइ ?

काय.समाहारणयाए गां जीवे चरित्तपज्जवे विसोहेइ। चरित्तपज्जवे विसोहित्ता श्रहक्खायचरित्तं विसोहेइ। श्रहक्खायचरित्तं विसोहिता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तस्रो पच्छा मिज्मेह बुज्मह मुच्चइ परिनिव्वायइ--सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥५८॥

नाग-संपन्नयाए गां भंते ! जीवे कि जगायइ ?

नाण-संपन्नयाए गां जीवे सन्वभावाहिगमं जगयइ।
नाण-संपन्ने जीवे चाउरंते संसारकंतारे न विणस्सइ।

गाहा—जहा सुई ससुत्ता, पडिया न विणस्सइ। तहा जीवे ससुत्ते, संसारे न विणस्सइ॥१॥

नाण-विणय-तव-चरित्तजोगे संपाउणइ। ससमय-परसमयविसारए य असंघायणिज्जे भवइ॥५६॥

दंसण-संपन्नयाए गां भंते ! जीवे कि जणयइ १ दंसण-संपन्नयाए गां जीवे मविमच्छत्तछेयगां करेइ,

परं न विज्मायइ-परं श्रविज्माएमाणे श्रणुत्तरेणं नाण-दंसणेणं-श्रप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥६०॥

चरित्त-संपन्नयाए गां भंते ! जीवे किं जणयइ ?

चरित्त-संपन्नयाए गां जीवे सेलेसिमावं जणयइ।
सेलेसिपडिवन्ने य अग्रगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ।
तश्रो पच्छा सिज्मइ बुज्मइ मुच्चइ परिनिच्वायइ—
सन्वदुक्खाग्रमंतं करेइ।।६१॥

सोइंदिय- निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ?

सोइंदिय-निग्गहेगां जीवे मणुन्नामणुन्नेसु सहेसु-राग-दोसनिग्गहं जणयइ। तप्पच्चइयं च गां कम्मं न बंधइ पुन्त्रबद्धं च निज्जरेइ ॥६२॥ चिंखदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे कि जणयह ? चिंखदिय-निग्गहेर्णं जीवे मणुत्रामणुत्रेसु रूवेसु— राग-दोसनिग्गहं जणयइ। तप्यच्इयं च गां कम्मं न बंधइ पुन्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६३॥ वाणिदिय-निग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयह ? बाणिदिय-निग्गहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु गंधेसु— राग-दोस-निग्गहं जंणयइ। तत्पच्चइयं च गां कम्मं न बंधइ पुच्यबद्धं च निज्जरेइ ॥६४॥ जिन्मिद्य-निग्महेगां भंते ! जीवे कि जग्यइ ? जिन्मिदिय-निगाहेणं जीवे मणुन्नामणुन्नेसु रसेसु-राग-दोसनिग्गहं जणयइ। तपचइयं च गां कम्मं न बंधइ पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥६४॥ फासिंदिय-निग्गहेणां भंते ! जीवे कि जगायइ ?

फासिंदिय-निग्गहेर्गं जीवे मणुकामणुक्तेस फासेस-राग-दोसनिग्गहं जणयह। तप्पच्चइयं च गां कम्मं न बंधइ पुच्चबद्धं च निज्जरेइ ॥६६॥ कोह-विजएगां मंते! जीवे कि जगायह १

कोइ-विजएगां जीवे खंतिं जणयह । कोह-वेयणिक्जं कम्मं न बंधइ, पुन्वबद्धं च निर्जरेइ ॥६७॥ माग-विजएगं भंते ! जीवे कि जगयइ ? 🖊 माण विजएगां जीवे मद्दवं जगायइ। मागा-वेयणिज्जें कॅम्मं न बंधइ, पुन्वबद्धं च निजरेई ॥६८॥ माया-विजएगां भंते ! जीवे कि जणयहः ? माया-विजएगं जीवे श्रज्जवं जणयह । माया-वेयणिक्जं कम्मं न बंधइ, पुन्वबद्धं च निऋरेइ ॥६८॥ लोभ-विजएणं भंते ! जीवे किं जणयह ? लोभ-विजएगां जीवे संतोसं जणयइ। लोभ-वेषणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुन्वबद्धं च निजरेइ ॥७०॥ पिज-दोस-मिच्छादंसण-विजएणं मंते ! जीवे किं जणयह ? **पिज्ज-दोस-मिच्छादंसण-विजएगां** जीवे — नाण-दंसण्-चरित्ताराहणयाए अब्धुद्वेह । श्रद्वविहस्स कम्मस्स कम्मगंठि-विमोयग्रयाए— त्रे तपदमयाए जहाग्रापुच्वीए---

श्रहावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्वाएइ। पंचिवहं गाणावरणिज्जं कम्मं उग्वाएइ। नविहं दंसगावरणिज्जं कम्मं उग्वाएइ। पंचिवहं श्रंतराइयं कम्मं उग्वाएइ। एए तिकिवि कम्मंसे जुगवं खवेइ— तत्रो पच्छा त्रगुत्तरं किसगं पिडिपुएगं—
निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं—
लोगालोगप्पभासगं केवलवरनाण-दंसगं समुप्पाडेइ—
जाव सजोगी भवइ, ताव इरियावहियं कम्मं निबंधइ—
सुहफरिसं दुसमयिऽइयं—
तं पढम-समएबद्धं बिइय-समएवेइयं तइय-समए निजिएगं—
तं बद्धं पुट्ठं उदीरियं बेइयं निजिएगं—
सेयाले य श्रकम्मं यावि भवइ ॥७१॥

श्रहाउयं पालियत्ता— श्रंतोग्रहुत्तद्धावसेसाए जोग-निरोहं करेमाणे मुहुमिकरियं श्रप्पिडवाइं सुक्कज्काणं कायमाणे तप्पढमयाए— मणजोगं निरुंभइ वयजोगं निरुंभइ कायजोगं निरुंभइ, श्राण-पाणिनरोहं करेइ— इसि पंच-हस्सक्खरुच्चारणद्धाए य णं श्रणगारे— सम्रच्छित्र किरियं श्रमियद्वि सुक्कज्काणं कायमाणे— वेयणिज्जं श्राउयं नामं गोत्तं च एए चत्तारि कम्मंसे जुगवं खवेइ ॥७१॥ तश्रो श्रोरालिय-तेयकम्माइं

सन्वाहि विष्पजह्याहि विष्पजहिता उन्जुसेहिपत्ते अपुसमागागइ उद्वं एगसमएगं अविग्गहेगं तत्थ गंता । सागारोवउत्ते सिज्भह् बुज्भह् ग्रुच्चइ परिनिन्नायह सन्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥७२॥ एस खलु सम्मत्तपरक्षमस्स अन्सयग्यस्स अहे— समग्रेगं भगवया महावीरेगं— आधिवए पश्चविए पह्नविए दंसिए निदंसिए उवदंसिए। ॥ ति बेमि॥

श्रह तवमग्ग नामं तीसइमं अज्भयणं

- जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जियं। खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ १॥ , पणिवह भुसावाया , श्रदत्त मेहुगा परिग्गहा विरश्ची। राइभोयग्विरस्रो^६, जीवो भवइ स्रणासवो ॥ २ ॥ पंचसिम्यो तिगुत्तो, श्रकसात्रो जिई'दिश्रो। अगारवो य निस्सल्लो, जीवो होइ त्रणासवो ॥ ३ ॥ एएसिं तु विवच्चासे, रागदोससमन्जियं । खनेइ उ जहा भिक्खू, तमेग्ग्गमणे सुण ॥ ४॥ 'जहा महातलायस्स, संनिरुद्धे जलागमे । उस्सिचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे'॥ ५॥ एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे । भव-कोडी-संचियं कम्मं, तवसा निजरिजइ ॥ ६॥ सो तवो दुविहो चुत्तो, बाहिरब्भंतरो तहा। बाहिरो छन्विहो बुत्तो, एवमन्भंतरो तवो ॥ ७॥ भणसण 'मूणोयरिया",भिक्खायरिया" य रसपरिचाओ"। कायिकलेसो " संलीणया", य बज्भो तवो होइ॥ =॥ (१) इत्तरिय 'मरणकाला 'य, अणसणा दुविहा भवे। इत्तरिया सावकंखा, निरवकंखा उ विइजिया-॥ ६॥

जो सो इत्तरियतवो, सो समासेण छन्त्रिहो। सेहितवो 'पयरतवो ',घुगो "य तह होइ वग्गो "य ॥१०॥ तत्तो य वग्गवग्गो , पंचमो छहुत्रो पइएणतवो । मणइच्छियचित्तत्थो, नायव्यो होइ इत्तरिश्रो ॥११॥ जा सा त्रणसणा मरणे, दुविहा सा वियाहिया। सवियार मवियारा , कायचिट्टं पई भवे ॥१२॥ श्रहवा सपरिकम्मा , श्रपरिकम्मा य श्राहिया। नीहारिं मनीहारीं, आहारच्छेश्रो दोसु वि ॥१३॥ (२) त्रोमोयरणं पंचहा, समासेण वियाहियं। दन्वश्रो खेत्त कालेगा , भावेगा पन्जवेहि य ॥१४॥ जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे। जहन्नेगोगसित्थाई, एवं दन्वेण ऊ भवे ॥१४॥ गामे नगरे तह, रायहाणि निगमे य आगरे पल्ली । खेडे–कब्बड–दोगाग्रुह, पट्टगा-मडंब-संबाहे ॥१६॥ श्रासमपए विहारे, सिनवेसे समाय-घोसे यः। थलि-सेगा-खंधारे. सत्थे संवद्घ-कोट्टे य ॥१७॥ वाडेसु य रत्थासु य, घरेसु वा एयमित्तियं खेत्तं। कप्पइ उ एवमाई, एवं खेतेगा ऊ भवे ।।१८॥ पेडा 'य श्रद्धपेडा ',गोम्रति -पयंगवीहिया ' चेव। र्संबुकाव**ट्टा वयगंतु, पञ्चागया अहा ॥१**६॥ दिवसस्स पोरुसीणं,चउग्रहंपि उ जित्रश्रोःभवे कालो । एवं चरमाणो खल्ल, कालोमाणं मुगोयन्वं ॥२०॥ , अहवा तइयाए पोरिसीए, ऊणाइ-बासमेसंतो । चउमागुणाए वा, एवं कालेग्य क भवे ॥२१॥

इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वा नलंकिओ वावि। अर्क्नयरवयत्यो वा, अन्नयरेणं व वत्येणं ॥२२॥ अन्नेगां विसेसेगां, वर्णोगां भावमणुसुयंते उ। एवं चरमाणो खलु, भावोमोणं मुरोयव्वं ॥२३॥ दव्वे खेत्ते काले, भावंमि य श्राहिया उ जे भावा। एएहि श्रोमचरश्रो, पजनचरश्रो भवे भिक्खू ॥२४॥ (३) श्रहविहगोयरगं तु, तहा सत्तेव एसणा। श्रमिग्गहा यें जें श्रने, भिक्लायरियम।हियां।।२५॥ (४) खीर-दहि-सप्पिमाई, पंजीयं पार्गमीयगं। परिवंजाणं रसाणं तु, भणियं रसिववज्जां ॥२६॥ (५) ठाणा विरासणाईया, जीवस्स उ सुहावहा । ंउँगा जहा धरिज्जंति, कायकिलेसं तमाहियं ।।२७॥ (६) एगंतमणावाए, इत्थी-पसु-विविज्ञिए । सयुणासणसेवणया, विवित्तं स्य गास ग्रंः ा।२८॥ , एसी वाहिरंगतवो, समासेग वियाहिस्रो । श्रिंभितरं तवं एत्तो, बुच्छामि श्रग्णुपुच्यसो ॥२१॥ पायन्छित्तं विगास्रो , वेयावचे तहेव सज्भास्रो । भागं च विउसग्गो , एसी श्रव्भितरो तवो ॥३०॥ (१) श्रालोयणारिहाईयं, पायिन्छत्तं तु दसविहं। जे भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहियं ॥३१॥ (२) अब्धुद्वागां श्रंजलिकरगां, तहेवासगादायगां। गुरुभत्ति-भाव-सुस्सूसा, विण्यो एस वियाहिस्रो॥३२॥ (३) श्रायरियमाईए, वेयावश्रंमि दसविहे । मासेवर्ण जहाथामं, वेयावच्चं तमाहियं ।।।३३॥

(४) वायगा पुच्छगा चेव, तहेव परियद्गणा । श्रग्रुप्पेहा धम्मकहा, सक्सात्रो पंचहा भवे ॥३४॥ (५) श्रद्वं रुद्दाणि विज्ञत्ता, भाएजा सुसमाहिए। धम्म सुकाई भाणाई, भाणं तं तु बुहा वए ॥३५॥ (६) सथणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे। कायस्स विउसग्गो, बहो सो परिकित्तिश्रों ॥३६॥ एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी। सो खिप्पं सन्वसंसारा, विष्पमुच्चइ पंडिश्रो ॥३७॥ त्ति बेमि ॥ अह चरणविहि-नामं एगतीसइमं अज्भयणं चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावह । जं चरिन्तां बहू जीवा, तिएंगां संसारसाग्रं ॥ १॥ ं एगओं विरइं कुजा, एगओ य पवत्तर्ण। श्चर्संजमे नियत्तिं च, संजमे य पवत्तर्गा ॥ २॥ राग-दोसे य दो पावे, पावकम्मपवत्तरो । जे भिक्खू रूं भई निचं, से न श्रच्छह मंडले ।। ३ ॥ दंडाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं। जे भिक्खू चयइ निचं, से न ऋच्छइ मंडले ॥ ४॥ दिन्वे य जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छ-माणुसे। जे भिक्खू सहई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ४॥ विगहा-कसाय-सन्नागं, भाणागं च दुयं तहा ी

जे भिनल वजह निच्चं, से न अच्छइ" मंडलें ॥ ६॥

वएसु इंदियत्थेसु, समिईसु किरियासु य। , जे भिक्लूं जयई निच्चं, से न श्रच्छइ मंडले ॥ ७॥ लेसासु असु काएसु, छक्के आहारकारणे। जे भिक्खू जयई निच्चं, से न श्रच्छइ मंडले II = II पिंडोग्गहपिंडमासु, भयद्वाणेसु सत्तसु । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न श्रच्छइ मंडले ॥ ६॥ मदेसु बंभगुत्तीसु, भिक्खुधम्मिम दसविहे। जे भिक्खू जयई निच्चं, से न श्रच्छइ मंडले ॥१०॥ उवासगाणं पहिमासु, भिक्लूगं पहिमासु य। जे भिक्खू जयई निचं, से न अञ्बद मंडले ॥११॥ किरियासु भूयगामेसु, प्रमाहंमिएसु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न श्रच्छइ मंडले ॥१२॥ गाहासोलसएहिं, तहा श्रसंजर्मि य जे भिक्लू जयई निच्चं, से न श्रन्छइ मंडले ॥१३॥ वंभंमि नायज्यसयोसु, ठाँगोसु य ऽसमाहिए। जे भिक्खू जयई निच्चं, से न श्रच्छइ मंडले ॥१४॥ एगवीसाए सबले, बावीसाए परीसहे जे भिक्खू जयई निच्चं, से न श्रच्छइ मंडले ॥१५॥ तेवीसाइ स्यगडे, ह्वाहिएसु सुरेसु अ। जे भिक्खू जयई निच्चं, से न श्रच्छई मंडले ॥१६॥ पणवीसभावणासु, उद्देसेसु दसाइणं जे भिक्खू जयई निच्चं, से न श्रच्छइ मंडले ॥१७॥ अग्रागार्गुगोहिं च, पगर्पंमि तहेव य , जे भिक्खू : जय़ई निच्चं, से न - श्रच्छइ मंडले ॥१८॥

पावसुवपसंगेसु, मोहठाग्रेसु चेव य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१६॥ सिद्धाइगुणजोगेसु, तेत्तीसासायणासु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न श्रच्छइ मंडल ॥२०॥ इइ एएसु ठाणेसु, जे भिक्खू जयई सया। खिप्पं सो सन्वसंसारा, विष्पग्रुच्चइ पंडिश्रो ॥२१॥ त्ति बेमि ॥ अह पमायद्वाण-नामं बत्तीसइमं अज्भयणं श्र च्वं त का ल स्स समृलगस्स, सन्बरस दुक्खरस उ जो पमोक्खो। तं भासत्रो मे पडिपुएणचित्रा, सुहेगा एगंतहियं हियत्थं ॥१॥ नाग्यस्स सन्वस्स पगासगाए, अन्नागमोहस्स विवन्जणाए । रागस्स दोसस्स य संखएगां, एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥२॥ तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जगा बालजगस्स द्रा। स ज्याय ए गंत नि से वणा य, सुत्तत्थसंचितणया धिई य ॥ ३॥ त्राहारमिच्छे मियमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणत्थबुद्धि । निकेय भिच्छेज विवेग जो गगं,

समाहिकामे समग्रे तवस्सी ॥ ४॥

न वा लभेजा निउगं सहायं, गुणाहियं वा गुणत्रो समं वा । 🌃 एगो वि पावाई विवज्जयंतो, विहरेज कामेसु श्रसन्जमाणो ॥ ४ ॥ जहा य श्रंडप्पभवा बलागा, द्रांडं ब्लागपमवं जहा य । 🔀 एमेव मोहाययगां खु तएहा, मोहं च तग्हाययगं वयंति ॥ ६॥ रागो य दोसो वि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति। कम्मं च जाइमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥ ७॥ दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हुओ जस्स न होइ तएहा। तएहा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हुओ जस्स न किंचणाई ॥ ८ ॥ रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तुकामेण समूल जालं। ने ने उवाया पहिवक्षिय्व्वा, ते. कित्तइस्सामि ऋहाग्रापुविंव ॥ ६॥ रसां पगामं न निसेवियव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नरागां। दित्तं च कामा समभिद्दवंति, ''दुमं जहा साउफलं व पक्खी''।।१०॥

''जहा दवग्गी पउरिंघगो वगो, समारुत्रो नोवसमं उवेइ ।" एविदियग्गी वि पगामभोइगो, न वंभयारिस्स हियाय कस्सई ॥१:१॥ विवित्तसेन्जासण् नं ति या गं, श्रोमासणाणं दमिइंदियाणं । न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, ''पराइत्रों वाहिरिवोसहेहिं'' ॥१ २॥ ''जहा विरालावसहस्स मूले, न मूसगागां वसही पसत्था।" एमेव इत्थीनिलयस्स मज्से, न बंभयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥ न रूव--लावएण--विलास-हासं, न जंपियं इंगिय-पेहियं वा । इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समग्रे तवस्सी ॥१४॥ श्रदंसर्गं चेव श्रपत्थगां च, श्रचित्रणं चेव श्रकित्तणं च। इत्थीजग्रस्सारियन्भाणजुग्गं, हियं 'सया वंभवए रयागं '।।१५॥ कामं तु देवीहि विभूसियाहिं, न चाइया खोभइडं तिगुत्ता। तहा वि एगंतहियं ति नचा, विवित्तवासी ग्रुगिगां पसत्थो ॥१६॥

मोक्खाभिकंखिस्स उन्माखवंस्सं; ंसंसारभीहरसं ठियस्सः धम्मे । नेयारिसं ृदुत्तरमत्थि लोए, जहित्थियो बालमगोहरायो ॥१७॥ एए य संगे समइक्कमित्ता, सुदुत्तरा चेव भवंति सेसा । जहा महांसागरं मुत्तरिता, नई भवे अवि गंगासमा**णा ।।१८**॥ कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सन्वस्स लोगस्स सदेवगस्सः। जं काइयं माणसियं च किंचि, तस्संतगं गंच्छइ वीयरागो ॥१६॥ 'जहा य किंपागफला मणोरमा; रसेण वर्ग्येग य भुजमागा।' तं खुड्डए जीविए पचमागा, एश्रोवमा कासगुणा विवागे ॥२०॥ जे इंदियाएं विसया मणुना, न तेसु भावं निसिरे कयाइ। न यामणुनेसु मर्गा पि कुजा, समाहिकामे समग्रे तवस्सी ॥२१॥

) चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुकमाहु । दोसहेउं अमणुकमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥२२॥ रूवस्स चक्खुं गहर्णं वर्यति, चक्खुस्स रूवं गहर्गा वयंति। रागस्स हेउं समग्रनमाहु, दोसस्स हेउं अमणुनमाहु ॥२३॥ रूवेसु जो गिद्धिमुवेह तिन्वं, श्रकालियं पावइ से विणासं। रागाउरे से 'जह वा पयंगे', ् आलोयलोले समुवेइ मन्चूं ॥२४॥ ने यावि दोसं समुवेइ तिन्वं, तंसि क्लागे से उनेइ दुक्खं। दुईतदोसेण सएग जंतू, न किंचि रूवं अवरङ्गह से ॥२५॥ एगंतरचे रुइरंसि ह्व, श्रतालिसे से कुण्ई पत्रोसं। दुक्खस्स संपीलमुनेइ वाले, ः 🚈 ंन लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥२६॥ रुवाणुगासाणुगएं य जीवे, चराचरे हिंसइ ऽग्रेगह्रवे । चित्तेहि ते परितावेइं बाले, पीलेइ अत्तर्रगुरू किलिट्टे ॥२७॥ रूवाणुवाएण पंरिग्गहंमि, उपायगे : रक्खणसनिश्रोगे । वए विश्रोगे य कहं सुहं से, 🕆

ं संभोगकाले य अतित्तलाभे 🖑 ॥२८॥

उत्तरक्क्रयण्**सुर्त्त**

ह्रवे श्रितिचे य परिगाहंिमि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुद्धि । श्रुतुद्धिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले श्राययई श्रदत्तं ॥२८॥

तएहाभिभूयस्स अदत्तहारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे य। मायाम्रसं वड्दइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विम्रुचई से ॥३०॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थन्त्रो य, पत्रोगकाले य दुही दुरंते । एवं अदत्ताणि समाययंतो, रूवे अतित्तो दुहित्रो अणिस्सो ॥३१॥

ह्वाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सहं होज्ज कयाइ किंचि ? तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥३२॥ एमेव ह्वंमि गुत्रो पत्रोसं,

उवेइ दुक्सो ह परं परा श्रो ।
पदुट्टिचत्तो य चिणाइ कम्मं,
जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥३३॥
स्वे विरत्तो मणुश्रो विसोगो,

एएगा दुक् खो ह प रंग रेणः। न लिप्पए भवमन्भे वि संतो, जलेणः वा पोक्खरिणीपलासं ॥३४॥ (२) सोयस्स सदं गहणं वयंति,

तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।

सहस्स सोयं गहणं वयंति,

तं दोसहेउं अमणुक्रमाहु,

समो य जो तेसु स वीयरागो ॥३५॥

२२६]

सोयस्स सदं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुत्रमाहु, दोसस्स हेर्ड श्रमणुत्रमाहु ॥३६॥ सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिन्वं, श्रकालियं पावइ से विणासं। ''रागाउरे हरिणमिगे व मुद्धे, सदे अतित्ते समुवेह मच्चं" ॥३७॥ जे याचि दोसं समुवेइ तिच्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं। दुइंतदोसेगा सएण जंतू, न किंचि सद्दं श्रवरज्भई से ॥३८॥ एगंतरत्ते रुइरंसि सदे, श्रतालिसे से कुण्ई पश्रोसं । - दुक्खरस संपीलमुवेह बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥३६॥ स दा गुगा सा गुग ए य जीवे, चराचरे हिंसइ ऽखेग रूवे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तदुगुरू किलिक्टे ॥४०॥

सद्दा ग्रुवा ए ग्रापिश है ण, उप्पायग्रे रक्खग्रसित्रश्रोगे । वए विश्रोगे य कहं सुहं से १ संभोगकाले य श्रतित्रलाभे ॥४१॥

सदे श्रितिचे य परिगाहंमि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुद्धि । श्रुतुद्धिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले श्राययई श्रदत्तं ॥४२॥

तग्हाभिभ्यस्स अदत्तहारिगो,
सद्दे अतित्तस्स परिगाहे य ।

माथामुसं वड्टइ लोभदोसा,
तत्थावि दुक्खा न विम्रुक्ष से ॥४३॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थश्रो य,

पत्रोगकाले य दुही दुरंते ।
एवं श्रदत्ताणि समाययंतो,
सद्देश्रतिता दुहिश्रो श्रणिस्सो ॥४४॥

सदाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुद्दं होज कयाइ किंचि ?

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निन्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥४५॥

एमेन सद्दीम गञ्जो पत्रोसं, उनेइ दुक्लो हपरंपरा श्रो

पदुद्वित्तो य चिणाइ कम्मं, जंसे पुणो होइ दुहं विवागे ॥४६॥ सद्दे विरत्तो मणुत्रो विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेशा। न लिप्पए भवमज्मे वि संतो, जलेगा वा पोक्खरिगीपलासं ॥४७॥

(३) घाणस्स गंधं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुत्रमाहु । तं दोसहेउं अमणुनमाहु,

समो य जो तेसु स वीयरागो ॥४८॥ गंधस्स घागं गह्यां वयंति, घाणस्स गंधं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समग्रुनमाह, दोसस्स हेउं अमणुनमाहु ॥४६॥ गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिन्वं, श्रकालियं पावइ से विणासं ।

सप्पे विलाश्रो विव निक्खमंते" ॥५०॥ जे यावि दोसं सम्भवेइ तिव्वं, तंसि क्लागे से उ उनेइ दुक्लं। दुइंतदोसेस सएग जंतू, न किंचि गंधं श्रवरज्मई से ॥५१॥

"रागाउरे श्रोसहगंधगिद्धे,

श्रतालिसे से कुणई पश्चोसं । दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न खिप्पई तेगा मुग्गी विरागो ॥ ४२॥

एगंतरचे रुइरंसि गंधे,

गंधाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंस इ ऽणे ग रू वे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ श्रत्तहगुरू किलिट्टे ॥५३॥

गं था खुवाए गा परिग्ग हे गा, उप्पायमे रक्खमसिन्नोंगे।

> वए विश्रोगे य कहं सुहं से ? संभोगकाले य श्रतित्तलाभे ॥५८॥

गंधे श्रतित्ते य परिग्गहंमि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुष्टिं ।

अतुद्धिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई ऋदत्तं ॥५५॥

तएहामिभूयस्स श्रद्तहारिणो, गंधे श्रतित्तस्स परिगाहे यः।

मायाम्रसं वड्दइ लोभदोसा, तत्था वि दुक्खा न विमुचई से ॥५६॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्यत्रो य, पत्रोगकाले य दुही दुरंते ।

एवं श्रदत्ताणि समाययंती, गंधे श्रतित्ती दृहिश्रो श्रिण्सो ॥५७॥

गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कृतो सुहं होज कयाइ किंचि ?

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएगा दुक्खं।।४८॥ एमेव गंधंमि गन्नो पन्नोसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराश्रो। पदुट्टचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥५६॥ गंधे विरत्तो मणुत्रो विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेशा । न लिप्पई भवमज्मे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥६०॥ (४) जिब्भाए रसं गहर्णं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु । तं दोसहेउं श्रमणुत्रमाहु, सभी य जो तेसु स वीयरागी ॥६१॥ रसस्स जिन्मं गहणं वयंति, जिब्भाए रसं गहर्णं वयंति । रागस्त हेउं समग्रुनमाहु, दोसस्स हेउं श्रमणुत्रमाहु ॥६२॥ रसेसु जो गिद्धिसुवेइ तिन्वं, श्रकालियं पावइ से विणासं। ''रागाउरे वडिसविभिन्नकाए, मच्छे जहा श्रामिसभोगगिद्धे" ॥६३॥ ने यावि दोसं सम्रुवेह तिन्वं, तंसि क्खगो से उ उनेइ दुक्खं। दुईतदोसेगा सएगा जंतू,

न किंचि रसं अवरज्मई से ॥६४॥

ए गंतर ते रुइरंसि र से, भतालिसे से कुगाई पत्रोसं। दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो॥६५॥

रसाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ ८णेगरूवे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तहगुरू किलिट्टे ॥६६॥

र सा ग्रुवा एण पंरिग्ग हं मि, उप्पायमे रक्खणसिन्नश्रोगे । वए विश्रोगे य कहं सुहं से ? संगोगकाले य श्रतित्तलाभे ॥६७॥

रसे श्रितिचे य परिग्गहंमि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्टिं । श्रुतुद्धिदोसेण दुही परस्स, सोमाविले श्राययई श्रदत्तं ॥६८॥

तण्हाभिभूयस्स श्रदत्तहारिगो, रसे श्रतित्तस्स परिगाहे य । मायाग्रसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विग्रुचई से ॥६९॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ य, पद्मोगकाले य दुही दुरंते । एवं श्रदत्ताणि समाययंतो, रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥७०॥ रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज कयाइ किंचि ? तत्थोवभोगे वि

तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥७१॥

एमेव रसम्मि गुत्रो पत्रोसं, उवेइ दुक्खोहपरंपरात्रो ।

पदुट्टचित्तो य चिणाइ कम्मं, जंसे पुणो होइ दृहं विवागे ॥७२॥

रसे विरत्तो मणुत्रो विसोगो,
एएगा दुक्खोहपरंपरेण।
न लिप्पई भवमज्मे विसंतो,
जलेण वा पोक्खरिगीपलासं ॥७३॥

(५) कायस्स फासंगहणं वयंति, तं रागहेउं तुः मणुनमाहुं । तं दोसहेवं

तं दोसहेउं श्रमणुत्रमाहु, समोय जो तेसु स वीयरागो ॥७४॥

फासस्स कायं गहणं वयंति, कायस्स फासं गहणं वयंति।

रागस्स हेउं समगुनमाहु, दोसस्स हेउं श्रमगुनमाहु ॥७५॥

फासेसु जो गिद्धिमुवेइ तिन्वं, अकालियं पावइ से विणासं। 'रा गा उरे सी य ज ला व स ने,

गाहग्गहीए महीसे विवन्ने' ॥७६॥

जे यावि दोसं सम्रवेइ तिन्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं। दुइंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि फासं श्रवरज्मई से ॥७७॥

ए गंतर ते रुइरंसि फासे,
अतालिसे से कुणई पश्चोसं ।

दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले,
न लिप्पई तेगा मुगा विरागो ॥७८॥
फासाणुगासाणुगए य जीवे,

चराचरे हिंस इ ऽणे ग रू वे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तद्वगुरू किलिट्टे ॥७८॥

फा सा खु वा ए ग प रिग्ग हे ग, उप्पायमे रक्खमसित्रश्रोगे । वए विश्रोगे य कहं सुहं से १ संगोगकाले य श्रतित्तलाभे ॥ ⊏०॥

फासे श्रतित्ते य परिगाहंमि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुद्धिं । श्रतुद्धिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले श्राययई श्रदत्तं ॥८१॥ तरहाभिभूयस्स श्रदत्तहारिणो,

फासे अतित्तस्स परिगाहे य । मायाम्रसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्था वि दुक्खा न विम्रुचई से ॥≈२॥ मोसस्स पच्छा य पुरत्यश्रो य, पश्रोगकाले य दृही दुरंते । एवं श्रदत्ताणि समाययंतो, फासे श्रतित्तो दृहिश्रो श्रिणस्सो ॥=३॥

फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज कयाइ किंचि ? तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कएण दुक्खं।।⊏४॥

एमेव फासंमि गञ्चो पत्रोसं, उवेइ दुक्खो ह परं परा श्रो । पदुट्टचित्तो य चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ८५॥ फासे विरत्तो मसुश्रो विसोगो,

एएण दुक् खो ह परंपरे गा । न लिप्पई भवमज्मे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिणीपलासं ॥८६॥

(६) मणस्स भावं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुत्रमाहु । तं दोसहेउं श्रमणुत्रमाहु, समो य जो तेसु स वीयरागो ॥=७॥ भावस्स मणं गहणं वयंति,

मणस्स भावं गहणं वयंति । रागस्स हेउं समणुनमाहु, दोसस्स हेउं अमणुनमाहु ॥==॥ भावेसु जो गिद्धिसुवेंइ तिय्वं, त्रकालियं पावइ से [:] विणासं । ''रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेग्रुमग्गावहिए गजे वा" ॥८६॥ ने यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं। ंदुइंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि भावं श्रवरज्मई से ॥६०॥ एगंतरते रुइरंसि भावे, श्रतालिसे से कुण्ई पश्रोसं। दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ६१॥ भावाणुगासाणुगए य जीवे, चराचरे हिंसइ ऽशेगरूवे । चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तद्वगुरू किलिट्टे ॥६२॥ भा वा खुवा एण परिगा हेण, उप्पायगे रक्खणसनिश्रोगे । वए विश्रोगे य कहं सुहं से ? संगोगकाले य अतित्तलाभे ॥६३॥ भावे श्रतित्ते य परिग्गहंमि, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुर्हि ।

अतुडिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥६४॥ तग्हाभिभूयस्स , अदत्तहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे य ।

तत्थावि दुक्खा न विम्रुचई से ॥ ६५॥

मोसस्स पच्छा य पुरत्थन्त्रो य,

पश्चोगकाले य दुही दुरंते । एवं श्रदत्ताणि समाययंतो,

् 🤾 😁 भावे त्रतित्तो दृहित्रो त्रशिस्सो ॥६६॥

भावागुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज कयाइ किंचि ?

्र तत्थोवभोगे वि किलेसदुक्खं, अपूर्व विकास निव्यत्तई जस्स कएण दुक्खं ॥६७॥

एमेव भावंमि गुत्रो पत्रोसं, उवेइ दुक्खोहपरंपरात्रो ।

पहुद्धचित्तो य चिणाइ कम्मं, जंसे पुणो होइ दुहं विवागे ॥६८॥

भावे विरत्तो मणुत्रो विसोगो, एएगा दुक्लो हपरंपरेण।

न लिप्पई भवमज्मे वि संतो, जलेण वा पोक्खरिगीपलासं ॥६८॥

एविदियत्था य मणस्स ग्रत्था, दुनखस्स हेउं मणुयस्स रागिणो। ते चेव थोवं पि कयाइ दुनखं, न वीयरागस्स करेंति किंचि॥१००॥

न काममोगा समयं उवेंति, न यावि भोगा विगईं उवेंति। जे तप्पश्रोसी य परिग्गही य, सो तेसु मोहा विगईं उवेइ॥१०१॥

सा तसु माहा विगइ उपह ॥१०९॥
कोहं च माणं च तहेव मायं,
लोहं दुगुंच्छं श्ररइं रइं च।
हासं भयं सोगपुमित्थिवेयं,
नपुंसवेयं विविहे य भावे ॥१०२॥
श्राव ज ई एव म णे ग रू वे,
एवंविहे कामगुणेसु सत्तो ।
श्रक्ते य एयप्पभवे विसेसे,
कारुएणदीणे हिरिमे वहस्से ॥१०३॥

कर्णं न इच्छिज सहायलिच्छू,
पच्छाग्रुतावे न तवप्पभावं।
एवं वियारे श्रमियप्पयारे,
श्रावज्ञइ इंदिथचोरवस्से ॥१०४॥
तश्रो से जायंति पश्रोयणाई,
निमजिउं मोहमहएग्यवंमि ।
सुहेसिणो दुक्खविग्णोयग्रहा,
तप्पचयं उज्जमए य रागी ॥१०५॥
विरज्जमाणस्स य इंदियत्था,

सद्दाइया तावइयप्पगारा । न तस्स सन्वे वि मणुन्नयं वा, निन्वत्तयंती श्रमणुन्नयं वा ॥१०६॥

एवं स संक प्प-विक प्प गा सुं, संजायई समयग्जबद्वियस्स । श्रत्थे य संकप्पयत्रो तत्रो से, पहीयए कामगुणेसु तपहा ॥१००॥ स वीयरागो कयसव्विकचो, खवेइ नाणावरणं खणेणं । तहेव जं दंसग्रमावरेइ, .जं चंतरायं पकरेइ कम्मं ॥१०८॥ सच्वं तत्रो जाणइ पासए य, श्रमोहरो होइ निरंतराए । त्रगासवे भाण-समाहिजुत्ते, श्राउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥१०६॥ सो तस्स सन्वस्स दुहस्स मुक्तो, जं वाहई सययं जंतुमेयं। दीहामयं विष्यमुक्को पसत्थो, तो होइ अनंतसुही कयत्थो ॥११०॥ त्रगाइकालपभवस्स एसो, सन्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गे। वियाहियं जे सम्रुविचसत्ता, कमेगा श्रच्चंतसुही भवंति ॥१११॥ ॥ त्ति बेमि ॥

अह कम्मपयडि—नामं तेत्तीसइमं अज्मयणं

श्रद्ध-कम्माई वोच्छामि, श्राणुपुन्नि जहकमं। जेहिं बद्धो श्रयं जीवो, संसारे परिवर्ड्ड ॥१॥ मूलप्रकृतयः—

नाणस्सावरणिडर्जं, दंसणावरणंं तहा । वेयणिड्जंं तहा मोहं^ह, श्राडकम्मं तहेव य ॥ २ ॥ नामकम्मं^ह च गोयंं च, श्रंतरायं तहेव य । एवमेयाइं कम्माइं, श्रहेव उ समासश्रो ॥ ३ ॥

उत्तरप्रकृतयः—

- (१) नाणावरणं पंचिवहं, सुयं आभिणिबोहियं । श्रोहिनाणं च तह्यं, मणनाणं च केवलं ॥ ४॥
- (२) निद्दा तहेव पयला , निद्दानिद्दा पयलपयला य। तत्तो य थीणगिद्धी उ, पंचमा होइ नायव्वा ॥ ४॥ चक्खु मचक्ख् श्रोहिस्स , दंसणे केवले य श्रावरणे। एवं तु नवविगण्पं, नायव्वं दंसणावरणं ॥ ६॥
- (३) वेयग्रीयंपि य दुविहं, साय मसायं च श्राहियं। सायस्स उ बहू भेया, एमेव श्रसायस्स वि ॥ ७॥
- (४) मोहणिन्जंपि दुविहं, दंसणे चरणे तहा। दंसणे तिविहं वृत्तं, चरणे दुविहं भवे॥ ८॥ सम्मत्तं चेव मिन्छत्तं, सम्मामिन्छत्तमेव य। एयात्रो तिन्न पयडीश्रो, मोहणिजस्स दंसणे॥ १॥ चरित्तमोहणं कम्मं, दुविहं तु वियाहियं। कसायमोहणिन्जं तु, नोकसायं तहेव य ॥१०॥

गंठियसत्ताईयं, श्रंतो सिद्धाण श्राहियं ।।१७॥

ं सन्वेसु वि पएसेसु, सन्वं सन्वेगा बद्धगं ।।१८।।

उकोसिया ठिई होइ, श्रंतोग्रहुत्तं जहन्निया ॥१६॥

श्रंतराए य कंमंमि, ठिई एसा वियाहिया ॥२०॥

मोहणिज्ञस्स उकोसा, श्रंतोग्रहुत्तं जहनिया ॥२१॥

ठिई उ त्राउकम्मस्स, त्रांतोग्रहुत्तं जहनिया ॥२२॥

उदहीसरिसनामाणं, तीसई कोडिकोडिय्रो ।

त्रावरंणिजाण दुग्हंपि, वेयणिज्जे तहेव य।

उदहीसरिसनामार्खा, सत्तरिं कोडिकोडिश्रो।

तेत्तीस सागरोवमा, उक्कोसेण वियाहिया।

सन्वजीवाण कम्मं तु, संगहे छिद्सागर्य।

कर्मणां जघन्योत्कृष्टा च स्थिति:-

"अं०

उदहीसरिसनामार्खं, त्रीसई कोडिकोडिक्रो । नामगोत्तार्खं उद्यक्षीसा, श्रद्वग्रहुत्ता जहन्त्रिया ॥२३॥ कर्मणामनुभागप्रदेशी—

सिद्धाणग्रंतभागो य, अग्रुभागा हवंति छ।
सन्वेसु वि पएसग्गं, सन्वजीवेसु इन्छियं ॥२४॥
तम्हा एएसि कम्माग्रं, अग्रुभागा वियाणिया।
एएसि संबरे चेव, खवग्रे य जए बहो ॥२५॥
ति वेमि ॥

श्रह लेसज्भ्रयण-नामं चोत्तीसइमं अज्भयणं

लेसज्भवगां पवक्खामि, श्राणुपुर्विव जहक्कमं । अपहंपि कम्मलेसागां, श्रणुभावे सुगेह मे ॥ १॥ नामाइं वगग्-रस-गंध,फासपरिणामलक्खणां । ठागां ठिइं गइं चाउं, लेसागां तु सुगेह मे ॥ २॥ लेश्यानां नामानि—

तिर्वा नामान— किर्वहा नीला य काऊ य,तेऊ पम्हा तहेव य। सुक्कलेसा य छहा य, नामाइं तु जहकमं ॥ ३॥ लेश्याना वर्णाः—

- (१) जीमूयनिद्धसंकासा, गवलरिद्धगसिमा। **खं**जंजग्रनयग्रनिमा, किग्हलेसा उ वरुगश्रो॥ ४॥
 - (२) नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पभा । वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वरण्यो ॥ ५ ॥
 - (३) श्रयसीपुष्फसंकासा, कोइलच्छदसिकमा। पारेवयगीवनिमा, काऊलेसा उ वरणश्रो ॥६॥

```
(ध) वरवारुगीए वरसो,
   विविहाण व श्रासवाण जारिसञ्जो।
               म हुमेर यस्स व
                                     रसो.
               एत्तो पम्हाए परएग्
                                         118811
   (६) ख ज्जू र-मु हि य र सो,
   खीररसो खंड-सकररसो वा ।
               एत्ती
                         वि श्रगंतगुणो,
              रसो उ सुकाए नायव्वो ॥१४॥
 लेश्यानां गन्धाः---
          गो म ड स्स गंघो,
  सुणगमडस्स व 'जहा ऋहिमडस्स'।
              एत्तो
                       वि अणंतगुणो,
              लेसार्गं
                         अप्पसत्थागां
                                        118811
  जह सुरहिकुसुमगंघो, गंधवासाण पिस्समाणाणं।
  एत्तो विष्ट्रागंतगुणो, पसत्थलेसाणं तिएहं पि ॥१७॥
लेश्यानां स्पर्शाः---
  जह करगयस्स फासो,गोजिब्भाए य सागपत्तार्गं।
  एत्तो वि श्रग्तंतगुणो, लेसाग् अप्यसत्थाग् ॥१८॥
         बुरस्स व फासो,
  जह
  नवणीयस्स व सिरीसक्कसुमार्ग ।
             एत्तो वि
                              त्रगंतगुणो,
             पसत्यलेसाण तिएहं पि
                                       113811
लेश्यानां परिखामाः--
 तिविहो व नवविहो वा,सत्तावीसइविहेकसीओ वा।
 दुसत्रो तेयालो वा, लेसाणं होइ परिणामी ॥२०॥
```

लेश्यानां लच्चगानि-

(१) पंचासवप्यवत्तो, तीहिं श्रगुत्तो छसुं श्रविरश्रो य।

तिन्वारंभपरिणत्रो, खुदो साहसिन्रो नरो ॥२१॥

निद्धंधसपरिणामो, निस्संसो श्रजिइंदिश्रो ।

एयजोगसमाउत्तो, किरहलेसं तु परिणमे ॥२२॥

(२) इस्सा अस रिस अत बो,

श्रविज्ञमाया श्रहीरिया 🖟

गिद्धी पत्रोसे य सहे पमत्ते,

रसलोलुए साय गवेसए य ॥२३॥ श्रारंभाश्रो अविरश्रो, खुद्दो साहस्सिश्रो नरो।

एयजोगसमाउत्तो, नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥ (३) वंके वंकसमायारे, नियङ्क्लि श्रग्रुच्जुए। पलिउंचगत्रोवहिए, मिच्छिदिही त्रणारिए ॥२५॥

उप्फालगदुंडवाई य, तेगो त्रावि य मच्छरी। एयजोगसमाउत्तो, काऊलेसं तु परिणमे ॥२६॥

(४) नीयावित्ती अचवले, अमाई अकुऊहले। विणीयविणए दंते, जोगवं उवहाणवं ॥२७॥ पियधम्मे दढधम्मेऽवज्जमीरू हिएसए ।

एयजोगसमाउत्तो, तेउलेसं तु परिणमे ॥२८॥ (५) पयखुकोहमाणे य, माथालोभे य पयखुए।

पसंतिचत्ते दंतप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥२६॥ तहा पयखुवाई य, उवसंते जिइंदिए । एयजोगसमाउत्तो, पम्हलेसं तु परिणमे ॥३०॥

(६) अद्वरुदाणि विजित्ता, धम्मसुकाशि भायए। पसंतचित्ते दंतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तीसु ॥३१॥ सरागे वीयरागे वा, उवसंते जिइंदिए। एयजोगसमाउत्तो, सुकलेसं तु परिणमे ॥३२॥

लेश्यानां स्थानानि--

त्रसंखिजागोसिपगीग,उस्सप्पणीण जे समया। संखाईया लोगा, लेसाण हवंति ठाणाइं ॥३३॥ लेश्यानां स्थिति:--

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसा सागरा मुहुत्तहिया। उकोसा होइ ठिई, नायव्वा किरहलेसाए ॥३४॥ मुहुत्तद्धं तु जहना,

दस उदही पिलयमसंखभागमन्भहिया । उकोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥३५॥ मुहुत्तद्धं तु जहना,

तिराणुदही पलियमसंखभागमन्महिया । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥३६॥ मुहुत्तद्धं तु जहना,

दोरखुदही पलियमसंखभागव्महिया। उक्कोसा होइ ठिई, नायन्वा तेउलेसाए ॥३७॥ मुहुत्तद्धं तु जहना,

दस होंति य सागरा ग्रहुत्तहिया। उक्तोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥

मुहुत्तद्धं तु जहना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिया। उकोसा होइ ठिई, नायच्वा सुक्कलेसाए ॥३६॥ एसा खलु लेसागं, ऋोहेण ठिई उ विराणया होइ। चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिईं उ वोच्छामि ॥४०॥ दस वाससहस्साइं, काउए ठिई जहन्निया होइ। तिष्णुदही पलिय्रोवम, स्रसंखभागं च उक्तोसा ॥४१॥

२४६]

तिएणुदही पलिश्रोवम,मसंखभागो जहन्रेण नीलिठिई। द्स उदही पलिश्रोवम, मसंखमागं च उक्कोसा ॥४२॥ दसउदही पलिश्रोवम,मसंखभागं जहन्निया होइ। तेत्तीससागराइं उक्कोसा, होइ किएहाए लेसाए ॥४३॥ एसा नेरइयाणं, लेसाण ठिई उ विष्णया होइ। तेण परं वोच्छामि, तिरियमणुस्साण देवाणं ॥४४॥ श्रंतोग्रहुत्तमद्धं, लेसाणं ठिई जिहं जिहं जाउ। तिरियाण नरागां वा, विज्ञत्ता केवलं लेसं ॥४५॥ मुहुत्तद्धं तु जहना, उक्तोसा होइ पुन्वकोडीश्रो । नवहि वरिसेहि ऊगा, नायव्वा सुक्रलेसाए ॥४६॥ एसा तिरियनराणं, लेसाण ठिई उ विराणया होइ। तेगा परं वोच्छामि, लेसागा ठिई उ देवागां ॥४७॥ दस वाससहस्साइं, किएहाए ठिई जहन्निया होइ। पिलयमसंखिजइमो, उक्तोसो होइ किएहाए ॥४८॥ जा किएहाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्महिया। जहन्नेगं नीलाए, पलियमसंखे च उक्कोसा ॥४६॥ जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया। जहनेगां काऊए, पलियमसंखं च उक्कोसा ॥५०॥ तेगा परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणागां। मवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणियागां च ॥५१॥ पलियोवमं जहना, उक्तोसा सागरा उ दुन्नहिया। पलियमसंखेज्जेर्ण, होइ भागेण तेऊए ।।।५२॥

दसवाससहस्साइं, तेऊए ठिई जहिन्या होइ।
दुन्तुदही पिल्ञिवम, श्रसंखभागं च उक्कोसा ।।५३।।
जा तेऊए ठिई खल्ज, उक्कोसा सा उसमयमन्मिहया।
जहन्नेणं पम्हाए, दस उम्रहुत्ताहियाइ उक्कोसा ।।५४॥
जा पम्हाए ठिई खल्ज, उक्कोसा सा उसमयमन्मिहिया।
जहन्नेणं सुक्काए, तेत्तीसम्रहुत्तमन्मिहिया।।५५॥
तिस्भिरधर्मलेश्यामिदुं गीतिः—

किएहा नीला काऊ, तिनि वि एया ह्यो ह्यहम्मलेसा ह्यो। एयाहिं तिहि वि जीवो, दुग्गईं उनवज्जह ॥५६॥ तिस्रिभः धर्मलेश्याभिः सुगतिः—

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एयात्रो धम्मलेसात्रो।
एयाहि तिहि वि जीवो, सुगाई उववज्जह ॥५०॥
लेसाहिं सन्वाहिं, पढमे समयंमि परिण्याहिं तु।
न हु कस्सइ उववात्रो, परे सवे श्रत्थि जीवस्स ॥५८॥
लेसाहिं सन्वाहिं, चिरमे समयंमि परिण्याहिं तु।
न हु कस्सइ उववात्रो, परे भवे होइ जीवस्स ॥५६॥
श्रंतम्रहुत्तंमि गए, श्रंतम्रहुत्तंमि सेसए चेव।
लेसाहि परिण्याहिं, जीवा गच्छंति परलोयं॥६०॥
तम्हा एयासि लेसाणं, अग्रुभावं वियाणिया।
श्रप्पसत्थात्रो विज्ञा,पसत्थात्रो ऽहिट्टिए मुणी ॥६१॥

6000

श्रह अणगारिज-नामं पंचतीसइमं अज्मयणं

सुगोह मे एगग्गमणा, मग्गं बुद्धेहि देसियं। जमायरंतो भिक्खू, दुक्खागांतकरे भने ॥१॥ गिहवासं परिचज, पवजामस्सिए मुणी । इमे संगे वियाणिज, जेहिं सन्जंति माणवा ॥ २ ॥ तहेव हिसं श्रीलयं , चोन्जं श्रवंभसेवर्गं । ं इच्छाकामं च लोभं च, संजन्नो परिवजए ॥ ३॥ मगोहरं चित्तघरं, मल्लध्वेण वासियं । सकवाडं पंडुरुद्वोयं, मग्रसावि न पत्थए ॥ ४॥ इंदियाणि उ भिक्खुस्स, तारिसंमि उवस्सए। दुक्कराईं निवारेलं, कामरागविवड्ढणे ॥ ४॥ सुसागो सुन्नगारे वा, रुक्खमूले व इक्केन्रो। पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोयएं ॥६॥ फासुयंमि श्रणाबाहे, इत्थीहि श्रणिसद्दुए। तत्थ संकप्पए वासं, भिक्खू परमसंजए ॥७॥ न सर्यं गिहाइं कुन्विजा, खेव अन्नेहिं कारए। गिहकम्मसमारंभे, भूयार्गं दिस्सए वहो ॥ = ॥ तसागां थावरागां च, सुहुमागां बादराण य। -तम्हा गिहसमारंभे, संजन्त्रो परिवज्जए॥ ६॥ तहेव भत्तपागोसु, पयगो पयावगोसु य । पाण-भूय-दयहाए, न पए न पर्यावए ॥१०॥

जल-धन्न-निस्सिया जीवा, पुढवी-कट्ट-निस्सिया।

हम्मंति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥११॥

विसप्पे सन्बन्नो धारे, बहुपाणि-विणासगो। नित्थ जोइसमे सत्थे, तम्हा जोई न दीवए ॥१२॥ हिरएगां जायह्रवं च, मणसा वि न पत्थए। समलेट्डुकंचणे भिक्खु, विरए कयविक्कए ॥१३॥ किर्णतो कड्यो होइ, विकिक्णतो य वाणियो। कय-विक्कयंमि वहुंतो, भिक्खु न भवइ तारिसो ॥१४॥ मिक्खियव्वं न केयव्वं, भिक्खुणा भिक्खवित्तिगा। कय-विक्कञ्रो महादोसी, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥ सम्याणं उंछमेसिजा, जहासुत्तमणिदियं । लामालाभंमि संतुद्धे, पिंडवायं चरे ग्रुणी ॥१६॥ श्रलोले न रसे गिद्धे, जिन्मादंते श्रमुच्छिए। न रसद्वाए भुंजिजा, जनगद्वाए महाम्रुणी ।।१७॥ श्रच्यां रयगां चेव, वंदगां प्यगां तहा। इड्ढी-सक्कार-सम्माणं, मणसा वि न पत्थए ॥१८॥ सुक्कन्मार्गं भियाएजा, श्रिणयाणे श्रिकंचणे। वोसद्वकाए विहरेजा, जाव कालस्स पजत्रो ॥१६॥ निज्ज्हिरुण श्राहारं, कालधम्मे उवद्विए। जहिऊरण माणुसं वोंदिं, पह् दुक्खा विम्रुक्षई ॥२०॥ निम्ममे निरहंकारे, वीयरागी अगासवी । संपत्तो केवलं नागं, सासयं परिणिच्छुए ॥२१॥ त्ति वेमि ॥ श्रह जीवाजीवविभत्ति—नामं छत्तीसइमं अज्भयणं

जीवाजीवविभत्ति मे, सुगोहेगमणा इत्रो । जं जाणिऊण भिक्खू , सम्मे जयइ संजमे ॥१॥ लोकालोक-स्वरूपम्-जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए। अजीवदेसमागासे, अलोगे से वियाहिए ॥ २ ॥ द्रव्यादिभिर्जीवाजीवयोः प्ररूपगा— ं दन्वश्रो खेत्तश्रो चेव,कालश्रो भावश्रो तहा। परूवणा तेसिं भवे, जीवाणमजीवाण य ॥ ३॥ श्रजीवसेदाः-(१) रूविणो चेव रूवी य, अजीवा दुविहा भवे। श्रह्मवी दसहा बुत्ता, रुविगो य चडन्विहा ॥ ४॥ धम्मत्थिकाए तहेसे, तप्पएसे य त्राहिए। श्रहम्भे तस्स देसे य, तप्पएसे य श्राहिए ॥ ५ ॥ श्रागासे " तस्स देसे " य, तप्पएसे " य श्राहिए। ग्रद्धासमए^{१°} चेव, ग्रह्मवी दसहा भवे ॥ ६॥ (२) धम्माधम्मे य दो चेव, लोगमित्ता वियाहिया। लोगालोगे य त्रागासे, समए समयखेत्तिए॥७॥ (३) धम्माधम्मागासा, तिनिवि एए अणाइया । श्रपजनिसया चेन, सन्वद्धं तु नियाहिए।। ⊏।। समएवि संतई पप्प, एवमेव वियाहिया। ं श्राएसं पष्प साईए, सपजनसिएवि य ॥ ६॥ (१) खंघां य खंधदेसा य,तप्पएसा तहेव य । परमाग्रुणो य बोधन्वा, रूविणो य चडन्विहा ॥१०॥ (२) एगत्तेण पुहत्तेगां, खंधा य परमाणु य । लोएगदेसे लोए य, भहयव्वा ते उ खेत्रश्रो ॥११॥

सुहुमा सन्वलोगंमि लोगदेसे य वायरा। (३) इत्तो कालविभागं तु, तेसिं बुच्छं चउव्विहं ॥१२॥ संतइं पप्प तेऽणाई, ऋप्पञ्जवसिया विय। ठिई पडुच साईया, सपजविसया^२ वि य ॥१३॥ **असंखकालमुकोसं**, एको समग्रो जहन्तयं । श्रजीवाण य रूवीण, ठिई एसा वियाहिया ॥१४॥ श्रग्तंतकालग्रुकोसं^{*}, एको समग्रो जहन्यं। श्रजीवाण य रूवीण, श्रंतरेयं विचाहियं ॥१५॥ (४) वरण्यो गंधयो चेव, रसयो फासयो तहा। संठाणओं य विनेजो, परिणामी तेसि पंचहा ॥१६॥ (१) वरागात्रो परिगाया जे उ, पंचहा ते पिकत्तिया। किएहा नीला य लोहिया ,हिलहा सुिकला तहा ॥१७॥ (२) गंधत्रो परिगाया जे उ, दुविहा ते वियाहिया । सुब्भिगंधपरिणामा⁹, दुब्भिगंधा² तहेव य ॥१८॥ (३) रसत्रो परिणया जे उ, पंचहा ते पिकत्तिया। तित्तं-कड्यं-कसायां, श्रंबिलां महुरां तहा ॥१६॥ (४) फासत्रो परिणया ने उ, त्रहहा ते पिकत्तिया। कक्खडा मउत्रा चेव, गरुया लहुआ तहा ॥२०॥ सीया ' उएहा ध निद्धा ' य, तहा लुक्खा य श्राहिया। इय फासपरिणया एए, पुग्गला समुदाहिया ॥२१॥ (५) संठाणत्रो परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिया। परिमंडला य वडा य, तंसा चडरं समायया ॥२२॥ वएएस्रो जे भवे किएहे, भइए से उ गंधस्रो। रसन्त्रो फासन्त्रो चेव, भइए संठागान्त्रोवि य ॥२३॥

वर्णको जे भवे नीले, भइए से उगंधको ।

रसको फासको चेव, भइए संठाणको वि य ॥२४॥
वर्णको लोहिए जे उ, भइए से उगंधको ।

रसको फासको चेव, भइए संठाणको वि य ॥२४॥
वर्णको पीयए जे उ, भइए से उगंधको ।

रसको फासको चेव, भइए संठाणको वि य ॥२६॥
वर्णको पीयए जे उ, भइए से उगंधको ।

रसको फासको चेव, भइए संठाणको वि य ॥२६॥
वर्णको सुविकले जे उ, भइए से उगंधको ।

रसको फासको चेव, भइए संठाणको वि य ॥२७॥
गंधको जे भवे सुब्सी, भइए से उवरणको ।

रसत्रो फासत्रो चेव, भइए संठागात्रो वि य ।।२८।।
गंधत्रो जे भवे दुब्भी, भइए से उ वगगात्रो ।
रसत्रो फासत्रो चेव, भइए संठागात्रो वि य ।।२६॥
रसत्रो तित्रए जे उ, भइए से उ वगगात्रो ।
गंधत्रो फासत्रो चेव, भइए संठागात्रो वि य ।।३०॥
रसत्रो कडुए जे उ, भइए से उ वगगात्रो ।
गंधत्रो फासत्रो चेव, भइए संठागात्रो वि य ।।३१॥
गंधत्रो फासत्रो चेव, भइए संठागात्रो वि य ।।३१॥

रसत्रो कडुए जे उ, भइए से उ वर्गात्रो।
गंधत्रो फासत्रो चेव, भइए संठाग्रात्रो वि य ॥३१॥
रसत्रो कसाए जे उ, भइए से उ वर्गात्रो।
गंधत्रो फासत्रो चेव, भइए संठाग्रात्रो वि य ॥३२॥
रसत्रो ग्रंबले जे उ, भइए से उ वर्गात्रो।
गंधत्रो फासत्रो चेव, भइए संठाग्रात्रो वि य ॥३३॥
गंधत्रो फासत्रो चेव, भइए संठाग्रात्रो वि य ॥३३॥
रसत्रो महुरए जे उ, भइए से उ वर्गात्रो।
गंधत्रो फासत्रो चेव, भइए संठाग्रात्रो वि य ॥३४॥
फासत्रो फक्खडे जे उ, भइए से उ वर्गात्रो।
पासत्रो फक्खडे जे उ, भइए से उ वर्गात्रो।
गंधत्रो सक्खडे जे उ, भइए से उ वर्गात्रो।

फासस्रो मउए जे उ, भइए से उ वर्गास्रो। गंधत्रो रसत्रो चेव, भइए संठागत्रो वि य ॥३६॥ फासस्रो गुरूए जे उ, भइए से उ वएगास्रो। गंधत्रो रसत्रो चेव, भइए संठागात्रो वि य ॥२७॥ फासत्रो लहुए जे उ, भइए से उ वरणात्रो। गंघत्रो रसत्रो चेव, भइए संठागुत्रो वि य ।।३८॥ फासएं सीयए जे उ, भइए से उ नएए श्रो। गंघन्रो रसन्त्रो चेव, भइए संठागान्त्रो वि य ।।३६॥ फासस्रो उएहए जे उ, भइए से उ वराण्यो । गंधत्रो रसत्रो चेव, भइए संठागुत्रो वि य ॥४०॥ फासत्रो निद्धए जे उ, भइए से उ वरणत्रो। गंधञ्जो रसञ्जो चेद, भइए संठागाञ्जो वि य ॥४१॥ फासस्रो लुक्खए जे उ, भइए से उ वर्गास्रो। गंधन्त्रो रसन्त्रो चेव, भइए सठागान्त्रो वि य ॥४२॥ परिमंडलसंठागो, भइए से उ वगगान्त्रो । गंधन्त्रो रसन्त्रो चेव, भइए फासन्त्रो वि य ॥४३॥ संठाणात्रो भवे वहे, भइए से उ वएएात्रो । गंघत्रो रसत्रो चेव, भइए फासत्रो वि य ॥४४॥ संठाणत्रो भने तंसे, भइए से उ वगगात्रो । गंघञ्चो रसञ्चो चेव, भइए फासञ्चो वि य ॥४५॥ संठागात्रो व चउरंसे, मइए से उ वग्गात्रो। गंधज्ञो रसज्जो चेव, भइए फासज्जो वि य ॥४६॥ जे आययसंठागी, भइए से उ वरणाश्री । गंधत्रो रसत्रो चेव, भइए फासत्रो वि य ॥४७॥

एसा श्रजीवविभत्ती, समासेण वियाहिया । जीवभेदाः---

इत्तो जीवविभत्तिं, बुच्छामि श्रगुपुच्वसो ॥४८॥ संसारत्था य सिद्धा य, दुनिहा जीवा वियाहिया।

सिद्धानां वर्णानम्--

(१) सिद्धा गोगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयत्रो सुण ॥४६॥ इत्थीपुरिससिद्धा य तहेव य नपुंसंगा । सलिंगे अन्नलिंगे य, गिहिलिंगे तहेव य।।५०॥ उक्कोसोगाहणाए थ, जहन्ममिन्समाइ य। उड्ढं ऋहे य तिरियं च, समुदंमि जलंमि य ॥५१॥ दस य नपुंसएसु, बीसं इत्थियासु य। पुरिसेसु य श्रद्धसर्यं, समएगोगेण सिज्मइ ॥५२॥ चत्तारि य गिहलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य। सलिंगेण श्रद्धसयं, समएगोगेग सिज्भइ ॥५३॥

उक्कोसोगाहणाए य, सिज्संते जुगवं, दुवे। चत्तारि जहन्नाए, मज्भे अट्ठुत्तरं सयं ॥५४॥ चउरुड्ढलोए य दुवे समुद्दे,

तस्रो जले वीसमहे तहेव य। सयं च श्रद्ठुत्तरं तिरियलोए, समएगोगेग सिन्भइ धुवं ॥५५॥

कहिं पिंडहया सिद्धा ? किंह सिद्धा पइड्डिया ? कहिं वोंदिं, चइत्तागां ? कत्थ गंतूण सिज्भई ? ॥५६॥

श्रलोए पिंडहया सिद्धा, लोयग्गे य पइंडिया। ् इहं वोंदिं चइत्ताणं, तत्थ गंतूण सिन्मइ ॥५७॥

सिद्धशिलायावर्णं नम्-

(२) वारसिं जोयणेहिं, सन्बद्धस्सुविहं भवे। ईसिपन्भारनामा उ, पुढवी छत्तसंठिया।।५८।। पण्यालसयसहस्सा, जोयणाणं तु आयया। तावइयं चेव वित्थिएणा, तिगुणो साहिय परिरश्रो।।५६।। श्रद्धजोयणवाहल्ला, सा मन्संमि वियाहिया। परिहायंती चरिमंते, मन्छिपत्ताउ तणुययरी।।६०।। श्र च जु ण सु व ए ण ग म ई, सा पुढवी निम्मला सहावेण।

उत्तास्यान्यः। उत्तास्यान्छत्तगसंठिया य.

उपाणगण्डापाताठ्या पः भिषाया जिषावरेहिं ॥६१॥

संसंककुंदसंकासा, पंडुरा निम्मला सुहा।

सीयाए जोयणे तत्तो, लोयंतो उ वियाहिश्रो ॥६२॥ सिद्धानामवस्थिति-च्रेत्रम्—

> जोयणस्स उ जो तत्थ, कोसो उविस्मो भवे। तस्स कोसस्स छन्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे।।६३॥ तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगग्गंमि पइहिया। भवपवंचय्रो मुका, सिद्धि वरगईं गया।।६४॥

सिद्धानामवगाहना---

उस्सेहो जस्स जो होह, भवंमि चरिमंमि उ । तिभागहीणो तत्तो य, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६५॥

(३) एगत्तेण साईया, अपजनसियानि य । पुहत्तेण अणाइया, अपजनसियानि य ॥६६॥ (४) अरूनिणो जीन्षणा, नाणदंसणसिया। अउलं सुहं संपत्ता, उनमा जस्स नित्य उ ॥६७॥

लोगेगदेसे ते सन्वे, नागादंसगासनिया । संसारपारनित्थिएणा, सिद्धि वरगई गया ॥६८॥

संसारिणां जीवानां वर्णनम्— संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते वियाहिया। तसा' य थावरा चेव, थावरा तिविहा तहिं ॥६६॥ (१) पुढवी श्राउजीवा य, तहेव य वणस्सई । इचेए थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुर्गेह मे ॥७०॥ दुविहा उ पुढवीजीवा, सुहुमा वायरा तहा । पज्रत्र'मपज्रत्तां, एवमेए दुहा पुणो ॥७१॥ बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया। सगहा ' खरा ' य बोधन्या, सगहा सत्तविहा तहिं ॥७२॥ किएहा नीला य रुहिरा य, हालिहा सुकिला तहा। पंडु -पग्ग महिया, खरा छत्तीसई विहा ॥७३॥ पुढवी य सकरा बालुया य, उवले सिला य लोगू से ।

, अय⁶—तंब तडय ° —सीसंग ', रुप्प - सुवर्षो अय वहरे य ॥७४॥ ह रिया ले इंगुल ए इं,

मणोसिला' सास''गंजण''-पवाले । अब्भप **ड ल^{२९} ब्म वा** लु य^{२२},

मणिविहागो वायरकाए गोमेजए उ रयगे ३४, श्रं के ४५ विहे य लोहियक्बे य ३६। मरगय-मसारगल्ले अयमोयग -इंद्रनीले य ॥७६॥

चंदण गेरुय हंसगडमें ", पुलए " सोगंघिए " य बोधव्वे ।

चंदप्पह³³-वेरुलिए³⁸, जलकंते³⁸ सूरंकंते³⁵ य ॥७७॥

एए खरपुदवीए, भेया बत्तीसमाहिया । एगिदहंमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ विचाहियां ।।७८॥ सुहुक्षा य सञ्बलोगंमि, लोगंदेसे य वायरा। इंतो कालविभागं तु, बुच्छं तेसि चउव्विहं ॥७६॥ संतई पुष्प ऽर्णाईया, अपजनसिया वि य । ठिईं पर्ड्य साईया, सपजनसिया वि[°]य ॥८०॥ बाबीससहस्साई, बासाखुकोसिया भने 1 श्राउिंह पुढवीगां, श्रंतोम्रहुत्तं जहनिया ।।⊏१।। श्रसंखकालमुक्तोसा³, श्रंतोमुहुत्तं जहनिया । ्कायठिई पुढवीर्गा, तं कायं तु अमुंचओ ॥८२॥ श्रगंतकालमुकोसं , श्रंतोम्रहुत्तं जहन्तरं । विजर्हमि सए काए, पुरुविजीवाण अंतरं ॥ ८३॥ एएसिं वर्णाओं चेव, गंधओं रसफासओं। ्संठाणादेसओ वावि, विहा**णाइं सहस्ससो ॥**८४॥ - (२)'दुविहा श्रांखजीवा छ, सुहुमा बाँयरा तहा । ्पञ्जत्तमपञ्जत्तां, एवमेव दुहा पुणो ॥दंध॥ बायरा जे उ पञ्जत्ता, पंचहा ते पिकत्तिया 🕽 ुसुद्धोदए° य⁻डस्से व, हरतणू महियां हिमे ॥६६॥ एगविहमणागत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया। सुहुमा सव्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा ीाटणा संतइं पप्पऽगाईया, श्रपज्ञवसियावि । ठिइं प**बुच साईया, सपजनिसयावि य ।।**८८।। सत्तेव सहस्साई, वासाखुकोसिया भवे 🗠 भाउठिई शाक्षणं, श्रंतोमुहुत्तं जहिमया ।।**८**६॥

असंखकालमुकीसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निया । कायिं आऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥६०॥ त्रगांतकालमुकोसं, श्रंतोमुहुत्तं जहन्यं । विनढंमि सए काए, श्राऊजीवाण श्रंतरं ॥११॥ एएसि वरणश्रो चेव, गंधश्रो रसफासश्रो। संठाणादेसश्रो वावि, विहाणाई सहस्ससी ॥६२॥ (३) दुविहा वगास्सईजीवा, सुहुमा वायरा तहा । पजनमपन्जत्ता, एवमेव दुहा पुणो ॥६३॥ बावरा जे उ पन्जत्ता, दुविहा ते वियाहिया। साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥६४॥ पत्तेवसरीरात्रो, ऽखेगहा ते पकित्तिया । रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया बल्ली तया तहा ॥६४॥ वलया पन्वगा कुहुणा, जलरुहा ग्रोसही तिणा। हरियकाया उ बोधव्वा, पत्तेगा इह आहिया ॥६६॥ साहारणसरीरात्रो, ऽणेगहा ते पकित्तिया । श्रालुए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ॥६७॥ हिरिली सिरिली सस्सिरिली, जावई केयकंदली। पलंडुलसणकंदे य, कंदली य कहुन्वए ॥६८॥ लोहिणी हूयथी हूय, तुहगा य तहेव य। कएहे य वज्जकंदे य, कंदे सूरणए तहा ॥ ६६॥ अस्तकएणी य बोधन्त्रा, सीहकएणी तहेव य । सुसुंढी य हलिहा य, गोगहा एवमायक्रो ॥१००॥ एगविहमणाग्यता, सुहुमा तत्थ वियाहिया। ्यहुमा सम्बलोगंमि, लोगदेसे व बायरा ॥१०१॥

संतइं पप्पऽणाईया, अपन्जवसियावि य।

ठिइं पहुच्च साईया, सपन्जवसियावि य।।१०२।।
दस चेव सहस्साइं, वासाणुकोसिया भवे।
वणप्पईण आउं तु, अंतोग्रहुत्तं जहिन्नया।।१०३॥।
अणंतकालग्रकोसा, अंतोग्रहुत्तं जहिन्नया।
कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ।।१०४॥।
असंखकालग्रकोसं, अंतोग्रहुतं जहन्नयं।
विजढंमि सए काए, पणगजीवाण अंतरं।।१०५॥।
एएसि वणाओ चेव, गंधओ रसफासओ।
संठाणादेसओ वावि, विहाणाई सहस्ससो॥१०६॥
इचेए थावग तिविहा, समासेण वियाहिया।
इत्तो उतसे तिविहे, वुच्छामि अग्रुपुच्यसो ॥१०७॥
तेऊं वाऊं य बोधच्या, उराला य तसा तहा।
इचेए तसा तिविहा, तेसि भेए सुगेह मे ॥१००॥

(१) दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा वायरा तहा।
पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥१०६॥
बायरा जे उ पज्जत्ता,ऽखेगहा ते वियाहिया।
इंगाले मुंग्ररे अगणी, श्रन्ति जाला तहेव य ॥११०॥
उक्का विज्जू य बोधव्वा, खेगहा एवमायत्रो।
एगविहयणाणत्ता, सुहुमा ते वियाहिया ॥१११॥
सुहुमा सव्वलोगंमि, लोगदेसे य वायरा।
इत्तो कालविभागं तु, तेसि बुच्छं चउव्विहं ॥११२॥
संतई पष्पऽणाईया, अपन्जवसियावि य ॥११३॥
ठिई पहुच साइया, सपज्जवसियावि य ॥११३॥

अ० ३६

२६०] तिएण्व श्रहोरत्ता, उक्कोसेण विवाहिया । श्राउठिई तेऊणं, श्रंतोमुहुतं जहनिया ॥११४॥ असंखंकालपुक्कोसा³, अंतोग्रहुत्तं जहन्मिया। कायिं तें तें कार्यं तु अमुंचओ ॥११५॥ त्रगांतकालमुक्कोसं^x, श्रंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजहंसि सए काए, तेऊजीवाण श्रंतरं ॥११६॥ एएसि वएगुत्रो चेव, गंधळो रसफासळो।

संठाणादेसचो वावि, विहाणाई सहस्ससो ॥११७॥ (२) दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा वायरा तहा। पज्जत्तमपज्जता, एवमेए दुहा पुणो ॥११८॥ बायरा जे उ पजता, पंचहा ते पकित्तिया। उक्तियां मंडलियां, घणगुंजां सुद्धवायां य ॥११६॥ संबर्द्धगवाये य, गोगहा एकमायस्रो । एगविहमणांगत्ता, सुहुमा तत्थ वियाहिया ॥१२०॥

सुहुमा सन्वलोगंमि, लोगदेसे य बायरा । इत्तो कालविमागं तु, तेसि बुच्छं चउव्विहं ॥१२१॥ संतई पप्पऽणाईया, अपुज्जवसियावि य । ठिइं पडुच साईया, सपदजनसियानि य ॥१२२॥

तिएग्वेन सहस्साई, वासाखुकोसिया भने । श्राउठिई बाऊगं, श्रंतोग्रहुतं, जहन्निया ॥१२३॥

असंख्कालमुकोसा³, अंतोम्रहुत्तं जहनिया। कायिंठई वाऊगं, तं कायं तु अमुंचश्रो ॥१२४॥

श्रग्तिकालग्रुक्कोसं , श्रंतोग्रहुत्तं जहस्रयं । विजढंमि सए काए, वाऊजीवाण अंतरं ।।१२४॥ एएसिं वरणत्रो चेत्र, गंधश्रो रसफासत्रो । संठाणादेसगो वाब्रिः विहाणाई सहस्ससो ॥१२६॥

(३) उराला तसा जे उ, चउहा ते पिकत्तिया। बेइंदिया तेइंदिया , चउरों पंचिंदिया तहा ॥१२७॥

(१) बेइंदिया उजे-जीवा, दुविहा ते पिकत्तिया। पुरुजत्त भपुरुजत्ता , तेसिं भेए सुगोह मे ॥१२८॥ किमिणो सोमंगला चेव, त्र्यलसा माइवाहया। नासीमुहा य सिप्पिया, संखा संखगणा तहा ॥१२६॥ पद्मोयागुद्धया चेव, तहेव य बराडगा । जलुगा जालगा चेव, चंदगाय तहेव य ॥१३०॥ इइ बेइंदिया एए, ऽर्णेगहा एवमायस्रो । लोगेगदेसे ते सन्वे, न सन्वत्थ वियाहिया ॥१३१॥ संतइं पप्प ऽणाईया, ऋष्यञ्जवसिया वि य। ठिईं पहुच साईया, सपजविसया वि य ॥१३२॥ वासाइ बारसा चेव, उक्कोसेगा वियाहिया। बेइंदिय श्राउठिई श्रंतोग्रहुत्तं जहन्निया ॥१३३॥ संखिजकाल्युकोसा , श्रंतोग्रहुत्तं जहिमया। बेइंदियकायिर्दि, तं कायं तु अमुच्यो ॥१३४॥ अग्रंतकालमुकोसं^४, अंतोम्रहुत्तं जहन्त्रयं । बेइंदियजीवाणं, अंतरं च वियाहियं ॥१३५॥ एएसिं वर्णश्रो चेव, गंधश्रो रसफासश्रो। संठाखादेसच्चो वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१३६॥

(२) तेईदिया उ जे जीवा, दृविहा ते पिकतिया। पडज्तमपडजत्ता, तेसिं मेप सुणेह मे ॥१३७॥

্ খি ইং

कुंथु-पिवीलि-उइंसा, उक्कलुद्देहिया तहा । तग्रहार-कट्टहारा य, मालुगा पत्तहारगा ॥१३=॥ कप्पासद्विमिंजा य, तिंदुगा तउसिंजगा । सदावरी य गुंभी य, बोधन्वा इंदगाइया ॥१३६॥ इंदगोवगमाईया, गोगहा एवमायश्रो । लोगेगदेसे ते सन्वे, न सन्वत्थ वियाहिया ॥१४०॥ संतइं पप्पऽणाईया, श्रपज्जवसिया वि य । ठिइं पड्च साईया, सपन्जवसिया² वि य ॥१४१॥ एगूणपएणहोरत्ता, उक्कोसेण वियाहिया । तेइंदियत्राउठिई, श्रंतोमुहुत्तं जहनिया ॥१४२॥ संखिज्जकाल्ग्युक्कोसा³, त्रंतोग्रहुत्तं जहन्या । तेइंदियकायिठई, तं कायं तु अमुंचओ ॥१४३॥ त्रगांतकालमुक्कोसं^४, त्रंतोमुहुत्तं जह्नयं । तेइंदियजीवाणं, ग्रंतरं तु वियाहियं ॥१४४॥ एएसि वएणश्रो चेव, गंधश्रो रसफासश्रो। संठाणादेसत्रो वावि, विहाणाई सहस्ससो ॥१४४॥ (३) चउरिंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पिकत्तिया। पन्जत्तमपन्जत्ता, तेसि भेए सुखेह मे ॥१४६॥ श्रंधिया पोत्तिया चेव, मच्छिया मसगा तहा। ममरे कीडपयंगे य, ढिंकुणे कंकणे तहा ॥१४७॥ कुक्कुडे सिंगिरीडी य, नंदावत्ते य विच्छुए। होले भिंगीरीही य, विरीली ग्रन्छिवेहए ॥१४८॥ श्रच्छिले माहए श्रच्छि, विचित्ते चित्तपत्तए। उहिंजलिया जलकारी य, नीया तंतवयाइया ॥१४६॥

इह चडरिंदिया एए, ऽणेगहा एवमायश्रो।
लोगेगदेसे ते सन्वे, न सन्वत्थ वियाहिया ॥१५०॥
संतइं पप्प ऽणाईया, अपन्जविसया वि ये।
ठिइं पडुच साईया, सपन्जविसया वि ये॥१५१॥
छचेव उ मासाऊ, उक्कोसेण वियाहिया।
चडरिंदियशाउठिई, श्रंतोग्रहुत्तं जहन्निया।।१५२॥
संखिन्जकालग्रक्कोसाँ, श्रंतोग्रहुत्तं जहन्निया।
चडरिंदियकायिठई, तं कायं तु अमुंचश्रो॥१५३॥
श्रणंतकालग्रक्कोसंँ, श्रंतोग्रहुत्तं जहन्नयं।
चडरिंदियकायिठई, तं कायं तु अमुंचश्रो॥१५३॥
श्रणंतकालग्रक्कोसंँ, श्रंतोग्रहुत्तं जहन्नयं।
चडरिंदियजीवाणं, श्रंतरं च वियाहियं॥१५४॥
एएसं वएणश्रो चेव, गंधश्रो रसफासश्रो।
संठाणादेसश्रो वावि, विहाणाइं सहस्तसो ॥१५४॥

(४) पंचिदिया छ. जे जीवा, चडिनहा ते वियाहिया। नेरइय तिरिक्खा य, मणुया देवा य आहिया।।१५६॥ नरक वर्णनम्—

नेरह्या सत्तिहा, पुढवीसु सत्तसु भवे ।
रयणाभ सकाराभा , वालुयाभा य त्राहिया ॥१५७॥
पंकाभा धूमाभा , तमा तमतमा तहा ।
इह नेरह्या एए, सत्तहा परिकित्तिया ॥१५८॥
लोगस्स एगदेसंमि, ते सब्वं उ वियाहिया ।
एत्तो कालविभागं तु, बुच्छं तेसि चउव्वहं ॥१५६॥
संतहं पप्पऽणाईया, त्रप्रजवसिया वि य ॥१६०॥
सागरोवमभेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
सागरोवमभेगं तु, उक्कोसेण वियाहिया ।
पढमाए जहकोणं, दसवाससहस्सिया ॥१६।॥

रइष्ट] तिएणेव सागरा ऊ, उक्कोंसेण विचाहिया। दोच्चाए जहन्नेणं, एगं तु सागरोवमं ॥१६२॥ सत्तेव सागरा ऊ, उनकोसेण वियाहिया। तइयाए जहन्नेगां, तिग्गोव सागरोवमा । १६३॥ दस सागरोवमा ऊ, उद्कोसेण वियाहिया । चउत्थीए जहनेंगी, सत्तेव सागरीवमा ॥१६४॥ सत्तरस सागरा ऊं, उक्कोसेण वियाहिया। पंचमाए जहनेगां, दस चेव सागरोवमा ॥१६५॥ बावीस सागरा ऊ, उक्कोसेण वियाहिया। छहीए जहन्नेणं, सत्तरस सागरीवमा ॥१६६॥ तेत्तीस सागरा ऊ, उक्कोसेगा वियाहिया। सत्तमाए जहनेगां, बाबीसं सागरीवमा ॥१६७॥ जा चेव य आउठिई, नेरइयांगं वियाहिया। सा तिसि कायठिई, जहन्तुकोसिया मेवे ॥१६८॥ त्रगांतकालमुक्कोसं, श्रंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजर्हीम सए काए, नेरइयांगि तुं श्रंतरें ॥१६६॥ एएसि वर्गणुत्रो चेव, गंधुत्रो रसकासत्री। संठागादिसस्रो वावि, विहागाईं संहरसंसी ॥१७०॥ ं पंचेन्द्रिय-तिर्धाः वर्णानम्-पंचिदियतिरिक्खात्रो, दुविहा ते वियाहिया। संग्रुच्छिमतिरिक्खाश्रो , गब्भवेकंतिया तहा ॥१७१॥ दुविहा ते भवे तिविहा, जलयरा श्रलयरा तहा। नहयरा य बोधव्वा, तेसि भेए सुगोह मे ।।१७२॥ मच्छा य कच्छमा य, गाहा य मंगरा तहा। ु सुंसुमारा य बोधन्वा, पंचहा जलयराहिया ॥१७३॥ लोएगदेसे ते सच्चे, न सच्चत्थ वियाहिया।

इत्तो कालविमागं तु, तेसिं चुच्छं चउिन्नहं ॥१७४॥

संतई पण्पऽयाईया, अपन्जनसिया वि ये।

ठिईं पडुच्च साईया, सपन्जनसिया वि ये।

एगा य पुन्नकोडि, उक्कोसेण नियाहिया।

आउठिई जलयराणं, अंतोम्रहुत्तं जहिनया ॥१७६॥
पुन्नकोडिपुहत्तं तुं, उक्कोसेण वियाहिया।
कायठिई जलयराणं, अंतोम्रहुत्तं जहिनया ॥१७७॥
अर्णतकालमुक्कोसं, अंतोम्रहुत्तं जहिनया ॥१७७॥
अर्णतकालमुक्कोसं, अंतोम्रहुत्तं जहिनया ॥१७७॥
पण्सं वरणश्रो चेन, गंधश्रो रसफासश्रो।

संठागादेसश्रो नानि, निहाणाइं सहस्ससो ॥१७६॥

चडप्पया चडिवहा छ, ते मे कित्तयश्रो सुण ॥१८०॥
एगखुरा दुखुरा चेव, गंडीपय न्सणप्पया ।
ह्य मा इ-गोण मा इ,-गय मा इ-सी ह मा इ गो ॥१८१॥
सुश्रोरगपरिसप्पा य, परिसप्पा दुविहा भवे।
गोहाई श्रहिमाई य, एकेक्काणेगहा भवे॥१८२॥
लोएगदेसे ते सब्वे, न सब्बत्थ वियाहिया।
एत्तो कालविभागं तु, वोच्छं तेसि चडिवहं ॥१८३॥
संतहं पप्प ऽगाईया, श्रपण्डवसिया वि य ॥१८४॥
पिलश्रोवमाइं तिणिग छ , उक्कोसेण वियाहिया।
प्राउठिई थल्यरागं, श्रंतोसुदुत्तं जहिनया ॥१८४॥

पुन्वकोडिपुहुत्तं, उक्कोसेगा वियाहिया । कायठिई थलयरागां, श्रंतोम्रहुत्तं जहिनया ॥१८६॥ कालमग्रंतमुक्कोसं^४, श्रंतोम्रहुत्तं जहस्रयं । विजढंमि सए काए, थलयरागां तु र्यंतरं ॥१८७॥ एएसिं वरणत्रो चेव, गंधन्रो रसफासत्रो । संठाणादेसगो वावि, विहाणाई सहस्ससो ॥१८८॥ चम्मे उ लोगपक्ली य, तह्या समुगगपक्खिया । विययपक्ली य बोधव्वा, पविख्या य चउव्विहा ॥१८६॥ लोएगदेसे ते सन्वे, न सन्वत्थ वियाहिया। इत्तो कालविभागं तु. वोच्छं तेसिं चउविवहं ॥१६०॥ संतइं पप्प ऽणाईया, अपन्जवसिया वि ये। ठिईं षड्च साईया, सपन्जवसिया वि ये।।१६१॥ पलिस्रोवमस्स भागे, असंखेन्ज इमी भवे । त्राउठिई खहयरागां, त्रांतोम्रहुत्तं जहन्निया ॥१६२॥ पुन्वकोडीपुहत्तेगां, उक्कोसेगां वियाहिया । कायठिई खहयरागं, अंतोम्रहुत्तं जहन्निया ॥१६३॥ त्रगांतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढंभि सए काए, खहयरागं तु अंतरं ॥१६४॥ एएसि वएगुओं चेव, गंधओं रसफासश्रो। संठाणादेसस्रो वावि, विहाणाइं सहस्ससी ॥१६५॥ मनुजाना वर्णनम्— मगुवा दुविहमेवा छ, ते मे कित्तयश्रो सुगा। संमुच्छिमा य मणुया, गन्भवक्कंत्रिया तहा ॥१६६॥ गब्भवकंतिया जे उ, तिविहा ते वियाहिया। ंकम्म अकम्मभूमा य, अंतरहीवया तहा ॥१६७॥

पन्नरस तीसवीहा, भेया अहवीसयं। संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा वियाहिया ॥१६८॥ संग्रुच्छिमाण एमेव, मेत्रो होइ वियाहित्रो। लोगस्स एगदेसंमि, ते सन्वे वि वियाहिया ॥१६६॥ संतई पप्पऽणाईया, अपन्जवसिया विय । ठिइं पड्च साईया, सपज्जवसिया विय ॥२००॥ पलिश्रोवमाइं तिष्णि वि, उक्कोसेण वियाहिया। श्राउठिई मगुयागं, श्रंतोम्रहुत्तं जहन्निया ॥२०१॥ पुन्वकोडिपुहत्तेणं, उक्कोसेण वियाहिया । कायिं मेणुयार्ग, श्रंतोप्रहुत्तं जहन्निया ॥२०२॥ -श्रंगांतकालमुक्कोसं , श्रंतोमुहुत्तं जहन्यं । विजरंमि सए काए, मग्रुयाणं तु श्रंतरं ॥२०३॥ एएसि वरणयो चेव, गंधयो रसफासयो। संठाणादेसच्चो वावि, विहासाई सहस्ससो ॥२०४॥ ं देवानां वर्णानम्— देवा चंउव्विहा बुत्ता, ते मे कित्तयश्रो सुग्। मोमिज वाणमंतरं, जोइस वेमाणिया तहा ॥२०५॥ दसहा उ भवग्वासी, श्रद्धहा वणचारिणो । पंचितहा जोइसिया, दुविहा वेमाणिया तहा ॥२०६॥ (१) श्रमुरा नाग सुवएणा ,विन्जू अग्गी वियाहिया। दीवो^६दहिँदिसा^दवायाँ,थणिया[ँ] भवणवासिणो ॥२०७॥ (२)पिसाय भ्रूय जनखा य,रक्खसा किन्नरा किंपुरिसा । महोरगा य गंधव्वा , श्रष्टविहा वास्मातरा ॥२०८॥ (३) चंदा सूरा य नक्खता , गहा तारागणा तहा। दिसा विचारिणो चेव, पंचहा जीइसालया ॥२०६॥ (४) वेमाणिया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया। कप्पोबगा य बोधंन्वा, कप्पाईया तहेव य ॥२१०॥

कपोवगा वारसहा, सोहम्मी साग्रगा तहा । सगंकुमार माहिंदा बंभलोगा य लंतगा ॥२११॥ महासुका "सहस्सारा", त्राणया पाणया तहा । ्र श्रारणा अच्चुया चेव, इइ कप्पोवगा सुरा ॥२१२॥ कपाईया उ जे देवा, दुविहा ते वियाहिया। गेविजगाणुत्तरा चेव, गेविजा नवविहा तर्हि ॥२१३॥ हेड्रिमाहेड्रिमां चेव, हेड्रिमामज्भिमा तहा । हेड्डिमाउवरिमा चेव, मजिसमाहेड्डिमा तहा ॥२१४॥ मिक्समामिक्समा चेव, मिक्समाउविश्मा तहा। उवरिमाहेड्डिमाँ चेव, उवरिमामिक्समा तहा ॥२१४॥ उवरिमाउवरिमा चेव, इय गेविज्ञगा सुरा। विजया वेजयंता य, जयंता अपराजिया ॥२१६॥ सन्वत्थसिद्धगा चेव, पंचहाग्रुत्तरा सुरा । इय वेमाशिया एए, ऽशोगहा एवमायत्रो ॥२१७॥ स्रोगस्स एगदेसंमि. ते सच्चे वि वियाहिया। इत्तो कालविभागं तु, बुच्छं तेसिं चडिवहं ॥२१८॥ संतइं पप ऽणाईया, श्रपज्जवसियावि य । ठिइं पडुच साइया, सपजनिसयावि य ॥२१६॥ साहियं सागरं एकं , उकोसेण ठिई भवे। भोमेजाणं जहनेणं, दसवाससहस्सिया ॥२२०॥ पलिस्रोवम दो ऊणा, उनकोसेण वियाहिया। श्रम्परिंदवज्जेतागा जहना दससहस्सगा ॥२२१॥ पलिस्रोवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । वंतरागं जहन्नेगं, दसवाससहस्सिया ॥२२२॥ पिल्ञोवसमेगं तु, वासलक्षेण साहियं । पिल्ञोवमहभागो, जोइसेस जहन्निया ॥२२३॥

दो चेव सागराई, उक्कोसेण वियाहिया । सोहंमंमि जहन्नेगां, एगं च पलिश्रोवमं ॥२२४॥ सागरा साहिया दुन्नि, उनकोसेग वियाहिया। ईसागंमि जहन्नेगं, साहियं पलित्रोवमं ॥२२५॥ सागराणि य सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे। सणंकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि उ सागरोवमा ॥२२६॥ साहिया सागरा सत्त, उद्यक्तीसेणं ठिई भवे। माहिंदमि जहनेगां, साहिया दुनि सागरा ॥२२७॥ दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । वंभलोए जहन्नेगां, सत्तऊ सागरोवमा ॥२२८॥ चउद्ससागराईं, उक्कोसेण ठिई अवे । लंतगंमि जहन्नेगां, दस उ सागरोवमा ॥२२६॥ सत्तरससागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । महासुक्के जहन्नेणं, चोद्स सागरोवमा ॥२३०॥ ब्रद्वारस सागराइं, उक्कोसेगा ठिई भवे । सहस्सारंमि जहन्नेर्गं, सत्तरस सागरोवमा ॥२३१॥ सागरा श्रउगावीसं तु, उक्तोसेण ठिई भवे। त्राण्यंमि जहन्नेणं, श्रद्वारस सागरोवमा ॥२३२॥ वीसं तु सागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे। पाण्यंमि जहन्नेगा, सागरा श्रउण्वीसई ॥२३३॥ सागरा इकवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । त्रारणंमि जहन्नेगं, वीसई सागरोवमा ॥२३४॥ बावीसं सागराईं, उक्कोसेण ठिई भवे । श्रच्चुयंमि जहनेण, सागरा इक्कवीसई ॥२३४॥ तेवीससागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । पढमंमि जहन्नेगा, वावीसं सागरोवमा ॥२३६॥

चडवीसं सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । बीइयंमि जहन्नेगां, तेवीसं सागरोवमा ॥२३७॥ पणवीसं सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे । तइयंमि जहन्नेणं, चउदीसं सागरोवमा ।।२३८॥ छन्वीस सागराई, उक्कोसेगा ठिई भवे । चंउत्थंमि जहनेगं, सागरा पणवीसई ॥२३६॥ सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। पंचमंमि जहन्नेगां, सागरा उ छ्वीसई ॥२४०॥ सागरा ऋडुवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। बहंमि जहन्नेगं, सागरा सत्तवीसई ॥२४१॥ सागरा अउग्रतीसं तु उक्कोसेग् ठिई भवे। . सत्तमंमि जहनेगां, सागरा श्रद्ववीसई ॥२४२॥ तीसं तु सागराई, उक्कोसेग ठिई भने । त्रहमंमि जह**न्नेगां, सागरा** श्रउणतीसई ॥२४३॥ सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। नवमंमि जहन्नेणं, तीसई सागरीवसा ॥२४४॥ तेत्तीसा सागराई, उक्कोसेण ठिई भवे। चडसुंपि विजयाईसुं, जहनेगोक्कतीसई ॥२४४॥ श्रजहन्मगुक्कोसं, तेत्तीसं सागरोवसा । ं महाविमार्गे सन्वहे, ठिई एसा वियाहिया ॥२४६॥ जा चेव उ आउठिई, देवाणं तु वियाहिया। सा तेसि कायिंडई, जहन्नमुकोसिया भवे ॥२४७॥ अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्त्रयं। विजर्ढमि सए काए, देवार्ण हुज अंतरं ॥२४८॥ त्रगांतकालमुकोसं, वासपुहुत्तं जहन्मगं । श्राणयाई कप्पाण, गेविजाणं तु श्रंतरं ॥२४६॥

संखिजसागरकोसं, वासपुहुत्तं जहन्तरां । श्रग्रुत्तराण य देवागं, श्रंतरं तु वियाहिया ॥२५०॥ एएसि वएणुओ चेव, गंधुओ रसफासुओ। संठाणादेसत्रो वावि, विहाणाई सहस्ससो ॥२५१॥ संसारत्था य सिद्धा य, इय जीवा वियाहिया। रूविणो चेव ऽरूवी य, त्रजीवा दुविहावि य ॥२५२॥ इय जीवमजीवे य, सोच्चा सद्हिऊण य। सन्वनयाग्रमणुमए, रमेन्ज संजमे मुणी ॥२५३॥ संलेखना विधिः— तस्रो बहुगी वासाणि, सामण्णमणुपालिया। इमेख कमजोगेख, अप्पार्ण संलिहे मुणी ॥२५४॥ बारसेव उ वासाइं संलेहुकोसिया भवे । संवच्छरं मजिक्कमिया, छम्मासा य जहन्त्रिया ॥२५५॥ पढमे वासचउकंसि, विगई-निज्जूहणं करे। बिइए वासचउकंमि, विवित्तं तु तवं चरे ॥२५६॥ एगंतरमायामं, कट्ड संवच्छरे दुवे। तत्रो संवच्छरद्धं तु. नाइविगिद्धं तवं चरे ॥२५७॥ तत्रो संवच्छरद्धं तु, विगिष्टं तु तवं चरे। परिभियं चेव आयामं, तंमि संवच्छरे करे ॥२४८॥ कोडी सहियमायामं, कट्ड संवच्छरे मुणी। मासद्भासिएगां तु, त्राहारेण तवं चरे ॥२५६॥ संयमस्य विराधनाया-श्राराधनायाश्रक्तम्-कंद्पमासिओं च, किब्बिसियं मोहमासुरत्तं च।

कंदप्यमाभित्रोगं च, किन्त्रिसयं मोहमासुरत्तं च । एयाउ दुग्गईश्रो, सरगंमि विराहिया होति ॥२६०॥ मिच्छादंसग्ररत्ता, सनियाणा उ हिंसगा । इय जे मरंति जीवा, तेसि पुण 'दुल्लहा बोही' ॥२६१॥

सम्मद्सणरत्ता, अनियाणा सुकलेसमोगाढा। इय जे मरंति जीवा, तेसि 'सुलहा भवे वोही' ॥२६२॥ मिच्छादंसग्रता, सनियाणा क्रवहलेसमोगाढा। इय जे मरंति जीवा, तेसि पुण 'दुल्लहा वोही' ॥२६३॥ जिणवयगो अगुरता, जिणवयगं जे करेति भावेण। श्रमला असंकिलिट्टा, ते होंति परित्तसंसारी ॥२६४॥ वालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव य बहुणि। मरिहंति ते वराया, जिणवयणं जे न जाणंति ॥२६४॥ बहुत्रागमविन्नाणा, समाहिउपायगा य गुणगाही। एएगं कारगेगं, अरिहा त्रालोयगं सोउं ॥२६६॥ कंदप्पक्रक्कुयाइं, तह सीलसहावहासविगहाइं। विम्हावेंतोय परं, कंदप्पं भावगां कुगाइ ॥२६७॥ मंताजोगं काउं, भूइकम्मं च जे पउंजंति। साय-रस-इिंदहेडं, श्राभिश्रोगं भावगं कुणइ ॥२६८॥ नागस्स केवलीगं, धम्मायरियस्स संघसाहृगं। माई अवरणवाई, किन्विसियं भावणं कुणइ ॥२६८॥ **अणुगद्धरोसपसरो, तह य निमित्तंमि होइ प**िहसेवी। एएहि कारणेहिं, त्रासुरियं भावणं कुणइ ॥२७०॥ सत्थगहणं विसभक्खणं च, जलणं च जलपवेसो य। त्र्रणायारमंडसेवी, जम्मण्यमरणाणि बंधंति ॥२७१॥ इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्बुए । छत्तीसं उत्तरक्काए, भवसिद्धियसंबुडे ॥२७२॥ त्ति वेमि ॥

॥ मूल प्रसाणि॥

(3)

नंदी-सुत्तं

[उक्तालियं]

।। कालवेलवज्जं पढिज्जति ॥

नामकर्शां-

नंदंति जेशा तब-संजमेसु, नेव च द्रित खिज्जंति । जायंति न दीणा वा, नंदी अ तत्तो समयसन्ना ॥ १ ॥ अ० रा० कोश—

उद्धरशां -

पंचयनागा-पुन्दाओ, तह श्रंगा उवंगायो । श्रायरिय देविड्हणा, नंदी-सुत्तं सुयोजियं ॥२॥

विसयशिहसो-

वीरत्थुई संघथुई य पुटवं, . पच्छा य तित्थंगर-नामयाणि। नामाणि तेत्तो गणहारयाणं, तञ्जो थवो गां जिग्रसासणस्स ॥ १॥ थेरावली चउइस, दिट्टंताणि य सोऊगं। तिरिण परिसयागं च, भेया पच्छा उ वरिणया ॥ २ ॥ पंचएहं खलु नाणाणं, णाम-णिदेसणं कयं। तभो पच्छा य पचयस्वं, भ्रोहिनाणं तु विराणयं ॥ ३॥ तमो पच्चवख-नागास्स, मगास्स केवलस्स य। संगोवंगं सुवएणनं. वित्थरेण पकित्तियं।। ४॥ परोक्ख-मइनाग्यस्स, दिद्विभेएण कित्तगां । पच्छा चउएह बुद्धीगां, सोदाहरण-वरणानं ॥ ५॥ परोक्ख-सुय-नाग्रस्स, भेया बुत्ता चउद्सा । एकारसंगयस्मावि, तश्रो पच्छा उ वएग्ना ॥६॥ तस्रो पच्छा उ संवित्तं, त्रशुत्रोगो य चूलिया। दिद्विवास्रो य सपुटवो, विराणया य जहक्कर्म।। ७।। दूवालस्स य अंगस्स, श्राराहणाश्र जं फलं । विष्णुक्तम् उ तं सन्धं, बुत्ता श्रंगाण निषया।। = ।।

गागा महिमा—

उनकोसियं गां भंते ! गागाराहगां त्रागहेता कतिहिं भवगगहगोहिं-सिज्भंति बुज्मंति मुचंति परिनिज्वायंति सञ्बदुक्लाग्गमंतं के ति ? गीयमा ! अत्थेगइए तेगोव भवगगहगोगं सिज्कंतिजाव . सन्वदुक्खागामंतं करेंति। श्रत्थेगइए दोचेगां भवगाहगोगां सिज्भंति...जाव...सञ्बदुक्लागामंतं करेंति । श्रत्थेगइए कप्पोवएसु वा कप्पातीएसु वा उववज्जंति। मिंग्निमं ग्रं मंते ! ग्रागाराह्यं त्राराहेत्ता कतिहि भवगगोहिं-सिज्भंति बुज्भंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्लागामंतं करेंति ! गोयमा ! श्रत्थेगइए दोच्चेगां भवगाहगोगां सिज्भांति... जाव . . सन्त्रदुक्लागामंतं करेंति ।

तच्चं पुरा भवगाहरां नाइक्रमइ।

जहिनयं गं भंते ! गागाराहगं त्राराहेचा कतिहिं भवग्गहगोहिं---सिज्मंति...जाव...सञ्बदुक्खाग्गमंतं करेंति ?

गोयमा !

त्र्रत्थेगइए तच्चेगां भवग्गहगोगां सिज्भह...जाद ..सव्बद्धक्लागामंतं क**रेह**— सत्तहुभवगाह्या।ई पुरा नाइक्षमइ ।

भग० श० ८ ७० १० सु० ३४४—

क्ष ग्रामोऽत्थु ग्रं तस्स समग्रस्स भगवश्रो महावीरस्स अ

मन्दी-खुत्तं

वीरस्तुतिः— जयइ जग-जीव-जोणी, वियागुत्रो जगगुरू जगाणंदो। ज ग णा हो जगवंधू, जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥ १॥ जयइ सुत्रागां पभवो तित्थयरागां अपच्छिमो जयइ। जयइ गुरू लोगाणं, जयइ महप्पा महावीरो ॥२॥ भद्दं सन्वजगुङ्जोयगस्स, भद्दं जिणस्स वीरस्स । मई सुरासुरनमंसियस्स, भई ध्यरयस्स ॥३॥ संघस्तुतिः— गुगा-भवगा-गहगा, सुय-रयगा-भरिय-दंसगा-विसुद्ध-रतथागा । संघ-नगर ! भद्ते, ऋखंड—चारित्त—पागारा संजम-तव-तुंवारयस्स, नमो सम्मत्तपारियद्वस्स । अप्पिडचक्स जञ्जो. होउ सया संघ-चक्कस्स ॥ ॥ ॥ भदं सीलप्डागूसियस्स, तव-नियम-तुरय-जुत्तस्स। भगवत्रो, सन्भायसुनंदिषासस्स ॥६॥ संघ-रहस्स कम्प्ररय-जलोहविणिग्गयस्स, सुयर्यग्-दोहनालस्स। पंचमहन्वय-थिरकिएण्यस्स, गुणकेसरालस्स ॥ ७॥

सावग-जण-महुत्र्यरिपरिवुडस्स, जिर्ण-खूर-तेयवुद्धस्स। संघ-पडमस्स भद्दं, समण-गर्ग-सहस्सपसस्स ॥ ८॥ तव-संजम मय-लंछण ! श्रिकिरिय राहुग्रह-दुद्धरिस ! निचं जय सघचंद ! निम्मल,-सम्मत्तविसुद्ध जीएहागा ! ॥ ६ ॥ परतित्थिय-गह-पह-नासगरस, तवतेयदित्त लेसस्स । ना गुज्जो यस्स जए, अईं दमसंघ-सूरस्स ॥१०॥ मदं धिइवेला परिगयस्स, सज्साय जोग मगरस्स । श्रवखोहस्स भगवश्रो, संघसमुदस्स रुंदस्स ॥११॥ स म्म दं स ण-व र व इ र,-दहरूढगाढावगाढ-पंढस्स । धम्मवर-रयग-मंडिय-चाभीयर-मे ह ला ग स्स ॥१२॥ नियमुसिय कराय,सिलायलुजल जलंत-चित्त-ऋडस्स । नंदणवर्ण मणहर सुरिम, सीलगंधुद्धमायस्स ॥१३॥ जीवदया-मुंदर-कंदरूद्दरिय-म्रुणिवर मइंदइन्नस्स । हेउ-सयधाउपगलंत, रयणदित्तोसहि गुहस्स ॥१४॥ संवरवर जल पगलिय, उज्भरप्पविरायमाणहारस्स । सांवग-जण पउर-रवंत, मोर नच्चंत कुहरस्स ॥१५॥ विणय-नय-पवर मुणिवर, फुरंत विज्जुङ्जलंत सिहरस्म। विविह्युण कप्वरुक्खग, फलभरकुसुमाउलवणस्स ॥२६॥ नाणवर-रयण-दिप्पंत, कंतवेरुलियविमलचूलस्स । विगायपगात्रो, संघ-महामंदरगिरिस्स ॥१७॥ वंदामि गुग-रयगुजलकडयं, शीलसुगंधि-तवमंडिउदेसं । सुय-वारसंग-सिहरं, संघ-महामंदरं वंदे ॥१८॥ नगर 'रह' चक पउमे , चंदे "स्रे समुद्र" मेरू मि । जो उवमिन्जइ सययं, तं संघ-गुणायरं वंदे ॥१६॥

तीर्धकरनामानि---

उसमं भ्राजियं संभव , मिनंदण सुमइ सुप्पम सुपासं । सिंदित्रकृष्यं व ।।२०॥ विसल "सर्गतं "य धम्मं ", संति क्ष्यं " अरं " च मल्लि " च ।

गराघरनामानि—

जिनशासनस्तुतिः—

कुसमय--मयनासण्यं, जिणिदवर वीरसासण्यं ॥२४॥ स्थविरावली---

पभवं कचायर्ण वंदे, वच्छं सिज्जंभवं तहा ॥२५॥

एलावचसगोत्तं, वंदामि महागिरि सुहरिंथ° च ।

हारियगुत्तं साइं च, बंदिमो हारियं च सामज्जं ।

वंदे अजसग्रहं , अवखुभिय-सग्रह्-गंभीरं ॥२६॥ मणगं करगं करगं, पभावगं णाण-दंसणगुणाणं।

मुनिसुव्वये -निर्मे -निर्मे , पासं के तह वद्धमार्गं च ॥२१॥

पढिमित्य इंदभूई, बीए पुशा होइ श्रिगिभूइ ति। तइए य वाउभूई³, तत्रो वियत्ते सुहम्मे य ॥२२॥ मंडिश्र -मोरियपुत्ते ", श्रकंपिए चेव श्रयत्तभाया थ ।

मेयन्जे " य पहासे", गग्रहरा हुंति वीरस्स ॥२३॥ निन्बुइ-पह-सासणयं, जयइ सया सन्वभाव-देसण्यं।

सुद्रमं अग्गिवेसाणं, जंबूनामं च कासवं ।

जसभदं तुशियं वंदे, संभूयं चेव साहरं। मदबाहुं च पाइनं, धूलभदं च गोयमं ॥२६॥

तत्तो कोसियगोत्तं, बहुलस्स "सिर्व्वयं वंदे ॥२७॥

वंदें कोसियगोत्तं, संहिल्लं श्रक्षजीयघरं ॥२८॥ ति-समुद्द-खायकित्ति, दीवसमुद्देसु गहिय-पेयालं ।

अजमंगुं भी सुयसागरपारगं धीरं ॥३०॥

क्षवंदामि अजधममं े तत्तो वंदे य भद्गुत्तं च। तत्तो य अजवइरं , तव-नियम-गुगोहिं वहरसमं ॥३१॥ **%वंदामि श्रजरविखय[ः] , ख**दगो रिक्खय-चारित्त सन्वस्ते । रयणकरंडगभूश्रो, श्रणुश्रोगी रक्षित्रो नेहि ॥३२॥ नाणंमि दंसणंमि य, तव-विणए णिचकालप्रुज्जुत्तं । श्रज्जं नंदिल-खवर्गं भे, सिरसा वंदे पसन्नमगां ॥३३॥ वड्ढउ वायगवंशो, जसवंसो श्रजनागहत्थीर्यां । वागरण-करण-भंगिय, कम्मपयडीपहाणार्गं ॥३४॥ जर्बजणः धाउसमप्पहाणं, सुद्यि-कुवलयनिहाणं । वड्ढउ वायगवंसी, रेवइ—नक्खत्तनामार्गं ।।३५॥ "श्रयत्वपुरा" निष्खंते, कात्तियसुत्र-श्रागुत्रोगिए घीरे । ''बंभद्दीवग''-सीहे²⁸, वायगपयम्रुत्तमं पत्ते ॥३६॥ जेसि इमो श्रग्रुश्रोगो, पयरइ श्रजावि श्रह्दभरहंमि । बहुनयरनिग्गयजसे, ते बंदे खंदिलायरिए ।।३७॥ तत्तो हिमवंत-महंत-विक्कमे, धिइपरक्षमग्णंते । सज्कायमण्तंवधरे, हिमवंते^{र्र} वंदिमो सिरसा ॥३८॥ कालिय-सुय-श्रगुत्रोगस्स-धारए, थारए य पुन्वार्ण। हिमवंतखमासमणे, वंदे णागन्जुणायरिए^२ँ ॥३८॥ मिउमद्दसंपन्ने, ऋाग्रुपुन्ति वायगत्तगं पत्ते । श्रोहसुयसमाचारे, नागन्जुणवायए वंदे ॥४०॥ गोविंदार्गं रे पि नमो, अणुश्रोगे विउत्तधारणिंदार्गं। णिचं खंतिदयाणं, परूवणे दुल्लभिंदाणं ॥४१॥

तत्तो य भ्रयदिसं ", निश्चं तय-संजमे अनिव्विष्णं। पंडियजणसम्मार्गं, वंदामी संजमविहि**रग्**यं ॥४२॥ वर-कणग-तविय-चंपग,-विमउल्ल-वर-कमलग्रहमसरिवसे। भवियजणिहेंचयदइए, दयागुणिवसारए धीरे ॥४३॥ श्रड्दमरहप्पदाणे, बहुविह-सक्साय-सुमुणियपहाणे । श्रणुश्रीगियवरवसभे, नाइलकुलवंसनंदिकरे ॥४४॥ भूयहियप्पगन्भे, वंदे ऽहं भूयदिश्रमायरिए । भवभयवुच्छेपकरे, सीसे नागन्जुणरिसीणं ॥४५॥ सुमुणिय निचानिचं, सुमुणिय सुत्तत्त्रधारयं वंदे । सन्भावुन्भावणया, तत्थं लाहिच " णामार्ग ॥४६॥ श्रत्थमहत्थखार्थि, सुप्तमगावक्खागाक्रहण निन्वाणि। पयईए महुरवार्शि, पयश्रो पणमासि *दूसगर्णि 118७॥ तव-नियम-सन्म-संजम,-विणयज्ञव-खंति-मद्वरयाणं । सीलगुणगहियागां, अगुओगजुगप्पहाणागां ॥४८॥ सुकुमालकां मलतले, तेसि पणमामि लक्खगपसत्थे। पाए पावयग्रीगां, पिडच्छयसयएहिं पिणवहए ॥४६॥ जे अने भंगवंते, कालियसुय-त्राणुत्रोगिए धीरे। ते पर्णासिङण सिरसा, नागास्स परूवर्गं वोच्छं ॥५०॥

मेरुतुङ्गस्थविरावली—

*सूरि बिलस्सह साई, सामज्जो संहिलो य जीयधरो। श्रज्जसमुद्दो मंगू, नंदिल्लो नागहत्थी य ॥ रेवई सिंहो खदिल, हिमवं नागज्जुमा य गोविंदा। सिरिभृइदिन-लोहिच, दूसगियामो य देवछ्ढी ॥ क्षेपुत्तत्थ-रयमाभरिए, खम-दम-मद्दवगुमोहिं संपन्ने । देविछ्छसमासमम्मे, कामवगुत्ते पिम्बमामि ॥ 44.6

श्रोतुश्चतुर्दशहरान्तानि— सेल्-घण³-कुडग³-चालिणि³, प्रतिसमाम ⁸-वैस³-स्रदिस⁸-से

परिषुषणग -हंस'-महिस -मेसे य । मसग -जलूग -विराली , जाहग -गो -मेरि अभीरी ।।१॥

त्रिविधा परिषदा—

सा समासभो तिविहा परणत्ता, तं जहा—

जािणया, श्रजािणया, दुव्वियस्**दा** । जािणया जहां—

खीरमिव जहा हंसा, जे घुट्टंति इह गुरुगुगुसमिद्धा।

दोसे श्र विवन्जंती, तं जाग्यसु जाग्यियं परिसं ॥२॥ श्रजागिया जहा—

जा होइ पगइ-महुरा, सियछावय-सीह-कुक्कुडयभूत्रा। रयणमिव असंठविज्ञा, अजाणिया सा भवे परिसा ॥३॥

दुव्वियस्टा जहा— न य कत्थइ निम्माश्रो, न य पुच्छइ परिमवस्सदोसेणं। वित्थिव्व वायपुराणो, फुट्टइ गामिल्लय विभट्टो ॥४॥

पञ्चविधंज्ञानम्— सत्तं १

सुज्ञं १ · , नागां पंचिवहं परणिनं, तं जहा—

१ त्राभिनिगोहियनागां, २ सुयनागां, ३ त्रोहिनागां,

४ मणपजननारे ४ केवलनार्णं। सुत्तं २ तं समासश्रो दुविहं परणतं, तं जहा— १ पचक्खं च, २ परोक्खं च।

सुर्च ३ से किं तं पचक्खं ?
पचक्खं दुविहं पएण्चं,
तं जहा—
१ इंदिय-पच्चक्खं, २ नोइंदिय-पच्चक्खं।

सुतं ४ से किं तं इंदिय-पञ्चक्खं १ इंदिय-पञ्चक्खं पंचिवहं पराणतं, तं जहां— १ सोइंदिय-पञ्चक्खं, २ चिक्खदिय-पञ्चक्खं,

> ३ घाणिदिय-पच्चक्खं, ४ जिब्भिदिय-पच्चक्खं, ५ फासिदिय-पच्चक्खं,

से त्तं इंदिय-पच्च**क्खं**।

सुर्च ५ से कि तं नोइंदिय-पञ्चक्खं ?

नो इंदिय-पञ्चक्खं तिविहं पर्मणत्तं,
तं जहा—

१ श्रोहिनाम-पञ्चक्खं,
२ मणपज्ञवनाम-पञ्चक्खं,
३ केवलनाम-पञ्चक्खं।

ऋवधिज्ञानम्-

सत्तं ६ से कि तं श्रोहिनागा-पच्चक्खं ? श्रोहिनाण-पच्चक्खं दुविहं पएण्तं,

तं जहा----

से किं तं भव-पच्चइयं ?

सुत्तं ७ भव-पच्चह्यं दुएहं,

तं जहा---१ देवागा य, २ नेरइयाण य।

सुत्तं ⊏ खात्रोवसियं दुएहं,

तं जहा-१ मणुस्साग य,

श्रहवा गुणपडिवन्नस्स अगगारस्स-स्रोहि-नागं सम्रूपजइ,

सुसं ६

तं समासत्रो छिन्नहं प्राचित्रं तं जहा---

३ वड्डमाणयं, ४ हीयमाणयं, ५ पहिंवाइयं, ६ अप्पिडवाइयं।

१ भव-पन्चइयं च, २ खाश्रोवसमियं स ।

से कि तं खाओवसियं ?

२ पंचिदियतिरिक्खजोणियाण य। को हेऊ खाद्योवसामियं ?

खात्रोवसामियं-तयावरणिजायां कम्मा सं उदिएणाणं खएणं, ऋणुदिएणासं उवसमेसं श्रोहिनाग्यं सम्रुप्पन्जइ।

१ त्राणुगामियं, २ त्राणाणुगामियं,

नंदीसुत्तं से कि तं आणुगामियं श्रोहिनाणं ? सुत्तं १० त्राणुगासियं ओहिनाणं दुविहं प्र**ण्यातं**, तं जहा---

१ श्रंतग्यं च २ सन्भगयं च । से कि तं अंतगयं ?

श्रंतगयं तिविहं पराणतं, तं जहा--

१ पुरश्रो श्रंतगयं, २ मग्गञ्जो अंतग्यं, ३ पासस्रो स्रंतगयं। से किं तं पुरस्रो संतगयं ?

(१) पुरश्रो श्रंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे, उकं वा, चडुलियं वा, ख्रलायं वा,

मिशा वा, पहेर्व वा, जोई वा, पुरश्रो काउं पणुल्लेमाखे पणुल्लेमाखे गच्छेजा, से तं पुरशो श्रंतगयं। से किं तं मगाओ अंतगयं ?

से तं मग्गश्रो झंतगयं।

(२) मग्राञ्जो श्रंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे, उर्क वा, चडुलियं वा, श्रलायं वा, सणि वा, पईवं वा, जोइं वा, मग्गश्रो काउं अणुकड्ढेमाग्रे अणुकड्ढेमाग्रे गन्बेजा, (३) से कि तं पासस्रो श्रंतगयं ? पासओ श्रंतगयं-से जहानामए केइ पुरिसे, उकं वा, चढुलियं वा, अलायं वा, मिं वा, पईवं वा, जोइं वा, पासत्रो काउं परिकड्ढेमाणे परिकड्ढेमाणे गच्छिजा, से तं पासत्रो श्रंतगयं। से तं श्रंतगयं। से कि तं मज्यस्ययं ? मज्यायं—से जहानामए केइ पुरिसे, उकं वा, चडुलियं वा, अलायं वा, मणि वा, पईवं वा, जोइं वा, मत्थए काउं समुन्बह्माणे समुन्बह्माणे गन्छिन्जा, से त्तं मज्भगयं। श्रंतगयस्स य मन्भगयस्स य को पइविसेसी ? पुरस्रो स्रंतगएगां स्रोहिनागोगां पुरस्रो चेव संखिजाणि वा असंखिजाणि वा जोयणाई जागाइ, पासइ, मग्गन्नो त्रंतगएगं त्रोहिनागेगं मग्नन्नो चेव संखिजाणि वा असंखिजाणि वा जोयणाई जाणइ पासह, पासत्रो स्रंतगर्गं स्रोहिनाग्रेगं पासस्रो चेव संविजाणि वा असंविजाणि वा जोयणाई जाणह, पासइ, मज्मगएगां श्रोहिनागोगां सन्वश्रो समंता

संखिजाणि वा असंखिज्जाणि वा जोयणाइं जाणइ, पासइ,

से तं आणुगासियं ओहिनागं॥१०॥

गाहा---

Ę <u>]</u>

सु. ११ से कि तं त्रणाखुगामियं श्रोहिनाणं ? त्रणाखुगामियं श्रोहिनाणं—

से जहानामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइहाणं काउं तस्सेव जोइहाणस्स परिपेरंतेहिं,

तस्सेव जोइद्वाणस्स परिपरंतिहिं,
परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइद्वाणं पासइ,

श्रव्यतथगए न जाणइ, न पासइ, एनामेव श्रणाणुगामियं श्रोहिनागं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेजजाणि वा असंखेनजाणि वा

> जोयगाइं जागाइ, पासइ, अन्नत्थगए (न जागाइ) न पासइ। से त्रं अगागुगाभियं त्रोहिनागां।

संबद्घाणि वा असंबद्घाणि वा,

सुतं १२ से किं तं वड्हभाण्यं श्रोहिनाणं ?
वड्हमाण्यं श्रोहिनाणं—पसत्थेसु श्रज्भवसायद्वाणेसु

वहुमाणस्स वड्हमाणचरित्तस्स विसुज्ममाणस्स विसुज्ममाण—चरित्तस्स

जावइत्रा तिसमया-हारगस्स, सुहुमस्स पणगजीवस्स।

सन्वयो समंता योही वड्हइ।

श्रोगाहणा जहना, श्रोहिखित्तं जहनं तु ॥ १ ॥ सन्व-बहु-श्रगणिजीवा, निरंतरं जित्तयं मरिज्जंसु । खित्तं सन्वदिसागं, परमोही खित्त निदिद्वो ॥ २ ॥

श्रंगुलमावलियागं,भागमसंखिन्ज दोसु संखिन्जा। श्रंगुलमावलिश्रंतो, श्रावलिया श्रंगुलपुहुत्तं ॥३॥

हत्थंमि मुहुत्तंतो, दिवसंतो गाउत्रंमि बोद्धको। जोयण दिवसपुहुत्तं, पक्खंतो पन्नवीसात्रो ॥ ४ ॥ भरहंिम श्रड्ढमासो, जंबुद्दिवंिम साहिश्रो मासो। वासं च मणुयलोए, वासपृहुत्तं च रुयगंमि ॥ ४ ॥ संखिज्जंमि उ काले, दीवसमुद्दा वि हूंति संखिज्जा। कालंमि त्रसंखिन्जे, दीवसमुदा उ भइयन्वा ॥६॥ काले चउएह बुड्ढी, कालो भइअन्बु खित्तबुड्ढीए। बुड्हीए द्व्वपद्जव, भइ्यव्वा खित्तकाला उ ॥ ७ ॥ सुहुमो य होइ कालो, तत्तो सुहुमयरं हवइ खित्तं। श्रंगुलसेढीमित्ते श्रोसप्पिगित्रो श्रसंखिन्जा ॥ = ॥ से त्तं वड्ढमाण्यं श्रोहिनाणं। - सुत्तं १३ से किं तं हीयमाणयं श्रोहिनाणं ? हीयमाण्यं श्रोहिनाणं — श्रप्पसत्थेहिं श्रज्भवसायद्वाणेहि वट्टमाणस्स वट्टमाण चरित्तस्स, संकिलिस्समाग्रस्स, संकिलिस्समाग्य-चरित्तस्स सन्वश्रो समंता त्रोही परिहायइ, से तं हीयमाणयं श्रोहिनाणं। से किं तं पडिवाइ श्रोहिनाणं ? सुत्तं १४ पडिवाइ-श्रोहिनाणं जहनेणं श्रंगुलस्स श्रसंखिडजइ भागं वा, संखिडजइ भागं वा बालग्गं वा, बालग्गपुहुत्तं वा, लिक्खं वा, लिक्खपुहुत्तं वा, जूर्य वा, जूयपुहुत्तं वा, ञष्पुहुत्तं वा, जर्व वा,

्र अगुलं वा. अंगुलपुहुत्तं वा, पार्य वा, पायपुहुत्तं वा, विहरिथ वा, विहरिथपुहुत्तं वा, रयणि या, रयणिपुहुत्तं वा, कुचिछ या, कुच्छिपुहुत्तं वा, घगुं वा, घणुपुहुत्तं वा, गाउँयं वा, गाउयपुहुत्तं वा, जोयणं वा, जोयणपृहुत्तं वा, जोयगसयं वा, जोयणसयपुहुत्तं वा, जोयगसहस्सं वा, जोयणसहस्सपुहुत्तं वा, जीयणलक्खं वा, जीयणलक्खपुहुत्तं वा, जोयग-कोडिं वा, जोयग-कोडिपुहुत्तं वा, जोयग्-कोडाकोडिं वा, जोयग्-कोडाकोडिपुहुतं वा, 🖂 जोयग्-संखेडनं वा, जोयग्-संखेडनपुहुतं वा, जोयग्-त्रसंखेड्जं वा, जोयग्-त्रसंखेड्जपुहुत्तं वा, उक्तोसेगां लोगं वा पासित्तागां पडिवइ्डजा, से तं पडिवाइ श्रोहिनागां।

सु. १५ से कि तं अपिडवाइ-ग्रोहिनाणं ? अपिडवाइ-श्रोहिनाणं—जेश ग्रलोगस्स एगमवि— श्रागास-पएसं जाणइ, पासइ, तेशा परं श्रपिडवाइ-श्रोहिनाणं। अ से तं श्रपिडवाइ-श्रोहिनाणं।

सु. १६ तं समासत्रो चउन्विहं पर्णतं, तं जहा—— दन्वत्रो, खेत्तत्रो, कालश्रो, भावश्रो। तत्थ दव्वश्रो गं श्रोहिनाणी—

जहनेणं अणंताइं रूविदन्वाइं जाणइ, पासइ, उकोसेणं सन्वाइं रूविदन्वाइं जाणइ, पासइ।

खित्तश्रो एं श्रोहिनाणी-

जहन्नेग अंगुलस्स असंखिज्जइभागं जाणइ, पासइ, उकोसेणं असंखिज्जाइं श्रलोगे लोगप्यमाग्यमित्ताइं खंडाइं जाग्रइ, पासइ।

कालश्रो गं श्रोहिनागी-

जहन्नेर्णं त्रावलियाए त्रसंखिज्जइमागं जागाइ, पासइ, उक्तोसेगां असंखिज्जाच्यो उस्सिष्णाच्यी व्यवसिष्णाच्यो

ऋईयमणागयं च कार्ल जाणइ, पासइ। भावत्रो गं त्रोहिनागी---जहन्नेगां ऋगांते भावे जागाइ, पासइ,

> उक्तोसेण वि अर्णते भावे जाणइ, पासइ, सन्वभावाणमणंतभागं जाणइ, पासइ।

— स्रोही भवपचइस्रो, गुगापचइस्रो य वरिगास्रो दुविहो । तस्स य बहु विगप्पा, दन्वे खित्ते अ काले य ॥६॥

नेरइय-देव-तित्थंकरा य, त्रोहिस्स ऽवाहिरा हुंति । पासंति सन्वत्रो खल्ल, सेसा देसेण पासंति ॥१०॥ से तं श्रोहिनाण-पचक्खं।

सु. १७ से किं तं मण्यज्जवनाणं १

मणपज्जवनायो एां भंते ! किं मणुस्सायां उप्पन्जइ, अमणुस्सायां ? गोयमा ! मणुस्साणं, नो श्रमणुस्साणं ।

जइ मणुस्सागां, किं सम्मुच्छिम-मणुस्साणं, गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं ? गोयमा ! नो संग्रुच्छम-मणुस्साणं, गब्भवक्कंतिय-मणुस्सागां उप्पन्जइ। जइ गब्भवक्कंतिय मणुसाणं, किं कम्ममूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, श्रकम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, श्रंतरदीवग गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं ? गोयमा! कम्मभूमिय नो श्रकम्मभूमिय नो अंतरदीवग जइ कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्सागं, कि संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं, **श्रमंखि**ज्ज गोयमा! संखिज्जवासाउय " नो श्रसंखिज्ज ,, " 11 जइ संखिज्जवासाउय कम्मभूमिय ग्रन्भवकंतिय मणुस्सार्गं, किं पज्जत्तग संखेजजवासाउय अपज्जत्तग ्गोयमा ! पन्जत्तग नो अपन्नत्तग " 17 " " जइ पन्जत्तग संखेन्जवासाउय कम्मभूमिय गन्भवस्कंतिय मणुस्सागं किं सम्मदिहिपज्जित्तग मिच्छदिष्टि ,, "

सम्मामिच्छदिहि,, ,,

तं समासत्रो चउव्वहं पएण्तं, तं जहा-दन्वश्रो, खित्तश्रो, कालश्रो, भावश्रो। तत्थ दच्वत्रो गां उज्जुमई त्रगांत त्रगांतपएसिए खंधे जागाइ, पासइ, तं चेव विउलमई , अन्महियतराए, विउलतराए-विसुद्धतराए, वितिमिरतराए जागाइ, पासइ। वित्तत्रो णं उज्जुमई य जहन्नेणं श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइमार्ग उक्कोसेणं अहे जाव इमीसे रयणप्यभाए पुढवीए--उवरिमहेद्विल्ले खुंडुगपयरे, उड्ढं-जाव-जोइसस्स उवरिमतले, तिरियं-जाव-अंतोमगुप्सिखत्ते **अड्ढाइन्जेसु दीवंससुदेसु** पन्नरससु कम्मभूमिसु, तिसांए श्रकम्मथूमिसु छप्पनाए अंतरदीवगेसु सन्निपंचिदियाणं पञ्जत्तयाणं मणोगए भावे जाणइ, पासइ, तं चेव विउलमई अड्ढाइन्जेहिं अंगुलेहिं अब्महियतरं विउल्तरं, विसुद्धतरं वितिमिरतरागं खेत्तं जाणइ, पासइ।

कालग्रो गं उन्जुमई— जहन्नेगं पलिग्रोवमस्स श्रसंखिन्जयभागं श्रतीयमगागयं वा कालं जाणइ, पासइ,

तं चेव विउल्तमई अन्महियतरागं, विउल्तरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जाणइ, पासइ।

भावश्रो गं उज्जुमई श्रगंते भावे जागाइ, पासइ, सन्वभावागं श्रगंतभागं जागाइ, पासइ,

तं चेव विउलमई अन्महियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं वितिमिरतरागं जागाइ, पासइ। गाहा— मण्यज्जवनायां पुण, जणमण्यरिचिति अत्थपागड्यां। माणुसखित्तनिवद्धं, गुण्यचङ्गं चरित्तवश्रो॥१॥ से तं मण्यज्जववार्याः।

्र प्रचारणप्यास्य । ⊶स्र. १६ से किं तं केवलनायां ?

> केवलनायां दुविहं परागतं, तं जहा-

(१) मवत्थकेवलनायां च।

(२) सिद्धकेवलनाएां च । से किं तं भवत्थकेवलनाएां ?

भवत्यकेवलनायां दुविहं पयणत्तं, तं जहा—

(१) सजोगिभवत्थकेवलनाणं च,

(२) अजोगिभवत्थकेवलनाएां च।

से किं तं सजोगिभवत्यकेवलनाणं ? सजोगिभवत्थकेवलनाणं दुविहं पएग्रचं,

तं जहा---

(१) पढमसमय-सजोगि-भवत्थकेवलनाएां च

(२) अपढमसमय-सजीगि-भवत्थकेवलनारां चा

ग्रहवा----

(१) चरमसमय-सजोगी-भवत्थकेवलनाण च

(२) श्रचरमसमय-सजोगी-भवत्थकेवलनार्णं च।

से त्तं सजोगिभवत्थक्रेवलनाएां।

से किं तं अजोगिमवत्थकेवलनाणं ? अजोगिमवत्थकेवलनाणं दुविहं पण्णत्तं,

तं जहा----

```
(१) पहमसमय-अजोगि-भवत्थकेवलनाएां च
         (२) अपहमसमय-अजोगि-भंवत्थकेवलनाएां च।
         श्रहवा---
         (१) चरमसमय-त्रजोगि-भवत्थकेवलनाणां च
         (२) अचरमसमय-अजोगि-मवत्थकेवलनाएां च ।
         से तं त्रजोगिभवत्थकेवलनागां।
         से तं भवत्थकेवलनाएां।
सुत्तं २० से किं तं सिद्धकेवलनाएां ?
         सिद्धकेवलनायां दुविहं परणत्तं,
         तं जहा---
         (१) श्रगांतरसिद्धकेवलनागां च
         (२) परंपरसिद्धकेवलनागां च।
सुत्तं २१ से किं तं अणंतरसिद्धकेवलनाणं १
         श्रगांतरसिद्ध केवलनागां पएण्रसविहं पएण्नं,
         तं जहा---
           १ तित्थसिद्धा २ त्र्यतित्थसिद्धा
           ३ तित्थयरसिद्धा ४ त्र्रातित्थयरसिद्धा
           ५ सयं बुद्धसिद्धा ६ पत्तेयबुद्धसिद्धा
          ७ बुद्धबोहियसिद्धा
          ८ इत्थिलिंगसिद्धा ६ पुरिसलिंगसिद्धा
         १० नपुंसकलिंगसिद्धा
         ११ सलिंगसिद्धा १२ त्रत्रलिंगसिद्धा
         १३ गिहिलिंगसिद्धा
         १४ एगसिद्धा १४ त्रयोगसिद्धा
         से तं अणंतरसिद्ध-केवलनाणं ?
```

सुत्तं २२ से किं तं परंपरसिद्ध केवलनाणं ? परंपरसिद्ध केवलनागं त्रगोगविहं पएगात्तं, तं जहा---**श्रप**ढमसमयसिद्धा, दुसमयसिद्धा, तिसमयसिद्धा, चडसमयसिद्धा जाव दससमयसिद्धा **संखिज्ज सम**यसिद्धा, श्रमंखिज्ज समयसिद्धा, श्रग्ंत समयसिद्धा, से तं परंपरसिद्ध केवलनाणं। से त्तं सिद्धकेवलनाणं। तं समासश्रो चउन्त्रिहं पएण्चं, तं जहा-दव्वत्रो, खित्तत्रो, कालत्रो, भावत्रो । तत्थ द्व्वत्रो गां केवलनागाी सव्वद्व्वाई जाणइ पासइ। खित्तश्रो गां केवलनागाी सन्वं खित्तं जागाइ पासइ । कालत्रो गां केवलनागाी सच्चं कालं जागाइ पासइ। भावत्रो गां केवलनागी सन्वे भावे जागाइ पासइ। गाहा- अहसव्वेदव्य परिणाम-भावविष्णत्ति कारणमण्तं। सास यम प्य डिवाई, एग विहं केवलनाणं ॥ १॥ ▶सतं २३ गाहा— केवलनायोणऽत्थे, नाउं जे तत्थ पराग्वणजोगे। ते भासइ तित्थयरो, वइजोगसुत्रं हवइ सेसं ॥२॥ से तं केवलनाणं। से सं नोइंदियपच्चक्खं।

से तं पञ्चक्खनाणं ।

`नंदीसुत्त [मतिज्ञानम् २६६] सुत्तं २४ से किं तं परुक्खनाएां ? परुक्खनायां दुविहं पर्णत्तं, तं जहा-

(१) त्राभिणिबोहियनागापरुक्खं च (२) सुयनाग्यपरुक्खं च। जत्थ त्रामिणिबोहियनाणां तत्थ सुयनाणां, जत्थ सुयनाणं तत्थ त्राभिनिगोहियनाणां। दो वि एयाइं अएगामएगामगुगयाइं, तहवि पुण इत्थ आयरिआ नाणतं पएणविंति — श्रभिणिबुज्भइ ति श्राभिणिबोहियनाणां, सुणेइ त्ति सुयं, मइपुन्वं जेगा सुत्रां, न मई सुयपुन्विया । सुतं २५ त्रविसेसिया मई--मइनाएां च मइत्रएणाएां च। विसेसिया---सम्मदिद्विस्स मई मइनाणां, मिच्छादिद्विस्स मई मइ-श्रन्नाएां। श्रविसेसियं सुयं—सुयनाएां च सुयश्रनाएां च। विसेसियं सुग्रं-सम्मदिद्विस्स सुत्रं सुयनाणं, मिच्छिदिद्विस्स सुत्रं सुय-त्रनाएां। सुत्तं २६ से किं तं आभिणिबोहियनाणं ? श्राभिणिबोहियनाएां दुविहं पएण्तं,

तं जहा-१ सुयनिस्सियं च, २ त्रसुयनिस्सियं च। Ĺ

से किं तं श्रसुयनिस्सियं ? श्रसुयनिस्सियं चडिवहं पएणत्तं, तं जहा—

गाहा-उप्पत्तिया वेण्ड्या , कम्मया परिणामिया । बुद्धी चउविवहा बुत्ता, पंचमा नोवलव्मइ ॥१॥ पुन्तमदिद्वमस्सुय, मनेइयं तक्खण्विसुद्धगहियत्था अन्वाहयफलजोगा, बुद्धी उप्पत्तिया नाम ॥ १॥ भरहसिल भिढ कुक्कुड तिल भवालुय हित्थ अगड विणसंडे। पायस अइआ े पने े, खाडहिला पंचिपयरो व ॥ २॥ भरहसिल' पिण्ये रुक्खें, खुडुग' पड सरड काय उचारे । गय भ्वयण 'भोल' खंभे', खुडुग भिग 'हिथ 'पइ 'धुत्ते '।। ३।। महुसित्य " मुह्दि" श्रंके", नाणए" भिक्खु चेडगनिहाणे "। सिक्खा र अत्थसत्थे , इच्छा य सहं सयसहस्से र ॥ ४॥ भरनित्थरग्रसमत्था, तिच्वग्ग-सुत्तत्थ-गहिय-पेयाला । उमस्रो लोग फलवई, विण्यसमुत्था हवइ बुद्धी ॥१॥ निमित्तं श्रत्थसत्थे श्र लेहं गिशए अक्व सूव अस्ते य। गद्म " लक्ख्या पंठी अगए" रहिए" य गिया या ।। २ ॥ सीत्रा साडी दीहं च तणं, श्रवसन्वयं च कुंचस्स"। निन्वोदए य गोणे, घांडग-यडएां च रुक्खाश्री ।। ३॥ उ व श्रो ग-दि इ सा रा, कम्म-पसंग-परिघोलण-विसाला। फलवई कम्मसमुत्था हदइ चुद्धी ॥१॥ हेरिएणए' करिसए', कोलिअं डोवें य मुत्तिं वयं पवएं। तुमाएं, वड्हई पूयइं य घडं चित्तकारं य ॥२॥

श्रणुमाण-हेउ-दिद्वंत-साहिया वय-विवाग-परिणामा हियनिस्सेयसफलवई, बुद्धी परिगामिया नाम ॥१॥

श्रमए सिट्ठि कुमारे देवी उदिश्रोदए हवइ राया ।

साहू य नंदिसेगो धणदत्ते सावग अमच्चे ॥२॥ स्तमए अमचपुत्ते वाणक्के चेव थूलमहे य।

ना सिक सुंद रिन दे वहरे वहरे परिणामित्रा बुद्धीए ॥ ३॥

चलणाहर्ण व्यामंडे अमर्गि यसपे वस्पे यख्गी थू सिंदे वे रहे। पारिगामिय-बुद्धीए एवमाई उदाहरगा ॥ से तं श्रस्सुयनिस्सियं।

> सुयनिस्सियं चउव्विहं पराणत्तं, तं जहा---उग्गहे, ईहा, अवात्रो, धारगा।

सुतं २७ से किं तं उगाहे ?

उगाहे दुविहे प्राणत्ते,

से किं तं सुयनिस्सियं ?

तं जहा---अत्थुगाहे य वंजग्रुगाहे य।

सुत्तं २८ से किं तं वंजखुग्गहे ? वंजगुमाहे चडिवहे पएण्ते तं लहा--

> (१) सोइंदिय वंजगुग्गहे (२) वाणिदिय वंजगुग्गहे, (३) जिब्भिदिय वंजगुरगहे (४) फासिंदिय वंजगुरगहे।

से सं वंजगुग्गहे।

```
सुत्तं २६ से किं तं श्रत्थुग्गहे ?
```

श्रत्थुग्गहे छव्विहे प्राण्ते, तं जहा---

१ सोइंदिय-अत्थुग्गहे २ चिंखदिय-श्रत्थुगाहे ३ घाणिदिय-श्रत्थुग्गहे ४ जिन्भिदिय-श्रत्थुगाहे

५ फासिंदिय-अत्थुग्गहे ६ नोइंदिय-ऋत्युग्गहे ।

सुतं ३० तस्स एां इमे एगड्डिया नाणाघोसा नाणावंजणा पंच नामधिज्जा भवंति, तं जहा---

> १ श्रोगेएहण्या २ उवधारशया

३ सवग्या ४ अवलंबग्रया ५ मेहा।

से सं उग्गहे।

सुचं ३१ से किं तं ईहा ? ईहा छन्विहा पराणत्ता, तं जहा-

> (१) सोइंदिय-ईहो (२) चिंखदिय-ईहा (३) घाणिदिय-ईहा (४) जिन्भिदिय-ईहा

(५) फासिंदिय-ईहा (६) नो इंदिय-ईहा ।

पंच नामधिन्ना भवंति,
तं नहा—
१ श्राभोगग्या २ मग्गण्या
३ गवेसण्या ४ चिंता ५ विमंसा।
से तं ईहा।

(१) सोइंदिय-ग्रवाए (२) चिक्ंबिदिय-ग्रवाए

सुत्तं ३२ से किं तं अवाए ? अवाए छिन्विहे पएणात्ते, तं जहा---

> (३) घाणिदिय-अवाए (४) जिन्मिदिय-अवाए (५) फासिदिय-अवाए (६) नो-इंदिय-अवाए, तस्सणं इमे एगद्विया नाणाघोसा नाणावंजणा पंचनामधिज्जा भवंति, तं जहा— १ आउट्टणया २ पचाउट्टणया

३ अवाए ४ बुद्धी ४ विग्णागो ।

सुत्तं ३३ से किं तं घारणा ? धारणा छन्विहा परण्याः; तं जहा—

पंचनामधिज्जा भवंति,

से तं अवाए।

(१) सोइंदिय-धारणा (२) चिक्खिदिय-धारणा (३) घाणिदिय-धारणा (४) जिन्मिदिय-धारणा (५) फोसिदिय-धारणा (६) नो-इंदिय-धारणा। तीसेणं इमे एगडिया, नाणाघोसा, नाणावंजणा

तं जहा— १ घरणा २ घारणा ३ हवणा ४ पइट्टा ४ कोट्टे। से त्तं घारणा।

सुत्तं ३४ उग्गहे इक्कसमइए, श्रंतोम्रहुत्तिया ईहा, श्रंतोम्रहुत्तिए श्रवाए, धारणा संखेज्जं वा कालं श्रसंखेज्जं वा कालं।

सुत्तं ३५ एवं श्रहावीसइविहस्स श्राभिणिवोहियनाणस्स वंजणुग्गहस्स परूवणं करिस्सामि पिडवोहगिद्धंते णं मल्लगिद्धंतेणं य । से किं तं पिडवोहगिद्धंतेणं ? पिडवोहगिद्धंतेणं—से जहा नामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं सुत्तं पिडवोहेज्जा 'श्रम्भुगा श्रम्भुगित्त'' ? तत्थ चोयगे पन्नवगं एवं वयासी— किं एगसमयपिद्धा पुग्गला गहणमागच्छंति ? दुसमयपिद्धा पुग्गला गहणमागच्छंति ? जाव— दससमयपिद्धा पुग्गला गहणमागच्छंति ? संखिज्जसमय पिद्धा पुग्गला गहणमागच्छंति ?

> त्रसंखिज्जसमय पविद्वा पुग्गला गहणमागच्छंति? एवं वयंतं चोयगं पएणवए एवं वयासी— ''नो एगसमयपविद्वा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो दुसमयपविद्वा पुग्गला गहणमागच्छंति,

जाव--नो दससमयपविद्वा पुग्गला गहणमागच्छंति, नो संखिज्जसमयपविद्वा पुग्गला गहण्मागच्छंति श्रसंखिज्जसमयपविद्वा पुग्गला गहणमागच्छंति । से तं पडिबोहगदिद्वंते गां। से किं तं मन्लगृदि हंते गं ? मन्लगदिद्वंते गां—से जहानामए केइ पुरिसे आवागसीसाओं मल्लगं गहाय तत्थेगं उदगबिंदुं पक्खेविज्जा से नहे, अएगोवि पिक्खत्ते सेऽवि नद्दे, एवं पिक्खणमार्गेसु पिक्खणमार्गेसु होही से उदगबिंदू, जे गां तं मल्लगं रावेहिइ ति, होही से उदगविंदू, जे गां तंसि मन्लगंसि ठाहिति, होही से उदगविंदू, जे गं तं मल्लगं भरिहित्ति, होही से उदगविंदू, जे गां तं मल्लगं पवाहेहिति। एवामेव पविखप्पमागोहिं पविखप्पमागोहिं त्रणंतिहिं पुग्गलेहिं जाहे तं वंजणं पूरियं होइ ताहे 'हुं' ति करेइ, नो चेव गां जागाइ ''के एस सद्दाइ'' ? तश्रो ईहं पविसइ तश्रो जागंइ ''श्रमुगे एस सदाइ''। तत्रो त्रवायं पविसइ तश्रो से उवगयं हवइ। तस्रो धारगं पविसइ, तत्रो गं धारेइ संखिज्जं वा कालं त्र्रसंखिज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे अञ्चत्तं सहं सुणिज्जा, तेगां सहो ति उगाहिए नो चेव गं जागाइ, 'के वेस सदाइ ?' तत्रो ईहं पविसइ, तश्रो जागाइ 'त्रमुगे एससदे ।'

तत्रो त्रवायं पविसइ, तत्रो से उवगयं हवइ।

तस्रो धारणं पविसइ, तत्रो गां धारेइ संखिडजं वा कालं श्रसंखेडजं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे-श्रव्यत्तं रूवं पासिज्जा, तेणं रूवे ति उग्गहिए, नो चेव गां जागाइ 'के वेस रूव ति' ? तत्रो ईहं पविसइ, तत्रो जाण्ड 'त्रप्रुगे एस रूवे'। तत्रो त्रवायं पविसइ, तत्रो से उवगयं हवइ। तत्रो धारगं पविसइ, तश्रो र्णं धारेइ संखेज्जं वा कालं श्रसंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे श्रवत्तं गंधं श्रग्धाइन्जा, तेगां गंधं त्ति उग्गहिए नो चेव गां जाणइ 'के वेस गंधे ति' ! तस्रो ईहं पविसइ, तस्रो जाणइ ''स्रमुगे एस गंधे''। तत्रो श्रवायं पविसइ, तत्रो से उवगयं हवइ। तस्रो धारणं पविसइ. तस्रो गं धारेइ संखेज्जं वा कालं श्रसंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे-अव्वत्तं रसं आसाइन्जा, तेर्ण रसो ति उग्गहिए, नो चेव गां जागाइ 'कि वेस रसो ति"? तत्रो ईहं पविसइ, तत्रो जागाइ "श्रमुगे एस रसे"। तस्रो स्रवायं पविसइ, तस्रो से उवगर्य हवइ। तस्रो धारगं पविसइ, तस्रो गं धारेइ संखेटनं वा कालं स्रसंखेटनं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे-श्रव्यत्तं फासं पडिसंवेइन्जा, तेणां फासेत्ति उग्गहिए

नो चेव गां जागाइ ''के वेस फासो ति ?'' तस्रों ईहं पविसइ, तस्रो जागाइ ''श्रमुगे एस फासे।'' तस्रो स्रवायं पविसइ, तस्रो से उवगयं हवइ तत्रो धारणं पविसइ, तश्रो एां धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं। से जहानामए केइ पुरिसे-श्रव्यत्तं सुमिगां पासिन्जा, तेगां सुमिगो ति उग्गहिए, नो चेव गां जागाइ 'के वेस सुमिणो ति ?' तस्रो ईहं पविसइ, तस्रो जागइ 'श्रमुगे एस सुमिगे।' तस्रो स्रवायं पविसइ, तस्रो से उवगयं हवइ। तस्रो धारणं पविसइ, तश्रो गां धारेह संखेज्जं वा कालं, श्रसंखेज्जं वा कालं। से तं मल्लगदिइंते गां। सुत्तं ३६ तं समासत्रो चउव्विहं पर्णात्तं, तं जहा-१ दन्वस्रो, २ खित्तस्रो, ३ कालस्रो, ४ भावस्रो ।

सन्वाइं दन्वाइं जागाइ न पासइ।
खेत्तळो गां श्राभिगिवोहियनागी श्राएसेगां सन्वं
खेत्तं जागाइ, न पासइ।
कालळो गां श्राभिगिवोहियनागी श्राएसेगां सन्वं
कालं जागाइ, न पासइ।

तत्थ दव्वश्रो गं श्राभिगिबोहियनागी श्राएसेगं

भावत्रो गं त्राभिणिवोहियनागी त्राएसेगं सन्दे भावे जागाइ, न पासइ।

उग्गह ईहाऽवात्रो य, धारणा एव हुंति चत्तारि। आभिशिबोहियनाग्रस्स, भेयवत्थू समासेगं ॥१॥ अत्थागां उग्गहणंमि, उग्गहो तह वियालगो ईहा। ववसायम्मि अवात्रो, धरणं पुण धारणं विति ॥ २॥ उगाह इक्कं समयं, ईहावाया मुहुत्तमद्धं तु। कालमसंखं संखं च, धारणा होइ नायव्वा ॥३॥ पुट्टं सुगोइ सदं, रूवं पुगा पासइ अपुट्टं तु। गंधं रसं च फासं च, बद्धपुट्टं वियागरे ॥ ४॥ भासासमसेढी ह्यो, सदं जं सुण्इ मीसियं सुण्इ। वीसेढी पुरा सदं, सुराह नियमा पराघाए ॥ ४॥ ईहा अपोह वीमंसा, मग्गणा य गवेसणा। सना सई मई पन्ना, सन्वं त्राभिषिनोहियं ॥६॥ से तं श्राभिणिबोहियनाग-परोक्खं । से तं महनाणं। श्रतज्ञानम्-

सुर्च ३७ से कि तं सुयनाणपरोक्खं ?
सुयनाणपरोक्खं चोइसविहं पर्णण्तं,
तं जहा—
१ अक्खरसुर्यं, २ अणक्खरसुर्यं,
३ सर्णिणसुर्यं, ४ अस्पिणसुर्यं,
५ सम्मसुर्यं, ६ मिच्छासुर्यं,
७ साइ्यं, ८ अणाइ्यं,
६ सपज्जवसियं, १० अपज्जवसियं,

११ गमियं, १२ श्रगमियं,

१३ श्रंगपविद्धं, १४ श्रग्णंगपविद्धं ।

सुत्तं

सुत्तं ३८ (१) से किं तं अक्खरसुयं ? अक्खरसुयं तिविहं परणत्तं,

तं जहा—

१ सन्नक्खरं, २ वंजणक्खरं, ३ लिद्धिश्रक्खरं। (१) से किं तं सन्नक्खरं ?

सन्नक्खरं-अक्खरस्स संठाणागिई। से त्तं सन्नक्खरं।

(२) से किं तं वंजगक्खरं ? वंजगक्खरं—श्रक्खरस्स वंजगामिलावा ।

से त्तं वंजणक्खरं। (३) से किं तं लद्धि-श्रक्खरं ?

लिंद्रिश्रक्खरं-श्रक्खर-लिंद्रियस्स लिंद्र-श्रक्खरं समुप्पज्जह, तं जहा---

त जहा---१ सोइंदिय-लद्धि-श्रक्खरं, २ चिक्कंबिदय-लद्धि-श्रक्खरं,

३ घाणिदिय-लद्धि-श्रक्खरं, ४ रसणिदिय-लद्धि-श्रक्खरं, ५ फासिदिय-लद्धि-श्रक्खरं, ६ नोइंदिय-लद्धि-श्रक्खरं।

से त्तं लिद्धि-श्रक्खरं । से त्तं श्रक्खरसुयं ।

(२) से किं तं अणक्खरसुयं ? अणक्खरसुयं अगोगविहं परगात्तं, तं नहा— गाहा— ऊससियं नीससियं. निच्छूहं खासियं च छीयं च। निस्सिधियमणुसारं, अणक्खरं छेलियाईयं।। १।। से तं अणक्खरसुयं।

सुत्तं ३६ (३) से किं तं सिएणसुर्यं ? सिएणसुर्यं तिविहं परणत्तं,

तं जहा---

१ कालित्रोवएसेग्रं, २ हेऊवएसेग्रं, ३ दिद्विवात्रोवएसेग्रं। (१) से कि वं कालिकोलएसेग्रं १

(१) से किं तं कालिय्रोवएसेगां ? कालिय्रोवएसेगां-जस्स गां य्रत्थि ईहा, ख्रवोहो, मग्गणा,

गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से गां सएगी त्ति लब्भइ,

जस्स गां नित्थ ईहा, अवोहो, मग्गणा, गवेसणा, चिंता, वीमंसा, से गां असएगी चि लब्भइ।

से तं कालिओवएसेणं।

(२) से किं तं हेऊवएसेणं ?

हेउवएसेएां—जस्स गां अत्थि अभिसंधारणपुन्विया करणसत्ती से गां सएगी ति लब्भइ,

जस्स गां गात्थि अभिसंधारगापुन्विया करगासत्ती, से गां असएगी ति लब्भइ।

से त्तं हेऊवएसेर्गं।

(३-४) से किं तं दिट्टिवा श्रोव एसे गं?

दिद्विवात्रोवएसेगां—सिएणसुयस्स खत्रोवसमेगां—

सएगी लब्भइ, त्रसिएगसुयस्स खत्रोवमेगां— त्रसएगी लब्भइ। से तं दिद्विवात्रोवएसेगां। से तं सिग्गसुयं; से तं त्रसिग्गसुयं।

सुत्तं ४० (५) से किं तं सम्मसुयं १

सम्मसुयं—जं इमं श्रिरहंतेहिं भगवंतेहिं उप्पर्णनाणदंसग्धरेहिं, तेलुक्कनिरिक्खमहियपूइएहिं तीय-पडुप्पर्ण-मणागय जागएहिं सञ्बरणूहिं सञ्बद्रिसीहिं

तं जहा—

१ श्रायारो २ स्यगडो ३ ठाणं ४ समवाश्रो ५ विवाहपरागत्ती ६ नायाधम्मकहाश्रो

पणीयं दुवालसंगं गणिपडिगं,

७ उवसगदसाओ = अंतगहदसाओ ह अणुत्तरोववाइयदसाओ १० पण्हावागरणं ११ विवागसुयं १२ दिद्विवाओ।

१० पण्हापाणस्य १९ विषासस्य १२ दि। ह्वयात्रा इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं—

> चोइस पुन्विस्स सम्मसुयं, श्रभिएगादसपुन्विस्स सम्मसुयं,

तेगा परं भिएगोसु भयणा । से त्तं सम्मसुयं ।

सुत्तं ४१ (६) से किं तं मिच्छासुयं ?

मिच्छासुयं-जं इमं अएणाणिएहिं मिच्छादिद्विएहिं-सच्छंदबुद्धि-मइविगण्पियं,

तं जहा---

रा मा य गां, भीमासुरुक्खं, भारहं, कोडिल्लयं, सगडमिदयात्रो, खोडमुहं कप्पासियं, नागसुहुमं, कण्गसत्तरी, वइसेसियं, बुद्धवयगां, तेरासियं, काविलियं, लोगाययं, सद्वितंतं, माढरं, 🔻 पुरागां, वागरगां, भागवयं, पायंजलि, पुस्सदेवयं, लेहं, गणियं, सउण्रुयं, नाडयाइं, श्रहवा बावत्तरि कलाश्रो, चत्तारि य वेया संगोवंगा, एयाइं मिच्छादिद्विस्स मिच्छत्तपरिग्गहियाइं मिच्छासुयं। एयाई चेव सम्मदिद्विस्स सम्मत्तपरिग्गहियाई सम्मसुयं। श्रहवा मिन्छिदिहिस्स वि एयाई चेव सम्मसुयं। कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणश्रो ं जम्हा ते मिच्छदिड्डिग्रा

तेहिं चेव समएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खिदिट्ठीओ चयंति । से तं मिच्छासुयं। पुत्तं ४२ (७-८) से किं तं साइयं सपज्जवसियं ?

पुत्तं ४२ (७-८) से कि ते सिइय सपज्जवासय १ (६-१०) अग्रणाइयं अपज्जविसयं च १ इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं वुच्छित्तिनयद्वयाए साइयं सपज्जविसयं, अव्वुच्छित्तिनयद्वयाए अग्रणाइयं अपज्जविसयं। तं समासओ चडिव्वहं पराण्तं,

तं जहा---दव्वत्रो खेत्तत्रो कालत्रो भावत्रो तत्थ दन्वस्रो गां सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच-साइयं सपन्जवसियं, बहवे पुरिसे य पडुच अगाइयं अपन्जवसियं। खेत्तत्रो गां पंचभरहाई, पंचएरवयाई पडुच-साइयं सपज्जवसियं, पंचमहाविदेहाई पडुच-श्रगाइयं श्रपन्जवसियं । काल्र गां उस्सिपिशिं श्रोसिपिशिं च पहुच-साइयं सपज्जवसियं, नो उस्सिपिणि नो श्रोसिपिणि च पहुच-श्रगाइयं श्रपज्जवसियं। भावस्रो एं जे जया जिग्णपएगात्ता भावा श्राघविज्जंति, परण्यविज्जंति, परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति तया ते भावे पडुच्च साइयं सपज्जवसियं, सात्रोवसियं पुण भावं पडुच्च त्रणाइयं स्रपज्जवसियं। श्रहवा भवसिद्धियस्स सुयं साइयं सपन्जवसियं च, श्रभवसिद्धियस्स सुयं श्रणाइयं श्रपन्जवसियं च। सन्वागासपएसग्गं सन्वागासपएसेहिं त्रगांतगुणियं पज्जवक्खरं निष्फज्जइ, सव्वजीवाणं पि य णं-श्रक्खरस्स श्रगंतभागो निचुग्घाडिश्रो चिट्टइ।

जइ पुगा सो वि श्रावरिज्जा—

तेगा जीवो श्रजीवत्तं पाविज्जा---

'सुट्ठुवि मेहसमुद्ए, होइपमा चंदस्ररागां' से तं साइयं सपज्जवसियं। से तं श्रगाइयं श्रपज्जवसियं।

सुत्तं ४३ (११) से किं तं गमियं १ गमियं दिद्विवाश्रो।

> (१२) से किं तं अगिमयं ? अगमियं कालियं सुयं।

से त्तं गमियं, से त्तं अगमियं। श्रहवा तं समासश्रो दुविहं पएणत्तं,

तं जहा---

(१३-१४) १ ऋंगपविद्वं २ ऋंगबाहिरं च । से किं तं अंगवाहिरं ?

श्रंगबाहिरं दुविहं पएण्तं,

तं जहा---१ त्रावस्सयं च २ त्रावस्सयवइरित्तं च ।

(१) से किं तं त्रावस्सयं ?

त्रावस्तयं छन्विहं परागत्तं,

तं जहा---

१ सामाइयं २ चउवीसत्थत्रो ३ वंदणयं ४ पडिक्रमग्रं ५ काउस्सग्गो ६ पच्चक्खाग्रं।

से तं श्रावस्सयं।

(२) से कि तं अवस्सयवइरित्तं ? श्रावस्सयवइरित्तं दुविहं पएण्तं,

तं जहा---

१ कालियं च २ उकालियं च से किं तं उकालियं ? उक्कालियं त्रगोगविहं परागत्तं, तं जहा-दसवेत्रालियं', किप्पयाकिपयं', चुल्लकपसुयं^३ महाकपसुयं^४ उववाइयं रायपसेशियं जीवाभिगमो , परणवणां, महापरणवणां, पमायप्पमायंं, नंदी भे ऋणुओगदाराइं भे देविंदत्थञ्जो भे , तंदुलवेयालियं १४, चंदाविज्जयं १५, स्रप्णणत्ती १६, पोरिसिमंडलं³⁸, मंडलपवेसो³⁶, विज्जाचरणविणिच्छत्रो³⁸, गणिविज्जा ", साण्विभत्ती", मरण्विभत्ती", त्रायविसोही^{२३}, वीयरागसुर्यं^{२४}, संलेहणासुर्यं^{२५}, विहारकप्पो^{रह}, चरणविही^रँ, त्राउरपच्चक्खार्गं^{रह}, महापच्चक्खार्या^{२९}, एवमाइ । से चं उकालियं। से किं तं कालियं ? कालियं श्रगोगविहं पएगात्तं, तं अहा-उत्तरज्भयणाईं', दसात्रों', कप्पोंं, ववहारोंं, निसीहं^५, महानिसीहं^६, इसिभासियाइं^६, जंबूदीवपन्नत्तीं, दीवसागरपन्नत्तीं, चंदपन्नत्तीं,

खुड्डियाविमाण्विभत्तीं, महल्याविमाणविभत्तीं,

अंगचूलिया¹³ वग्गचूलिया¹³, विवाहचूलिया¹⁴,

अह्मणोववाए^{३६}, वरुगोववाए^{९७}, गरुलोववाए^{९८}, :

धरणोववाए³³, वेसमणोववाए³³, वेलंधरोववाए³³, देविंदोववाए³³, उद्घाणसुर्यं³³, समुद्धाणसुर्यं³⁴, नागपरियावणियात्रो³⁴, निरयावलियात्रो³⁴, कप्पियात्रो³⁴, कप्पवडंसियात्रो³⁴, पुष्फियात्रो³⁵, पुष्फचूलियात्रो³⁶, वर्णहोदसात्रो³¹,

त्रासीविस-भावणाणं¹, दिद्विविस-भावणाणं², सुमिण-भावणाणं³, महासुमिण-भावणाणं⁵ तेयग्गी निसग्गाणं⁴

एवमाइयाइं चडरासीइ पइन्नगसहस्साइं— भगवत्रो त्ररहत्रो उसहसाम्मिस्स त्राइतित्थयरस्स । तहा संखिज्जाइं पइन्नगसहस्साइं—मिन्समगाणं जिणवराणं । चोइसपन्नइगसहस्साइं भगवत्रो वद्धमाणसामिस्स,

श्रहवा जस्स जितया सीसा

उप्पत्तिश्राए, वेणइयाइ, कम्मयाए, पारिणामियाए चउन्विहाए बुद्धीए उववेया, तस्स तत्तियाई पइएणगसहस्साई । पत्तेश्रबुद्धा वि तत्तिया चेव । से तं कालियं । से तं श्रावस्सयवइरितं । से तं श्रणंगपविद्धं ।

सुत्तं ४४ से किं तं श्रंगपविद्वं ? श्रंगपविद्वं दुवालसविद्वं परणात्तं तं जहा-- १ श्रायारो २ स्यगडो ३ ठाणं
४ समवाश्रो ५ विवाहपन्नत्ती ६ ग्णायाधम्मकहाश्रो
७ उवासगदसाश्रो ८ श्रंतगडदसाश्रो ६ श्रग्रुत्तरोववाइयदसाश्रो
१० पण्हावागरणाई ११ विवागसुयं १२ दिष्टुवाश्रो।

सुर्च ४५ से कि तं आयारे ? श्रायारे गां समणागां निग्गंथागां श्रायार-गोयर-विणय-वेगाइय-सिक्खा-भासा-श्रभासा-चरग-करग्ग-जाया-माया-वित्तित्रो श्राघविज्जंति । से समासत्रो पंचविहे पंएगातं. तं जहा---१ नाणायारे २ दंसणायारे ३ चरित्तायारे ४ तवायारे ५ वीरिवायारे । श्रायारे गं परित्ता वायसा, संखेज्जा अणुत्रोगदारा, संखिज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जात्रो निज्जुत्तीत्रो, संखिज्जास्रो पहिवत्तीस्रो, से अंगद्वयाए पढमे श्रंगे, दो सुयक्खंधा, पणवीसं श्रन्भयणा, पंचासीई उद्देसणकाला, पंचासीई सम्रद्देसणकाला, श्रद्वारसपयसहस्साइं पयग्गेगां, संखिड्जा श्रक्खरा, श्रगांतगमा, श्रगांतापड्जवा, परित्ता तसा, अर्णता थावरा,

सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपएणत्ता भावा श्राघविज्जंति, पत्नविज्जंति, पर्कविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से एवं श्राया, एवं नाया, एवं विएणाया एवं चरण-करण-पर्कवणा श्राघविज्जई । से तं श्रायारे ।

सुत्तं ४६ से किं तं स्यगडे ?

स्यगडे गं लोए स्इज्जइ, त्रलोए स्इज्जइ,

लोयालोए सइज्जइ,

जीवा स्रइन्जंति, श्रजीवा स्रइन्जंति, जीवाजीवा स्रइन्जंति ससमए स्रइन्जइ, परसमए स्रइन्जइ, ससमय-परसमए स्रइन्जइ स्र्यगडे ग्रं श्रसीयस्स किरियावाइसयस्स, चउरासीइए श्रकिरियावाईग्रं

सत्तद्वीए श्रएगाणि-श्रवाईगां-बत्तीसाए वेगाइज-वाइगां-

तिएहं तेसद्वाणं पासंडियसयाणं वृहं किञ्चा ससमए ठाविज्जइ।

स्यगडेणं परित्ता वायणा, संखिज्जा अणुत्रोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखिज्जात्री-निजुत्तीस्रो.

(संखिज्जात्रो संगहणीत्रो) संखिज्जात्रो पडिवचीत्रो ।

से गां श्रंगद्वयाए विईए श्रंगे, दो सुयक्खंघा, तेवीसं श्रज्भयणा, तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं सम्रद्देसणकाला, छत्तीसं पयसहस्साणि पयग्गेणं,

संखिन्ना अवखरा, अगंतागमा, अगंता पन्नवा, परित्ता तसा, ऋणंता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिग्रपरग्ता भावा श्राघविज्जंति, परणविज्जंति, परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं विष्णाया, एवं चरण-करण-परूवणा त्राघविन्जइ । से तं स्वयगडे।

सुत्तं ४७ से किं तं ठायो ?

ठायो यां जीवा ठाविज्जंति, श्रजीवा ठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति,

ससमए ठाविज्जइ, परसमए ठाविज्जइ,

ससमय-परसमए ठाविज्जइ, लोए ठाविन्जइ, अलोए ठाविन्जइ, लोयालोए ठाविन्जइ।

ठाणे णं टंका, कूडा, सेला, सिहरिणो, पन्भारा, कुंडाइं, गुहात्रो, त्रागरा, दहा, नईत्रो त्राघविन्जंति । ठाणे णं एगाइयाए एगुत्तीरयाए बुड्ढीए

दसद्वाण्ग विविद्वयाणं भावाणं परूवणा आघविन्जइ। ठाणे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखोजा सिलोगा; संखेज्जात्रो निज्जुत्तीत्रो, संखेन्जात्रो संगहणीत्रो, संखेन्जात्रो पहिवत्तीत्रो ।

से गां अंगहुयाए तईए अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस श्रन्भयगा, एगवीसं उद्देसणकाला, एगवीसं समुद्देसणकाला, बावत्तरि पयसहस्साइं पयग्गेगं, संखेज्जा अक्खरा, अगंता गमा, अगंतापन्जवा, परित्ता तसा, अगंता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिग्रपएण्ता मावा आध्विज्जंति, पएण्यविज्जंति, परूविज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं विग्णाया एवं चरण-करण-परूवणा आध्विज्जइ । से त्तं ठाणे ।

सुत्तं ४८ से कि तं समवाए १
समवाए णं जीवा समासिन्जंति,
अजीवा समासिन्जंति,
जीवाजीवा समासिन्जंति,
ससमए समासिन्जइ, परसमए समासिन्जइ,
ससमय-परसमए समासिन्जइ,
लोए समासिन्जइ, अलोए समासिन्जइ,
लोए समासिन्जइ ।
समावाए णं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं
ठाणसय-विवाहित्याणं मावाणं परूवणा आधर्विन्जइ ।
दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पन्लवग्गे समासिन्जइ ।
समवायस्सणं परित्ता वायणा, संखिन्जा अणुत्रोगदारा,
संखिन्जा वेटा, संखिन्जा सिलोगा, संखिन्जाओ निन्जुत्तीओ,
संखिन्जाओ संगहणीओ, संखिन्जाओ पंडिवत्तीओ ।

से गां अंगह्याए चउत्थे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, एगे अन्मयणे,
एगे उद्देसणकाले, एगे समुद्देसणकाले,
एगे चोयाले सयसहस्से पयग्गेणं,
संखेज्जा अक्खरा, अशंता गमा, अशंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अगंता थावरा
सासय-कड-निगद्ध-निकाइया जिग्यपण्णत्ता भावा
आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परुविज्जंति
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं आया, एवं नाया, एवं विष्णाया,
एवं चरण-करण-परुवणा आघविज्जइ ।
से त्तं समवाए ।

सुत्तं ४६ से किं तं विवाहे ?

विवाहेगं जीवा विश्राहिज्जंति, श्रजीवा विश्राहिज्जंति,

जीवाजीवा विश्वाहिज्जंति, ससमए विश्वाहिज्जइ,

परसमए विश्राहिज्जइ,

ससमय-परसमए वित्राहिज्जइ,

लोए विश्राहिज्जइ, श्रलोए विश्राहिज्जइ,

लोयालोए वित्राहिज्जइ,

विवाहस्स गां परित्ता वायणा, संखिज्जा अगुओगदारा, संखिज्जा वेदा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखिज्जाओ संगहणीओ, संखिज्जाओ पिडवत्तीओ। से णं श्रंगहुयाए पंचमे श्रंगे,
एगे सुयक्खंधे, एगे साइरेगे श्रज्भयग्रसए,
दस उद्देसगसहस्साइं, दससम्रद्देसगसहस्साइं,
छत्तीसं वागरण-सहस्साइं,
दो लक्खा श्रहासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,
संखिज्जा श्रक्खरा, श्रणंतागमा, श्रणंतापज्जवा,
परित्ता तसा, श्रणंता थावरा,
सासय-काड-निवद्ध-निकाइया जिग्रपएग्यत्ता भावा
श्राघविज्जंति, पएग्यविज्जंति, पर्कविज्जंति,
दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति ।
से एवं श्राया, एवं नाया, एवं विएग्याया,
एवं चरण-करग्य-पर्कवग्या श्राघविज्जइ ।
से त्तं विवाहे ।

सुत्तं ५० से कि तं नायाधम्मकहात्रो ?

नायाधम्मकहासु गां

नायागां नगराइं, उज्जागाइं, चेइयाइं, वग्रासंडाइं, समोसरगाइं,
रायागां. श्रम्मापियरो,
धम्मायरिया, धम्मकहात्रो, इहलोइयपरलोइया इिंद्विसेसा,
भोगपरिचाया, पन्वन्जात्रो, परिश्राया,
स्रयपरिग्गहा, तवोवहाग्राइं, संलेहगात्रो,
भत्तपच्चक्खाणाइं, पात्रोवगमणाइं, देवलोगगमणाइं,
स्रकुलपंच्चाइयात्रो, पुग्रावोहिलामा, श्रंतिकरियात्रो
य श्राधविद्जंति ।
दस धम्मकहागां वग्गा,
तस्य गां एगमेगाए धम्मकहाए एंच पंच श्रक्खाइयासयाइं,

एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पच उवक्खाइयासयाई, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइय-उवक्खाइयासयाई, एवामेव सपुव्वावरेणं श्रद्धद्वाश्रो कहाणगकोडीश्रो-हवंति ति समक्खायं। णायाधम्मकहाणां परित्ता बायणा, संखिज्जा अणुत्रोगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिजासिलोगा संखिजात्रो निज्जुत्तीत्रो, संविजात्रो संगहणीत्रो, संविजात्रो पडिवत्तीत्रो । से गां त्रमह्याए छहें त्रंगे, दो सुयक्खंधा एगूग्वीसं अन्भयगा, एगूग्वीसं उद्देसग्वालाः एगूगवीसं सम्रद्देसग्यकाला, संखेजाई पयसहस्साई पयग्गेणं, संखेजा अक्खरा, अगंता गमा, अगंता पजवा, परित्ता तसा, ऋणंता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिर्णपरण्चा भावा श्राघविज्जंति, पराग्यविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से एवं श्राया, एवं नाया, एवं विष्णाया, एवं चरण-करण-परुवगा त्राघविजइ। से तं गायाधम्मकहात्रो ।

भोगपरिच्चाया, पव्वज्जात्रो, परित्राया, ्रसुयपरिग्गहा, तश्रोवहाणाइं, सीलव्यय-गुण्-वेरमण्-पच्चक्खाण्-पोसहीववास-सपडिवज्जणया पडिमात्रो, उवसग्गा, संलेहणात्रो, भत्तपच्चक्खाणाई पात्रीवगमणाई, देवलीगममणाई सुकुलपञ्चाइश्रात्रो, पुराबोहिलाभा, श्रंतिकरियात्रो य श्राधविज्जंति । उवासगदसार्गं परित्ता वायखा, संखेन्ना त्रणुत्रोगदारा, संखिन्ना वेहा, संखेडजा सिलोगा; संखिडजात्रो निड्युत्तीत्रो, संखिज्जात्रो संगहणीत्रो संखिज्जात्रो पहिवलीत्रो, से गं श्रंगद्वयाए सत्तमे श्रंगे, एगे सुयक्खंघे, पणवीसं श्रज्कयणा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेगां, संखिज्जा श्रक्खरा, श्रगंतागमा, श्रगंतापूज्जवा, परित्ता तसा, ऋणंता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिणपरण्जा भावा, श्राघविज्जंति, पन्नविज्जंति, परुविज्जंति दंसिन्जंति, निदंसिन्जंति, उवदंसिन्जंति । से एवं त्राया, एवं नाया, एवं विष्णाया एवं चरगा-करगा-परूवगा आघविष्जइ। से त्तं उवासगदसात्रो ।

सुत्तं ५२ से किं तं अंतगहदसाश्रो ? अंतगहदसासु सं अंतगहार्यं—

नगराइं, उज्जागाइं, चेइयाई, वग्रसंडाई, समोसरगाई, रायाणो, अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहाश्रा, ्रहलोइयपरलोइया इडि्ढविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जास्रो, परिस्राया, ्र सुयपरिग्गहा, तवीवहागाई, संलेहगाश्री, भत्तपच्चक्खाणाइं , पात्रोवगमणाइं, त्रंतिकरियात्रो य त्राघविद्जंति । श्रंतगडदसासु गां परित्ता वायगा, संखिज्जा अणुत्रोगदारा, संखेज्जा वेढा, सं**से**ज्जा सिलोगा, संखिज्जाश्रो निजुत्तीश्रो. संसिज्जात्रो संगहणीत्रो संखिज्जात्रो पहिवत्तीत्रो। से गं श्रंगहयाए श्रहमे श्रंगे, एगे सुयक्खंघा, श्रद्ववग्गा, श्रद्ध उद्देसणकाला, श्रद्ध समुद्देसणकाला, संखेज्जाई पयसहस्साई पयग्गेर्गा, संखिन्जा अक्खरा, अर्गतागमा, अर्गता पन्जवा, परित्ता तसा, त्र्रणंता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिग्एपएग्ता भावा श्राघविज्जंति, पराणविज्जंति, परूविज्जंति दंसिन्जंति, निदंसिन्जंति, उवदंसिन्जंति। से एवं आया, एवं नाया, एवं विराणाया, एवं चरगा-करगा-परूषगा त्राघविज्जइ । से त्तं श्रंतगडदसाश्रो।

सुतं ५३ से कि तं त्रणुत्तरोववाइयदसाश्रो ? त्रणुत्तरोववाइयदसासु गं त्रणुत्तरोववाइयागं-

नगराइं, उजाणाइं, चेइयाइं वर्णसंडाइं, समीसरणाइं, रायाणी, अम्मापियरों, धम्मायरिया, धम्मकहास्रो, इह लोइयपरलोइया इडि्डविसेसा, भोगपरिचागा, पव्वजात्रो, परित्राया, सुयपरिग्गहा, तवीवहाणाइं, पडिमात्री, उवसग्गा, संलेहणात्रो, अत्तपच्चक्खागाई, पात्रोवगमगाई, श्रगुत्तरोववाइयत्ते , उववत्ती, सुकुलपच्चायाइश्रो, पुणबोहिलाभा, अंतिकरियात्रो य त्राघविन्जंति। श्चरात्रोववाइयदसासु गं परित्ता वायगा, संखेज्जा ऋणुत्रोगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेजा सिलोगाः संखेज्जात्रो निज्जुत्तीत्रो, संखेन्जात्रो संगहणीत्रो, संखेन्जात्रो पंडिवत्तीत्रो । से गं श्रंगहुयाए नवमे श्रंगे, एगे सुयक्खंधे, तिन्निवरंगा, तिनि उद्देसणकाला, तिनि समुद्देसणकाला, संखेजजाई पयसहस्साई पयग्गेणं, संखेडजा श्रक्खरा, श्रगंता गमा, श्रगंतापडजमा, परित्ता तसा, ऋणंता थावरा, सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिग्रपर्यात्ता भावा श्राधविन्जंति, परमाविन्जंति, परूविन्जंति दंसिन्जंति, निदंसिन्जंति, उवदंसिन्जंति । से एवं श्राया, एवं नाया, एवं विग्गाया एवं चरण-करण-परूवणा त्राधविज्जइ। 🖯 से तं श्रणुत्तरोववाइयदसात्रो ।

सुत्तं ५४ से कि तं पग्हावागरणाइं ? परहावागरगोसु गां श्रद्ठत्तरं पसिगासयं, **अट्**ठुत्तरं अपसिणसयं ग्रट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं, तं जहा-श्रंगुद्वपसिगाईं, बाहुपसिगाईं, श्रेदागपसिगाईं श्रने वि विचित्ता विजाइसया, नागसुवर्गोहिं सिद्धं दिव्वा संवाया श्राघविज्जंति । प्रवहावागरणाणं परित्ता वायणा, संखिज्जा त्रगुत्रोगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिज्जा सिलोगा, संखिज्जात्रो निज्जुत्तीत्रो, संविज्जात्रो संगहगाित्रो, संविज्जात्रो पडिवत्तीस्रो । से गां श्रंगद्वयाए दसमे श्रंगे, एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अन्भयगा, पण्यालीसं उद्देसण्काला, पण्यालीसं समुद्देसण्काला, संखेजजाइं पयसहस्साइं पयग्गेगां, संखेज्जा श्रक्खरा, श्रगंता गमा, श्रगंता पज्जना, परिचा तसा, अगंता थावरा सासय-कड-निबद्ध-निकाइया जिग्एपएग्ता भावा श्राघविज्जंति, पर्णविज्जंति, पर्विज्जंति दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति। से एवं श्राया, एवं नाया, एवं विराणाया, एवं चरगा-करगा-परुवगा आघविज्जइ। से सं पएहावागरणाई । से किं तं विवागसुयं ? सुर्च ५५ विवागसुए गं सुकडदुकडागं कम्मागं-

फलविवागे श्राधविज्ञह ।

तत्थ र्णं दस दुह-विवागा, दस सुह-विवागा। से किं तं दुह-विवागा ? दुह-विवागेसु गां दुहविवागागां— नगराइं, उज्जाणाई, वणसंडाई, चेइयाई, समोसरणाईं रायागो अम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहास्रो, इहलोइयपरलोइया इडि्डविसेसा, निरयगमणाई, संसारभव-पवंचा, दुहपरंपरात्रो, दुक्कुल्पच्चायाइओ, दुल्लंहबोहियत्तं त्राघविज्जइ। से तं दुहविवागा । से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागेसु गां सुह-विवागागां नगराई, उन्जाणाई, वणसंडाई, चेइयाई, समोसरणाई, रायाणो, श्रम्मापियरो, धम्मायरिया, धम्मकहात्रो, इहलोइयपरलोइया इर्ड्डिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जास्रो, परिस्राया, सुयपरिग्गहा, तवीवहाणाई, संलेहणात्रो, भत्तपचक्खाणाइं, पात्रोवगमणाई, देवलोगगमणाइं, सुहपरंपरात्र्यो, सुकुलपचायाईत्रो, पुग्रबोहिलाभा, श्रंतिकरियाश्रो य श्राघविज्जंति। विवागसुयस्स गां परित्ता वायगा, संखिज्जा ऋणुत्रोगदारा, संखिज्जा वेढा, संखिजा सिलोगा संखिजात्रो निज्जुत्तीत्रो, संविजात्रो संगहणीत्रो, संविजात्रो पडिवत्तीत्रो । से गां ग्रांगद्वयाए इकारसमे ग्रांगे, दो सुयक्खंधा वीसं अन्भयणा, वीसं उद्देसणकाला, वीसं सम्रद्देसणकाला,

३२६] नंदीसुत्तं [श्रुतज्ञानम् संखेजाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं,

संखेजा अक्खरा, अगंता गमा, अगंता पजवा, परित्ता तसा, अगंता थावरा, सासय-कड-निवद्ध-निकाइया जिग्यपरणत्ता भावा आध्विज्जंति, परण्यविज्जंति, पर्कविज्जंति, दंसिज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति । से एवं आया, एवं नाया, एवं विराणाया, एवं चरण-करण-परुवणा आध्विज्जइ । से त्तं विवागसुर्यं।

सुत्तं ५६ से किं तं दिष्टिवाए १
दिद्विवाए णं सन्वभावपरूवणा श्राघविज्ञइ ।
से समासत्रो पंचिवहे पएण्ते,
तं जहा—
१ परिकम्मे २ सुत्ताई ३ पुन्वगए ४ श्रणुश्रोगे५ चूलिया ।
से किं तं परिकम्मे १
परिकम्मे सत्तविहे पएण्ते,
तं जहा—

२ मणुस्ससेणिया-परिकम्मे ३ पुद्वसेणिया-परिकम्मे ४ श्रोगाढसेणिया-परिकम्मे

१ सिद्धसेणिया-परिकम्मे

४ उवसंपञ्जग्रसेगिया-परिकम्मे ६ विप्पजहग्रसेगिया-परिकम्मे

७ चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे ।

罗儿。

से किं तं सिद्धसेणिया परिकम्मे ? सिद्धसेणियापरिकम्मे चउइसविहं पर्गाचे, तं जहा----१ माउगापयाइं २ एगड्डियपयाइं ३ श्रद्धपयाईं ४ पाढो श्रागासपयाई **५ केउभूयं** ६ रासिबद्धं ७ एगगुर्ग = दुगुर्ग ६ तिगुर्ण १० केउभूयं ११ पडिग्गहो १२ संसार पडिग्गहो १३ नंदावत्तं १४ सिद्धावत्तं । से तं सिद्ध-सेशिया-परिकम्मे। (१) से किं तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे ? मणुस्स-सेणिया-परिकम्मे चडइसविहे पएण्ते. तं जहा---१ माउगापयाइं २ एगद्वियपयाइं ३ अद्वपयाइं ४ पाढो आगासपयाई ५ केउभूयं ६ रासिवद्धं ७ एगगुर्ग 🗷 दुगुर्ग ६ तिगुणं १० केउभूयं ११ पडिग्गहो १२ संसार पडिग्गहो १३ नंदावत्तं १४ मणुस्सावत्तं। से तं मणुस्ससेणिया-परिकम्मे। (२) से किं तं पुट्टसेणियापरिकम्मे १ पुट्टसेगाियापरिकम्मे इकारसविहे परायन्ते, तं जहा-

१ पाढो अगासपयाई २ केउभूयं ४ एगगुगं ३ रासिवद्धं ५ दुगुगं ६ तिगुणं ७ केउभूयं ८ पडिग्गहो ६ संसारपिडग्गहो १० नंदावत्तं ११ पुट्टावत्तं । से तं पुडुसेणियापरिकम्मे। (३) से किं तं श्रोगाढसेणिया परिकम्मे ? श्रोगाढसेणिया परिकम्मे इक्वारसविहे पर्णत्ते तं जहा----१ पाढोत्रागासपयाई, २ केउभूयं, ३ रासिबद्धं, ४ एगगुणं ध दुगुर्गं ६ तिगुर्गं ७ केउभूयं ८ पडिग्गहो ६ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं ११ श्रोगाढावत्तं । से तं श्रोगाढसेणिया-परिकम्मे ? से किं तं उवसंपज्जणसेणिया-परिकम्मे ? उवसंपन्नग्रसेशिया-परिकम्मे इकारसविहे पर्गाचे, तं जहा-१ पाढोत्रागासपयाई २ केउभूयं ३ रासिवद्धं ४ एगगुणं ६ तिगुगां ५ दुगुणं

८ पडिग्गहो

७ केउभूयं

६ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं ११ उवसंपज्जगावत्तं। से तं उवसंपज्जग्रसेगिया-परिकम्मे । (५) से किं तं विष्पजहणसेणिया-परिकम्मे ? विष्यजहणसेशिया-परिकम्मे इक्कारसविहे परागत्ते, तं जहा-१ पाढोत्रागासपयाई २ केउभूयं ३ रासिवद्धं, ४ एगगुणं ६ तिगुणं ५ दुगुर्ण ७ केउभूयं 🗷 पडिग्गहो ६ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं ११ विष्यजहएणावर्तं । से तं विष्यजहरासे शिया परिकम्मे । (६) से किं तं चुयाचुयसेशिया परिकम्मे ? चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे इंक्कारसविहं परणचे, तं जहा---१ पाढोत्रागासपयाई २ केउभूयं ३ रासिबद्धं ४ एगगुणं ६ तिगुणं ५ दुगुर्ग ट पडिग्गहो ७ केउभूयं ६ संसारपडिग्गहो १० नंदावत्तं ११ चुयाचुयवत्तं । से तं चुयाचुयसेणिया-परिकम्मे।(७) छ-चउक्क नइयाइं, सत्त तेरासियाईं, से सं परिकम्मे।

से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताई बावीसं पएणताई, तं जहा— १ उज्जुसुयं २ परिणयापरिण्यं ३ बहुमंगियं ४ विजयचरियं ५ त्रणंतरं ६ परंपरं ७ त्रासागं ८ संजूहं ६ संभिएएं १० त्राहव्वायं ११ सोवत्थियावत्तं १२ नंदावत्तं १३ बहुलं १४ पुडापुडं १५ वियावतं १६ एवंभूयं १७ दुयावत्तं १८ वत्तमाणपयं १६ सममिरूढं २० सन्वंत्रोभहं २१ पस्सासं २२ दुप्पडिग्गहं। इच्चेइयाइं बावीसं सुत्ताइं छिन्न-छेयनइयागि ससमयसुत्तपरिवाडीए । इच्चेइयाइं वावीसं सुत्ताइं श्रच्छिन्नच्छेयनइयागि— **त्राजीवियसुत्तपरिवाडिए** । इच्चेइयाइं वावीसं सुत्ताइं तिगग्रह्यागि तेरासियसुत्तपरिवाडीए। इच्चेइयाई वावीसं सुत्ताई चउक्कनइयागि ससमयसुत्तपरिवाडीए । एवामेव सपुव्वावरेणं श्रद्वासीइ सुत्ताइं भवंति त्ति मक्खायं।

से तं सुत्ताइं। से किं तं पुन्वगए ? पुन्वगए चउदसविहे पएगात्ते, तं जहा—

१ उप्पायपुर्वं २ अग्गागीयं

```
३ वीरियं ४ श्रित्थिनित्थ-प्यवायं
५ नाग-प्यवायं ६ सच्च-प्यवायं
७ श्राय-प्यवायं ८ कम्म-प्यवायं
६ पचक्खाण-प्यवायं १० विज्जाणु-प्यवायं
११ श्रबंसं १२ पागाऊ
१३ किरियाविसालं १४ लोकबिंदुसारं।
प्यायपुन्वस्स गं दसवत्थ्, चत्तारि चूलियावत्थ्
```

१ उप्पायपुव्यस्स णं दसवत्थू, चत्तारि चूलियावत्थू पर्णाता,
२ श्रम्गाणीयपुव्यस्स णं चोद्दसवत्थू दुवालसचूलियावत्थू पर्णाता,
३ वीरियपुव्यस्स णं श्रद्धवत्थू, श्रद्ध चूलियावत्थू पर्णाता,
४ श्रत्थि-नित्थिप्यवायपुव्यस्स णं श्रद्धारस वत्थू,
दसचूलियावत्थू पर्णात्ता,
५ नाणप्यवाणपुव्यस्स णं बारस वत्थू पर्णात्ता,
६ सच्चप्यवायपुव्यस्स णं दोरिण वत्थू पर्णात्ता,
७ श्रायप्यवायपुव्यस्स णं सीलसं वत्थू पर्णात्ता,
६ पच्चक्खाणपुव्यस्स णं तीसं वत्थू पर्णात्ता,
१० विज्जाणुप्यवायपुव्यस्स णं पन्नरस वत्थू पर्णात्ता,
१० विज्जाणुप्यवायपुव्यस्स णं पन्नरस वत्थू पर्णात्ता,
११ श्रवंस्रपुव्यस्स णं वारस वत्थू पर्णात्ता,

१२ पाणाऊपुन्वस्स गां तेरस वत्थू परणाता, १३ किरियाविसालपुन्वस्स गां तीसं वत्थू परणाता, १४ लोकबिंदुसारपुन्वस्स गां पणवीसं परणाता,

> गाहा— दस'-चोद्दस'-अट्ट -अट्टारसेव'-बारस'-दुवे य बत्धूणि। सोलस"-तीसा'-वीसा'-पन्नरस' अणुप्पवायंमि ॥१॥ बारस-इक्कारसमे,' बारसमे' तेरसेव बत्धूणि। तीसा पुण तेरसमे', चोद्दसमे' परणवीसाम्रो॥२॥

चत्तारि-दुवालस-अट्ट चेव, दस चेव चुल्लवत्थूणि। सेसागां चूलिया नत्थि श्राइल्लाग्-चउएहं, से त्तं पुव्वगए। से किं तं अणुओंगे ? श्रगुश्रोगे दुविहे पएगात्ते, तं जहा-१ मूलपढमाणुत्रोगे, २ गंडियाणुश्रोगे य। से किंतं मूलपढमाणुत्रोगे ? मूलपढमाणुत्रोगे गं श्ररहंतागं भगवंतागं-पुन्वभवा, देवलोगगमणाई, श्राउं, चवणाई, जम्मणाणि, श्रभिसेया, रायवरसिरीश्रो, पव्वज्जात्रो, तवा य उग्गा, केवलनागुप्पयात्रो, तित्थ पवत्तगागि य, सीसा, गणा, गणहरा, अन्जा, पवित्रणीत्रो, संघरस चडव्विहस्स जं च परिमाणां, जिगा-मगापन्जव-स्रोहिनागी, सम्भत्तसुयनाणिखो य, वाई, श्रग्रुत्तरगई य, उत्तरवेउन्विणो य मुणिगो, जित्या सिद्धा, सिद्धिपही जहा देसिश्री, जिंचरं च कालं, पाश्चीवगया-जेहिं जित्तयाई भत्ताई श्रणसणाए छेइत्ता अंतगडे, मुणिवरुत्तमे तिमिरश्रोवविष्यमुक्के, मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्ते, एवमने य एवमाइमावा मूलपढमाणुत्रोगे कहिया। से भ्तं मूलपढमा गुत्रोगे।

से किं तं गंडियागुत्रोगे ?

गंडियाणुत्रोगे कुलग्रगंडियात्रो, तित्थयरगंडियात्रो,

चक्कवद्धिगंडियात्रो, वासुदेवगंडियात्रो,

गण्धरगंडियात्रो, भद्दबाहुगंडियात्रो, तवोकम्मगंडियात्रो, हरिवंसगंडियात्रो,

उस्सप्पिणीगंडियात्रो, श्रोसप्पिणी<mark>गंडियात्रो,</mark> चित्तंतरगंडियात्रो,

अमर-नर-तिरिय-निरय गइ-गमग्ग-विविह-परियद्वगागुत्रोगेसु एवमाइयात्रो गंडियात्रो

श्राघविन्जंति, पएगाविन्जंति ।

से त्तं गंडियाणुत्रोगे। से त्तं त्रणुत्रोगे।

से किं तं चूलियात्रों ?

चूलियात्रो—ग्राइल्लागं चउगहं पुन्वागं चूलित्रा, सेसाइं पुन्वाइं अचूलियाइं।

ससाइ पुठवाइ अनुराजपार । से त्तं चूलियात्रो ।

दिद्विवायस्य गां परित्ता वायगा,
संखेन्जा अगुओगदारा, संखेन्जा वेहा,
संखन्जा सिलोगा, संखेन्जाओ निन्जुत्तीओ,
संखेन्जाओ संगहणीओ, संखेन्जाओ पिडवत्तीओ।
से गां अंगहयाए वारसमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, चोद्दसपुन्वाई,
संखेन्जा वत्थू, संखेन्जा चूलवत्थू,
संखेन्जा पाहुडा, संखेन्जा पाहुडपाहुडा,

संखेन्जात्रो पाहुडियात्रो, संखेन्जात्रो पाहुडपाहुडियात्रो, संखेन्जाई पयसहस्साई पयग्गेगां,

संखिज्जा श्रक्खरा, श्रगंता गमा, श्रगंता पज्जवा, परिचा तसा, अगंता थावरा, सासय-काड-निबद्ध-निकाइया जिग्एपएग्ता भावा श्राघविज्जंति, पर्णविज्जंति, पर्विज्जंति, ं दंसिङअंति, निदंसिङजंति, उवदंसिङजंति। से एवं श्राया, एवं नाया, एवं विष्णाया, एवं चरण-करण-परूवणा त्राघविज्जइ। से तं दिद्विवाए। सुतं ५७ इचेइयम्मि दुवाल्संगे गिशापिडगे श्रगंता भावा, श्रगंता श्रभावा, श्रगंता हेऊ, श्रगंता श्रहेऊ, त्रगंता कारणा, त्रगंता त्रकारणा, त्रगांता जीवा, त्रगांता त्रजीवा, श्रगांता भवसिद्धित्रा, त्रगांता त्रभवसिद्धित्रा, श्रगंता सिद्धा, श्रगंता श्रसिद्धा पण्णत्ता । गाहा-भावमभावा हेऊमहेऊ, कारणमकारणे चेव । जीवाजीवामविय,-ममविया सिद्धा ऋसिद्धा य ॥ १ ॥ इञ्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले अणंता जीवा अणाए विराहिता चाउरंतं संसार कंतारं त्रणुपरियद्विसु, इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्परागकाले परित्ताजीवा त्राणाए विराहित्ता चाउरंतं संसार कंतारं ऋणुपरियद्वंति, इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं

त्रणागए काले अगंताजीवा आगाए विराहिता चाउरंतं संसार-कंतारं अगुयरियद्विस्संति,

नंदीसुत्तं इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं तीए काले श्रगंताजीवा श्रागाए श्राराहिचा चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइंसु, इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्परणकाले परित्ताजीवा आणाए आराहिता चाउरंतं संसारकंताइं वीईवयंति. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं श्रणागएकाले श्रगांत्ता जीवा श्रागाए श्राराहिता चाउरंतं संसार-कंतारं वीईवइस्संति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ न भवइ,

न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, श्रक्तए, श्रव्वए, श्रवट्टिए, निच्चे । से जहानामए पंच श्रत्थिकाया-

न कयाइ नासी, न कयाइ नित्थ, न कयाइ न भविस्सइ, भुविं च, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए,

अक्खए, अञ्चए, अबद्दिए, निच्चे, एवामेव दुवालसंगं गिण्पिडगं न कयाइ नासी, न कयाइ नित्थ,

न कयाइ न भविस्सइ,

भुविच, भवइ य, भविस्सइ य, धुवे, नियए, सासए, श्रक्खए, श्रव्वए, श्रवद्विए, निच्चे । से समासश्रो चउन्विहे पएण्चे, तं जहा— दन्वश्रो, खित्तश्रो, कालश्रो, भावश्रो । तत्थ दन्वश्रो णं सुयणाणी उवउत्ते सन्वदन्वाइं जाणइ पासइ,

खित्तश्रो गं सुयगागी उवउत्ते सन्वं खेत्तं जागाइ पासइ,

कालस्रो गां सुयनागाी उवउत्ते सन्वं कालं जागाइ पासइ,

भावश्रो गां सुयनागा उवउत्ते सन्वं भावं जाणइ पासइ,

गाहा— श्रक्खर सन्नी सम्मं, साइयं खलु सपज्जवसियं च। गमियं श्रंगपविद्वं, सत्ते वि एए सपिडवक्खा ॥ १॥

श्रागमसत्थग्गहणं, जं बुद्धिगुणेहिं श्रद्वहिं दिद्वं। विति सुयनाणलंमं, तं पुन्वविसारया धीरा ॥२॥

सुस्सुसइ पडिपुच्छइ, सुगोइ गिग्हइ य ईहए थावि ।

तत्तो श्रपोहए वा, धारेइ करेइ वा सम्मं ॥३॥ मूत्र्यं हुंकारं वा, वाढकारं पडिपुच्छ वीमंसा।

तत्तो पसंगपरायगां, च परिणिष्ट सत्तमए ॥ ४॥

सुत्तत्थो खलु पहमो, बीश्रो निन्जुत्तिमीसिश्रो भिणश्रो । तइश्रों प निरवसेसो, एस विही होइ श्रणुश्रोगे ॥ ४ ॥

> से त्तं त्रंगपविद्वं। से त्तं सुयनार्गं। से त्तं परोक्खनार्गं। से त्तं नार्गं।

> > ॥ से तं नंदी ॥

॥ गृह युत्ताणि ॥

(8)

श्रगुश्रोगदार-सुत्तं

[उकालियं]

॥ कालवेलवञ्जं पढिञ्जति ॥

नामकरगां-

अणुओगहाराई, महापुरस्तेव तस्त चत्तारि । अणुओगित्ति तदत्थो, दाराई तस्त उ महाई ॥ १ ॥ अकयहारमनगरं, कयेगदारं पि दुक्खसंचारं । चडमूलहारं पुण, सप्पडिदारं सुहाहिगमं ॥ २ ॥ सामाइय-पुरमेवं, अकयहारं तहेगदारं वा । दुरहिगमं चडदारं, सप्पडिदारं सुहाहिगमं ॥ ३ ॥

उद्धरसां –

श्रंगेसु श्रंपण्यो वृत्तो, दिद्विवायो सुदिद्विहि । तत्तोऽख्योग-मुत्ताणं, शिम्मिया वरमालिया ॥ १ ॥

विसयशिहसो-

पुर्व्वं भेया उ नाण्स्स, नाणोद्देसाइयं तत्रो । ं वुत्ता सरूव-भेया श्र, सुत्तस्साऽऽवस्सगयस्स य ॥ १॥ सुयस्स खु खंधस्स, तन्त्रो कया परूवणा। उवस्कमस्स तत्तो गां, श्राग्रुपुट्यी-विवेयणा ॥ २॥ एगादीण दसंताणं, तत्रो नाम-निरूवणे । नाणाविहाण भावाणं, वएगानं तु जहक्कमं ॥ ३॥ पच्छा चउच्विहा वुत्ता, पमाणस्स परूवणा । दव्बन्नो खेत्रज्ञो चेव, कालज्ञो भावज्रो तहा ॥ ४ ॥ 🚋 माखुम्माणभेयागं, द्व्यमागे पकित्रगं श्रंगुलस्स तहा पच्छा, तिंििएण भेया उ विरिण्या ॥ ५ ॥ संव्वेसिं किल जीवागां, भिण्योगाहणा तस्रो। पच्छा काले य जीवागां, सन्वागां विरागया ठिई ॥ ६ ॥ तत्ती दव्वस्स, पंचएहं, सरीराणं तु कित्तणं। भावे पमाण-भेयागं, प्रचक्खाईगा वएगानं ॥ ७॥ तत्तो दंसण-चारित्त,-नयाणं तु परूवणा। बुत्ता संखा, तस्रो भेया,-वत्तव्वस्रा स्र विख्या ॥ 🗲 ॥ श्रत्थस्स-श्रहिगारस्स, समोयारस्स गां तत्रो । णिक्खेवागुगमाणं तु, णिरूवणा ग्ययस्स य ॥ ६॥

, क्ष ग्रामोऽत्थु ग्रं तस्स समग्रस्स मगवधो महाबीरस्स क

अणुओगदार-युतं

ज्ञानमेदाः--

सुत्तं १ नायां पंचविहं परागत्तं,

तं जहा— १ श्राभिणिबोहियनाणं २ सुयनाणं

३ त्रोहिनागं ४ मणपजननागं ४ केवलनागं।

सुत्तं २ तत्थ चत्तारि नाणाइं ठप्पाइं ठविण्जाइं,

गो उद्दिसिन्जंति , गो समुद्दिसिन्जंति ,

गो त्रगुरग्विज्जंति।

सुयनागस्स उद्देसी, समुद्देसी, अगुरणा, अगुत्रोगी य पवत्तद्र।

सुत्तं ३ प्र० जइ सुयणात्रस्त उद्देसी, समुद्देसी,

त्रमुएमा, त्रमुत्रोगो य पवत्तइ,

किं श्रंगपविद्वस्स उद्देसो, सम्रदेसो,

श्रगुएणा, श्रगुत्रोगो य पवत्तइ ?

१ उदिसंति । २ समुद्दिसंति ।

कि श्रंगबाहिरस्स उद्देसो समुद्देसो, श्रणुरुणा, श्रणुश्रोगो य पवत्तइ ?

उ० त्रांगपविद्वस्स वि उद्देसो अज्ञाव पवत्तद्द,

अर्थागपविद्वस्स वि उद्देसी अजाव पवत्तइ।

इमं पुरा पहुवर्गा पहुच त्र्यांगपविद्वस्स त्र्यात्रोगो । सुत्तं ४ प्र० जइ अयांगपविद्वस्स त्रयात्रोगो,

किं कालिश्रस्त श्रणुश्रोगे ?

ः उकालिअस्स श्रणुत्रोगो ? ः उकालियस्स वि श्रणुत्रोगो, · उकालियस्स वि श्रणुत्रोगो ।

इमं पुण पट्टवणं पडुच्च उक्कालियस्स अणुओगो। सुत्तं ५ प्र० जइ उक्कालिअस्स अणुओगो,

कि श्रावस्सगस्स श्रणुत्रोगो ? श्रावस्सग-वइरित्तस्स श्रणुत्रोगो ?

उ० श्रावस्सगस्स वि श्रणुश्रोगो श्रावस्सगवइरित्तस्स वि श्रणुश्रोगो

् इमं पुण पट्टवर्ण पडुच त्रावस्तगस्त त्राणुत्रोगो । सुत्तं ६ प्र० जइ त्रावस्तगस्त त्राणुत्रोगो.

किं° गां श्रंगं १ श्रंगाईं १ सुश्रखंघो १ सुश्रखंघा १ श्रज्मयगां १ श्रज्मयगाइं १

> उद्देसी १ उद्देसा १ उ० ब्रावस्सर्यं गां नो श्रंगां, नो श्रंगांई सुत्रखंघो, नो सुत्रखंघा,

? श्रंगबाहिरस्स वि । २ श्रंगबाहिरस्स । ३ श्रंगबाहिरस्स । १ श्रावस्सयं कि । २ श्रावस्सयस्स । श्रदोनों जगह इसी सूत्र की पंक्ति १-२ के समान पाठ है ।

3. 3.

नो अन्भयणं, अन्भयणाई, नो उद्देसो, नो उद्देसो।

सुर्च ७ तम्हा ग्रावस्तयं निक्खिवस्तामि, सुत्रं निक्खिवस्तामि, खंघं निक्खिवस्तामि, ग्रज्भयगं निक्खिवस्तामि,

गाहा— 'जत्थ य जं जागोज्जा, निक्खेवं निक्खिवे निरवसेसं। जत्थ वि घ्रा न जागोज्जा, चउक्कगं निक्खिवे तत्थ ॥१॥ ष्रावश्यक स्वरूपम्—

सुत्तं = प्र∘ से किं तं त्रावस्सयं ?

उ० त्रावस्सयं चडिवहं पर्वात्तं, तं जहा—

१ नामावस्सयं, २ ठवणावस्सयं,

३ दन्त्रावस्सयं, ४ भावावस्सयं।

सुत्तं ६ प्र० से किं तं नामावस्तयं ? उ० नामावस्तयं—जस्त गं जीवस्त वा, श्रजीवस्त वा,

जीवाण वा, श्रजीवाण वा, तदुभयस्स वा, तदुभयाण वा, 'श्रावस्सए' चि नामं कजइ, से चं नामावस्सयं।

सुतं १० प्र० से किं तं ठवणावस्सयं ?

ड॰ ठवणावस्तयं—जं णं कहकम्मे वा, पोत्थकम्मे वा, वित्तकम्मे वा, लेप्पकम्मे वा, गंथिमे वा, वेढिमे वा, पूरिमे वा, संघाइमे वा,

श्रक्षे वा, वराष्ट्रण् वा एगो वा, श्रगोगो वा, सब्भावठवणा वा, श्रसब्भावठवणा वा ''श्रावस्सए'' ति ठवणा ठविज्ञह्, से त्तं ठवणावस्सयं।

सुरं ११ प्र॰ नाम-द्ववणाणं को पइविसेसी १ ड॰ णामं श्रावकहिश्रं, ठवणा इत्तरिश्रा वा होजा, श्रावकहिश्रा वा।

उ॰ दच्वावस्सयं दुविहं पराण्ते, तं जहा— १ त्रागमश्रो त्र, २ नो त्रागमश्रो श्र ।

सुत्तं १२ प्र० से किं तं दच्यावस्सयं ?

सुतं १३ प्र० से किं तं आगमओ दन्वावस्सयं ? उ० दन्वावस्सयं—जस्स गां 'आवस्सए' ति

सिक्खितं, ठितं, जितं, मितं, परिजितं, नामसमं, घोससमं, त्रहीणक्खरं, त्रणचक्खरं, त्रञ्चाइद्धक्खरं, त्रक्खलित्रं, त्रमिलित्रं, त्रवचामेलियं, पिडपुरागं, पिडपुराग्योसं,

कंठोडुविष्पमुक्कं, गुरुवायणोवगयं, से गां तत्थ वायगाए, पुच्छगाए, परित्रहुणाए धम्मकहाए, गो अ्रग्रुप्पेहाए।

कम्हा ? 'द्यगुवच्चोगो दव्य' मिति कट्ड । नेगमस्स गं एगो श्रणुवउत्तो, श्रागमश्रो एगं दव्वावस्सयं, दोिएग् श्रणुवउत्ता, श्रागमश्रो दोिएग् दव्वावस्सयाई, तििएग् श्रणुवउत्ता, श्रागमश्रो तििएग् दव्वावस्सयाई, प्रवं जावस्त्रा श्रगावदना, श्रागमश्रो तावस्त्राई दव्वावस्सयाई.

पवं जावइत्रा श्रणुवउत्ता, श्रागमश्रो तावइश्राई दच्वावस्सयाइं, एवमेव ववहारस्स वि ।

संगहस्स गं एगो वा त्र्रागो वा

त्रणुवउत्तो वा श्रगुवउत्ता वा श्रागमत्रो दन्वावस्तयं दन्वावस्तयाणि वा से एगे दन्वावसए।

उन्जुसुयस्स-एगो त्राणुवउत्तो

त्रागमत्रो एगं दन्वावस्सयं, पुहुत्तं नेन्छइ। तिएहं सद्दनयाणं जाणए त्रणुवउत्तं अवत्थु।

कम्हा ?

जह जागए, त्रागुवउत्तं न भवति. जह त्रागुवउत्तं जाणए न भवति, तम्हा गात्थि त्रागमत्रो दन्वावस्सयं। से तं त्रागमत्रो दन्वावस्सयं।

खुतं १५ प्र० से किं तं नो-त्रागमत्रो दन्वावस्सयं १ उ० नो-त्रागमत्रो दन्वावस्सयं तिविहं परागत्तं, तं जहा— १ जाग्य-सरीर-दन्वावस्सयं,

२ भवित्र-सरीर-दच्वावस्सयं,

३ जाग्य सरीर-भवित्र्य-सरीर वहरित्तं द्व्यावस्सयं ।

सुत्तं १६ प्र० से किं तं जाग्यसरीरदच्यावस्सयं ? उ० जाणयसरीरदव्यावस्सयं-"श्रावस्सए" ति पयत्थाहिगारजाग्यस्स जं सरीरयं ववगय-चुय-चावित-चत्तदेहं, जीवविप्पजढ़ं सिजागयं वा, संथारगयं वा, निसीहित्रागयं वा, सिद्धिसलातलगयं वा पासित्ता गां कोई भगेजा'--'श्रहो !' गां इमेगां सरीरसमुस्सएगां जिणदिट्टेगं भावेगं ''त्रावस्सए'' ति पयं त्राघवियं, परण्यवित्रं, परूवित्रं, दंसिश्चं, निदंसिश्चं, उवदंसिश्चं। प्र० जहा को दिइंतो १ उ० अयं महु-कुंभे आसी, अयं घय-कुंभे आसी । से तं-जाणय-सरीर-दच्चावसर्यं। सुतं १७ प्र० से किं तं भवित्रा-सरीर-दच्चावस्सयं ? उ० भवित्रा-सरीर-दच्यावस्सयं-जे जीवे जोणिजम्मणनिक्खंते, इमेखं चेव श्रात्तएखं सरीरसम्रस्सएखं जिणोवदिद्वेगं भावेगं 'श्रावस्सए' त्ति पयं सेयकाले सिक्खिस्सइ न ताव सिक्खइ।

प्र॰ जहा को दिष्टंतो ? उ॰ त्रयं महु-कुंभे भविस्सइ, त्रयं घय-कुंभे भविस्सइ। से त्तं भवित्र-सरीर-दव्यावस्सयं सुत्तं १८ प्र० से किं तं जाग्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्तं दव्वावस्सयं ? उ० जाग्यसरीर-भवित्रसरीर-वर्हरित्ते दव्वावस्सए तिविहे पर्गात्ते,

> तं जहा---१ लोइयं, २ कुप्पावयिणयं, ३ लोउत्तरिश्रं

सुत्तं १८ प्र० से किं तं लोइयं दव्यावस्सयं ? उ० लोइयं दव्वावस्सयं-

जे इमे राईसर-तलवर-माडंबिश्र-कोडंबिश्र-

इब्म-सेट्टि-सेगावइ-सत्थवाह-पभिइत्रो, कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए सुविमलाए फुल्लुप्पल-कमल-कोमलुम्मिलिश्रम्मि-श्रहापंडुरे पभाए,

रत्तासोगपगास-किंसुत्र्य-सुत्र्यमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागर-नलिणि-संडबोहए उद्विश्रमिम सूरे, सहस्सरस्सिम्मि दिण्यरे तेत्रसा जलंते

मुहघोत्रम्-दंतपक्खालग्-तेल्ल-फगिह-सिद्धत्थ-हरिश्रालिय-श्रद्दाग-धूव-पुप्फ-मल्ल-गंध-तंबोल— वत्थाइश्राइं दव्वावस्सयाईं करेंति,

तस्रो पच्छा रायकुलं वा देवकुलं वा

श्रारामं वा, उज्जागां वा सभं वा पवं वा गच्छंति ।

से त्तं लोइयं द्वावस्सयं ।

सुत्तं २० प्र० से किं तं कुप्पावयिण्यं द्ववावस्सयं ? ं उ० कुप्पावयशिश्चं दन्वावस्सयं-जे इमे चरग-चीरिग-- चम्मखंडिश्र-भिक्खोंड-पंडुरंग-गोंश्रम-गोव्यतिश्र-गिहिधम्म-धम्मचितग-श्रविरुद्ध-विरुद्ध-वुड्द-सावग-पिम्हश्रो पासंडत्था कल्लं पाउप्पभायाए रयगीए * अव * ' तेश्रसा जलंते,

इंदस्स वा, खंदस्स वा, रुद्दस्स वा, सिवस्स वा, वेसमणस्स वा, देवस्स वा, नागस्स वा, जक्खस्स वा, भूश्रस्स वा, मुगुंदस्स वा, श्रज्जए वा, दुग्गाए वा, कोट्टिकिरियाए वा,

उवलेवण-संमज्जण-श्रावरिसण-धृव-पुष्फ-गंधमल्लाइश्राईं दव्यावस्तयाईं करेंति । से त्तं कुप्पावयणियं दव्यावस्तयं।

सुत्तं २१ प्र० से किं तं लोगुत्तरियं दव्वावस्तयं ? उ० लोगुत्तरियं दव्वावस्तयं—

जे इमे समणगुणग्रुक्कजोगी छक्कायनिरणुकंपा, हया इव उद्दामा, गया इव निरंकुसा, बद्दा, मद्दा, तुप्पोद्दा, पंढुरपडपाउरणा, जिणाणमणाणाए सच्छंदं विहरिक्षण उमग्रो कालं श्रावस्सयस्स उवदंति,

से तं लोगुत्तरिश्रं दव्वावस्तयं।
से तं जाग्यसरीर-भवित्रसरीरवइरित्तं दव्वावस्तयं।
से तं नो-श्रागमश्रो दव्वावस्तयं।
से तं दव्वावस्तयं।

*सूत्र १६ से पूरा पाठ जानना।

सुत्तं २२ प्र० से किं तं भावावस्सयं ?

उ० भावाबस्सयं दुविहं पराणतां, व तं जहा—

१ त्रागमत्रो च, २ नो त्रागमत्रो छ।

सुत्तं २३ प्र० से किं तं आगमओ भावावस्सयं ? उ० आगमओ भावावस्सयं जाणए उवउत्ते। से तं आगमओ भावावस्सयं।

उ० नो आगमओ भावावस्सयं तिविहं परण्यातं, तं जहा— १ लोइयं २ कुप्पावयणियं ३ लोगुत्तरिश्रं

सुत्तं २४ प्र० से किं तं नो त्रागमत्रो भावावस्सयं ?

सुत्तं २५ प्र० से किं तं लोइयं भावावस्सयं ?
उ० लोइयं भावावस्सयं—पुन्वग्रहे भारहं
अवरग्रहे रामायगां,
से तं लोइयं मावावस्सयं।

सुत्तं २६ प्र० से किं तं कुणावयिष्यं भावावस्सयं ? उ० कुणावयिष्यं भावावस्सयं—

जे इमे चरग-चीरिग : अजाव: 'पामंडतथा इज्जंजिल-होम-जपोन्दुरुक्क--नमुक्कारमाइआई सावावस्सयाई करेंति । से तं कुप्पावयशिश्रं भावावस्सयं। सुत्तं २७ प्र० से किं तं लोगुत्तरिश्चं भावावस्सयं ? - ड० लोगुत्तरिश्चं भावावस्सयं-ने गां इमे-समणे वा, समणी वा,

सावश्रो वा, साविश्रा वा,

तिचचत्ते, तम्मणे, तल्लेसे, तद्दक्भवसिए, तत्तिव्वज्भवसाणे, तदद्वीवउत्ते,*

तद्पिश्रकरगो, तन्भावगाभाविए, त्रग्रात्थ कत्थइ मणं त्रकरेमाग्रे

उमत्रो कालं त्रावस्सयं करेंति। से त्तं लोगुत्तरियं भावावस्सयं। से तं नो-श्रागमतो भावावस्सयं।

से त्तं भावावस्सयं।

∔∴ सुत्तं २८ तस्स खं इमे एगद्विश्रा गाणाघोसा गागावंजगा णामधेञा भवंति,

तं जहा---

समग्रेणं सावएगाय, अवस्स कायव्वयं हेवइ जम्हा । श्रंतो श्रहोनिसम्स य, तम्हा 'श्रावस्सयं' नाम ॥ २ ॥ से तं आवस्सयं।

🕈 श्रुत-स्वरूपम्— सुत्तं २६ प्र० से किंतं सुयं ? 🗈

उ० सुझं चउविवहं पर्यासं, तं जहा—

***उत्ते जिए। वयण धम्माणुराग रत्तमणे ।**

गाहा- त्रावस्सयं श्रवस्संकरणिज्जं ,धुवनिग्गहो विसोही स्र । अन्भयण्छक्कवग्गों, नाद्यों अराहणा मग्गों ॥१॥

१ नाम-सुअं २ ठवणा-सुअं ३ दव्व-सुअं ४ भाव-सुअं।

सुत्तं ३० प्र० से किं तं नामसुत्रं १ ड० नामसुत्रं-जस्स गां जीवस्स वा *** जाव **** ''सुए'' त्ति नामं कज्जइ, से त्तं नामसुत्रं।

सुत्तं ३१ प्र० से किं तं ठवणासुत्रं ?
उ० ठवणासुयं—
जं यां कट्ठकम्मे वा * * जाव * * * ठवणा ठविज्जइ,
से त्तं ठवणासुत्रं ।
प्र० नामठवणायां को पइविसेसी ?
उ० नामं श्रावकहित्रं
ठवणा इत्तरिश्रा वा होजा, श्रावकहिश्रा वा ।

सुत्तं ३२ प्र० से किं तं दव्यसुत्रं ?
उ० दव्यसुत्रं दुविहं परगात्तं,
तं जहा—
१ श्रागमतो श्र, २ नो श्रागमतो श्र।

कम्हा १

सुत्तं ३३ प्रवन्ते किं तं आगमतो दव्वसुअं ? उव आगमतो दव्वसुअं—जस्स गां 'सुए' ति पयं सिक्खियं ठियं जियं *** **जाव *** गो अगुप्पेहाए ।

> 'श्रणुवश्रोगो' दन्वमिति कट्ड । नेगमस्स गां एगो श्रणुवउत्तो श्रागमश्रो एगं दन्वसुश्रं ··· * जाव · विषहं सहनयागं जाणए श्रणुवउत्ते अवत्थु

क्ष्मुत्र ६ से पूरा पाठ जानना । असूत्र १० से पूरा पाठ जानना । असूत्र नं० १२ से पूरा पाठ जानना । असूत्र नं० १४ से पूरा पाठ जानना ।

अगुअोगदारसूत्तं श्रुवाधिकारः] कम्हा ? जइ जागाए अग्रुवउत्ते न भवइ।

जइ ऋणुवउत्ते जागए न भवइ,

से तं त्रागमत्रो दव्वसुत्रं।

सुत्तं ३५ प्र० से किं तं जाणयसरीरदव्वसुद्धं ?

उ० जाग्यसरीरदव्वसुत्रं-

से तं जाणयसरीरदव्वसुत्रं।

सुत्तं ३६ प्र० से किं तं भविश्रसरीरदव्यसुश्चं १.

से तं भविश्रसरीरद्व्वसुत्रं।

"सुश्र" ति पयत्थाहिगारजाणयस्स

ं *****जाव • • • पासित्ता गां कोई भगोज्जा—

जं सरीरयं ववगय-चुत्र-चावित्र-चत्तदेहं

श्रहो ! गां इमेगां सरीरसम्रस्सएगां जिगादिद्वेगां भावेगां

''सुत्र'' ति पयं त्राघवियं ''क्षजाव ''त्रायं घय-कुंभे त्रासी

उ० भविश्रसरीरदव्वसुश्रं-जे जीवे जोणि-जम्मण-निक्खंते

सेयकाले सिक्खिस्सइ *** ** जाव *** अयं घयकुं मे भविस्सइ ।

२८६ त्र नं ०१६ से पूरा पाठ जानना । २ 🚓 सूत्र नं ०१७ के अनुसार पाठ जानना ।

अजाव ''जिणोवदिद्वेगां भावेगां 'सुत्र'' ति पयं

प्र० से किं तं नो आगमओ दव्वसुअं ?

उ० नो श्रागमश्रो दन्वसुद्धं तिविहं परेणत्तं,

१ जाण्यसरीरदव्वसुश्रं २ भवित्रसरीरदव्वसुश्रं

३ जागायसरीर-भवित्रसरीरवहरित्तं दव्वसुर्यं ।

तम्हा गित्थ श्रागमत्रो दव्वसुत्रं ।

तं जहा---

सुत्तं ३४

पत्तय-पोत्थयलिहि अं।

श्रह्वा जाग्यसरीर-भवित्रसरीरवइरिचं

दव्वसुञ्जं पंचविहं परणत्तं, तं जहा---

प्र० से किं तं श्रंडयं ? उ० श्रंडयं हंसगब्भादि ।

प्र॰ से किं तं बोंडयं ? उ० बोडयं कप्पासमाइ।

प्र० से किं तं कीडवं ?

उ० कीडयं पंचिवहं पएण्यं, तं जहा-

१ पट्टे २ मलए ३ इंग्रुए ४ चीगांग्रुए ४ किमिरांग । प्र० से किं तं वालयं ?

उ० वालयं पंचिवहं पराणतां,

तं जहा---१ उपिणए २ उद्दिए ३ मित्रलोमिए ४ कोतवे ५ किट्टिसे ।

प्र० से किं तं वागयं ? उ० वागयं असगामाइ।

से त्तं जाग्यसरीर-भवित्रसरीरवइरित्तं दव्वसुत्रं।

से त'नो श्रागमश्रो द्व्यसुश्रं। से तं दन्दसुअं।

* कहीं 'श्रलसिमाइ' (श्रतसी) सूत्रपाठ है।

सुत्तं ३७ प्र० से किं तं जाण्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्तं दव्वसुद्धं ? उ० जाण्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्तं दव्वसुश्रं-

१ ऋंडयं २ बोडयं ३ कीडयं ४ वालयं ५ वागयं ।

सु०-३८ प्र० से कि तं भावसुत्रं ?
उ० भावसुत्रं दुविहं परणत्तं,
तं जहा—
१ श्रागमश्रो य २ नो श्रागमश्रो य ।

सु॰-३६ प्र॰ से किं तं त्रागमत्रो भावसुश्चं ? उ॰ श्वागमत्रो भावसुत्रं जाणए उवउत्ते। से तं त्रागमत्रो भावसुत्रं।

सु०-४० प्र० से कि तं नो आगमओ भावसुअं ? उ० नो आगमओ भावसुअं दुविहं परणत्तं, तं जहा—

१ 'लोइअं २ लोगुत्तरिश्रं च।

सु०-४१ निम० से किं तं लोइअं नो श्रागमश्रो भावसुश्रंः? उ० लोइयं नो श्रागमश्रो भावसुश्रं— जं इमं श्रयणाणिएहिं मिन्छिदिद्वीहिंः सन्द्रंदबुद्धिमइविगण्पियं

> तं जहा— भारहं, रामायणं भीमासुरुक्कं,

कोडिल्लयं, घोडयग्रहं सगडमिहश्राउ कप्पासिश्रं, गागसुहुमं, कग्णगसत्तरी, वेसियं, वहसेसियं, बुद्धसासगं,

ंकाविलं, लोगायतं, सिंह्यंतं,

माहर-पुराग्य-वागरग्य-नाडगाई, महरा वावत्तरिकलात्रो, चत्तारि वेत्रा संगोवंगा।

अहवा वावत्तारकलात्रा, चलार वद्या सगावग से तं लोइ**यं** नो खागमस्रो भावसुद्यं। सु०-४२ प्र० से कि तं लोउत्तरिश्रं नो श्रागमश्रो भावसुश्रं ? उ० लोउत्तरिश्रं नो श्रागमश्रो भावसुश्रं—

जं इमं अरिहंतेहिं भगवंतेहिं,

उपरण-णाण-दंसगधरेहिं,

तीय-पञ्चुपराग्य-मणागय-जाणएहिं,

सन्वएणूहिं सन्वद्रिसीहिं, तिलुक-वहित-महितपूइएहिं

पणीश्चं दुवालसंगं पणिपिडगं, तं जहा—

ै श्रायारो २ स्र्यगडो ३ ठाणं

४ समवाश्रो ५ विवाहपर्णात्ती ६ गायाधम्मकहात्रो,

७ उवासगदसाओ द अंतगडदसाओ ह अणुत्तरोववाइयदसाओ, १० पण्हावागरणाई ११ विवागसुत्रं १२ दिद्विवात्रो य।

से तं लोउत्तरियं नो त्रागमत्रो भावसुत्रं।

से त्तं नो श्रागमश्रो भावसुश्रं।

से तं भावसुत्रं।

सु०-४३ तस्स गं इमे एगट्टिश्रा, गागाघोसा, गागावंजगा नामधेका भवंति,

तं जहां—

गाहा—सुश्र-सुत्त-गंथ-सिद्धंत-सासगे त्रागवयग उवएसे। पत्रवण श्रागमे विश्र एगद्वा पज्जवा सुत्ते॥१॥ से तं सुत्र'।

स्कं घस्यरूपम्-

स्र अ० से कि तं खंधे ?

- की जननित्र गाणडो

उ० खंधे चउव्विहे परणत्ते, तं जहा—

१ नामखंघे २ ठवणाखंघे ३ दव्वखंघे ४ भावखंघे ।

सु०-४५ ं नामह्वयात्रो अपुन्वभिषात्रासाक्षमेसा भाषात्रान्वात्रो । सु०-४६ प्र० से किंतं दव्वखंधे ?

सु०-४६ प्र० सं कि त दव्यस्य । उ० दव्यस्य दिहे पर

उ० दव्यखंधे दुविहे परणत्ते, तं जहा-—

तं जहा-— १ त्रागमग्रो य[ं]२ नो त्रागमग्रो य ।

१ त्रागमत्रा य २ ना त्रागमत्रा य । प्र० से कि तं त्रागमत्रो दव्वखंधे १ उ० त्रागमत्रो दव्य-खंधे—जस्स गां 'खंधे' ति पंगं

सिनिखयं अजाव सेतं भवित्रसरीर दव्वखंधे नवरं खंधामिलावी

नवरं खंधामिलावी
प्र० से किं तं जाग्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्ते दव्वखंधे ?
उ० जाग्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्ते दव्वखंधे तिविहे पर्णासे,

तं जहा— १ सचित्तं २ ग्रचित्तं ३ मीसए। सु०-४७ प्र० से किं तं सचित्तं दव्वखंधे ?

अ० स ।क त साचत्त द्व्यख्य ः
 उ० सचित्तं द्व्य-खंघे त्र्रणेगविहे प्रण्णत्ते,
 तं जहा—

हय-खंधे गय-खंधे किन्नर-खंधे किंपुरस-खंधे महोरग-खंधे गंधच्य-खंधे

से तं संचित्तं दव्यखंधे।

क्सूत्र ६,१०,११, के समान पाठ जानना क्सूत्र नं०१३ से १७ पर्यन्त के समान पाठ जानना ।

उसभखंधे।

सु०-४८ प्र० से किं तं अचित्तं दन्वखंधे ? उ० अचित्तं दव्वखंधे अग्रेगविहे पर्णतं,

तं जहा-दुपसिए, तिपएसिए जाव दसपएसिए,

संविज पएसिए, असंविज पएसिए, अर्गत पएसिए। से तं श्रचित्तं दव्यखंधे।

सु०-४६ प्र॰ से किं तं मीसए दन्वसंधे !

उ० मीसए दन्वखंधे श्रगोगविहं पराणत्ते, तं जहा---

सेगाए अग्गिमे खंधे, सेगाए मिक्सिमे खंधे,

सेगाए पच्छिमे खंधे।

से तं मीसए दम्बखंधे। श्रहवा जाण्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्ते

दव्यखंधे तिविहे पएण्चे, तं जहा---१ कसिगाखंधे २ अकसिगाखंधे ३ अगोगदन्विअखंधे।

सु०-५०

सु० ५१ प्र० से किं तं कसिगाखंधे ?

उ० कसिणखंधे-से चेव हयखंधे, गयखंधे ' ' * जाव' ' ' उसमखंघे ।

से तं कसिग्यखंधे। सु० ५२ प्र० से किं तं अकसिण्खंधे ?

उ० श्रकसिगाखंधे-से चेव दुपएसियाइ खंधे ****जाव*** श्रगांतपएसिए खंघे ।

से तं अकसिग्रहंधे।

*सूत्र नं ० ४७ से पूरा पाठ जानना । *सूत्र नं ४८ से पूरा पाठ जानना । -

सु०-५३ अ० से किं तं अगोगदवियखंधे ? ् उ० अगोगदवियखंधे—तस्स चेव देसे अवचिए तस्स चेव देसे उविचिए। से तं श्रगोगदविश्रखंघे। से तं जाण्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्ते दृश्वसंधे । से त्तं नो त्यागमत्रो दव्वसंघे। से तं दव्यखंधे। सु०-५४ प्र० से किं तं भावखंघे ? ंड० भावखंघे दुविहे पराणत्ते, तं जहा---१ श्रागमत्रो य २ नो-श्रागमत्रो य । सु०-५५ प्र० से किं तं त्रागमत्रो मावलंघे ? उ० श्रागमश्रो भावखंधे जागाए उवउत्ते। से तं श्रागमश्रो भावखंधे। सु०-४६ प्र० से किं तं नो त्रागमत्रो भावखंधे ? उ० नो आगमओ भावखंधे-एएसि चेव सामाइयमाइयागं छएहं अन्मयगार्या समुदय-सिमइ-समागमेणं श्रावस्सयसुश्रखंघे भावखंघे ति लब्मइ। से तं नो श्रागमश्रो भावखंधे। से तं भावखंधे। **₹**0-¼0 तस्स गं इमे एगड्डिया णागाघोसा गागावंजणा नामधेञा भवंति, - तं जहा---

गाहा—गण काए अ निकाए, खंघे वग्गे तहेव रासी अ।
पुंजे पिंडे निगरे, संघाए आउल समूहे ॥१॥
से तं खंघे।

सु०-५८ त्रावस्सगस्स गं इमे अत्थाहियारा भवंति, तं जहा—

गाहा-सावज्जजोग-विरई', उक्कित्तर्गं गुग्रवश्रो श्रपिवत्तीं। खलिश्रम्स निंदगां, वगातिगिच्छ गुग्धारणा चेव ॥१॥

सु०-५६ गाहा-त्रावस्सयस्स एसो, पिंडत्थो विषणत्रो समासेगां।
एत्तो एककेक्कं, पुण अन्भयणं कित्तइस्सामि ॥१॥
तं जहा-

१ सामाइश्रं २ चउवीसत्थत्रो ३ वंदगायं ४ पडिक्कमणं ५ काउस्सग्गो ६ पचक्खाणं। तत्थ पढमं श्रज्भयणं सामाइयं।

तस्स गं इमे चत्तारि अणुओगदारा भवंति, तं जहा-

१ उवक्कमे २ निक्खेवे ३ द्याणुगमे ४ नए। उपक्रमस्वरूपम्—

सु०-६० प्र० (१) से किं तं उवक्कमे ? उ० उवक्कमे छन्विहे पर्गासे.

तं जहा—

१ गामोवक्कमे २ ठवगोवक्कमे ३ द्व्वोवक्कमे ४ खेत्तोवक्कमे ५ कालोवक्कमे ६ भावोवक्कमे । गाम ठवगात्रो गयात्रो *।

^{*}सूत्र नं o E, १o, ११, के अनुसार पाठ जानना

'सु०-६२

*

प्र० से किं तं दव्वोवक्कमे ?

उ० दन्वोवक्कमे दुविहे पएण्चे,

तं जहा---

१ त्रागमञ्जो य २ नो श्रागमञ्जो य ।

··· * जाव · · सेत्तं भवित्रसरीरद्व्वोवक्कमे

प्र० से किं तं जाणगसरीर-भविश्रसरीरवइरित्तं दव्वोवक्कमे ? उ० जाणयसरीर-भविश्रसरीरवइरित्तं दव्वोवक्कमे

तिविहे पएगात्तं, तं जहा—

१ सचित्तं २ श्रचित्तं ६ मीसए।

सु०-६१ प्र० से किं तं सचित्तं दव्वोवक्कमे ?

उ० सचित्तं दब्बोवक्कमे तिविहे पर्गात्ते, तं जहा—

१ दुपयाणं २ चउपयाणं ३ अपयाणं ।

एक्किक्के पुरा दुविहे पराणत्ते, तं जहा—

२ से किं तं दुपयाणं उवक्कमे ? दुपयाणं—नडाणं, नद्वाणं, जल्लाणं, मल्लाणं,

१ परिक्कमे अ २ वत्थुविणासे अ।

नडाय, नडाय, जल्लाय, मल्लाय, मुद्धित्रायां, वेलंबगायां, कहगायां, पवगायां, जारुमायां जारुसस्यायां जंजानं जंजानं

लासगार्णं, त्राइक्खगार्णं, लंखार्णं, मंखार्णं, त्र्णइल्लार्णं, तुंववीशियार्णं, क्षवावीयार्णं, मागहार्णं।

***सूत्र नं ०**.१२ से १८ पर्यन्त के श्रनुसार पाठ जानना । सकाविद्याणां ।

ंसे त्तं दुपयागां उवक्कमे ।

सु०-६३ प्र० से किं तं चडप्पयाणं उवक्कमे ?

उ० चउपयाग्यं—श्रासाग्यं, हत्थीग्यं, इचाइ । से नं चउपयागं उवक्कमे।

सु०-६४ प्र० से किं तं श्रपयाणं उवक्कमे ? उठ अपयाग्रं-ग्रंवाग्रं ग्रंवाडगाग्रं इचाइ ।

से तं अपश्रोवक्कमे। से त्तं सचित्त-दव्वोवक्कमे ी सु०-६५ प्र० से किं तं अचित्त-द्व्वोवक्कमे ?

ड० श्रचित्त-द्व्वोवक्कमे-खंडाईगां, गुडाईगां, मच्छंडीगांन से तं अचित्तं दच्वीवक्कमे। सु०-६६ प्र० से किं तं मीसए-दच्चोवक्कमे ?

उ० मीसए-दव्योवक्कसे-से चेव थासग-श्रायंसगाइ-मंडिए श्रासाइ। से तं मीसए दव्योवक्कमे। से नं जाग्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्तं दच्चीवक्कमे ।

से त्तं नो श्रागमश्रो दच्त्रोवनकमे । से त' दन्नोवक्कमे। सु०-६७ प्रव से किं तं खेत्तीवक्कमे ?

उ० खेलीवक्कमे-जं गं हलकुलित्राईहिं खेत्ताई उवक्कमिन्जंति । से च खेलोवक्क्रमे।

सु०-६८ प्र० से किं तं कालोवक्कमे ?

उ० कालोवक्कमे—

जं गां नालि आईहिं कालस्सोवनकमगां कीरइ। से तं कालोवक्कमे।

सु० ६६ प्र० से किं तं भावोवक्कमे ?

उ० भावोवक्कमे दुविहे परागत्ते, तं जहा---

१ त्रागम्त्रो त्र २ नो त्रागमत्रो त्र ।

तत्थ त्रागमत्रो जाणए उवउत्ते । प्र० से कि तं नों श्रागमश्रो भावोवकमे .

> उ० नो त्रागमत्रो भावोवक्कमे दुविहे पएण्ते. तं जहा---

१ पसत्थे ग्रा २ त्रपसत्थे ग्रा ।

प्र० से कि तं अपसत्थे नो आगमत्रो भावोवक्कमे ? अपसत्थे नो श्रागमश्रो भावोवक्कमे

डोडिगि-गगिया-स्रमचाईगां। से किं तें पसत्थे नो आगमत्रो भावीवकमे ? ं पसत्थे गुरुमाईगां ।

से तं नो-श्रागमश्रो भावोवकमे। से त्तं भावोवक्कमे 🍞

से चं उवक्कमें। सु०-७० श्रहवा उवक्कमे छन्विहे पराग्ते,

तं जहा----१ त्रागुपुन्वी २ नामं ३ पमागं ४ वत्तन्वया

... ५ अत्थाहिगारे ६ समोत्रारे ।

सु०-७१ प्र० (१

प्र० (१) से किं तं श्राणुप्ता ? उं० श्राणुप्त्वी दसविहा परणता,

उं० त्राणुपुच्ची दसविहा पराण्चा, तं जहा—

१ नामाणुपुन्नी २ ठवणाणुपुन्नी ३ दन्नाणुपुन्नी ४ खेत्ताणुपुन्नी

र दन्नासुपुन्ना ४ सत्तासुपुन्ना
५ कालासुपुन्नी ६ सिकत्तस्यासुपुन्नी
७ गर्मासुपुन्नी ८ संठासासुपुन्नी

६ सामात्रारी आणुपुच्वी १० भावाणुपुच्वी।

सु०-७२ (१) नाम (२) ठवणात्रो क्ष्मयात्रो ।

प्र० (३) से कि तं दव्वाणुपुव्वी ? उ० दव्वाणुपुव्वी दुविहा पराणचा, तं जहा—

१ त्रागमत्रो त्र २ नो-त्रागमत्रो त्र । प्र० से किं तं त्रागमत्रो दव्वाखुपुट्यी १

उ० श्रागमग्रो दन्नाणुपुन्नी— जस्स गां 'श्राणुपुन्ति' ति पयं सिक्खियं, ठियं, जिय, मियं, परिजियं *आव नो श्रणुप्पेहाए ।

कम्हा ? त्र्रणुवत्रोगो दच्वमिति कट्ड ।

अणुवजाना दन्यामात कट्ड । योगमस्स गां एनो अणुवउत्तो आगमश्रो एना दन्बाणुपुन्बी, ""अजाव""जागए श्रमुवउत्ते भवत्थु—

कम्हा १ जइ जागए, अग्रुवउत्ते न भवइ।

*सूत्र ६, १०, ११, के श्रनुसार पूरा पाठ जानना । *सूत्र नं० १२ से पूरा पाठ जानना । # सूत्र नं० १४ मे पूरा पाठ जानना । जइ अणुवउत्ते जागए न भवति, तम्हा नित्थ त्रागमत्रो द्व्वाणुपुच्वी । से त्तं त्रागमत्रो द्व्वाणुपुच्वी । प्र० से किं तं नो-त्रागमत्रो द्व्वाणुपुच्वी ?

उ० नो-ग्रागमञ्जो द्वाणुपुच्ची तिविहा पर्याचा, तं जहा—

१ जागय-सरीर-दच्चाग्रुपुच्ची,

२ भविश्र-सरीर-दव्वाखुपुव्वी, ३ जाण्यसरीर-भविश्रसरीर-वइरित्ता दव्वाखुपुव्वी।

प्र० से किं तं जाणयसरीर-दच्चाखुव्वी १ उ० 'त्राखुपुच्चि' पयत्थाहिगार जाणयस्स

जं सरीरयं ववगय-चुय-चाविय-चत्तदेहं— सेसं जहां अद्वावसए तहा भागिश्रव्वं *** अजाव **

से तं जाणयसरीर दच्वाणुप्रव्वी।

प्र॰ से किं तं भविश्रसरीर-दच्वाग्रुपुच्वी ? उ॰ भविश्र-सरीर-दच्वाग्रुपुच्ची—

जे जीवे जोगाी-जम्मगा-निक्खंते सेसं जहा दन्वावस्सए : अजाव:

से तं भविश्रसरीर दच्चाखुप्रची।

प्र॰ से कि तं जाणयसरीर-भिवश्रसरीर-वहरित्ता द्वाणुपुंच्वी १ उ॰ जाणयसरीर-भिवश्रसरीर-वहरित्ता द्वाणुपुंच्वी दुविहा परणत्ता, तं जहा—

असूत्र नं १६ की पंक्ति ४ से पंक्ति १३ तक का पाठ लेना। असूत्र नं १७ की पंक्ति ४ से द्र तक का पाठ लेना। १ उविश्विश्रा य २ अशोविश्विहित्रा य । तत्थ गं जा सा उविश्विश्विश्व सा ठप्पा । तत्थ गं जा सा अणोविश्विहित्रा, सा दुविहा परगाचा, तं जहा— १ नेगम-ववहारागं २ संगहस्स य ।

सु०-७३ प्र० (१) से किं तं नेगम-ववहाराणं त्रणोवणिहिश्रा— दन्वाणुपुन्वी ? उ० नेगम-ववहाराणं त्रणोवणिहित्रा दन्वाणुपुन्वी

तं जहा— १ श्रहुपयपरूवणया, २ भंगसम्बिकत्तणया ३ भंगोवदंसणया ४ समोत्रारे ५ श्रणुगमे ।

पंचविहा पएग्राचा,

सु०-७४ प्र० (१) से कि तं नेगम-त्रवहाराणं अद्वपयपह्रवण्या १
उ० नेगम-त्रवहाराणं अद्वपयपह्रवण्या—
तिपएसिए जाव दसपएसिए आणुपुन्ती,
संखेन्जपएसिए आणुपुन्ती,
असंखिन्जपएसिए आणुपुन्ती,

श्रणंतपएसिए श्राग्रुपुन्वी, परमाग्रुपोग्गले श्रगाग्रुपुन्वी, दुपएसिए श्रवत्तन्वए,

तिपएसिया त्राणुपुन्वीयोः 'क्षजाव '' त्रणंतपएसियायो त्राणुपुन्वीयो, परमाणुपोग्गला त्रणाणुपुन्वीयो

क्षइसी सूत्र की पंक्ति रे से पंक्ति ६ तक का पाट जानना।

दुपएसित्राई अवत्तव्वयाई।

. , से तं नेगम-ववहाराणं श्रद्वपयपह्नवण्या।

सु०-७५ प्र० एत्राए गां नेगम-ववहारागां अद्वपयपरूवगायाए

कि पत्रोग्रगं ?

उ० एत्राए गां नेगम-ववहारागां श्रहुपयपरुवणयाए भंगसमुक्तित्तग्या कज्जइ।

सु०-७६ प्र० (२) से किं तं नेगम-ववहाराणं भंगसम्रुक्तित्तणया ? उ० नेगम-ववहाराणं भंगसम्रुक्तित्तणया ।

१ त्र्रात्थ त्रागुपुच्ची,

२ त्र्रात्थ त्रगागुपुन्वी,

🚽 ३ 💀 श्रत्थि श्रवत्तव्वए,

(एक वचनान्तास्त्रयः) ऋत्थि ऋाग्रुपुन्वीत्रो,

५ अत्थि अणाणुपुन्वीयो,

६ श्रित्थि त्रवत्तव्वयाइं ।

(बहुवचनान्तास्त्रयः) एवमसंयोगतःषड्भगाः भवन्ति -

७ अहवा अतिथं आगुपुच्ची अ अणागुपुच्ची अ, १

८ अहवा ऋत्थि ऋाणुपुच्ची ऋ ऋगाणुपुच्चीऋो ऋ,२

६ अहवा अत्थि आणुप्यायो अ अगाणुप्या अ,३

संयोगपद्ते पद्त्रयस्य त्रयोद्विकसंयोगाः—

१० ऋहवा ऋत्यि आणुपुन्वीओ स्र ऋणाणुपुन्वीस्रो स्न,४

११ त्रहवा त्रत्थि त्रागुपुच्ची त्र स्रवत्तव्वए स्र ५

१२ अहवा अत्थि आणुपुच्ची अ अवत्तव्वयाई अ ६

१३ अहवा अत्थि आणुपुन्वीओ अ अवत्तव्वए अ ७

१४ अहवा अत्थि आगुपुव्वीओ अअवत्तव्वयाई अ ८

and the second party is the second of the se

१५ श्रहवा अत्थि अणागुपुन्वी अ अवत्तन्वए अ ६ १६ त्रह्वा त्र्रात्थि त्रणाणुपुन्वी त्र त्रवत्तन्वयाई त्र १० १७ ग्रहवा त्रत्थि त्रणाणुपुन्वीत्रो श्र त्रवत्तव्वए त्र ११ १८ ग्रहवा ग्रत्थि ग्रणाणुपुन्वीग्रो ग्र ग्रव**त्तन्वयाई ग्र १**३ एकवचनबहुवचनाभ्यां त्रिपु द्विकयोगेपु च द्वादशभङ्गाः--१६ त्रहवा त्रात्थि स्राग्रुपुन्वी स्र, अणागुपुन्वी अ, अवत्तन्वए अ, १ २० ऋहवा श्रत्थि आखुउन्नी अ, त्र्रणागुपुन्वी अ, अवत्तन्वयाइं अ, २ २१ श्रहवा अन्थि आसुपुन्वी अ, श्रणागुप्वीत्रो श्र, अवत्तव्वए श्र, ३ २२ ऋहवा श्रत्थि आगुपुन्वी अ, अगागुपुन्वीत्रो अ, अवत्तन्वयाइं भ्र, ४ २३ श्रहवा श्रत्थि श्रागुपुन्वीश्रो श्र, अणासुपुन्नी अ अवत्तन्नए अ, ५ २४ अहवा ऋत्थि आग्रुपुन्वीओ ऋ, त्रणागुपुन्वी त्र, त्रवत्तन्वयाइं स्र, ६ २५ ऋहवा ऋत्थि ऋाग्रुपुन्वीऋो ऋ, श्रगागुपुन्वीश्रो श्र, श्रव्वत्तव्वए श्र, ७ २६ ऋहवा श्रत्थि आणुपुन्वीओ श्र, अगागुपुन्वीस्रो स्र, श्रवत्तव्वयाई स्र, ८ ति संत्रोगे एए त्रहभंगा एवं सन्वेऽवि छन्वीसं मंगा। से चं नेगम-ववहाराणं भंगसमुक्कित्तणया।

सु०-७७ प्र० एत्राए गां नेगम-ववहारागां भंगसम्रक्कित्तग्याए किं पत्रोत्रगां ? उ० एत्राए गां नेगम-ववहारागां भंगसमुक्कित्तग्याए भंगोवदंसग्या कीरइ।

सु०-७८ प्र० (३) से किं तं नेगम-ववहारागां भंगोवदंसणया ? उ० नेगम-ववहारागां भंगोवदंसणया— १ तिपएसिए श्राग्रापुठ्वी

> २ परमाग्रुपोग्गले त्रगाग्रुपुन्वी ३ दुपएसिए श्रवत्तन्वए

४ ब्रहवा तिपएसिया त्राणुपुच्चीत्रो ५ परमाणुपोग्गला त्रणाणुपुच्चीत्रो

६ दुपएसित्रा श्रवत्तव्वयाई।

७-१० श्रहवा तिपएसिए श्र परमाखुपुग्गले श्र श्राखुपुर्वी श्र श्रणाखुपुर्वी श्र, चउमंगो। ४

११-१४ त्रहवा तिपएसिए य, दुपएसिए अ त्रागुपुठवी अ श्रवच्चव्यए य, चउभंगो। ८

१५-१'⊏ त्रहवा परमाग्रुपोग्गले य, दुपएसिए य त्रणाग्रुपुट्यी य, त्रवत्तव्वएय, चडभंगों*। १२

१६ अहवा तिपएसिए अ परमाणुपोग्गले अ, दुपएसिए अ आणुपुच्ची अ,अणाणुपुच्ची अ,अवत्तव्वए अ। १

२० अहवा तिपएसिए अ,परमाणुपोग्गले अ,दुपएसिआ अ आणुपुन्नी अ, अगाणुपुन्नी अ, अवत्तन्वयाइं य । २

२१ त्रहवा तिपएसिए अ, परमाणुपुग्गला अ दुपएसिए य, आणुपुन्वी अ, अलाणुपुन्वीश्रो अ, अवत्तन्वए अ। ३

^{*}प्रत्यन्तर में द्वादशभंग का उल्लेख मिलता है।

२२ अहवा तिपएसिए अ, परमाणुपोग्गला य, दुपएसिआ य श्राणुपुन्नी अ,अणाणुपुन्नीओ अ,श्रवत्तन्वयाइं य। ४ २३ अहवा तिपएसिआ अ,परमाणुपोग्गले अ,दुपएसिए य, श्राणुपुन्नीओ अ,श्रणाणुपुन्नीओ य,श्रवत्तन्वए य। ५ २४ अहवा तिपएसिआ अ,परमाणुपोग्गले अ,दुपएसिआ य, श्राणुपुन्नीओ अ,श्रणाणुपुन्नी अ,श्रवत्तन्वयाइं च। ६ २५ श्रह्मा तिपएसिआ य,परमाणुपोग्गलाय दुपएसिए अ, श्राणुपुन्नीओ अ,श्रणाणुपुन्नीओ अ,श्रवत्तन्वए अ। ७ २६ श्रह्मा तिपएसिआ य,परमाणुपोग्गला अ,दुपएसिया अ श्राणुपुन्नीओ अ,श्रणाणुपुन्नीओ य,श्रवत्तन्वयाइं य। द से तं नेगम-नवहाराणं मंगोवदंसण्या।

सु०-७६ प्र० (४) से किं तं समोत्रारे ?
समोत्रारे (भिणिजड़) ।
नेगम-ववहाराणं त्राणुपुच्वीदच्वाई किं समोत्रारंति ?
किं त्राणुपुच्वी-दच्चेहिं समोत्रारंति ?

त्रगागुपुन्वीद्न्वेहिं समोत्ररंति १ त्रवत्तन्वयद्न्वेहिं समोत्ररंति १

उ० नेगम-ववहाराणं ऋाणुपुठ्वीद्वाइं ऋाणुपुठ्वीद्ववेहिं समोयरंति, नो ऋणाणुपुठ्वीद्ववेहिं समोऋरंति,

नो अवत्तव्वयद्व्वेहिं समोत्ररंति।

प्र॰ नेगम-ववहारागं अणाणुपुच्चीदच्चाइं किहं समोत्रारंति १ किं आणुपुच्चीदच्चेहिं समोअरंति १ अणाणुपुच्चीदच्चेहिं समोअरंति १ अवत्तच्चयदच्चेहिं समोअरंति १

सु०-८०

उ० गो श्राणुपुन्नीद्न्नेहिं समीश्ररंति, श्रगाणुपुन्नीद्न्नेहिं समोश्ररंति, नो श्रवत्तन्नयदन्नेहिं समीश्ररंति। प्र० गोगम-वनहाराणं श्रवत्तन्नदन्नाइं कहिं समोश्ररंति ?

नो अवत्तन्वयदन्वेहि समोश्ररंति ।
प्र० गोगम-ववहाराणं अवत्तन्वदन्वाइं व
कि आणुपुन्वीदन्वेहिं समोश्ररंति ?
श्रगाणुपुन्वीदन्वेहिं समोश्ररंति ?
श्रवत्तन्वदन्वेहिं समोश्ररंति ?

उ० नो आणुपुञ्जीदञ्जेहिं समीआरंति, नो अणाणुपुञ्जीदञ्जेहिं समीआरंति, अवत्तञ्जयदञ्जेहिं समीणरंति । से तं समीआरे । (५) से किं तं अणुगमे ? अणुगमे नव विहे पएण्ते

तं जहा— गाहा— संतपयपह्रवणयां, दव्वपमाणं च खित्त फुसणां य। कालों य अंतरं, भाग भावे श्रप्पाबहूँ चेव।।१॥

सु०-८१ प्र० (१) नेगम-ववहाराणं आणुपुन्वीदन्वाइं किं श्रत्थि नित्थ १ उ० णियमा श्रत्थि । प्र० नेगम-ववहाराणं अणाणुपुन्वीदन्वाइं किं अत्थि नित्थ १ उ० णियमा अत्थि । प्र० नेगम-ववहाराणं अवत्तन्वयदन्वाइं किं श्रत्थि नित्थ १ उ० णियमा अत्थि ।

स०-८२ प्र० (२) नेगम-ववहाराणं आणुप्रव्वीदव्वाइं किं संखिज्जाइं ? असंखिज्जाइं ? आणंताइं ? उ० नो संखिज्जाई, नो श्रसंखिज्जाई, श्रग्ताई । %एवं श्रगागुपुन्नीदन्वाई श्रवत्तव्वगदन्वाई य श्रग्ताई भागिश्रन्वाई ।

सु०-८३ प्र० (३) नेगम-ववहाराणं त्राणुपुच्चीद्व्वाइं लोगस्स किं संखिज्जइभागे होज्जा ?

> श्रसंखिज्जइभागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? श्रसंखेज्जेसु भागेसु होज्जा ?

सन्वलोए होन्जा ? उ॰ एगं दन्वं पहुन्च संखिन्जइभागे वा होन्जा,

श्रसंखिन्जहभागे वा होन्जा, संखेन्जेसु भागेसु वा होन्जा,

त्रसंखेन्जेसु भागेसु वा होन्जा, सन्वलोए वा होन्जा। गागादन्वाई पडुच्च

नियमा सन्वलीए होन्जा । प्र० नेगम-ववहाराणं श्रणाणुपुन्वीदन्वाइं कि लोश्रस्स संखिन्जइमागे होन्जा ? ****जाव***सन्वलीए वा होन्जा ?

उ० एगं दन्वं पडुन्च नो संखिन्जहभागे होन्जा, असंखिन्जहभागे होन्जा,

^{*}इसी सूत्र की पंक्ति ? से पंक्ति ३ तक का पाठ जानना *इसी सूत्र की पंक्ति २ से पंक्ति ६ तक के समान पाठ जानना

नो संखेज्जेसु भागेसु होन्जा नो श्रसंखेज्जेसु भागेसु होन्जा नो सन्वलोए होन्जा । गागादन्वाई पडुच नियमा सन्वलोए होजा। एवं श्रवत्तन्वगदन्वाई भागिश्रन्वाई ।

सु०-८४ प्र० (४) नेगम-ववहाराणं श्राणुपुच्चीदच्चाई लोगस्स कि संखेज्जइभागं फुसंति ? श्रसंखेज्जइभागं फुसंति ? संखेज्जे भागे फुसंति ?

> त्रसंखेन्जे भागे फुसंति ? सन्त्रलोगं फुसंति ?

उ० एगं दव्वं पडुच लोगस्स संखेजजहमागं वा फुसंति, *** **जाव***

सञ्बलोगं वा फुसंति ।

णाणादव्वाई पडुच्च नियमा संव्वलोगं फुसंति प्र० गोगम-ववहाराणं त्रणाणुपुच्चीदव्वाई लोगस्स कि संखेज्जइभागं फुसंति ?

'•'*श्रजाव'''

सन्वलोगं फुसंति ? उ॰ एगं दन्वं पडुच

नो संखिज्जइमागं फुसंति, श्रसंखिज्जइमागं फुसंति,

^{*}सूत्र ८२ के समान पाउ जानना । ६ *इसी सूत्र के पहले शश्न का पूरा पाठ है ।.ं .

नो संखिज्जे भागे फुसंति, नो श्रसंखिज्जे भागे फुसंति, नो सन्वलोश्रं फुसंति । णागादन्वाइं पडुच्च नियमा सन्वलोश्रं फुसंति । एवं श्रवत्तन्वगदन्वाइं भागिश्रन्वाइं ।

सु०-८५ प्र० (५) गोगम-ववहारागां आगुपुव्वीदव्वाईं कालुओ केविच्चरं होइ ?

> उ॰ एगं दन्वं पडुन्च जहएणेणं एगं समयं, उक्कोसेणं असंखेन्जं कालं । गागादन्वाइं पडुक्च णियमा सन्वद्धा । श्रमाशापुन्वीदन्वाइं श्रवत्तन्वमदन्वाइं च एवं चेव भाणिश्रन्वाइं ।

सु०-८६ प्र० (६) नेगम-ववहाराणं आणुपुव्वीदव्वाणं अंतरं कालुओं केविच्चरं होइ १

> उ॰ एगं दव्वं पडुच्च जहएगोगं एगं समयं, उक्कोसेगं ऋणंतकालं । गागादव्वाइं पडुच्च गत्थि श्रंतरं ।

प्र॰ गोगम-ववहाराणं ऋणाणुपुन्वीदन्वाणं अंतरं कालश्रो केवन्चिरं होइ ?

उ० एगं दर्वं पडुच्च जहररोगं एगं समयं, उक्कोसेगं ध्रसंखेज्जं कालं । गागादव्वाइं पडुच्च गात्थि श्रंतरं ।

प्र॰ गोगम-ववहाराणं अवत्तव्यगद्व्याणं अंतरं कालको केवच्चिरं होइ ? उ॰ एंगं दव्वं पडुच्च जहएखेएां एगं समयं उक्कोसेएां श्रएांतकालं । गागादव्वाइं पडुच्च गुत्थि श्रंतरं ।

सु ०-८७ प्र० (७) गोगम-ववहाराणां श्राणु प्रविद्वाई सेसद व्वाणां कहमागे होजा ?

कि संखिज्जइमागे होजा ? श्रसंखिज्जइमागे होज्जा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? श्रसंखेज्जेसु भागेसु होच्जा ?

उ॰ नो संखिज्जइभागे होजा, नो त्रसंखिज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा, नियमा त्रसंखेज्जेसु भागेसु होज्जा।

प्र॰ गोगमववहाराणं श्रगागुपुन्वीद्व्वाइं
सेसद्व्वाणं कइमागे होज्जा ?
कि संखेज्जइमागे होज्जा ?
श्रसंखिज्जइमागे होज्जा ?
संखेज्जेस भागेस होज्जा ?
श्रसंखेज्जेस मागेस होज्जा ?

नो संखेज्जइमागे होज्जा, श्रसंखेज्जइमागे होज्जा, नो संखेज्जेस भागेसु होज्जा, नो श्रसंखेज्जेसु मागेसु होज्जा, एवं श्रम्तव्यगदव्याणि वि माणियव्याणि। सु०-८८ प्र० (८) ऐगम-ववहाराणं त्राणुपुच्चीदच्चाई कयरंमि भावे होज्जा ? किं उदइए भावे होन्जा ? उवसमिए भावे होन्जा ? खइए भावे होन्ना ? खत्रोवसमीए भावे होज्जा ? ' पारिणामिए भावे होज्जा ? सन्निवाइए भावे होन्जा ? उ० खियमा साइपारणामिए भावे होन्जा । श्रगागुपुन्नीदन्वागि श्रवत्तन्वगदन्वागि श्र एवं चेव भागिअव्वागि । सु०-⊏६ प्र० (६) एएसि भंते ! गोगम-ववहारागां त्रा**णुपुन्त्रीद**न्त्राणं श्रणागुपुन्नीदन्वागं अवत्तव्यगद्व्यागं य दवहयाए, पएसहयाए, दन्वहुपएसहयाए कयरे कयरेहिंतो श्रपा वा वहुया वा, तुल्ला वा विसेसाहिया ? उ० गोयमा । सन्वत्थोवाइं गोगम ववहारागं अवत्तन्वगद्नवाइं दन्बद्वयाए, श्रणाणुपुन्दीदन्त्राइं दन्त्रद्वयाए विसेसाहित्राइं, श्राणुप्वीद्व्याइं द्व्यद्वयाए ऋसंखेदजगुणाइं।

प्एसद्वयाप् योगम-ववहाराखं सन्वत्थोवाई ।

सु०-६०

सु०-६१

त्रणाणुपुन्वीद्न्वाइं, प्एसद्वयाए, श्रन्वत्तन्वगद्न्याइं पएसद्वयाए विसेसाहित्राइं । श्राणुप्विद्वाई पएसह्याए श्रणंतगुणाई। दन्बद्वपएसद्वयाए सन्वत्थोवाई गोगम-ववहाराणं श्रवत्तव्वगद्व्वाइं द्व्वद्वयाए, श्रगागुपुन्वीद्न्वाइं द्न्वद्वयाए श्रपसद्वयाए-विसेसाहिआई। श्चवत्तव्वगद्ववाइं पएसद्वयाए विसेसाहिश्चाई । श्राग्रुपुन्नीदन्नाईं दन्नद्वेपाए श्रसंखेन्जगुणाई । ताई चेव पएसद्वयाए अण्तगुणाई। से तं अणुगमे। से त्तं नेगम-ववहाराणं अगोविणिहिया दव्वाणुपुव्वी । प्र० (२) से किं तं संगृहस्स अगोवणिहिश्रा दन्वाणुपुन्वी ? उ० संगहस्स ऋगोवणिहिश्रा दव्वाग्रुपुच्वी पंचिवहा पराण्ता, तं जहा-१ श्रद्वपयपद्भवणया २ भंगसम्रक्कित्तरायाः ३ मंगोवदंसण्या ४ समोत्रारे ५ श्रणुगमे । प्र० (१) से किं तं संगहस्स अट्टपयपह्रविण्या ? उ० संगहस्स श्रद्धपयपरूवगाया- 🔧 तिपएसिए श्रागुपुन्वी, चउपप्रसिए श्रागुपुन्वी, '''जाव'''दसपएसिए ऋाग्रुपुन्वी, संखेज्जपएसिए श्राखुप्वी, श्रसंखिन्जपएसिए श्राखुपुच्ची, श्रगंतपएसिए श्राग्रुपुन्वी, ्परमाणुपोग्गले त्र्रणाणुप्रची,

दुपएसिए अवत्तन्वए, से तं संगहस्स अद्वपयपह्नवण्या।

सु०-६२ प्र० एम्राए गां संगहस्स श्रद्धपयपरूवणयाए कि पत्रोत्रगां ? उ० एश्राए गां नेगम-ववहाराणं श्रद्धपयवरूवणयाए

भंगसमुक्तिचग्या कज्जइ।

प्र॰ (२) से किं तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तण्या ?

उ० संगहस्स भंगसम्रक्कित्तग्या ।

१ श्रत्यि श्रागुपुन्नी, २ श्रत्यि श्रगागुपुन्नी,

३ श्रत्थि श्रवत्तव्वए,

४ ऋहवा ऋत्थि आगुपुन्त्री श्र, श्रगागुपुन्त्री श्र,

५ अहवा अत्थि श्राणुप्वी श्र, अवत्तव्वए श्र,

६ श्रहवा श्रत्थि श्रगाणुपुन्वी श्र, श्रवत्तन्वए श्र,

७ श्रहवा श्रत्थि श्राखुपुन्वी श्र,

त्रगागुप्वी स्र, त्रवत्तव्वए स्र।

एवं सत्तभंगा

से तं संगहस्स भंगसमुक्कित्तग्या।

प्रः एत्राए गां संगहस्स भंगसमुक्तित्तरायाए कि पत्रोत्राणं ? उ॰ एत्राए गां संगहस्स भंगसमुक्तित्तरायाए

भंगोवदंसगाया कीरइ।

इ०-६३ प्र० (३) से कि तं संगहस्स भंगोवदंसण्या ?

उ० संगहस्स भंगोवदंसण्या-१ तिपएसिया आणुपुन्ती

२ परमाखुपोग्गला ऋणाखुद्वी

३ दुपएसिया श्रवचव्यए

४ अहवा तिपएसिया य परमाणुपुग्गला य आगुपुन्ती अ अगाणुपुन्ती अ, प्र श्रहवा तिपएसिया य, दुपएसिया य । अ श्राणुपुन्वी श्र श्रवन्तन्वए श्र,

६ अहवा परमाणुपोग्गला य, दुपएसिया य अणागुपुच्वी अ, अवत्तव्वए अ,

७ त्रहवा तिपएसिया य परमाणुपोग्गला य,दुपएसिया य त्राणुपुन्वी य, त्रमाणुपुन्ती य, त्रवत्तन्वए य । से त्तं संगहस्स भंगोवदंसमाया ।

सु०-६४ प्र० (४) से किं तं संगहस्स समोत्रारे १ संगहस्स समोत्रारे (भणिज्ञइ) । संगहस्स त्राणुपुच्चीद्च्चाई कहिं समोत्रारंति १

> किं आणुपुच्वी-दच्वेहिं समोअरंति ? अणाणुपुच्वी-दच्वेहिं समोअरंति ?

अवत्तव्वय-दव्वेहिं रामोअरंति ? उ० संगहस्स आणुपुव्वीदव्वाइं आणुपुव्वीदव्वेहिं समोश्ररंति,

नो श्रणाणुपुन्नीदन्वेहिं समोश्ररंति, ने नो श्रवत्तन्त्रयदन्वेहिं समोश्ररंति । *एव दोन्नि वि सहागो सहागो समोयरंति ।

से तं समोयारे।

सु०-६५ (५) से किं तं श्रणुगमे ? श्रणुगमे श्रष्ट विहे पर्णात्ते ?

तं जहा---

गाहा— 'संतपयपरूवणया, 'दव्वपमार्गा च खित्तं फुसंगा' य। कालो 'य श्रंतरं, भाग भावे श्रणावहूं नित्य।।१॥

^{*} रेखाद्भित श्रागुपुन्वीदव्वाइं की जगह 'श्रगागुपुन्वीदव्वाइं' श्रौर श्रवत्तव्वगदव्वाइं समाक्त उपर का प्रश्नोत्तर दो वार कहें ।

द्रव्यानुपूर्वी

```
प्र० (१) संगहस्स आणुपुन्वीदन्वाई किं अत्थि नित्थ ?
उ० गियमा ऋत्थि।
    %एवं दोन्नि वि।
```

प्र० (२) संगहस्स त्रागुपुन्नीदन्वाई कि संविजाइं ? असंविजाइं ? अगंताइं ?

उ० नो संखिज्जाइं, नो असंखिज्जाइं, नो अणंताइं। नियमा एगोरासी । **%**एवं दोनि वि ।

प्र० (३) संगहस्स आणुपुन्वीदन्वाइं लोगस्स कइभागे होजा ?

कि संखिज्जइभागे होज्जा ? श्रसंखिज्जहमागे होज्जा ? संखेन्जेसु भागेसु होन्जा ? श्रसंखेन्जेसु भागेसु होन्जा ? सन्वलोए होन्जा ?

उ० नो संखिज्जइभागे होज्जा, नो श्रसंखिज्जइभागे होज्जा, नो संखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो श्रसंखेन्जेसु भागेसु होन्जा नियमा सन्वलीए होन्जा। अ एवं दोन्नि वि।

प्र॰ (४) संगहस्स आगुपुन्नीदन्वाई लोगस्स कि संखेजनङ्भागं फुसंति ?

रे * रेखाद्भित ऋाणुप्नीदव्याहं की जगह 'छणाणुप्नीदव्याहं' श्रीर 'श्रवत्तव्याहं' लगाभर उपर का प्रश्नोत्तर दो गार कहें।

··· क्रजाव · · ग्रियमा सन्वलोगं फुसंति ।

असंखेज्जइभागं फुसंति ?

असंखेज्जे भागे फुसंति ?

संखेज्जे भागे फुसंति ?

सन्वलोगं फुसंति ?

उ० नो संखेज्जइभागं फुसंति,

%एव दोनिन वि ।

प्र० (५) संगहस्स आगुपुन्वीदन्वाई कालय्रो केविच्चरं होंति? उ० सन्वद्धा । **%**एवं दोन्नि वि । प्र० (६) संगहस्स ऋाणुपुच्चीदच्चार्गं कालश्रो केविच्चरं श्रंतरं होंति ? उ० गतिथ श्रंतरं। **%** एवं दोन्नि वि । प्र० (७) संगहस्स त्रागुपुन्वीद्न्वाई सेसदव्वाणं कइमागे होजा ? कि संखिज्जइमागे होजा ? श्रसंखिज्जइमागे होजा ? संखेज्जेसु भागेसु होज्जा ? त्रसंखेन्जेसु भागेसु होजा ? 'उ० नो संखिज्जइमागे होज्जा, नो असंखिज्जइमागे होजा, ***इसी सूत्र की पंक्ति ?** से पंक्ति र तक का पाठ जानना ।

३ * रेखाद्भित श्राग्रुपुन्नीदन्नाई(ग्रं) की जगह 'श्रग्गाग्रुपुन्नीदन्नाई'(ग्रां)

भौर श्रवत्तव्वगदव्वाई(एां) लगाकर उपर का प्रश्नोत्तर दो वार कहें।

प्र० (८) गंगहस्स आणुप्रव्वीद्व्वाइं कयरम्मि भावे होजा ?

उ० नियमा साइपरिणामिए भावे होन्जा

श्रपं दोन्नि नि ।

अप्पानहं नित्थ ।

से तं अणुगसे।

से तं संगहस्स ऋणोविशिहिया दव्वाशुप्वी।

से तं त्रणोवणिहिया दन्वाखुपुन्वी।

सु०-हं६ प्र० से किं तं उविणिहिया द्व्वाखुपुच्वी ? उ० उविणिहिया द्व्याखुपुच्ची तिविहा पर्णात्ता,

तं जहा-

१ पुन्वाग्रुपुन्वी २ पन्छाग्रुपुन्वी ३ अगाग्रुपुन्वी अ।

सु०-६७ प्र० (१) से किं तं पुन्तासापुन्ती ?

उ० पुच्चाखुपुच्ची-१ धम्मत्थिकाए २ श्रधम्मत्थिकाए ३ श्रागासत्थिकाए ४ जीवत्थिकाए

> ५ पोग्गलत्थिकाए ६ ऋद्वासमए। सं तं पुन्याणुष्ट्यी।

प्र० (२) में कि तं पच्छाणुप्रच्यी ?

२ * रेराद्वित साणुषुजीदनाइ ती नगह 'श्रग्गागुषुनीदनाइं' श्रीर'श्रवत्तव्यादनाइं' स्रगावः उपर या प्रश्नोत्तर दो गार फहें। ्उ० पच्छाग्णुपुच्ची-६ अद्धासमए ५ पोग्गलत्थिकाए ४ जीवत्थिकाए ३ आगासत्थिकाए २ अधम्मत्थिकाए १ धम्मत्थिकाए

ं से त्तं पच्छाग्रापुच्वी ।

प्र० (३) से किं तं त्रणाणुपुच्ची ?

उ० अणाणुपुन्वी-एयाए चेव एगाइए एगुत्तरिआए छ गच्छगयाए सेढीए अग्गमग्णन्मासी दृरूवृणी। से त्तं अणाणुपुन्वी।

सु०-६८ अहवा उविश्वितिया दन्वाश्विपुन्वी तिविहा पर्याचा, तं जहा—

ः पुरुवाग्रापुरुवी २ पच्छाग्रापुरुवी ३ त्रमाग्रापुरुवी ।

प्र॰ से किं तं पुन्वाणुपुन्वी ? उ॰ पुन्वाणुपुन्वी—

१ परमाखपोग्गले

२ दुपंएसिए

३ तिपण्सिए '''जाव'''दसपण्सिए

् संखिजजपएसिए

श्रसंखिज्जपएसिए श्रगांतपएसिए

से तं पुन्वाग्रुपुन्वी।

प्र० से किं तं पच्छाग्रुपुच्ची ?

उ० पच्छाखुपुच्ची—

श्रणंतपएसिए '' * जाव ' परमाणुपोग्गले ।

से तं पच्छाणुपुच्ची !

प्र० से किं तं श्रणाणुपुच्ची !

उ० श्रणाणुपुच्ची—एश्राए चेव एगाइश्राए एगुत्तरिश्राए
श्रणंत गच्छगयाए सेढीए श्रएणमएणव्मासो दूर्व्यूणो ।

से तं श्रणाणुपुच्ची ।

से तं उवणिहिश्रा दच्चाणुपुच्ची ।

* से तं जाण्यसरीर-भिवश्रसरीर-वहरिता दच्चाणुपुच्ची ।

से तं नो श्रागमश्रो दच्चाणुपुच्ची ।

सु०-६६ प्र० से किं तं खेत्ताग्रुपुच्वी ? उ० खेत्ताग्रुपुच्वी दुविहा परागत्ता,

से तं दव्वागुपुव्वी।

तं जहा---

उविणिहिश्रा य श्रणोविणिहिश्रा य।

सु०-१०० तत्थ गां जा सा उविगिहित्रा सा ठप्पा। तत्थ गां जा सा त्रगोविगिहित्रा सा दुविहा पणगता, तं जहा—

१ गोगम-ववहारागं २ संगहस्स य।

सु०-१०१ प्र० (१) से किं तं गोगम-ववहारागां श्रगोविणिहिश्रा खेत्ताग्रुपुच्वी ?

> उ० गोगम-ववहारागं श्रगोविगिहिश्रा खेत्ताणुप्रव्वी पंचिवहा परगात्ता, तं जहा—

^{*} उपर के प्रश्नोत्तर में श्राए हुए पाठ को उल्टे कम से कहें ।

^{*} प्रत्यन्तर में यह पाउ नहीं हैं।

१ ब्रहुप्यपह्रवणया, २ भंगसम्रक्कित्तग्राया ३ मंगोवदंसग्या ४ समोत्रारे ५ त्रग्रुगमे । प्र० (१) से किं तं गोगम-वनहारागं श्रद्वपयपरूवगाया ? उ० गोगम-ववहारागां श्रद्वपयपरूवगाया-तिषएसोगाढे श्राग्रुपुच्ची, •••जाव•••दसपएसोगाढे स्त्राखुपुच्वीः संखिन्जपएसोगाढे आरापुव्वी, श्रसंखिज्जपएसोगाह श्रांखुपुन्वी, एगपएसोगाहे आणुज्बी, दुपएसोगाढे अवत्तन्वए, तिपएसोगाढा ऋाग्रापुन्तीक्रो, '''जाव ' दसपएसोगाढा श्राखुपुन्वीत्रो. असंखेन्जपएसोगाढा त्राणुपुन्वीत्रों, एगपएसोगाढा आगुपुन्नीओं, ेदुपएसोगाढा त्र्यवत्तव्वगाई । से तं गोगम-ववहारागं अद्वपयपरूवगांयां। प्र० एम्राएं गां गोगम-ववहारागां श्रद्धपयपरूवगायाए किं पञ्जोञ्चगां ? उ० एत्राए नेगम-ववहारागां श्रद्वपयपरूवगायाए गोगम-ववहाराणं भंगसम्बक्तिकत्तग्या कंज्जइ। प्र० (२) से किं तं गोगम-ववहाराणं भंगसम्भिकत्तगाया ? उ० गोगम-ववहारागं भंगसम्रक्कित्तग्या। **अत्थि आग्रुपु**च्वी, ऋत्थि ऋणाग्रुपुच्ची, श्रदिथ श्रवत्तव्वए,

एवं दन्वागुपुन्वीगमेगं खेत्तागुपुन्वीए वि ते चेव व्यव्यसि भंगा भागिश्रव्या,

···जाव · · से तं गोगम-ववहारागं भंगसमुकित्तर्णया ।

प्र० एत्राए गां गोगम-ववहारागां भंगसम्बद्धिकत्तगायाए किं पञ्जीञ्रणं ?

उ० एत्राए गां गोगम-ववहारागां भंगसमुक्कित्तगायाए भंगोवदंसग्या कीरइ।

प्र० (३) से किं तं गोगम-ववहारागं मंगोवदंसगया ? उ० संगहस्स भंगोवदंसग्या-

१ तिपएसोगाढे त्राग्रुपुच्वी २ एगपएसोगाढे ऋगागुपुच्वी

३ दुपएसोगाढे अवत्तन्वए

४ तिपएसोगाढा त्रागुपुञ्जीत्रो, ५ एगपएसोगाढा अगागुपुन्वीत्रो,

६ दुपएसोगाढा अवत्तव्वगाई,

७ श्रहवा तिपएसोगाढे श्र, एगपएसोगाढे श्र त्रागुपुन्वी अ अगागुपुन्वी अ,

*****एवं तहा चेव दव्वाग्रापुव्वीगमेगां छव्वीसं संगा भागित्रव्वा ।

ः जाव ः से तं गोगम ववहाराणं भंगोवदंसणया

प्र० (४) से किं तं समोत्रारे ? समोत्रारे-

गोगम-ववहाराणं श्राग्रुपुच्चीदच्चाई कहिं समोश्ररंति ?

किं त्रागुपुन्वीदन्वेहिं समोत्ररंति ? त्रणागुपुन्वीदन्वेहिं समोत्ररंति ?

***सूत्र ७६ के समान पाठ जानन्।**। **#** सूत्र ७८ के समान पाठ जानना " " " अवत्तन्वयद्न्वेहिं समोअरंति ?
उ० आणुप्न्वीद्न्वाहं आणुप्रन्वीद्न्वेहिं समोअरंति
नो अणाणुप्रन्वीद्न्वेहिं समोअरंति,
नो अवत्तन्वयद्न्वेहिं समोअरंति ।
एवं दोन्नि नि सहाणे सहाणे समोयरंति ।
से तं समोयारे ।
प्र० (५) से किं तं अणुगमे ?
उ० अणुगमे नव विहे पर्णात्ते

तं जहा— गाहा— संतपयपरूव्याया, दिव्वपमाणं च खित्त फुसणा . कालो य श्रंतरं, भाग भावे श्रणावहूं चेव ॥१॥

> प्र० (१) गोगम-व्यवहारागी आगुपुर्वीद्वाहे कि श्रत्थि नत्थि ?

उ ्रियमा ऋत्थि।

%एवं दोन्नि वि ।

प्र० (२) गोगम-ववहारागां आगुपुन्वीदन्ताइं कि संखिजाइं १ असंखिजाइं १ अगांताइं १

उ० नो संखिज्जाई, नो असंखिज्जाई, नो अग्रांताई।

*एवं दोनि नि ।

प्र॰ (३) गोगम-वनहारागं आगुपुन्वीदन्वाइं लोगस्स कि संखिन्जइमागे होन्जा ?

साखन्जइमाग हान्जा १ त्र्रसंखिन्जइमागे होन्जा १

'''जाव'''स**न्वलोए**ंहोज्जा ?

२ * रेखाङ्कित श्राणुप्वीदव्याई की जगह श्रिणाणुप्वीदव्याई श्रीर श्रवसंध्वगद्याई? स्रगाकर उपर का प्रश्नोत्तर दो चार कहें ।

उ० एगं दर्व पहुच संखिजइभागे वा होज्जा, असंखेज्जइभागे वा होन्जा, संखेन्जेस भागेस वा होन्जा, त्रसंखिन्जेसु भागेसु वा होन्ना, देस्रणे वा लोए होन्जा। गागादव्वाइं पड्च नियमा सन्वलोए होन्जा। प्र० गोगम-ववहारागं त्रणागुपुन्वीदन्वागं पुन्छाए उ० एगं दव्वं पडुच नो संखिज्जइभागे होज्जा, श्रसंखिज्जइमागे होज्जा नो संखेज्जेसु भागेसु होन्जा नो असंखेज्जेसु भागेसु होज्जा नो सन्वलीए होन्जा। गागादन्वाई पडुच्च नियमा सन्वलोए होज्जा। एवं श्रवत्तव्वगदव्वाणि वि भाणिश्रव्वाणि । प्र० (४) गोगम-ववहारागां त्रागुपुन्वीदन्वाई लोगस्स कि संखिज्जइमागं फुसंति ? श्रसंखिज्जइमागं फुसंति ? संखेन्जे भागे फुसंति ? त्रसंखेज्जे भागे फुसंति १ सन्वलोगं फुसंति ? उ॰ एगं दब्वं पड्च्च

> संखिडजइभागं वा फुसइ, असंखिडजइभागं वा फुसइ, संखिडले यागे वा फुसइ,

श्रमंखिज्जेमागे वा फुसइ,

्देस्यां वा लोगं फुसइ।

यागादन्वाई पडुच्च नियमा सन्वलोग्रं फुसंति । श्रगागुपुन्वीदन्वाई श्रवत्तन्वयदन्वाई च

*****जहा खेत्तं नवरं फुसगा भागियन्वा ।

प्र० (५) गोगम-ववहारागां आगुपुन्वीदन्वाई

कालओ केविच्चरं होइ ? उ० एगं दव्वं पडुच

जहरणोगं एगं समयं,

उक्कोसेगं असंखेडजं कालं। गागादव्वाइं पडुच्च शियमा सव्बद्धा।

एवं दुरािश वि ।

प्र॰ (६) गोगम-ववहारागां त्राग्णपुर्विद्वाग्रामंतरं कालश्रो केविचरं होइ ? उ० एगं दव्यं पड्च

जहएगोगां एगं समयं,

उक्कोसेगां श्रसंखेन्जं कालं। नागादन्वाइं पडुच्च ग्रात्थ श्रंतरं।

प्र० (७) गोगम-ववहारायां त्र्यागुपुन्वीदन्वाईं सेसदन्वागां कहमागे होजा ? उ० **तिगिगा वि जहा दन्वागुपुनीए।

प्र० (८) गोगम-बवहारागं श्रागुपुन्तीदन्वाई कयरम्मि भावे होज्जा ?

उ० नियमा साइपरिणामिए भावे होज्जा

[🛊] सूत्र ८४ के समान पाठ जानमा ।

[🛊] सूत्र ६७ के समान पाठ जानना 🏾

एवं दोन्नि वि ।

प्र० (६) एएसि गां भंते !

गोगम-ववहारागां **त्राग्रुपु**च्वीद् च्वार्ग श्रगागुपुन्दीदन्दारां ' श्रवत्तव्दगद्दवार्गा ये दबहुयाए, पएसहाए, दब्बहुपएसहुचाए कयरे कयरेहिंती श्रणा वा, बहुया वा, तुल्ला वा, विसेसाहिया ?

उ० गोयमा !

सन्वत्थोवाइं गोगम-ववहाराणां अवत्तन्वगद्नवाइं दन्बद्धयाए।

अणागुपुन्नीदन्नाइं दन्नद्वयाए विसेसाहिआई। त्रागुपुन्वीद्न्वाई दन्वहुयाए असंखेन्नगुगाई। पएसद्वयाए सन्बत्थोवाई। योगम-ववहाराणां अयाखुपुच्वीदच्वाई, अपएसद्वयाए, श्रवत्तव्यगदव्वाइं पएसद्वयाए विसेसाहिश्राइं। त्रागुपुन्नीदन्वाइं पएसद्वयाए असंखेन्नगुणाइं। दन्बद्धपएसद्वयाए सन्वत्थोवाई। थोगम-ववहारायां अवत्तव्वगदव्वाई दव्बद्धयाए, अगा**गुपु**न्वीद्न्वाई दंन्वहुयाए श्र**पएसहुयाए**— विसेसाहित्र्याइं ।

अवत्तव्वगद्व्वाइं पएसट्टयाए विसेसाहिआई।

श्राणुप्रविद्वाइं दन्बद्धयाए श्रसंखेज्जगुणाई । ताइं चेव पएसद्वसाए श्रसंखेज्जगुणाई । से तं श्रणुगमे । से तं नेगम-ववहाराणां श्रणोवणिहिश्रा खेताणुपुच्वी ।

सु०-१०२ प्र० (१) से कि तं संगहस्स श्रगोविणिहिश्रा खेत्तागुपुच्वी ? उ० संगहस्स श्रगोविणिहिश्रा खेत्तागुपुच्वी पंचविहा पर्णात्ता,

> तं जहा— १ श्रद्धपयपद्भवणया, २ मंगसम्रक्तिकचणया ३ मंगोवदंसणया ४ समोश्रारे ५ श्रणुगमे

प्र॰ (१) से किं तं संगहस्स ग्रहुपयपरूवण्या ? उ॰ संगहस्स श्रहुपयपरूवण्या—

तिपएसोगाढे श्राखुण्ड्यी, चउप्पएसोगाढे श्राखुण्ड्यी, '''जाव'' दसपएसोगाढे श्राखुण्ड्यी, संस्थिज्जपएसोगाढे श्राखुण्ड्यी,

असंखिन्जपएसोगाहे आगुपुन्नी, एगपएसोगाहे अगागुपुन्नी, दुपएसोगाहे अवत्तन्वए,

से सं संगहस्य अद्वरयपस्वराया ।

प्र० एमाए गां संगहस्स ग्रहपयपरुवणयाए कि पद्मोत्रगां ? उ० संगहस्स श्रहपयपरुवणयाए

ं संगहस्स भंगसम्रुक्तित्तराण्या कज्जइ । • (२) से किं तं संगहस्स भंगसम्बक्तिराण्या ? उ० संगहस्स भंगसमुक्कित्तराया।

१ अत्थि आगुपुन्बी,

२ श्रतिथ अगागुपुन्नी,

३ त्र्रात्थ श्रवत्तव्वए,

४ श्रहवा श्रत्थि श्राणुपुन्ती श्र, श्रणाणुपुन्ती श्र, श्र एवं जहा दन्वागुपुन्तीए संगहस्स तहा भाणिश्रन्वा,

···जाव · · से तं संगहस्स भंगसमुक्तित्रग्या ।

प्र॰ एम्राए गां संगहस्स भंगसमुक्कित्तग्रयाए कि पत्रोत्रगां ?

उ० एश्राए गां संगहस्स भंगसम्रुक्तित्तरायाए भंगोवदंसग्यया कज्ञइ ।

प्र० (३) से कि तं संगहस्स भंगोवदंसण्या ? उ० संगहस्स भंगोवदंसण्या—

१ तिपएसोगाढे त्रासुपुन्वी

२ एगपएसोगाढे त्रावाखुव्त्री

३ दुपएसोगाढे अवत्तव्वए

४ श्रहवा तिपएसोगाहे श्र, एगपएसोगाहे भ श्रागुपुच्ची श्र श्रगागुपुच्ची श्र,

*एवं जहा दन्वागुपुन्वीए संगहस्स तहा खेत्तागुपुन्वीए

वि भागिश्रव्वं ।

"'जाव' 'से त्तं संगहस्त भंगोवदंसणया प्र० (४) से कि तं समोत्रारे ?

(४) ताक व्यवसात्रारः समोत्रार्-

संगहस्स आणुपुच्चीदच्चाइं किहं समोआरंति ?

[≉]सूत्र ६२ के समान पाठ जानना ।

[🛊] सूत्र नं ० ६३ से पूरा पाउँ जानना ।

स्त्रानुप्री कि आणुपुन्वीदन्वेहि समोश्ररति ? त्रणाणुपुव्वीदव्येहिं समोत्रशंति ? श्रवत्तव्ययद्व्वेहिं समोश्ररंति ? उ० तिरिण वि सद्वाणे समोत्रगरंति, से तं समोत्रारे। प्र० (४) से किं तं श्रणुगमे ? उ० अणुगमे अडुविहे परणत्ते, तं जहा-ेसंतपयपरूवणया दव्यपमार्गं खित्त फुसगा य ।

कोलो पं अंतरे भाग भावे अप्याबहुं गत्थि।।१।।

प्र॰ (१) संगहस्स त्राणुपुन्नीदन्वाइं कि त्रात्यि ? सात्यि ? उ० णियमा ऋत्थि । एवं दुराशि वि ।

सेसगदाराइं जहा दन्वाग्रापुन्वीए संगहस्स ्र तहा खेत्तागुपुव्वीए वि भागिश्रव्वाइं

ःःजावः से तं श्रग्रुगमे । से तं संगहस्स अगोविशाहिया खेतागुपुच्वी। से तं श्रणोवणिहिया खेत्ताणुपुन्वी ।

सु०-१०३ प्र० से किं तं उविशिहिया खेत्राखुष्ट्यी ? उ० उविणिहिया खेत्ताणुपुच्ची तिविहा परागता, ं, तं जहां-

> १ पुच्वाग्रपुच्वी २ पच्छाग्रपुच्वी ३ ऋगाग्रपुट्वी श्र । से कि तं पुन्वासुपुन्वी ? 🦖 पुन्वाणुपुन्वी—-

े १ श्रहोलोए २ तिरिश्रलोए ३ उड्हलोए से सं पट्याणपञ्जी । देव भे

प्र० से किं तं पच्छाग्रापुक्वी ?

उ० पच्छाणुवनी— ३ उड्ढलोए २ तिरिश्रलोए १ श्रहोस्रोए से तं पच्छाणुवनी ।

प्र० से किं तं अगाणुपुन्त्री ?

उ० श्रणाणुपुन्नी-एयाए चेन एगाइए एगुत्तरिश्चाए ति-गच्छगयाए सेहीए श्रपणमपण्नासो दुरुवृणो । से तं श्रणाणुपुन्नी । श्रहो-लोए खेत्ताणुपुन्नी तिनिहा पण्णात्ता, तं जहा-

१ पुन्वाग्रापुन्वी २ पच्छाग्रापुन्वी ३ अगाग्रापुन्वी।

प्र॰ से किं तं पुच्वाखुपुच्वी ?

उ० पुन्वागुपुन्वी-

१ रयगण्यभा २ सकरण्यभा ३ वालुत्रण्यभा ४ पंकप्पमा ४ धूमण्यभा ६ तमण्यमा ७ तमतमण्यभा से त्तं पुन्वाग्रुपुन्वी।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुच्ची ?

उ० पच्छाणुप्वनी— तमतमप्पभा'''जाव'''रयमप्पभा । से त्तं पच्छाणुप्रव्वी । प्र० से किं तं श्रणाणुप्रव्वी ?

उ० त्रणाणुपुन्नी-एत्राए चेव एगाइबाए एगुत्तरिभाए सत्त-गच्छगयाए सेढीए अएसमएसन्भासी दुरुवृक्षी। से सं व्याणाणुपुन्ती। श्रगुश्रोगदारस्तिः । १६३

डपक्रमाधिकारः] चेत्रानुपूर्वी

> तिरिश्र-लोश्र-खेत्ताणुपुच्वी तिविहा पर्यात्ता, तं जहा—

१ पुट्यापुट्यी २ पच्छाणुपुट्यी ३ श्रणाणुपुट्यी प्र० से कि तं पुट्याणुप्ट्यी १

उ० पुन्वासापुन्वी— गाहास्रो— जंबुदीवे लवगो, धायई कालोस्र पुन्खरे वरूगो।

स्वीर-घय-खोश्र-नंदी, श्रह्मणवरे कुंडले रुश्रगे ॥१॥ श्रश्नाभरण-बत्थ-गंधे, उप्पत्त-तिलए श्र पुढवि निहि रयगो । वासहर-दह-नईश्रो, विजयां वक्खार किंपदा ॥२॥

कुरु-मंदर त्रावासा, कूडा नक्खत्त-चंद-सराय। देवे नागे जक्खे, भूए त्र सर्यभूरमणे त्र ॥३॥

से त्तं पुट्याणुपुट्यी । प्र० से किं तं पच्छाणुपुट्यी ? ं उ० पच्छाणुपुट्यी—

सयंभूरमणे श्री जावः 'जंब्र्हीवे'। से तं पच्छाणुप्रची। प्र० से कि तं श्रणाणुप्रची ?

उ० अगागुपुन्वी-एयाए चेव एगाइए एगुत्तरिआए असंखेज-गच्छगयाए सेढीए अएग्रमएग्रन्भासी दुरुवृगी।

से त्तं त्रगाणुपुन्नी । उड्द-लोग्र खेत्ताणुपुन्नी तिनिहा परगाता, तं जहा—

* जंबुदीवाश्रो खलु निरंतरा सेसया श्रमखड्मा।

े भुयग वर कुसवराविय को चवराभरणामाईय ॥ यह गांथा भी वाचनान्तर में गाई शाती हैं।

```
प्रव से कि तं पुन्वाग्रुपुन्वी ?
उ॰ पुन्याखुपुन्यी-
```

१ सोहम्मे ८ सहस्सारे २ ईसागे ६ आगए ३ सर्गांकुमारे १० पागाए ४ माहिंदे ११ श्रारणे ५ वंभलोए १२ अञ्चए ६ लंतए १३ गेवेज्ज-विमागो ७ महांसुक्के १४ ऋगुत्तरविमागो े१५ ईसिप=भारा

से तं पुच्वाखुपुच्ची।

प्र० से किं तं पच्छाणुपुच्त्री १

उ० पच्छाग्रुपुच्वी— ईसि**पव्भाराःः**जावः सोहम्मे । से तं पच्छाणुप्रव्वी।

प्र० से किं तं अणागुपुन्वी ?

उ० त्रणाणुपुन्नी-एत्राए चेन एगाइत्राए एगुत्तरित्राए पन्नरस-गच्छगयाए सेढीए अएएमएएवभासो दुरुवूगो। से तं अगागुपुन्वी। श्रहवा उविणिहिया खेत्राणुपुठ्यी तिविहा पराण्ता, तं जहा---१ पुन्वा सपुन्ती २ पच्छा सपुन्त्री ३ असा सपुपुन्ती अ।

प्र० से किं तं पुट्यागुपुट्यी ?

उ० पुष्तागुपुष्ती—

्रुपएसागाढ दुपएसोगाढे जाव दसपएसोगाढे जाव संखिज्जपएसोगाढे श्रसंखिज्जपएसोगाढे

से तं पुच्चाग्रुपुच्ची। प्र० से किं तं पच्छाग्रुपुच्ची ? उ० पच्छाग्रुपुच्ची—

श्रसंखेज्जपएसोगाहे, संखिजपएसोगाहे, ''जाव'''एगपएसोगाहे से संग्रह्मागुरुखी ।

से तं पच्छाग्रुपुच्ची । प्र० से कि तं अगाग्रुपुच्ची ? उ० अगाग्रुपुच्ची-एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए

अक्षंखिज्ज-गच्छगयाएं सेढीए श्रण्णमण्णव्भासी दुरूवृग्णी । से चं श्रणाणुप्रवी । से चं उवणिहिश्रा खेत्राणुप्रवी ।

से तं लेताणुव्वी। सु०-१०४ प्र० से कि तं कालाणुव्वी ?

उ॰ कालाणुपुन्नी दुनिहा परणता, तं जहा— उनिसिद्या य श्रसोनिसिहिश्रा य ।

सु०-१०५ तत्थ गं जा सा उविग्रिहिशा सा उपा।

तत्थ गं जा सा अगोविशिहिश्रा सा दुविहा प्राण्या, तं जहा— सु०-१०६ प्र० से किं तं गोगम-ववहारागं अगोविशिहिआ कालाणुपुच्यी ?

उ० गोगमनवहारागं श्रगोविणहिश्रा कालाणुपुन्ती पंचविहा पर्गाता,

तं जहा—

१ अद्वपयपह्रवणया, २ मंगसमुक्तित्तग्या ३ मंगोवदंसणया ४ समोत्रारे ५ अणुगमे।

सु०-१०७ प्र० (१) से किं तं गोगम-ववहाराणं श्रद्धपयपह्रवणया ? उ० गोगम-ववहाराणं श्रद्धपयपह्रवणया—

तिसमयद्विइए श्राखुव्वी,

···जाव···दससमयद्विइए श्राणुपुन्वी,

संखिज्जसमयद्विइए त्र्राणुपुन्वी,

श्रसंखिज्जसमयद्विइए श्राणुपुच्ची, एगसमयद्विइए श्रणागुपुच्ची,

दुपसमयहिंइए अवत्तव्वए,

तिसमयहिइत्रात्रो श्राणुप्वीत्रो,

एगसमयहिङ्बाओ अगागुपुन्दीओ,

दुसमयद्विइत्राइं अवत्तव्वगाईं,

से तं गोगम-ववहारागां श्रहुपयपरूवगाया । प्र० एश्राए गां गोगम-ववहारागां श्रहुपयपरूवगायाए

कि पत्रोत्रगं ?

उ० गोगम-ववहारागां श्रद्वपयपस्वगायाए णेगम-ववहारागां भंगसमुविकत्तगाया कज्जह ।

सु •-१०= प्र० (२) से कि तं गोगम-ववहारागं भंगसमुक्कित्तग्या ? उ० गोगम-ववहारागं भंगसमुक्कित्तग्या ।

अत्थि आगुपुन्वी, श्रत्थि श्रणागुपुच्ची,

. त्रात्थ स्रवत्तव्वए,

प्वं दन्वागुपुन्वीगमेग् कालागुपुन्वीए वि ते चेव

छव्वीसं भंगा भागित्रव्वा, · · जाव · · से ः सं गोगम-ववहारागं भंगसम्रकित्रगया ।

प्र० एत्राए गां गोगम-ववहारागां भंगसमुक्तित्तगायाए कि पत्रोत्रणं ?

उ० एत्राए गां गोगम-ववहारागां भंगसमुक्कित्तग्रायाए

नेगम-ववहारागां भंगोवदंसगायां कर्जाः ।

सु०-१०६ प्र० (३) से कि तं गोगम ववहाराणं मंगोवदंसण्या ? उ० गोगम-ववहाराणं भंगोवदंसण्या-

तिसमयद्विइए आखुपुन्ती . एगसमयद्विइए ऋगाग्रुपुन्वी

द्समयद्विइए श्रवत्तव्यए तिसमयद्विइयो याणुपुल्वीयो, एगसमयद्विइत्रो श्रणाणुप्वीत्रो.

दुसमयद्विइत्राइं अवत्तव्वगाइं,

श्रहवा तिसमयद्विइए अ, एगसमयद्विइए अ त्रागुपुन्नी अ अगागुपुन्नी अ,

%एवं तहा दव्वागुपुव्वीगमेगां खव्वीसं मंगा भागित्रव्या। जाव से तं गोगम-ववहारागं भंगोवदंसगया।

🗱 सत्रं ७६ के समान पाठ जानना । के समान पाठ जानना

सु०-११० प्र० (४) से कि तं समीचारे १ समोत्रारे-

गोगम-ववहारागां आगुपुन्वीदन्वाइं किंह समोश्ररंति ? कि त्रागुपुञ्जीदञ्चेहिं समोत्ररंति १

त्रणागुपुन्वीदन्वेहिं समोत्ररंति ? श्रवत्तव्वयदव्वेहिं समोश्ररंति ?

उ० एवं तिरागि वि सहारों समोत्रारंति इति भागित्रववं। से तं समोत्रारे।

सु०-१११ प्र० (५) से किं तं श्रणुगमे ? उ० ऋणुगमे नवविहे परणत्ते,

तं जहा-

मंतपयपरूवण्या दन्वपमाणं च खित्त फुसणा य। गाहा-

> प्र॰ (१) गोगम-ववहारागां ऋाग्रुपुन्वीदन्वाई किं ऋत्थि ? गुत्थि ?

उ॰ गियमा तिरिगा वि अत्थि।

प्र० (२) योगम-ववहारायां त्रासुपुच्वीदच्वाइं कि संखिआई ? असंखिआई ? अगंताई ?

कालो य अंतरं भाग भावे अप्पावहुं चेव ॥१॥

उ० नो संखिज्जाइं, नो श्रसंखिज्जाइं, नो श्रणंताइं। एवं दुगिगा वि ।

प्र० (३) गोगम-ववहारागं आगुपुन्वीदन्वाई लोगस्स कि संखिज्जइभागे होन्जा ?

असंखिज्जइमागे होज्जा ?

 रेसाद्धित श्राणुपुनीद्नाइं नी नगह'श्रणाणुपुनीदवाइं'श्रोर 'श्रवत्तवगदवाइं' लगाकर उपर का प्रश्न दो वार कहै।

ः संखेडजेसु भागेसु वा होजा, असंखेन्जेस भागेस वा होजा

सन्वलीए वा होन्जा ?

उठ एगं दन्वं पडुच

संखेजइमागे वा होज्जा,

श्रसंखेज्जइभागे वा होज्जा, संखेडजेसु भागेसु वा होडजा,

श्रसंखिन्जेसु भागेसु वा होन्जा, ***देख्णे वा लोए होन्जा**।

गागादन्वाई पडुच नियमा सन्वलीए होन्जा । (त्राएसंतरेग वा सन्वपुच्छासु होजा)

 %एवं श्रगागुपुन्वीदन्वाणि त्रवत्तव्यगदव्यागि वि जहां खेत्तागुपुव्वीए l

एवं फुसगा कालागुपुञ्वीए वि तहा चेव भागित्राञ्व

प्र० (५) गोगम-ववहारागां ऋागापुठवीदव्वाइं कालस्रो केविच्चरं होंति १ उ॰ एगं दन्वं पडुच

जहएगोगं तिएग समया,

उक्कोसेणं श्रसंखेड्जं कालं। गागादन्वाई पडुच्च सन्बद्धा ।

प्र० गोगम-ववहारागं त्र्रगागुपुव्वीदव्वाइं कालश्री केवचिरं होति ?

*पदेपूर्णे इत्यपि वर्वचित् । ंकि २० से पृष्ट ३८७ बेकि ए तक के समान पाठ जानना। उ० एगं दव्वं पडुच अजहरागमणुकोसेगं एकः समयं, णागादव्वाइं पडुच सव्वद्धाः।

प्र० श्रवत्तन्वगदन्वार्गं पुन्छा १

उ॰ एगं दव्यं पडुच्च अजहराग्यसणुकोसेगं दो समया, णागादव्याइं पडुच सम्बद्धा।

प्र० गोगम-ववहाराणं श्राणुपुन्नीद्व्यागमंतरं कालश्रो केविचरं होति ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च जहरूरोगं एगं समयं, उक्कोसेगं दो समया

नागादन्वाइं पडुच्च गात्थ श्रंतरं । प्र० गोगम-ववहारागं श्रगागुपुन्वीदन्वागं

अंतरं कालश्रो केवचिरं होइ ?

उ० एगं दव्वं पडुच्च जहएगोगां दो समयं; उक्कोसेगां असंखेटजं कालं।

णाणादन्वाई पहुच्च गतिथ श्रंतरं।

प्र० गोगम-ववहारायां अवत्तव्यगद्व्यायां पुच्छा ?

उ० एगं दर्व्य पडुच्च जहएगोएां एगं समयं उक्कोसेएां श्रसंखेज्जं कालं।

णाणादन्वाइं पहुच्च णितथ श्रंतरं।

भाग-भाव-श्रप्पावहुं चेव जहा खेतागुपुव्वीए तहा भागिश्रव्वाइं

···जावःःसे तं श्र**णुगमे** ।

से चं गोगम-ववहाराणं त्रगोविणिहिया कालागुपुच्वी

^{*} एष्ट्र रेट्रा पंति १६ से एए रेट्स पंति र तक के समान पाउ जानना ।

्र श्रगुश्रोगदारसुत्तं

उपक्रमाधिकारः] **'कालानुपूर्वी**

सु०-११२ प्र० से किं तं संगहस्स अगोविणिहिया कालागुपुच्वी ?

उ० संगहस्स अगोवणिहिया कालाग्रुपुच्वी

पंचिवहा पएगाता, तं जहा—

उ० संगहस्स अट्टपयपरूवगाया-

कालागुपुन्वीए तहा वि भागित्रववागि । णवरं ठिइ अभिलाओ,

···जाव · · से तं अणुगमे ।

#उविश्वा कालाणुपुच्यी तिविहा पर्णात्ता, ं तं जहा----

प्र० से किं तं पुन्वाग्रुपुन्वी ? उ० पुट्याग्रुपुट्यी-१ समए 📌 २ त्रावलित्रा ३ त्राणापाणू ४ थोवे

५ लवे ७ अहोरत्ते ८ पनखे * सूत्र १०१ पृष्ट रेट्ट पंक्ति १२ से पृष्ट रेट्? पंक्ति १६ तक के समान पाठ जानना ।

१ ब्रह्मप्यपह्रविषया २ भंगसम्रक्तिकत्तराया

४ भंगोवदंसण्या ४ समोत्रारे ५ त्राणुगमे । सु०-११३ प्र० (१) से किं तं संगहस्स अद्वपयपह्रवणया १

एत्राइं पंच वि दाराइं जहा खेत्ताग्रापुव्वीए संगहस्स

से त्तं संगहस्स त्र्र्णोविणिहिया कालाग्रुपुच्वी । सु०-११४ प्र० से किं∕तं उविखिहिश्रा कालाखुपुच्वी १

🔩 १ पुठ्यापुच्यी २ पच्छाखुपुच्यी ३ त्र्राणाखुपुच्यी।

६ मुहुत्ते श्राम श्राम श्राम श्राम हुःश्रा श्रामिन्हत पाठ पहले है श्रीर यह वाद में है ।

१० उऊ ६ मासे ११ श्रयगो १२ संवच्छरे १३ जुगे १४ वाससए १५ वाससहस्से १६ वाससयसहस्से १७ पुन्वंगे १८ पुन्वे १६ तुडिय्रंगे २० तुडिए २१ श्रद्धंगे २२ ऋडडे २३ त्र्रववंगे २४ अववे २५ हुहुअंगे २६ हुहुए २७ उपलंगे २८ उपले २६ पउमंगे ३० पउमे ३१ गलिगांगे ३२ गलिगे ३३ ऋत्थनिऊरंगे ३४ ऋत्थनिऊरे ३५ त्रज्ञंगे ३६ त्रज्र ३७ नउत्रंगे ३८ नउए ३६ पउत्रंगे ४० पउए ४१ चूलिय्रंगे ४२ चूलिया ४३ सीसपहेलिञ्रंगे ४४ सीसपहेलिञ्रा ४५ पलिख्रोवमे ४६ सागरोवमे ४७ त्रोसप्पिगी ४८ उसप्पिगी ४६ पोग्गलपरिश्रद्वे ५० श्रतीतश्रद्धा ५१ त्रणागयद्वा ५२ सन्वद्वा से तं पुव्वाखुपुव्वी।

प्र० से कि तं पच्छाणुपुच्ची ?

कालानुपूर्वी

उ० पच्छाग्रुपुच्ची-सन्बद्धा त्र्रगागयद्धाः

जाव समए | से त्तं पच्छाग्रुपुच्वी ।

प्र० से किं तं अगागुपुन्वी ?

उ० श्रगाग्रुपुन्वी-एयाए चेव एगाइए एगुत्तरिश्राए

अगांत-ग्च्छगयाए सेढीए अएगामएग्बमासो दुरूवृग्गो । से तं अगागुपुन्वी।

***अहवा उवणिहित्रा कालाखुपुञ्बी तिविहा परागत्ता,** ं तं जहा—

प्र० से किं तं पुच्चाग्रुपुच्ची ?

उ॰ पुन्वाग्रुपुन्वी-एगसमयद्विइए

दुसमयद्विइए तिसमयद्विइए ···जाव···दससमयद्विइए,

संखिज्जसमयद्विइए, श्रसंखिज्जसमयद्विइए, से तं पुन्वाग्रुपुन्नी। प्र० से किं तं पच्छाग्रुपुरवी ?

उ० पच्छाग्रुपुच्ची-श्रसंखिज्जसमयद्विइए,

१ पुट्याखुपुट्यी २ पच्छाखुपुट्यी ३ ऋणाखुपुट्यी ।

[#] वाचनान्तर में यह पाठ पहले है श्रीर पहले का चिन्हित * पाठ बाद में है ।

•••जाव•••एगसमयद्विइए से तं पच्छाखुपुच्वी ।

प्र० से किं तं अगागुपुच्वी ?

उ० अगागुपुन्वी-एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए

त्रसंखिज्ज-गच्छगयाए सेढीए श्रएणमएणब्भासी दुरूवूणी। से चं श्रणागुपुच्ची।

से तं उवणिहित्रा कालागुपुच्वी।

से तं कालाग्रुपुच्वी।

सु०-११५ प्र० (६) से किं तं उकित्तगागुपुव्वी ?

ंउ० उक्तित्तगागुपुच्वी तिविहा परणत्ता,

तं जहा---

१ पुन्वाग्रुपुन्वी २ पच्छाग्रुपुन्वी ३ श्रगाग्रुपुन्वी श्र ।

प्र० से किं तं पुच्चाग्रुपुच्ची ?

उ० पुच्वाग्रुपुच्वी—

१ उसमे २ श्राजिए ३ संभवे ४ श्रमिगांदगो ५ सुमती ६ पउमपहे

७ सुपासे = चंदप्पहे

६ सुविहि १० सीतले ११ सेन्जंसे १२ वासुपुन्जे

१३ विमले १४ अगांते

१५ धम्मे १६ संती १७ कुंथू १८ ऋरे

१६ मल्ली २० मुशिसुन्वए

से तं पुव्वागुपुव्वी।

```
प्र० सं कि तं पच्छाणुपुच्चा !

उ० पच्छाणुपुच्ची—

दस-कोडिसयाइं '' 'जाव' 'एगो ।

से तं पच्छाणुपुच्ची !

प्र० से कि तं अणुाणुपुच्ची !

उ० अणाणुपुच्ची—एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए

दस-कोडिसय-गच्छगयाए सेढीए अण्णमण्याच्यासो

दुरुवूणो ।

से तं अणाणुपुच्ची ।

से तं गणाणुपुच्ची ।
```

सु०-११७ प्र० (८) से कि तं संठाणाणुपुच्वी
उ० संठाणाणुपुच्ची तिविहा पर्णात्ता,
तं जहा—
१ पुच्चाणुपुच्ची २ पच्छाणुपुच्ची, ३ ऋणाणुपुच्ची।

उ० पुन्वागुपुन्वी— १ समचडरंसे २ निग्गोहमंडले ३ सादी ४ खुन्जे ५ वामणे ६ हुंडे।

प्र० से किं तं पच्छाग्णुपुच्वी ? उ० ६ हुंडे · · जाव · समचउरंसे ।

से त्तं पुव्वागुपुव्वी।

प्र० से किं तं पुच्वाणुपुच्वी ?

से तं पच्छाग्णुपुच्ची ।

Ű

प्र० से किं तं त्र्यगाग्रुपुच्वी ?

समाचार्यानुपूर्वी उ० त्रगागुपुन्वी-एत्राए चेव एंगाइत्राए एगुत्तरिए छ-गच्छगयाए सेढीए श्रएणमएग्रब्भासी दुरूवृणी।

> से त्तं श्रगागुपुव्वी । -से **त्तं** संठागापुव्वी ।

सु०-११८ प्र० (६) से किं तं समायारी ऋाखुपुव्वी १

तं जहा---

से किं तं पुन्वाग्रुपुन्वी ? पुन्वागुपुन्वी-

से त्तं पुठ्यागुपुठ्यी । प्र०'से किं तं पच्छागुपुट्यी ।

> उ० पच्छागुपुच्ची-उवसंपया, '''जाव ''इच्छागारो । से तं पच्छागुपुच्ची। प्र० से किं ऋणागुपुन्नी ?

से त्तं त्र्रणागुपुच्वी। से तं सामायारी-आणुपुच्वी ।

उ॰ समायारी-त्र्राणुपुन्नी तिविहा पराण्ता, १ पुन्वासापुन्वी २ पच्छासापुन्वी ३ ऋणासापुन्वी ।

गाहा— इच्छा'-मिच्छा'-तहक्कारो', आवस्तिया'य निसीहिया'। त्र्यापुच्छगा³य पडिपुच्छा" छंदणाय" य निमंतणा ।।१॥ उवसंपया⁹ य काले समायारी भवे दसविहा उ।

> उ० अगागुपुन्वी-एत्राए चेव एत्राइत्राए एगुत्तरित्राए दस-गच्छगयाए सेढीए अएग्यमएग्यन्भासी दुरुवृग्गी।

```
सु०-११६ प्र० (१०) से किं तं भावाग्रुपुच्वी ?
         उ० भावागुपुच्वी तिविहा परगात्ता,
              तं जहा-
              १ पुन्वाग्रुपुन्नी २ पन्छाग्रुपुन्वी ३ त्र्रमाग्रुपुन्वी ।
           - से किं तं पुच्वाखुपुच्वी ?
              पुच्वाग्णुपुच्वी-
                १ उदइए २ उवसमिए ३ खाइए
                ४ खत्रोवसमिए ५ पारिणामिए ६ सनिवाइए
              से तं पुट्याणुप्ट्यी।
          प्र० से किं तं पच्छागुपुच्ची ?
          उ० पच्छाग्रुपुट्वी—
              ६ सन्निवाइए जाव उदइए।
              से तं पच्छागुपुच्वी ।
         प्र० से किं तं ऋगागाुपुच्वी १
          उ० अणागुपुन्वी-एआए चेव एगाइआए एगुत्तरिआए
              छ-गच्छगयाए सेढीए अएगमएग्यब्मासो दुरूवृग्गो।
              से तं अणागुपुन्नी।
              से तं भावागुपुठ्वी ।
              से तं त्रमागुपुन्वी।
```

'श्रागुपुन्वी' ति पदं समत्तं।

प्र० से किं तं एगक्खरिए ?

ही, श्री, धी, स्त्री।

से त्तं एगक्खरिए।

प्र० से किं तं अधेगक्खरिए ?

तं जहा---

उ० एगक्खरिए अग्रेगविहे पर्णत्ते,

उ० त्रगोगक्खरिए-कन्ना, वीखा, लता, माला। से तं त्रगोगक्खरिए। त्रहवा दुनामे दुविहे पराणत्ते,

तं जहा---जीवगामे अ, अजीवगामे अ।

प्र० से किं तं जीव-गामे ? उ० जीव-णासे अग्रेगविहे पर्णत्ते, तं जहा-से तं.जीव-णामे।

प्र० से किंतं अजीव-णामे ? उ० अजीव-णामे अखेगविहे पर्णत्ते, तं जहा-घडो, पडो, कडो, रहो।

से तं अजीव-सामे। श्रहवा दुनामे दुविहे पएण्ते,

तं जहा---

श्रविसेसिए- दुव्वे। विसेसिए- जीवदव्वे, अजीवदव्वे श्र ।

अविसेसिए- जीवद्व्वे । अविसेसिए- गोरइए।

देवद्त्तो, जरणदत्तो, विराहुदत्तो, सोमदत्तो।

१ विसेसिए अ २ अविसेसिए अ।

विसेसिए- गोरइए, तिरिक्खजोगिए, मगुस्से, देवे।

विसेसिए— रयणप्पहाए, सक्करपहाए, वालुअपहाए, पंकप्पहाए धूमप्पहाए, तमाए, तमतमाए।

अविसेसिए— रयगाप्पहापुढवि-गोरइए। विसेसिए— पज्जत्तए अ, अपज्जत्तए अ। एवं ••• जाव•••

श्रविसेसिए— तमतमापुढवि-नेरइए । विसेसिए— पज्जत्तए श्र, श्रपज्जत्तए श्र ।

श्रविसेसिए— तिरिक्खजोगिए। विसेसिए— एगिदिए, वेइंदिए, तेइंदिए चडरिंदिए, पंचिदिए। श्रविसेसिए— एगिदिए। विसेसिए— पुढविकाइए, श्राउकाइए, तेउकाइए, वाउकाइए, वग्रस्सइकाइए।

श्रविसेसिए— पुढविकाइए। विसेसिए— सुहुम-पुढविकाइए श्र बादर-पुढविकाइए श्र।

श्रविसेसिए— सुहुम-पुढविकाइए । विसेसिए— पज्जत्तय-सुहुम-पुढविकाइए श्र श्रपज्जत्तय-सुहुम-पुढविकाइए श्र । श्रविसेसिए— बादर-पुढविकाइए ।

विसेसिए— 'पज्जत्तय-बादर-पुढविकाइए अ, अपज्जत्तय-बादर-पुढविकाइए अ। एवं आउकाइए, तेउकाइए

वाउकाइए, वर्णस्सइकाइए

श्रविसेसिश्र-विसेसिय-पज्जत्तय-श्रपज्जत्तयमेएहिं भागिश्रव्वा

अविसेसिए- वेइंदिए।

विसेसिए- पन्जत्तय-बेइंदिए श्र, श्रपन्जत्तय-बेइंदिए श्र।

एवं तेईदिश्र-चडरिंदिश्रा वि भागिश्रव्या ।

ग्रविसेसिए- पंचिंदिग्र-तिरिक्ख जोगिए।

विसेसिए— जलयर-पंचिंदिश्र-तिरिक्ख जोणिए, थलयर-पंचिंदिश्र-तिरिक्ख जोणिए, खहयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख जोणिए।

सहयर-पाचाद्यनतारक्स जात

श्रविसेसिए— जलयर-पंचिदिश्र-तिरिक्ख जोगिए।

विसेसिए— संमुच्छिम-जलयर-पंचिदिश्र-तिरिक्ख जोणिए श्र । गुब्भवक्कंतिश्र-जलयर-पंचिदिश्र-तिरिक्ख जोणिए श्र ।

श्रविसेसिए— संग्रुच्छिम-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख जोणिए श्र । विसेसिए— पजनय संग्रुच्छिम-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख जोणिए श्र ।

विसेसिए— पञ्जत्तय संग्रुच्छिम-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख जोणिए श्र । श्रपञ्जत्तय संग्रुच्छिम-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख जोणिए श्र ।

श्रविसेसिए—पञ्जत्तय गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख जोशिए श्र। विसेसिए-पञ्जत्तय गब्भवक्कंतिश्र-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोशिए श्र।

श्रपज्जत्तय गब्भवक्कंतिश्र-जलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए श्र।

त्रविसेसिए— थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए।

विसेसिए— चडप्पय-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए अ, परिसप्प चडप्पय-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए अ।

अविसेसिए— चउप्पय-थलयर-पंचिंदिय-तिरिक्ख-जोगिए।

डपक्रमाधिकारः]

विसेसिए— सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए श्र गब्भवक्कंतिय-चउप्पय-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए श्र । श्रविसेसिए- सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए श्र। विसेसिए— पजन्य-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ ।

, **अपजत्तय-सम्मु**च्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिदिय-तिरि**क्ख**-जोगिए अ। श्रविसेसिए-ग्रब्भवक्कंतिश्र-चउप्पय-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोशिए।

विसेसिए-पजत्तय-गब्भवक्कंतिश्र-चडप्पय-थलयर-

पंचिदिय-तिरिक्ख्-जोिणए अ, श्रपन्जत्तव-ग्रन्भवक्कंतिश्र चउप्पय थलयर-

पंचिदिय-तिरिक्ख-जोशिए अ। श्रविसेसिए- परिसप्प-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए।

विसेसिए— उरपरिसप्प-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए अ, भुजपरिसप्प-थलयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए अ।

एते वि सम्मुच्छिमा पज्जत्तगा श्रपज्जत्तगा य गडभवक्कंतित्रा वि पज्जत्तगा ऋपज्जत्तगा य भागिाऋव्वा ।

श्रविसेसिए- खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख जोणिए।

विसेसिए— सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए श्र, गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोशिए अ।

श्रविसेसिए- सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए श्र, विसेसिए- पजत्तय-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए अ,

श्रपन्जत्तय-सम्मुन्छिम-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए स्र। श्रविसेसिए- गन्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोगिए।

विसेसिए-पज्जत्तय-गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोणिए अ। श्रपज्जत्तय-गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-जोशिए श्र। अविसेसिए- मगुस्से। विसेसिए- सम्मुच्छिम-मणुस्से अ, गब्भवस्कंतिय-मणुस्से अ। श्रविसेसिए- सम्मुच्छिम-मग्रुस्से । विसेसिए- पज्जत्तग्-सम्मुच्छिम-मणुस्से अ। अपन्नत्तग-सम्मुच्छिम-मणुस्से अ। अविसेसिए- गब्भवक्कंतिय-मणुस्से। कम्मभूमित्रो य, विसेसिए-ग्रकम्मभूमिश्रो य, श्रंतरदीवश्रो य, संखिज्जवासाउय, **असंखिन्जवासाउय**, पज्जत्तापज्जत्तस्रो । **अविसेसिए**— देवे। विसेसिए- भवणवासी, वाणमंतरे, जोइसिए, वेसागिए अ। त्रविसेसिए- भवण्वासी। विसेसिए- १ अक्षुरक्रुमारे २ नागकुमारे, ३ सुवएण्कुमारे ४ विज्जुकुमारे, ५ अग्गीकुमारे ६ दीवकुमारे, ७ उदहि-कुमारे 🗷 दिसाकुमारे ६ वाउकुमारे १० थिए अकुमारे। सब्वेसिं नी अविसेसिअ-विसेसिअ-पजात्तग-अपजात्तग

मेया भागिग्रज्वा ।

[४१४ **अगुजोगदार**सुत्तं डपक्रमाधिकारः] द्धि-नाम श्रविसेसिए- वाग्रमंतरे विसेसिए— पिसाए भूए जन्खे रक्खसे, किएगारे " किंपुरिसे " महोरगे " गंधव्वे । एएसिं वि अविसेसिअ-विसेसिअ-पजात्तग-अपजात्तग मेया भागिअव्वा । श्रविसेसिए- जोइसिए। विसेसिए- चंदे सूरे गहगणे नक्खते तारारूवे । एतेसि वि अविसेसिय-विसेसिय-पज्जत्तय-अपज्जत्तय मेया भागिअव्वा । अविसेसिए- वेमाणिए। विसेसिए- कप्पोवगे ग्र, कप्पातीतए श्र। श्रविसेसिए- कप्पोवगे। विसेसिए- १ सोहम्से २ ईसागे ३ सगंकुमारे ४ माहिंदे ५ बंभलोए ५ लंतए ७ महांसुक्के ८ सहस्सारे

६ त्रागए १० पागए

११ त्रारगे १२ अच्चुए

त्रगुत्तरोववाइए श्र ।

र मिल्सम गेवेज्जए,

३ उवस्मि गेनेज्जए।

श्रविसेसिए- कप्पातीतए।

विसेसिए— गेवेज्जए ग्र।

श्रविसेसिए- गेवेज्जए।

विसेसिए- १ हेड्रिम गेवेडजए,

एएसि अविसेसिअ विसेसिअ-अपजातग-पजातग मेया भागिअव्वा।

, , , ,

```
अविसेसिए— हेड्डिम गेवेन्जए।
विसेसिए- १ हेड्डिम-हेड्डिम-गेवेज्जए,
             २ हेड्डिय-मजिसस-गेवेज्जए,
              ३ हेड्डिस-उवरिम-गेवेज्जए।
अविसेसिए— मिल्सम गेवेन्जए
विसेसिए- १ मज्भिम-हेड्डिम-गेवेज्जए,
              २ मिल्सम-मिल्सम-गेवेज्जए,
              ३ मजिसम-उवरिम-गेवेज्जए।
श्रविसेसिए— उवरिम गेवेन्जए।
विसेसिए- १ उवरिम-हेड्डिम-गेवेज्जए,
              २ उवरिम-मज्सिम-गेवेज्जए,
             ३ उवरिम-उवरिम-गेवेज्जए।
एएसिं सन्वेसिं ऋविसेसिय-विसेसिय-ऋपज्जत्तग-पज्जत्तग-
मेया भागित्रवा ।
श्रविसेसिए– श्रणुत्तरोववाइए ।
विसेसिए- विजयए वेजयंतए ,
              जयंतए<sup>3</sup> अपराजिश्रए<sup>8</sup>,
              सन्बद्धसिद्धए अं।
एएसिं वि सन्वेसिं अविसेसिय-विसेसिय-अपजातग् पजातग
 मेया भागित्रवा।
 श्रविसेसिए- श्रजीवद्व्वे ।
 विसेसिए- धम्मत्थिकाए अधम्मत्थिकाए
              श्रागासत्थिकाए<sup>3</sup> पोग्गलत्थिकाए<sup>४</sup>
```

-अद्धासमए अ ।

```
उपकेंमाधिकारः
त्रि-नाम
```

अविसेसिए- पोग्गलित्थकाए। विसेसिए- परमाणुपोग्गले, दुपएसिए, तिपएसिए, '''जाव'''त्रागंतपएसिए अ।

से तं दुनामे।

२ गुण-णामे

सु०-१२३ प्र० से किं तं तिनामे ? उ० ति-नामे तिविहे परागत्ते,

तं जहा---१ दन्त्र-गामे

३ पज्जव-णामे अ। प्र० से किंत दच्च-णामे १ उ० दच्च-णामे छन्चिहे पराणत्ते,

तं जहा— १ घम्मत्थिकाए

> २ अधम्मत्थिकाए ३ आगासत्थिकाए ४ जीवत्थिकाए ५ पुग्गलत्थिकाए ६ अद्धा-समए अ।

प्र० से कि तं गुण-णामे ? उ० गुण-णामे पंचिवहे पएणुत्ते,

से तं दव्य-णामे

ंतं जहा

१ वएण-णामे २ गंध-णामे ३ रस-णामे ४ फास-णामे

५ संठाण-गामे। प्र० से कि तं वएएए-एामे ?

उ० वएगा-गामे पंचविहे पएगत्ते, तं जहा-

१ काल-वर्ग्य-गामे २ नील-वराग-गामे ३ लोहिश्र-वर्ग्य-णामे

४ सुकिल्ल-वएग्-गामे । से तं वएगा-गामे।

४ हालिंद-वर्ण-गामे

प्र॰ से किं तं गंध-णामे ? उ० गंध-णामे दुविहे पराणत्ते,

तं जहा-१ सुरभिगंधे-गामे अ,

२ दुरमि-गंध-णामे अ। से तं गंध-सामे।

प्र० से किं तं रस-णामे ? उ॰ रस-गामे पंचविहे पगगत्ते,

ं तं जहा—

१ वित्र रस-सामे

विषयमाधिकारः

३ कसाय रस-गामे ४ श्रंबिल रस-गामे ४ महुर रस-गामे श्रं। से तं रस-गामे।

प्र० से कि तं फास-गामे ?
उ० फास-गामे श्रद्धविहे परगत्ते,
तं जहा—
१ कक्खड-फास-गामे

२ मज्ज्र-फास-णामे
३ गरुज्र-फास-णामे
४ लहुज्र-फास-णामे
५ सीत-फास-णामे
६ उसिण-फास-णामे
७ शिद्ध-फास-णामे

प्र० से कि तं संठाण-णामे ? उ० संठाण-णामे पंचविहे परणाचे,

से चं फास-णामे।

तं जहा— १ परिमंडल-संठाण-णामे २ वद्य-संठाण-णामे ३ तस-संठाण-णामे

> ४ चडरंस-संठाण-णामे ४ श्रायत-संठाण-णामे

से तं संठाण-णामे । से तं गुण्णामे । प्र॰ से कि तं पज्जव-गामे ?

उ० पन्जव-गामे अगोगविहे परगात्रे, तं जहा---

एगगुण कालए, दुगुगा कालए,

तिगुण कालए,

'जाव'''दसगुण कालए संखिज्जगुग कालए, श्रसंखिन्जगुण कालए

अगंतगुग कालएं,

एवं नील-लोहिय-हालिइ-सुकिला वि भागित्रव्या।

दुगुण्-सुरिभगंधे, तिगुग्-सुरभिगंधे

एगगुण-सुरमिगंधे,

* जाव " अगंतगुग-सुरभगंघे। एवं दुरभिगंघो वि भागिश्रव्वो ।

एगगुण तिचे,

'''जाव'' 'अणंतगुणतित्ते । एवं कडुश्र-कसाय-श्रंबिल-महुरा वि भागिश्रव्वा ।

एगगुग्यकक्खडे, '''जाव'''श्रग्तंतगुगाकवस्वडे ।

एवं मडश्र-गरुश्र-लहुश्र-सीत-उसिग्।-गिद्ध लुक्ला वि["]भागिए अञ्बा ।

ं से सं पन्जव-गाम ।

गाहाश्रो- तं पुरा गामं तिविहं, इत्थी पुरिसं गापुंसरां चेव। एएसिं तिएहं पि, अंतस्मि श्र परुवर्ण वोच्छं।। १।।

तत्थ पुरिसस्स श्रंता, श्रा-इ-उ-श्रो हवंति चत्तारि। ते चेव हित्थश्राश्रो, हवंति श्रोकार परिहीणा ॥२॥ श्रंतिश्र-इंतिश्र-उंतिश्र, श्रंताउ ग्र्पंसगस्स बोद्धन्वा।

श्रीतेश्र-इतिश्र-उतिश्र, श्रेताउ गापुंसगरस बोद्धन्वा। एतेसि तिग्हं पि श्र, वोन्छापि निदंसणे एची॥३॥ श्रागारंतो 'राया', ईगारंतो 'शिरी' श्र 'सिहरी' श्र । ऊगारंतो 'विग्हू', दुमो श्र श्रंता उ पुरिसागं॥४॥

श्रागारंता 'माला', ईगारंता 'सिरी' अ 'लच्छी' श्र । जगारंता 'जंबू', 'वहू' श्र श्रंताउ इत्थीगां ॥६॥ श्रंकारंतं 'धन्नं', इंकारंतं नपुंसगं 'श्रित्थि' । उंकारं तो पीलुं, 'महुं' च श्रंता शपुंसागां ॥६॥

से तं ति-शामे।

सु॰-१२४ प्र॰ से कि तं चडणासे १ ड॰ चडणामे चडव्विहे पर्यात्ते,

> तं जहा— १ त्रागमेणं २ लोवेणं ३ पयईए ४ विगारेणं।

्प्र॰ से किं तं त्रागमेखं ?

उ॰ श्रागमेरां— पद्मानि, पयांसि, कुएडानि । से तं श्रागमेरां।

प्रव से किं तं लोवेगां १

उ॰ लोवेगां— ते अत्र = तेऽत्र, पटो अत्र = पटोऽत्र, घटो अत्र = घटोऽत्र ।

से चं लोवेगं।

प्र॰ से कि तं पगईए ? उ॰ पगईए—

७० पगइए-अग्नी एती, पटू इमी

शाले एते, माले इमे । से चं पगईए ।

प्र० से कि तं विगारेगं ?

उ० विगारेगां— दग्डस्य+अग्रं = दंडाग्रं

सा÷त्रागाता = साऽऽगता दिध÷इदं = दधीदं

 $\begin{array}{rcl}
\mathbf{q} & \mathbf{q} & \mathbf{q} & \mathbf{q} \\
\mathbf{q} & \mathbf{q} \\
\mathbf{q} & \mathbf{q} \\
\mathbf{q} & \mathbf{q} & \mathbf{q} \\
\mathbf{q} & \mathbf{q} \\
\mathbf{q} & \mathbf{q} & \mathbf{q} \\
\mathbf{q} & \mathbf{q} \\
\mathbf{q} & \mathbf{q} & \mathbf{q} \\$

मधुर÷उदकं = मधूदकं वधू÷ऊहः = वधूहः।

से तं विगारेशं।

से चं चउगामे।

सु०-१२५ प्र० से किं तं पंचणामे १

उ॰ पंचणामे पंचविहे पराण्चे, तं जहा—

१ नामिकं २ नैपातिकं

३ श्राख्यातिकं ४ श्रीपसर्गिकं

५ मिश्रम् ।

'श्रश्व' इति नामिकं। 'खलु' इति नैपातिकं

'धावति' इति आख्यातिकं 'परि' इत्योपसर्गिकं

'संयतः' इति मिश्रम् ।

से तं पंचणामे।

सु०-१२६ प्र० से किं तं छएणासे ?

उ० छ्राणामे छन्दिहे पराण्ते,

तं जहा— १ उदइए २ उवसमिए ३ खइए

४ खन्नोवसमिए ५ पारिगामिए ६ सन्निवाइए।

प्र० से कि तं उदइए ? उ० उदइए दुविहे परागत्तः, तं जहा—

१ उदइए अ २ उदय निष्फराणे अ।

प्र० से किं तं उदइए ? उ० उदइए— अड्डएई कम्मपयडीगां उदएगां।

से तं उदहए।

प्र० से कि तं उदयनिष्कन्ने ? उ० उदयनिष्कने दुविहे पराण्ते,

तं जहा— १ जीवोदयनिप्तन्ने श्र,

२ अजीबोदयनिष्मस्ते अ

षएगाम

से कि तं जीवोदयनिष्मन्ने ? जीवीदयनिष्फन्ने त्रगोगविहे परग्ते, तं जहा-ग्रेरइए, तिरिक्खजोगिए, मग्रुस्से, देवे, पुढविकाइए' ''जाव' ''तसकाइए, कोहकसाई'''जाव ''लोहकसाई इत्थीवेदए, पुरिसवेयए, गापुंसगवेयए, क्ष्यहलेसे जाव सुकलेसे, मिच्छादिडी, सम्मदिडी, सम्ममिच्छादिडी, श्रविरए, श्रसएगी, श्रएगागी, त्राहारए, छउमत्थे, सजोगी संसारत्थे, असिद्धे । से तं जीवोदयनिप्फने। प्र० से किं तं अज़ीवोदयनिष्फन्ने ? उ० अजीबोदयनिष्फन्ने अगोगविहे पएगात्ते,

उ० अजावादयानप्पन अग्रागावह पर्यात्त,
तं जहा—
उरालियं वा सरीरं,
उरालिय-सरीर-पत्रोगपरिणामित्रं वा दव्वं,
वेउव्वियं वा सरीरं,
वेउव्वय-सरीर-पत्रोगपरिणामित्रं वा दव्वं,
एवं त्राहारगं सरीरं तेश्रगं सरीरं कम्मग-सरीरं च भाणिश्रव्वं ।
पत्रोग परिणामिए वर्णो, गंधे, रसे, फासे ।

से चं अजीवोदयनिष्करारो । से चं उदयनिष्करारो । से चं उदहए । षएए।।म

प्र० से कि तं उचसमिए ? उ० उचसमिए दुविहे पएगाचे,

तं जहा— १ उवसमे अ,

२ उवसमनिष्फरागे अ ।

प्र० से किं तं उवसमे ? उ० उवसमे- मोहणिजस्त-कम्मस्त-उवसमेणं।

से चं उवसमे।

प्र० से किं तं उवसमनिष्फरणो ?

उ॰ उवसमनिष्फर्गो अगोगविहे पर्गात्ते, तं जहा—

उवसंतकोहे ''जाव' 'उवसंतलोभे उवसंत-पेज्जे, उवसंत-दोसे

उवसंत-दंसणमोहणिज्जे, उवसंतचरित्तमोहणिज्जे उवसामित्रा-सम्मत्तलद्धी, उवसामित्रा-चरित्तलद्धी,

उवसंतकसाय-छेउमत्थवीयरागे। से त्तं उवसमनिष्फ्रएगे। से त्तं उवसमिए।

प्र० से कि तं खहए ? उ० खहए दुविहे पराण्चे,

खइए दु।वह परागत, तं जहा—

१ खहए अ २ खयनिष्फरणो अ। से कि तं खहए १ खइए-श्रहुएहं कम्मपयडीणं खइए गं। से तं खइए।

प्र० से कि तं खयनिष्फरणे ?
उ० खयनिष्फरणे त्रणेगविहे पर्णाचे,
तं जहा—

उपप्रश्न-गागादंसग्धरे, अरहा, जिगो, केवली, खीण-आभिणिबोहिय-गाणावरगो, खीगा-सुत्र-गागावरगो, खीगा-मगपज्जव-गागावरगो, खीगा-केवल-गागावरगो, श्रगावरगो, निरावरगो, खीणावरगा गागावरगिज्ज-कम्मविष्मसुकके,

केशलदंसी, सन्वदंसी,
खीणिनदे, खीणिनदानिदे,
खीणपयले, खीणपयलापयले,
खीणपयले, खीणपयलापयले,
खीणथीणिदि,
खीणचक्खुदंसणावरणे,
खीण-श्रचक्खुदंसणावरणे,
खीण-श्रोहिदंसणावरणे,
खीण-केवलदंसणावरणे,
श्रीण-केवलदंसणावरणे,
श्रीण-केवलदंसणावरणे,
श्रीण-केवलदंसणावरणे,
श्रीण-केवलदंसणावरणे,
दिस्यावरणे निरावरणे खीणावरणे
दिस्यावरणिजन-कम्मविष्यमुक्के,

खीग्-साया-वेश्रगिज्जे खीग्-श्रसाया-वेश्रगिज्जे

अवेत्रणो निन्वेत्रणो खीणवेत्रए सुभासुभ-वेत्रणिज्ज-कम्मविष्यसुक्के,

खीसकोहे जाव खीसलोहे खीसपेडजे. खीसदोसे

खीगादंसगामोहिगाज्जे, खीगाचिरित्तमोहिगाज्जे अमोहे, निस्मोहे, खीगामोहे

मोहणिज्ज-कम्म-विप्यमुक्के,

खीग-गेरइश्र-श्राउए खीग-तिरिक्ख-जोगि-श्राउए खीग-मग्रस्साउए

ः खीर्य-देवाउए

श्रणाउए निराउए खीणाउए श्राउ-कम्म-विष्यमुक्के

गइ-जाइ-सरीरंगोवंग-बंधग-संवायग-संवयग-संठाग-

त्रणेग-बोंदि-विंद-संघाय-विष्यमुक्के, खीर्ण-सुभ-नामे

खीग-त्रसुभ-णामे श्रगामे निएगामे खीग-णामे

सुभासुभणाम-कम्म-विप्पमुक्के खीग-उच्चागोए

खीग-गीत्रागोए

त्रगोए निग्गोए खीरा-गोए उच्च-गीय-गोत्तकम्म-विष्ममुक्के,

खीण-दाणंतराष्
खीण-लामंतराष्
खीण-भोगंतराष्
खीण-अगेगंतराष्
खीण-जीरिजंतराष्
खीण-जीरिजंतराष्
श्राणंतराष णिरंतराष खीणंतराष्
श्रातराष णिरंतराष खीणंतराष
श्रातराय-कम्म-विष्मसुक्के,
सिद्धे बुद्धे सत्ते परिणिव्खुए
श्रांतगढे सव्बद्धक्खणहीणे।
से त्तं खयनिष्करणे।
से तं खद्य

प्र० से किं तं खत्रोवसमिए ?
उ० खत्रोवसमिए दुविहे परगात्ते,
तं जहा—
१ खत्रोवसमे श्र
२ खत्रोवसमनिष्फरगो श्र ।

से पं खड़्योवसमे।

प्र० से कि तं खड़ोबसमे ?
उ० खड़ोबसमे— चड़ग्हं घाइकम्माणं खड़ोबसमेगं,
तं जहा—
१ णाणावरणिज्जस्स २ दंसणावरणिज्जस्स
३ मोहणिज्जस्स ४ अंतरायस्स खड़ोबसमेगं।

प्र० से किं तं खत्रोवसमनिष्फएगों ? उ० खत्रोवसमनिष्फरारो अगोगविहे परागत्ते,

तं जहा—

ख्योवसिया ग्राभिणिबोहिय णाण्लद्धी

···जावं : 'खञ्जीवसमित्रा मखपजन - णागलदी खञ्जोवसिम्रा मइ-अग्गाणलद्धी

खत्रोवसमित्रा सुत्र-त्रएणागलद्धी खश्रोवसिस्रा विभंग-गागलद्वी

खत्रोवसित्रा चंक्खुदंसगलद्री खत्रोवसित्रा अचक्खुदंसगलदी

ख्योवसमिश्रा त्रोहिदंसगलद्धी

· सम्मदंसग्रलद्वी

मिन्<mark>छादंसग</mark>ालद्वी सम्ममिच्छादंसण्लद्धी

सामाइग्र-चरित्तलद्वी खश्रोवसमित्रा एवं' ' ''छेदोवड्ढावगालद्धी

परिहारिनसुद्धित्र-लद्धी सुहुमसंपराय-चरित्तलद्धी

' चरिचाचरिचलद्वी

खञ्जोवसमित्रा दाग्रलङ्घी एवं ' 'लाभलद्वी

एवं '

भोगलद्धी उवमोगलद्धी

वीरिश्रा-लद्धी ख्योवसिम्रा

एवं · · · · · ं पंडिश्र-वीरिश्रलद्धी वाल-वीरिश्रलद्धी

बाल-पंडिश्र-वीरिश्रलद्धी

खत्रीवसित्रा सोइंदियलद्धी

ं जाव प्रासिदिश्रसद्धी खत्रीवसमिए त्रायारंगधरे

एवं सुत्रगडंगधरे

ठार्णगधरे समवायंगधरे

> विवाहपरण तिथरे शायाधम्मकहाधरे

उवासगदसांगधरे श्रंतगडदसांगधरे

अणुत्तरोववाइश्रदसांगधरे पर्णहावागरणधरे विवागसुत्रधरे,

खश्रोवसमिए दिडिवायधरे खश्रोवसमिए ग्वयुव्वी •••

जाव ः चउदसपुन्वी, खत्रोवसमिए गर्गी।

खत्रीवसमिए वायए।

से तं खत्रोवसमनिष्करागे। से तं खत्रोवसमिए।

प्र० से कि तं पारिगामिए ? उ० पारिगामिए दुविहे पराग्चे,

जहा

१ साइपारिंगांमिए अ २ त्र्रणाइपारिणामिएं अ ।

प्र० से किं तं साइपारिशामिए ? उ० साइपारिगामिए अग्रेगविहे पएग्ने,

तं जहा

जुरमसुरा जुरमागुलो, जुरम्ययं जुरमतंदुला चेव

श्रन्माय श्रन्मरुक्खा, सरागा गंधन्वगागरा य ॥१॥

उकावाया, दिसादाहा

गन्जियं विन्जू शिग्धायां ज्रवया जक्खादिता

धूमित्रा महित्रा रयुग्वाया

चंदोवरागा स्ररोवरागा चंदपरिवेसा स्रपरिवेसा

पिंडचंदा पिंडसूरा इंदधगा उदगमच्छा कविहसिया श्रमोहा

वासा वासधरा

गामा शगरा घरा पव्वता पायला भवशा

निरया- १ रयंगणहा २ सकरणहा .३ वालुअपहा ४ पंकपहा

> ५ धूमपहा ७ तमत्रमपहा

सोहम्मे ' 'जाव' ' अञ्चुए गेवेज्जे, ऋगुत्तरे, ईसिप्पभारा, परमाखुपोग्गले दुपएसिए * जाव * अर्गंतपएसिए । से चं साइपारिणामिए प्र० से किं तं श्रणाइपारिणामिए ? उ० श्रगाइपारिणामिए-१ धम्मत्थिकाए २ त्र्रधम्मत्थिकाए ३ स्रांगासित्थकाए ४ जीवत्थिकाए ५ पुग्गलित्थकाए ६ ऋद्वासमए लोए, अलोए भवसिद्धित्रा श्रभवसिद्धित्रा। से तं त्रणाइपारिणामिए। से तं पारिगामिए प्र० से किं तं सिएगवाइए ? उ० सिएणवाइए- एएसि चेव उद्इश्र-उवसमिश्र-खइअ-खत्रोवसमिय-

पारिगामिश्रागं भावागं। दुगसंजोएणं तिग्संजोएणं चउकसंजोएणं पंचगसंजोएणं जे निष्करजंति, सन्वे ते सन्निवाइए नामे।

दस तिश्र-संयोगा, पंच चउक्क-संयोगा

तत्थ गां दस दुअ-संयोगा,

एगे एंचक-संजोगे।

तत्थ् गं जे ते दस दुग-संयोगा ते गं इमे—

(१) अत्थ गामे उदइय-उवसमनिष्फरगो (२) अत्थ गामे उदइय-खाइगनिष्फरगो

(३) त्रात्य गामे उदइय-खत्रोवसम निष्फरणे

(४) त्रात्य गाम उपरयन्यत्रापतम मिन्यर्थे
(४) त्रात्य गामे उदइय-पारिगामित्र निप्पर्णे

(४) त्रात्य खान ७५३४-पारखाानत्र ।नप्तरख (५) त्रात्थ खामे उवसमिय-खय निष्प्रएखे

(६) अत्थि णामे उवसमिय-खञ्जोवसम निष्फएणे (७) अत्थि णामे उवसमिय-पारिणामिय निष्फएणे

(८) अत्थि गामे खइय-खत्रोवसम निफरणो

(६) श्रित्थ गामे खड्य-पारिगामित्र निष्फणणे (१०) श्रित्थ गामे खत्रीवसमिय-पारिगामित्र निष्फणणे।

प्र॰ कयरे से नामे उदहश्र-उवसमनिष्फराणे ?

उ॰ उदइए ति मणुस्से, उन्नसंता कसाया, एस णुं से णामे उदइय-उनसम निष्फरणो।

प्रः कपरे से गामे उदइश्र-खयनिष्फण्णे ? उ० उदइए ति मग्रुस्से, खइश्रं सम्मत्तं, एस गां से नामे उदइश्र-खयनिष्फण्णे।

प्र॰ कयरे से णामे उदइश्र-खश्रोवसमनिष्फण्णे ? उ॰ उदइए ति मणुस्से, खश्रोवसमित्राइं इंदिश्राई, एस णं से णामे उदइय-खश्रोवसमनिष्फण्णे।

प्रः कयरे से गामे उदइश्र-पारिगामिश्रनिष्क्रण्यो ?
उ० उदइए ति मणुस्से, पारिगामिए जीवे,
एस गं से गामे उदइश्र-पारिगामिश्रनिष्कृण्यो ।

प्र॰ कयरे से णामे उवसमित्र-खयनिष्फरणे ? उ॰ उवसंता कसाया, खइत्रं सम्मत्तं, एस गां से गामे उवसमिय-खयनिष्फरणे ।

प्र॰ कयरे से गामे उवसमिय-खत्रोवसमनिष्फण्णे ? उ॰ उवसंता कसाया, खत्रोवसमित्राइं इंदित्राइं, एस गां से गामे उवसमित्र-खत्रोवसमनिष्फण्णे।

प्र॰ कयरे से गामे उवसमिश्र-पारिगामिश्रनिष्करणे ? उ॰ उवसंता कसाया, पारिगामिए जीवे, एस गां से गामे उवसमिश्र-पारिगामिश्रनिष्करणे।

प्र॰ कयरे से गामे खड्अ-खओवसमनिष्फरगो ? उ॰ खड्अं सम्मत्तं, खओवसमित्राइं इंदिआई एस गां से गामे खड्अ-खओवसम-निष्फरगो ।

प्र॰ कयरे से गामे खड्य-पारिगामिश्रनिष्फण्णे ? उ॰ खड्झं सम्मत्तं, पारिगामिए जीवे, एस गां से गामे खड्श्र-पारिणामिश्रनिष्फण्णे।

प्र॰ कयरे से गामे खत्रोवसिम् निप्रामित्रनिष्करो ? उ॰ खत्रोवसिम् आई इंदिश्राई, पारिणामिए जीवे, एस गां से गामे खत्रोवसिय-परिणामित्रणिष्करां।

तत्थ गां जे ते दस तिग-संजोगा ते गां इमे—
(१) अत्थि गामे उदइअ-उवसमिय-खय-निष्फगो

(२) श्रत्थि गामे उद्इश्र-उवसमिश्र-खत्रोवसम निष्फ्रणे

(३) अत्थि गामे उदइअ-उवसिख-परिणामिश्र निष्फर्गो

(४) अत्थि गामे उद्इअ-खइअ-खओवसमनिष्फरगो

वरसाम

(५) ग्रत्थि गामे उदइग्र-खइग्र-परिणामित्रनिप्फरगो (६) श्रत्थि गामे उदइग्र-खत्रोवसमित्र-परिगामित्रनिप्फगो (७) अत्थि गामे उवसमिय-खइय्र-खत्रोवसमनिप्फरगो

(=) त्रितथ गामे उवसमित्र-खइय-पारिणामित्रनिष्फरां

(६) श्रत्थि गामे उवसमिश्र-खश्रोवसमिश्र-पारिगामित्रनिष्फरगो । (१०) त्रात्थि णामे खद्य-खत्रोवसमित्र-पारिगामिश्रनिष्फरगो ।

प्र० कयरे से गामे उदइश्र-उवसमिय-खयनिष्करगो ? उ० उदइए ति मणुस्से, उवसंता कसाया, खइत्रं सम्मत्तं,

एस गं से णामे उदइअ-उवसमिश्रखयनिष्फएगो। प्र॰ कयरे से णामे उदइय-उवसमिय-खत्रोवसमियनिप्फएगो ?

उ० उदइए ति मणुस्से, उवसंता कसाया, खत्रोवसमित्राइं इंदित्राइं एस गां से णामे उदइय-उवसमित्र-खत्रोवसमनिष्फरागो ।

प्र० कयरे से गामे उदइय-उवसमिश्र-पारिणामियनिप्फरागे ? उ० उदइए ति मणुस्से उवसंता कसाया पारिगामिए जीवे एस गां से गामे उदइश्र-उवसमिश्र-पारिणामिश्रनिप्फरागो ।

प्रः कयरे से गामे उदइश्र-खइश्र-खश्रोवसमनिष्फण्णे ? उ० ऊदए ति मणुस्से खइश्रं सम्मत्तं खश्रोवसमिश्राइं इंदिश्राइं एस गां से गामे उदइश्र-खइश्र-खश्रोवसम निष्फण्णे।

प्र॰ क्यरे से गामे उदइश्र-खइश्र-पारिणामिश्र निष्फ्रएगे ? उ॰ उदइए त्ति मग्रुस्से खइश्रं सम्मत्तं पारिग्रामिए जीवे

एस गं से गामे उदइश्र-खइश्र-पारिगामिश्र निप्फरगो।

प्र॰ कयरे से णामे उदइअ-खत्रोवसमिय-पारिगामिश्र निष्फरग्गे ?

उ० उदइए ति मणुस्से खत्रोवसिमग्राइं इंदियाइं पारिणामिए जीवे एस गां से गामे उदइग्र-खत्रोवसिमग्र-पारिणामिश्र निष्फ्रणे

प्र॰ कयरे से णामे उवसमित्र-खइत्र-खइत्र-खत्रोवसम निष्फरणो ?

उ० उवसंता कसाया खइत्रं सम्मत्तं खत्रोवसिमजाई इंदिआई एस गं से णामे उवसिम् -खइत्र-खत्रोवसम-निफाएगे।

प्र॰ कयरे से गामे उवसमित्र-खइत्र-पारिगांमित्रनिष्फण्णे ?

'^{ैं प्र}िंड० 'उवसंता कंसायी _' खइश्रं सम्मत्तं

पारिगामिए जीवे

एस गां से गामे उवसमित्र खड्अ-पारिगामित्रनिप्रगणे।

प्र० कंयरे से णामे उवसमित्र-खन्नोवसमित्र-

पारिगामित्रनिष्फरगो ?

उ० उवसंता कसाया खत्रोवसिम्राइं इंदित्राइं

पारिणामिए जीवे एस गां से गामे उवसमित्र-खत्रोवसमित्र-

पारिगामिश्रनिप्फरागे।

प्र० कयरे से गामे खड्अ-खओवसमिय-पारिगामिश्रनिष्फरगो । े उ० खंइश्रं सम्मत्तं सत्रोवसमित्राई इंदित्राई

पारिगामिए जीवे एस गं से गामे खइअ-खञ्जोवसमिश्र-पारिगामिश्रनिप्करगो।

तत्थ गां जे ते पंच चउक्कसंजोगा ते गां इमे-(१) श्रात्थ गामे-

उदइश्र-उवसमिश्र-खइश्र-खश्रोवसमनिष्फएगो । (२) अत्थि गामे-

उदइअ-उवसमिअ-खइअ-पारिणामिअनिप्फरागो । (३) श्रत्थि गामे-

उद्इअ-उवसमिश्र-खत्रोवसमिश्र-पारिगामिश्रनिष्फर्गो

(४) अतथ गामे— उद्इअ-खइअ-खओवसमिश्र-पारिगामिश्र्निप्फरणे। (५) अतथ गामे—

रा आत्य खाम-उवसमित्र-खङ्ग्र-खन्नोवसमित्र-पारिणामित्रनिप्फण्णे।

प्रव क्यरे से णामे—
उद्ह्ञ-उवसिम् अ-ख्इ अ-ख्योवसम निष्प्रणे ?
उ० उद्ह्ए ति मण्णुस्से
उवसंता कसाया
ख्इ अं सम्मत्तं
ख्योवसिम् आई इंदि आई
एस णं से णामे उद्ह्अ-उवसिम् अ-ख्इ अ-

खत्रोवसमनिष्फएगो ।

प्र॰ कयरे से णामे—
उदइश्र-उवसमिश्र-खइश्र-पारिणामिश्रनिष्फण्णे ?
उ॰ उदइए चि मणुस्से
उवसंता कसाया
खइश्रं सम्मन्तं
पारिणामिए जीवे

एस गं से गामे उदइअ-उवसभिअ-खइअ-

पारिणामित्रानिष्फरणे।

प्र॰ कयरे से गामे
उदइए-उवसमिश्र-खश्रोवसमिश्र-पारिगामिश्रनिप्फण्गे ?

उ॰ उदइए ति मणुस्से उवसंता कसाया उपक्रमाधिकारः]

खत्रोवसिम्आइं इंदिआइं पारिणामिए जीवे एस गं से णामे उदइअ-उवसिम अ-खळोवसिम पारिणामिए जीवे

प्र० कयरे से गामे—
उदइग्र-खइश्र-खश्रोवसमिय-पारिगामियणिप्परगो ?
उ० उदइए ति मग्रुस्से
खड्गं सम्मत्तं
खश्रोवसमिश्राइं इंदिश्राइं

पारिणामिए जीवे एस गं से णामे उदइअ-खइअ-खओवसमिश्र-

पारिगामित्रगिएफण्गो ।

उवसमित्र-खइत्र-खत्रोवसित्रश्र-पारिणामित्राणिप्परणो ? उ० उवसंता कसाया खइत्रं सम्मत्तं

प्र० कयरे से नामे-

ख्योवसमित्राई इंदित्राई पारिणामिए जीवे

एस गां से गामे उवसमित्र-खड्त्र-खत्रोवसमित्र-पारिगामित्रगिष्फरगो ।

तत्थ गां जे से एक्के पंचगसंजोए से गां इमे—
(१) अत्थि गामे—

उद्इत्र-उवसमित्र-खद्त्र-खत्रोवसमित्र-

पारिगामित्र्यगिष्कग्गो ।

प्र० कयरे से णामे—
उद्इत्र-उनसमित्र-खइत्र-खत्रोनसमित्रपारिणामित्रणिप्फण्णे ?
उ० उदइए ति मणुस्से
उनसंता कसाया
खइयं सम्मत्तं
खत्रोनसमित्राइं इंदित्राइं
पारिणामिए जीने
एस णं से णामे उदइत्र-उनसमित्र-खइय-खत्रोनसमित्रपारिणामित्र णिष्फण्णे ।
से तं सिन्ननाइए ।
से तं छएणामे ।

सु०-१२७ प्र० से किं तं सत्त्रणामे ?

उ० सत्तनामे

सत्तसरा परण्ता,

तं जहा—

गाहा- सन्जे रिसहे गंधारे, मन्भिमे पंचमे सरे।

***धेवए चेव नेसाए, सरा सत्त विद्याहिया ॥१॥**

एएसिं गां सत्तग्हं सरागां सत्त सरद्वाणा परागता,

तं जहा—

गाहात्र्यो— सज्जं च ऋग्गजीहाए, उरेगा रिसहं सरं। कंदुग्गएगा गंधारं, मन्भजीहाए मन्भिमं ॥२॥ नासाए पंचमं बुआ, दंतोड्टेग अधेवतं। भग्रहक्षेवेग गोसायं, सरद्वागा वि आहिआ।। २॥ सत्तसरा जीवणिस्सिआ पर्णात्ता, तं जहा—

तं जहा—
गाहा— सज्जं रवइ मऊरो, कुक्कुडो रिसमं सरं।
हंसो रवइ गंधारं, मज्मिमं च गवेलगा ॥ १ ॥
श्रह कुसुम-संभवे काले, कोइला पंचमं सरं।
छद्धं च सारसा कुंचा, नेसायं सत्तमं गन्नो ॥ २ ॥

सत्तसरा अजीवणिस्सिआ परणत्ता, तं जहां— सज्जं रवइ ग्रुअंगो, गोग्रही रिसहं सरं। संखो रवइ गंधारं, मिल्सिमं पुण भल्लरी।। १॥ चउच्चरण पदद्वाणा, गोहिआ पंचमं सरं। आडंबरो रेवइयं, महामेरी श्रास्तमं ॥२॥

तं जहा— गाहात्रो– सज्जेगं लहई वित्ति, कयं च न विणस्सइ।

एएसि गं सत्तगृहं सरागं सत्त सर-लक्खणा प्यग्ता,

गावो पुत्ता य मित्ता य, नारीणं होइ वल्लहो ॥१॥
रिसहेण उ अएसज्जं, सेणावच्चं धर्णाणि य ॥२॥
वत्थगंधमलंकारं, इत्थित्रो सयणाणि य ॥२॥
गंधारे गीतजुत्तिएणा, वज्जवित्ती कलाहित्रा ॥
हवंति कहणो धएणा, जे श्रएणे सत्थपारगा ॥ ३॥
मिन्सम-सरमंता उ , हवंति सहजीविणो ॥
खायई पियई देई, मिन्सम-सरमस्सित्रो ॥ ४॥

पंचमसरमंता उ, हवंति पुहविपई । स्रा संगहकत्तारो, त्रणेगगणनायगा ।। ५ ॥ रे व य-सरमंता उ, हवंति दुहजीविंगो **#साउणिया वाउरिया, सोयरिश्रा य मुद्दिश्रा ।। ६ ।।** शिसायसरमंता उ, होंति कलहकारगा। जंघाचरा लेहवाहा, हिग्डगा भारवाहगा ॥७॥ एएसिं गं सत्तग्हं सरागं तत्रो गामा परणता, तं जहा---१ सज्जगामे २ मजिक्समगामे ३ गंधारगामे सन्जगामस्स गां सत्त मुच्छगात्रो परगतात्रो, तं जहा-गाहा- मग्गी" कोरविश्रा हिरया, रयणी श्र सारकंता य । छट्टी अ सारसी^६ नाम, सुद्धसन्जा य सत्तमा ॥ १॥ मिक्समगामस्य गं सत्त ग्रुच्छ्यात्रो परमत्तात्रो, तं जहा---उत्तरमंदा रयगी, उत्तरा उत्तरासमा। समोक्कंता य सोवीरा, अभिरूवा होइ सत्तमा ॥ १ ॥ गंधारगामस्स णं सत्त मुच्छणात्रो पएणतात्रो,

तं जहा— नंदी अ खुड्डिया, पूरिमा य चउत्थी य सुद्धगंधारा। उत्तरगंधारा वि य, सा पंचिमया हवइ मुच्छा ॥१॥ सुद्दुत्तरमायामा, सा छद्घी सन्वय्रो य गायन्वा। अह उत्तरायया कोडिमा य सा सत्तमी मुच्छा॥२॥

^{*}कुचेलाय कुवित्तीय, चोरा चंडालमुहिस्रा । पाठान्तरं

सप्र-नाम

प्रवसत्तरा कन्त्रो हवंति ?गीयस्स का हवइ जोग्। ? कइसमया श्रोसासा ? कृइ वा गीयस्स श्रागारा ? ॥३॥

ः उ० सत्तसरा नामीत्रो, हवंति गीयं च रुइयजोगी। पायसमा उसासा, तिरिग य गीयस्स आगारा ॥४॥ ब्राइ-मे ब्रारभंता, समुन्वहंता य मन्भयारिमा। अवसार्गे उन्मंता, तिनि वि गीयस्स आगारा ॥५॥ छहोसे श्रहगुणे,तिषिण श्र वित्ताइं दो य भणिईश्रो। जो नाही सो गाहिइ, सुसिन्खित्रो रंगमज्यसम्म ॥६॥ भीयं दुर्ञ्रं उप्पिच्छं , उत्तालं च कमसो मुणेश्रव्वं। कागस्तर मणुणासं छद्दोसा होंति गेत्रस्स पुर्गां रत्तं च श्रलंकिश्रं ,च वत्तं च तहेवमविघुट्टं । महुरं^६ समं " सुललिश्रं^८ श्रहगुणा होंति गेश्रस्स ॥≈॥ उर[']कंठ^{*}सिर^{*}विसुद्धं च गिन्जंते मुख्य हिमिय पद्बद्धं । समतालपडुक्खेवं °, सत्तस्सरसीभरं अक्खरसमं 'पदसमं ', तालसमं लयसमं च गेहसमं ।

नीससि-श्रोससिश्रसमं , संचारसमं स्ता सत्त ॥१०॥ निद्दोसं^{९ ं} सारमंतं^९ च, हेउ जुत्त^३मलंकियं^९ उवर्णीयं सोवयारं च, मित्रं महुरमेव य ॥११॥ समं अद्भसमं चेव, सन्वत्थ विसमं च जं तिषिरा वित्त पयाराईं, चउत्थं नोवलन्भइ ॥१२॥ सकया पायया चेव, भिणईत्रो होति दोिएण वा।

सरमंडलम्मि गिन्जंते, पसत्था इसिमासित्रा ॥१३॥ प्र० केसी गायइ महुरं, केसी गायइ खरं च रुक्खं च। केसी गायइ चउरं, केसी अ विलंबिझं दुतं केसी ॥१४॥

```
अवसरं पुण केरिसी ?

उ॰गोरी गायित महुरं, सामा गायइ खरंच रुक्खं च।

काली गायइ चडरं, काणाय विलंबियं दुतं श्रंघा ॥१४॥

अवस्तरं पुण पिंगला।

सत्तसरा तश्रो गामा, मुच्छणा इक्कवीसइ।

ताणा एगूणपरणासं, सम्मतं सरमंडलं ॥१६॥

से चं सत्तणामे।
```

सु०-१२८ प्र० से किं तं श्रहनामे १ उ० श्रहनामे—

श्रहनाम— श्रद्घविहा वयग्-विभत्ती परग्राता,

तं जहां— निद्देसे पढमा होइ, बित्तिश्रा उवएसणे। तइया करणम्मि कया, चउत्थी संपयावणे॥१॥

पंचमी त्र त्रवायाणे, बही सस्सामिवायणे।

सत्तमी सिरिग्रहाग्रत्थे, अहमा ऽऽमंतग्री भवे ॥ २ ॥ तत्थ पढमा विभत्ती, निद्देसे 'सो इमो अहं व' ति ।

बिइन्ना पुण उवएसे 'भण कुण्सु इमं व तं व' ति ॥३॥ तइन्ना करणम्मि कया 'भणिश्चं च कयं च तेण व मए' वा।

'हंदि ग्रामो साहाए' हवइ चउत्थी पयाग्राम्मि ॥ ४॥ 'श्रवण्य गिग्ह य एत्तो, इउ' ति वा पंचमी श्रवायाग्रे। छड्डी तस्स इमस्स वा, गयस्स वा सामिसंबंधे ॥ ५॥

हवइ पुण सत्तमी, तं इमिम श्राहारकालभावे श्र । श्रामंतणी भवे, श्रहमी उ जह 'हे जुवाण' ति ॥ ६ ॥ से तं श्रहुणामे ।

* गाथाऽधिकमिदं पदं । * इदमपि गाथाऽधिकं पदं ।

ं श्रगुश्रीगदारसुत्तं **ए ४४४**

उपक्रमाधिकारः नव-नाम

सु०-१२६ प्र० से किं तं नव-गामे ?

- उ० नव-गामे—

ग्व-कव्व-रसा पएग्ता, तं जहा-

वीरो रसो जहा—

सिंगारो रसो जहा-

श्रव्युश्रो रसो नहाः—

रोहो रसो जहा:-

* दांगां तव।

गाहात्र्यो— वीरो'सिंगारो',श्रब्भुत्र्यो³श्र रोदो^४श्र होइ बोद्धव्वो। वेलगुत्रो' वीभच्छो , हासो कुणो पसंतो अ ॥१॥

(१) तत्थ परिचायम्मि श्र अतव चरणे सत्तुजण विणासे श्र।

श्रग्णुसय धिति, परकमलिंगो वीरो रसो होइ।।१।। सो नाम महावीरो, जो रज्जं पयहिऊख पटवइस्रो।

काम-कोह-महासत्तु, पक्ख निग्धायणं कुणइ॥२॥

(२) सिंगारो नाम रसो, रति-संजोगामिलाससंजग्राो । मंडण-विलास-विब्बोश्र,-हास-लीला-रमण लिंगो ॥१॥ महुर विलास-सललियं, हियउम्मादणकरं जुवाणांगं ।

सहुदामं, दाएति मेहला दामं

(३) विम्हयकरो अपुन्वो, अनुभूअपुन्वो य जो रसो होइ। हरिस-विसाउपत्ति-लक्खणो श्रब्भुश्रो नाम ॥ १ ॥ अब्धुअतरमिह एत्तो, अन्नं किं अत्थि जीवलोगम्मि ? जं जियावययो अतथा, तिकालजुत्ता मुगिज्जंति

(४) भय-जग्रग्-रूव-सद्धयार, चिताकहा समुप्पग्गो। संमोह-संमम-विसाय,-सरण्लिंगो रसो

ि उपक्रमाधिकारः

भिउडि-विडंबिश्र-मुहो, संदद्घोट्ट इश्र रूहिरमाकिएणो ।

वेलगुन्नो रसो जहाः--

बीभच्छो रसो जहाः---

हासो रसो जहाः--

(७) रूव-वय-वेस-भासा, विवरीत्रवित्तंबणासमुप्पराणो ।

करुणो रसो जहाः-

सोइश्र-विलविश्र-पम्हाण,-रुएणलिंगो एसो करुणो ॥१॥ पन्मायकिलामित्र्यं, बाहागयपपुत्रचित्रत्रं बहुसो। विश्रोगे पुत्तिय !, दुब्बलयं ते मुहं जायं ॥२॥

हण्सि पसुं श्रसुर-णिभो,भीमरसिश्र श्रइरोद्द! रोद्दोसि ॥२॥ (५) विणञ्जोवयार-गुज्मगुरु,-दारमेरावइक्कमुप्पएणो । वेलग्रश्री नाम रसो, लजा संका-करण-लिंगो ॥१॥ किं लोइअकरणीत्रो, लज्जणीत्रतरं ति लज्जयामु ति ।

वारिज्जिम्म गुरुयगो, परिवंदइ जं वहुपोत्तं ॥२॥

(६) श्रमुइ-कुणिम-दुइंसगा,-संजोगब्भासगंधनिष्फरागो । निन्वेश्रऽविहिंसालक्खणो, रसो होइ बीभच्छो ॥१॥ श्रसुइ-मलभरिय-निज्भर,सभाव-दुरगंधि-सञ्वकालं पि ।

थएणा उ सरीरकलिं, बहुमलकलुसं विमुंचंति ॥२॥

हासो मणप्यहासी, पगासिंखगो रसो होइ ॥१॥ पासुत्त-मसिमंडिय्र, पडिबुद्धं देवरं पलोत्रंति । ही जह थराभरकंपरा, परामित्रमज्का हसइ सामा ॥२॥

(८) पिश्र-विप्यश्रोग बंध, वह वाहि-विशिवायसंभग्नुप्पराशो ।

```
पसंतो रसो जहाः-
```

उपक्रमाधिकारः]

(६) निद्दोस-मण्-समाहाण, संभवो जो पसंतभावेणं। श्रविकारलक्खणो सो, रसो पसंतो त्ति णायव्वो ॥१॥

श्रावकारलक्खणा सा, रसा यसता ति सायण्या ॥ सन्भाव-निन्विगारं, उवसंत-पसंत-सोमदिङ्घीश्रं।

ही जह मुणिणो सोहइ, मुहकमलं पीवरसिरीश्रं ॥२॥ एए नव-कव्व-रसा, बत्तीसादोसविहिसमुप्पएणा।

गाहाहिं मुणियव्वा, हवंति सुद्धा वा मीसा वा ॥३॥

से चं खवखामे।

सु०-१३० प्र० से किं तं दसनामे ?

उ० दसनामे दसविहे पर्यात्ते.

तं जहा—

१ गोएगो २ नोगोएगो ३ स्रायागपपणां ४ पडिवक्खपएगां

५ पहाणयाए ६ श्रणाइत्रसिद्धंतेगां ७ नामेगां ८ श्रवयवेगां ६ संजोगेगां १० पमागोगां ।

प्र॰ (१) से किं तं गोएगों १

ड॰ गोएग्रे—

खमइ ति खमणो

तवइ ति तवगो जलद नि जलगो

जलइ ति जलगो पवइ ति पवगो

से तं गुएगो।

प्र० (२) से किं तं नोगोएगो ? उ० श्रकुंतो सकुंतो

त्रमुग्गो समुग्गो

त्रमुद्दो समुद्दो श्रक्तालं पलालं श्रक्कलिया सकुलिश्रा नो पलं श्रसइ ति पलासो श्रमाइवाहए माइवाहए श्रवीश्रवावए वीश्रवावए नो इंदगोवए इंदगोवे से त्रं नोगोएणे।

प्र० (३) से किं तं श्रायाग्यप्यगं ? उ० श्रायाग्यप्यगं— (धम्मोमंगलं चूलिश्रा)

त्रावंती चाउरंगिज्जं त्रसंखयं त्रहातित्थिज्जं

अत्रखन अहातात्वज्ज अद्दुज्जं जग्ग्याइन्जं

पुरिसइन्जं (उसुकारिन्जं) एलइन्जं वीरियं

ध्रम्मो सग्गो

समोसरगं जम्मइत्रं।

से तं श्रायाग्पएगां।

प्र० (४) से किं तं पडिवक्खपएगां ?

उ० पडिवक्खपएगां--नवसु गामागर-गागर-खेड-कब्बड-मडंब-

दोगाग्रह-पट्टगासम-संवाह-सिन्नवेसेसु सिन्नविस्समागोसु

श्रसिवा सिवा अग्गी सीश्रलो . उपक्रमाधिकारः 🕽

विसं महुरं
कन्लालघरेसु अंविलं साउअं,
जे रत्तए से अलतए
जे लाउए से अलाउए
जे सुंभए से कुसुंभए
आलवंते विवलीअभासए
से चं पडिवनखपएगं।

प्र० (५) से किं तं पाहण्णयाए ?
उ० पाहण्णयाए—
असोगवणे सत्तवण्णवणे
चंपगवणे चूत्रवणे
नागवणे पुत्रागवणे
उच्छवणे दक्खवणे सालिवणे।
से त्रं पाहण्णयाए।

प्र० (६) से कि तं श्रणाइ-सिद्धंतेणं ?
उ० श्रणाइसिद्धंतेणं—
धम्मित्थकाए, श्रधम्मित्थकाए, श्रागासित्थकाए
जीवित्थकाए, पुग्गलित्थकाए, श्रद्धांसमए।
से तं श्रणाइयसिद्धंतेणं।

प्र० (७) से किं तं नामेणं ? उ० नामेणं— पिउ-पिश्रामहस्स नामेणं उन्नामिज्जुइ। से तं नामेणं। ४४०]

प्र० (८) से किं तं अवयवेगां-उ०ं श्रवयवेशां--सिंगी सिही विसाणी, दाढी पक्खी खुरी नही वाली। दुपय-चडप्पय-बहुप्पया, नंगुली केसरी काउही ॥१॥ परिश्ररबंधेगा भडं जाणिजा, महिलिश्रं निवसगेणां। सित्थेगां दोगावायं, कविं च इक्काए गाहाए ॥२॥ से तं अवयवेगां।

उ० संजोगे चडिवहे पएगात्ते, तं जहा-१ दव्वसंजोगे २ खेत्रसंजोगे ३ कालसंजोगे ४ भावसंजोगे।

प्र० (१) से किं तं दव्वसंजोगे ?

प्र० (६) से किं तं संजोएएां ?

· उ० द्व्वसंजोगे तिविहे प्राण्ते, तं जहां— १ सचित्ते २ श्रचित्ते ३ मीसए।

प्र० (१) से किं तं सचिते १

उ० सचित्ते-गोहिं गोमिए महिसीहिं महिसए उरगीहिं उरगीए उद्दीहिं उद्दीवाले से तं सचिते।

```
प्र० (२) से किं तं श्रचित्ते ?
उ० श्रवित्ते-
    छत्तेगं छत्ती
    दंडेगां दंडी
    पडेगां पडी
     घडेगां घडी -
     कडेगां कडी
     से तं अचिते।
प्र० (३) से किं तं मीसए १
 उ० मीसए-
     हलेखं हालिए
     सगडेगां'सागडिए
     रहेणं रहिए
      नावाए नाविए
      से त्तं मीसए।
     से त्तं दव्वसंजोगे।
 प्र० (४) से कि तं खेत्तसंजोगे १
 उ॰ खेत्तसंजोगे-
      भारहे एरवए
      हेमवए एरएग्वए
      हरिवासए रम्मगवासए
      देवकुरुए उत्तरकुरुए
      पुन्वविदेहए श्रवरविदेहए।
```

श्रहवा—

मागहे मालवए सोरट्टए मरहट्टए कुंकगए। से तं खेत्तसंजोगे।

प्र० (३) से कि तं कालसंजोगे ?
उ० कालसंजोगे—
१ सुसमसुसमाए २ सुसमाए
३ सुसमदूसमाए ४ दूसमसुसमाए
५ दूसमाए ६ दूसमदूसमाए।

श्रहवा—

१ पावसए २ वासारत्तए ३ सरदए ४ हेमंतए ५ वसंतए ६ गिम्हए। से त्रं कालसंजोगे।

प्र० (४) से कि तं भावसंजोगे ?

उ० भावसंजोगे दुविहे पएण्चे,

तं जहा—

१ पसत्थे अ २ अपसत्थे अ ।

से कि तं पसत्थे ?

पसत्थे—

नाणेणं नाणी

दंसणेणं दंसणी

चरिचेणं चरिची

से तं पसत्थे।

प्र० से किं तं अपसत्थे ? उ० **अप**सत्थे— ∙ कोहेगां कोही मायोगं माणी मायाए मायी लोहेणं लोही से तं अपसत्थे। से तं भावसंजोगे। से तं संजोएगं। प्र० (१०) से किं तं पमायेगं १ उ० पमाणे चडव्विहे पएण्ते, तं जहा---१ नाम-प्यमागो २ ठवण-प्यमागो ३ दव्व-प्पमागो ४ भाव-प्पमागो । प्र० से किं तं नाम-प्यमाखे ? उ० नामप्पमाग्रे— जस्स गां जीवस्स वा श्रजीवस्स वा जीवाण वा श्रजीवाण वा तदुभयस्स वा तदुभयागा वा 'पमाणे' ति नामं कज्जइ, से तं शामप्पमागे। ं प्र० से किं तं ठवण-प्यमाणे ? उ० ठवण-प्यमाणे सत्तविहे परागत्ते.

तं जहा-

गाहा— गाक्खत्त -देवयं -कुले पासंड गणे अ जीविआहेउं । आभिष्पाइत्रगामे ठवणानामं तु सत्तविहं ॥

प्र० (१) से किं तं णक्खत्तणामे १ उ० गक्खत्तणामे—

कित्तिआहिं जाए-कित्तिए, कित्तिआदिएए।
कित्तिआधम्मे कित्तिआसम्मे
कित्तिआदेवे कित्तिआदासे
कित्तिआसेए।

रोहिणिए, रोहिणिदिने
रोहिणिएन रोहिणिदिने
रोहिणिधम्मे रोहिणिसम्मे
रोहिणिदेवे रोहिणिदासे
रोहिणिसेणे रोहिणिरिक्खए य।
एवं सन्वनक्खतेसु नामा भाणिश्रन्वा।

एतथ संगहिणा-गाहास्रो—

कितिश्र'-रोहिणि'-मिगसर'-श्रद्दा य पुण्ववस् श्र पुस्से श्र । तत्तो श्र श्रस्सिलेसा महा उ दो फरगुणीश्रो श्र ।।१॥ हत्थो 'चित्ता' साती' ,विसाहा 'तह य होइ श्रणुराहा' । जेडा मूला 'पुव्वासाहा', तह उत्तरां चेव ।।२॥ श्रमिई सवण 'प्रविद्या',सतिसदा दोश्रहोंति सदवया' । रेवइ श्रस्सिणि परणी ,ऐसा नक्खत्तपरिवाडी ।।३॥ से तं नक्खत्तणामे।

त्रगुं **त्रोगदा**र मुत्तं उपक्रमाधिकारः 🕽

दश-नाम

उ० देवया-गामे— ग्रग्गिदेवयाहिं जाए-अग्गिए, श्रगिदिएगो

श्रग्गिधम्मे श्रग्गिसम्मे अग्गिदेवे अग्गिदासे अग्गिसेणे अग्गिरिक्खए।

एवं सव्वनक्खत्त-देवयानामा भाग्गिश्रव्व। ।

एत्थ पि संगहिषागाहाश्रोः— ं अग्गी'-पयावइ'-सोमें', रुद्दों अदिति '-विहस्सई सप्पे'।

पिति -भग - अन्जम े -सिवस्रा वहा वाऊ व इंद्रगी ।। १॥ मित्तो^{१५}इंदो^{१६}निरई^{१७}श्राऊ^{१८}विस्सो^१श्र बंभ^२°विग्हू^{२१}श्र ।

> वसुर-वरुणरे -अय-रेविवद्धिर, पूसेरे आसेरे जमेरे चेव ॥ से तं देवयाशामे। प्र० (३) से किं तं कुलनामे ?

उ० कुलनामे-

उग्गे भोग्गे रायएणे खतिए इक्खागे गाए कोरव्वे । से तं कुलनामे।

प्र० (४) से कि तं पासंडणामे ? उ० पासंडगामे-'समग्रे य पंड्रंगे भिक्ख् कावालिए अ तावसए।

परिवायजे से चं पासंडनामे । प्र० (५) से किं तं गणनामे ? उ० गणनामे— मल्ले मल्लादिएणे

मल्लधम्मे मल्लसम्मे
मल्लदेवे मल्लदासे
मल्लसेखे मल्लरिक्खए।
से तं गणनामे।

प्र॰ (६) से किं तं जीविय-नामे ?
उ॰ जीविय-नामे—
अवकरए उक्कुरुडए उन्भिश्रए
कन्जवए सुप्पए।

से तं जीविय-नामे।

प्र० (७) से कि तं श्राभिप्पाइश्र-नामे १ उ० श्राभिप्पाइश्र-नामे— श्रंबए निंबए बक्कलए पलासए सिणए पिलुए करीरए । से त्तं श्राभिप्पाइश्र-णामे । से त्तं ठवगाप्पमागो ।

प्र० से किं तं दब्बप्पमाणे ?
उ० दब्बप्पमाणे छिव्वहे परणसे,
तं जहा—
धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए।
से तं दब्बप्पमाणे।

दश-नाम

प्र० से कि तं भावप्यमाणे ? उ० भावप्पमाग्रे चउन्विहे प्रगणज्ञे, तं जहा--

१ सामासिए २ तद्धियए ३ धाउए ४ निरुत्तिए।

प्र० (१) से किं तं सामासिए 👫 🖰 उ० सामासिए-सत्त समासा भवंति, 🗼 🧓

तं जहा---गाहा- दंदे अबहुव्वीही, कम्मधारय दिग्गु अं।

तप्परिस अव्वईभावे , एकसेसे असत्तमे ॥ १॥ प्र० (१) से किं तं दंदे ?

उ० दंदे-

दन्ताश्च =श्रीष्ठौ च दन्तोष्ठम् स्तनौ च = उदरं च स्तनोदरम्

वस्त्रं च = पात्रं च वस्त्रपात्रम् अश्वाश्च = महिषाश्च अरवमहिषम् श्रहिश्र = नकुलश्र श्रहिनकुलम् ।

से तं दंदे समासे।

प्र० (२) से किं तं बहुच्वीही समासे ? उ० बहुव्वीही समासे-

फुल्ला इमंमि गिरिन्मि कुडयक्यंबा सो इमो गिरीफुल्लियकुडुयक्यंबो।

से चं बहुव्वीही समासे। प्र० (३) से किं तं कम्मधारए ?

उ० कस्मधारए-

धवलो= वसहो धवलवसहो किएहो= मियो किएहमियो सेतो = पडो सेतपडो ंरत्तो = पडो रत्तपडो से तं कम्मधारए। प्र० (४) से किं तं दिगुसमासे ? उ॰ दिगुसमासे-तिरिग= कडुगागि तिकडुगं तििएण= महुराणि तिमहुरं तिषिण्= गुगाणि तिगुणं तिषिण= पुराणि तिपुरं तििएण= सराणि तिसरं तिरिण= पुक्खराणि तिपुक्खरं तििएण= बिंदुऋाणि तिविंदुऋं ्तिरिग= पहाणि तिपहं ंपंच= गाईश्रो पंचगायं सत्त= गया सत्तगयं नव= तुरंगा नवतुरंगं दस= गामा दसगामं दस= पुराणि दसपुरं। से चं दिग्गुसमासे। प्र० (४) से किं तं तप्पुरिसे ? उ० तप्पुरिसे-

तित्थे= कागो तित्थकागो

वर्णे = हत्थी वर्णहत्थी

व्याः व्याः

वर्ण= मयूरो वर्णमयूरो, से तं तप्पुरिसे । प्र० (६) से किं तं अन्वईभावे ? उ० श्रव्वईभावे-त्रशुगामं त्रशुगाइयं त्रशुफरिहं त्रशुचरित्रं। से तं अञ्बईभावे समासे । प्र० (७) से किं तं एगसेसे ? उ० एगसेसे-जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो जहा एगी करिसावणी तहा बहवे करिसावणा जहा वहवे क रिसावणा तहा एगो[,]करिसावणो जहा एगो साली तहा बहवे साली : जहा बहवे साली तहा एगो साली से तं एगसेसे समासे। से चं सामासिए। प्र० (२) से किं तं तद्धितए ? उ० तद्धितए श्रष्टविहे पएण्ते, तं जहा-

गाहा- कम्मे 'सिप्प'सिलोए',संजोग' समीश्रवी' श्र संजूहो ।

इस्सरिअ" अवच्चेगा य, तद्धितगामं तु श्रह्विहं ॥

प्र० (१) से किं तं कम्मणामे १ उ० कम्मणामे—

> तगहारए कट्टहारए पत्तहारए, दोसिए सोत्तिए कप्पासिए भंडवेयालिए कोलालिए। से तं कम्मणामे।

प्र० (२) से किं तं सिप्प-गामे ?

उ० सिष्य-गामे-

तुरण्ए तंतुवाए पद्यकारे उएड्डे वरुडे मुंजकारे कड़कारे छत्तकारे वन्भकारे पोत्थकारे चित्तकारे दंतकारे लेप्पकारे सेलकारे कोडिमकारे से चं सिप्प-नामे।

्ष्रः (३) से किं तं सिलोश्र-नामे १ ८ उ० सिलोश्र-नामे—

समणे माहणे सन्वातिही से त्तं सिलोग्र-नामे।

प्र० (४) से किं तं संजोग-नामे १ उ० संजोग-नामे-

रचणो ससुरए रचणो जामाउए रचणो साले रचणो भाउए रचणो भगणीवई से त्रं संजोग-नामे।

1.868 अगुत्रीगदार**सु**त्त प्र० (५) से किं तं समीव-नामे ?

उ० समीव-नामे-गिरिसमीवे = ग्यरं गिरिग्यरं विदिसासमीवे = ग्यरं वेदिसंग्यरं वेन्नाए समीवे = गायरं वेन्नायडं तगराए समीवे = गायरं तगरायडं से त्तं समीव-नामे। प्र० (६) से किं तं संजूह-नामे १ उ० संजूह-नामे— तरंगवइक्कारे मलयवइक्कारे श्रतागुसद्विकारे विंदुकारे । से तं संज़ह-नामे। प्र० (७) से किं तं ईसरिश्र-नामे ? ्ड० ईसरिश्र-नामे— ं राईसरे तलवरे माडंबिए कोडुंबिए इब्मे सेड्डी सत्थवाहे सेगावई। से तं ईसरिश्र-णामे। प्र० (८) से किं तं अवच्च-नामे ?

उपक्रमाधिकारः]

दशं-नाम

उ० अवच्च-नामे-अरिहंतमाया चक्कवद्दिमाया बलदेवमाया वासुदेवमाया रायमाया मुणिमाया वायगमाया । से तं अवचनामे। ' से त्तं तद्वियए।

```
प्र० (३) से किं तं धाउए ?
उ० घाउए-
       भूसत्तायां परस्मैभाषा
       एध बुद्धी
       स्पर्द संहर्पे
       गाध् प्रतिष्ठालिप्सयोर्प्रन्थे च,
       वाधृ लोडने ।
     से तं धाउए।
प्र० (४) से किं तं निरुत्तिए ?
उ० निरुत्तिए-
       मह्यां शेते = महिषः
       अमति च रौति च = अमरः
       मुहुर्मुहुर्लसतीति = मुसलं
       कपेरिवलम्बते तथेति च करोति = कपित्थं,
       चिदितिकरोति खल्लं च भवति = चिक्खलं
       ऊर्ध्वकर्णः = उलूकः
       मेखस्य माला = मेखला।
     से तं निरुत्तिए।
     से तं भावप्यमागो।
     से त्तं पमाणनाने।
     से त्तं दसनामे।
     से तं नामे।
     नाम ति पयं समतं।
```

प्र० (१) से कि तं माणे १
उ० माणे दुविहे पर्ग्यत्ते,
तं जहा—
१ धन्नमाणपमाणे अ २ रसमाणपमाणे अ।

प्र० (१) से किं तं धन्नमाग्य-प्यमाग्ये ?

उ० धन्नमाण-प्यमाणे-

दो असईओ = पसइ दो पसईओ = सेतिया चत्तारि सेइआओ = कुलओ चत्तारि कुलया = पत्थो चत्तारि पत्थया = आढगं चत्तारि आढगाई = दोणो सद्घि आढगाई = जहन्नए कुंभे असीइ आढयाई = मिल्सिमए कुंभे आढयसयं = उक्कोसए कुंभे आढयसयं = उक्कोसए कुंभे

प्र॰ एएगं धन्नमाग्यपमाग्येगं कि पञ्जोञ्जगं ?

उ॰ एएगां धरगमाग्यपमागोगां

ग्रुतोली-मुख-इदुर-अलिंद-ओचारसंसियागां धरणागां

धरगमाग्यपमाग्यनिन्वित्तिलक्खगां भवइ ।
से तं धरगमाग्यपमाग्ये।

प्र॰ (२) से कि तं रसमाग्राप्यमागे ?. उ॰ रसमाग्राप्यमाग्री— धर्णमाणपमाणात्रो चउभागविविद्**रए** श्रिव्भितरसिहाजुत्ते रसमाणप्यमाणे विहिन्जह, तं जहा—

प्रविभतरासहाजुत्त रसमाणप्यमाण विश्व विक्त है, तं जहा— चउसिंद्रिया (४ चउपलपमाणा । बत्तीसित्रा (८ श्रहुपलपमाणा) सोलसित्रा (१६ सोलसपलपमाणा)

सोलसिया (१६ सोलसपलपमाणा) यहभाइत्रा (३२ वत्तीसपलपमाणा) चउभाइत्रा (६४ चउसहिपलपमाणा)

श्रद्धमाणी (१२८ सयाहिश्र श्रद्धाइसपलपमाणा) माणी (२५६ दु स्याहिश्र श्रुप्पणपलपमाणा) दो चउसद्विश्राञ्चो = ब्त्तीसिश्रा

दो बत्तिसित्रात्रो = सोलसित्रा दो सोलसित्रात्रो = त्रहभाइत्रा दो त्रहभाइत्रात्रो = चउभाइया दो चउभाइत्रात्रो = त्रद्धमाणि

दो श्रद्धमाणीश्रो = माणी। प्र• एएगं रसमाणपमाणेगं कि पश्रोश्रणं ?

उ० एएगं रसमागेगं— वारक-घडक-करक-कलसिश्र-गागरी-दइश्र-करोडिश्र-क्ष कुंडिश्र-संसियागं रसागं रसमागप्पमाग-निव्वित्तिलक्खगं भवइ। से त्रं रसमागप्पमागो।

से तं मागो।

प्र० (२) से कि तं उम्मागे ?

उ० उम्मागे—जं गं उम्मिगिज्जइ,
तं जहा—

अद्भविसो करिसो, अद्भवलं पलं
अद्भवता तुला अद्भारो भारो ।
दो अद्भविसा = करिसो
दो करिसा = अद्भवलं
दो अद्भवलाई = पलं
पंच पलसङ्आ = तुला
दसतुलाओ = अद्भगरो
चीसं तुलाओ = भारो ।

प्रः एएगं उम्माग्यमाग्रेगं कि पत्रोत्रगं ?
उ० एएगं उम्माग्यमाग्रेगं पत्ताऽगर-तगर-चोत्रत्रकुंकुम-खंड-गुल-मच्छंडिश्राईगं दच्वागं
उम्माग्यमाणनिव्वित्तिलक्खगं भवइ ।
से तं उम्माग्यमाग्रे ।

प्र० (३) से कि तं श्रोमाणे ?
उ० श्रोमाणे—जं णं श्रोमिणिज्जइ,
तं जहा—
हत्थेण वा दण्डेण वा ध्रणुक्केण वा जुगेण वा,
नालिश्राष्ट्र वा श्रक्खेण वा मुसलेण वा ।

गाहा---दंड-धणु-ज्ञग-नालिश्रा य, श्रक्ख-मुसलं च चउहत्थं। दसनालिश्रं च रज्जुं, विश्राण श्रोमाणसरणाए ॥१॥ प्रमाणद्वार**म**

वत्थुमिम हत्थमेज्जं, खित्ते दंडं धर्मां च पत्थिमि । खायं च नालिश्राए, विश्राण श्रोमाणसण्णाए ॥२॥

प्र॰ एएगां अवमागापमागोगां कि पत्रोत्रगां ? उ० एएगां अवमाणपमागोगां खाय-चिश्र-रइश्र-करकचिगा-कड-पड-भित्ति-परिक्खेवसंसियागं दञ्बागं श्रवमागापमागानिविवत्तिल वखगां भवइ । से तं अवमागो।

उ० गणिमे-जं गं गणिज्जइ, तं जहा-एगो दस सयं सहस्तं दससहस्ताई, सयसहस्सं दससयसहस्साइं कोडी।

प्र० (४) से किं तं गणिमे ?

प्र॰ एएगां गियम-प्यमागोगां कि पत्रोत्रगां ? उ० एएगां गिणम-प्यमागोगां भितग-भिति-भत्त-वेद्यग्-श्राय-व्वयसंसित्राणं दव्वाणं गिणम-पमाण्निन्वित्तिल्क्खगं भवइ। से तं गिशामे। प्र० से किं तं पहिमागी ? उ॰ पडिमायो-जं गां पडिम्रिगिज्जह, तं जहा-गंजा कागणी निष्फावो कम्ममासत्रो मंडलभो सुवएगो। पंच गुंजात्रो = कम्ममासत्रो चत्तारि कागणीत्रो = कम्ममासत्रो

तिरिण निष्पावा = कम्ममासञ्जो एवं चउक्को कम्ममासञ्जो। (काकिएयपेच्या) वारस कम्ममासया = मंडलञ्जो एवं श्रडयालिसंकागणीत्रो = मंडलञ्जो सोलसकम्ममासया = सुनएणो एवं चउसद्विकागणीत्रो = सुनएणो।

प्रः एएगं पिंडमाग्यपमाग्रेगं कि पत्रोत्रगं ?
उ० एएगं पिंडमाग्यपमाग्रेगं सुवरग्-रजत-मग्रि-मोत्तित्र,
संख-सिल-प्यवालाईगं दन्वाग्रं
पिंडमाग्यमाग्य-निन्वित्तिलक्खगं भवइ।
से तं पिंडमाग्रे।
से तं विभागनिष्करग्रे।

सु०-१३३ प्र० (प० २) से कि तं खेत्तपमाणे ? उ० खेत्तपमाणे दुविहे पर्णात्ते,

से तं दव्वप्यमागो ।

खत्तपमार्ग द्वावह प्रयात्त, तं जहा---

१ पएसनिष्फरणो अ २ विभागनिष्फरणो अ । प्र० (खे॰ १) से किं तं परसनिष्फरणो ?

उ॰ पएसनिष्फरागो—

एगपएसोगाहे दुपएसोगाहे तिपएसोगाहे, संखिङजपएसोगाहे असंखिजजपएसोगाहे। से त्तं पएसनिष्फरागो ।

प्र॰ (खे॰२) से किं तं विभागियाप्रएगे ? उ॰ विभागियप्रएगे— ie: I

गाहा— श्रंगुल-विहत्थि-रयगी, कुच्छी ध्रुगु गाउश्चं च बोद्धव्वं। जोयगा-सेढी-पयरं, लोगमलोगे वि य तहेव ॥

प्र॰ से किं तं श्रंगुले ?
ड॰ श्रंगुले तिविहे पर्यात्ते,
तं जहा—
१ श्रायंगुले २ उस्सेहंगुले ३ पमाणंगुले ।

प्र० (१) से किं तं श्रायंगुले १ श्रायंगुले-

जे गां जया मणुस्सा भवंति तेसि गां तया अप्यगो अंगुलेगां दुवालसअंगुलाइं मुहं, नवमुहाइं पुरिसे पमाणजुत्ते भवइ,

दोषिणए पुरिसे माणजुत्ते भवइ, श्रद्धभारं तुल्लमाणे पुरिसे उम्माणजुत्ते भवइ।

गाहात्रो— माणुम्माणपमाण जुत्ता, लक्ख्यावंजगागुगोहिं उववेत्रा। उत्तमकुलपस्त्रा, उत्तमपुरिसा सुगोत्राच्या ॥ १॥ होति पुण त्रहियपुरिसा, त्रहसयं त्रंगुलाण उच्विद्धा। छ्पणउइ श्रहमपुरिसा, चडरुत्तरमिन्ला उ ॥ २॥

हीणा वा श्रहिया वा, जे खल्ल सरसत्तसारपरिहीणा। ते उत्तमपुरिसाणं, श्रवस्स पेसत्तणग्रवेति ॥ ३॥ एएणं श्रंगुलपमाणेणं

छ श्रंगुलाइं = पात्रो दो पाया = विहत्थी

दो विहत्थीय्रो = रयगी दो रयगीत्रो = कुच्छी दो कुच्छीय्रो = दंडं धण् जुगं नालिया श्रक्षे ग्रुसले। दो धणुसहस्साइं = गाउत्रं चत्तारिगाउत्राइं = जोश्रणं।

प्र० एएगं आयंगुलपमाग्रेगं कि पत्रोत्रगं ? उ० एएगां श्रायंगुलेणं जे गां जया मग्रुस्सा हवंति, तेसि गं तया गं त्रायंगुलेगं, श्रगड-तलाग-दह-नदी-वावि-पुक्खरिणी-दीहिय-गुंजालि आद्यो सरा सरपंति आत्रो सरसरपंति आत्रो विलपंतियायो, त्रारामुन्जाग्-काग्ग्य-वग्य-वग्यसंड-वग्रराईस्रो, देउल-सभा-पवा-धूभ-खाइग्र-परिहाश्रो पागार-श्रद्दालय-चरिश्र-दार-गोपुर-पासाय-घर-सरग्-लयग्-त्रावग्-सिघाडग-तिग-चउक्क-चचर-चउम्ग्रह-महापह-पह-सगड-रह-जाग्य-जुग्ग-गिल्ली-थिल्ली-सिविश्र-संदमाणिश्रात्रो, लोही-लोहकडाह-कडिल्लय-भंडमत्तोवगरगामाईगि अजकालियाई च जोत्रगाई मविज्जंति। से समासत्रो तिविहे पर्णाचे, तं जहा---१ सई अंगुले २ पयरंगुले ३ घणंगुले । अंगुलायया एगपएसिया सेढी सइ अंगुले सइ सइगुणित्रा पयरंगुले पयरं सूइए गुणिश्रं घणंगुले।

प्रमाणद्वार**म्**

प्र॰ एएसिं एां भंते !

सूइअंगुल-पयरंगुल-घगांगुलाणां कयरे कयरेहिंतो । श्रपा वा बहुया वा

तुन्ला वा विसेसाहिया वा १ उ० सन्वत्थोवे सङ्द्रांगुले

पयरंगुले असंखेडजगुणे घणंगुले असंखिज्जगुणे।

से सं आयंगुले।

प्र० (१) से किं तं उस्सेहंगुले ? उ० उस्सेहंगुले अयोगविहे परमात्ते,

तं जहा---

परमाणू तसरेणू, रहरेणू अग्गर्यं च वालस्स । लिक्खां जूत्रा य जवो, अहुगुण विविद्धा कमसो ॥१॥

प्र॰ से किं तं परमाण् ?

उ० परमाणू दुविहे पर्येणचे, तं जहा-

> १ सुहुमे अ २ ववहारिए अ। तत्थ गां जे से सुहुमे से ठप्पे।

(प०२) तत्थ गां जे से ववहारिए से गां अगांतागांतागां

सुहुमपोग्गलाएां समुद्यसमिति-समागमेणां— ववहारिए परमाखुपोग्गले निप्फन्जइ।

प्र० से गां संते ! ऋसिधारं ना खुरधारं ना श्रोगाहेल्ला ? उ० हन्ता, श्रोगाहेन्जा ।

प्र० से गां तत्थ छिन्जेन्ज वा भिन्जेन्ज वा ? ७० नो इगाड्डे समद्वे, नो खल्ज तत्थ सत्थं कमइ।

प्र० से गां भंते ! श्रगणिकायस्से मन्भंमन्भेगां वीइवएन्जा ? उ० हंता, वीइवएन्जा ।

प्र० से गां भंते ! तत्थ डहेज्जा ? उ० नो इगाडे समडे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ।

प्र॰ से गां भंते ! पुत्रखरसंबद्धगस्स महामेहस्स मज्कंमज्केगां वीइवएज्जा ?

उ० हंता, वीइवएन्जा।

प्र० से गां तत्थ उदउल्ले सिया ? उ० नो इगाडे समडे, गो खल्ज तत्थ सत्थं कमइ।

प्र० से गां भंते ! गंगाए महागाईए पडिसोयं हव्यमागच्छेजा ?

उ० हंता हच्वमागच्छेन्जा।

प्र० से गां तत्थ विशिषायमावन्जेन्जा ?

उ० नो इगाट्टे सगाड्टे ! नो खलु तत्थ सत्थं कमइ ।

-प्र० से गां भंते ! उदगावत्तं वा उदगविंदु वा श्रोगाहेजा ? उ० हंता, श्रोगाहेज्जा।

प्र० से गां तत्थ कुच्छेज्जा वा ? परियावज्जेज्ज वा ? उ० गो इगांडे समद्दे, नो खलु तत्थ सत्थं कमइ।

गाहा- सत्थेग सुतिक्षेग वि, छित्तुं भेत्तुं च जं किर न सक्का। तं परमाणुं सिद्धा, वयंति आई पमाणाणुं॥१॥ उपक्रमाधिकारः]

त्रगांतागां ववहारित्र-परमाग्रुपोग्गलायां समुद्य-समिति-समागमेणं सा एगा-उसएहसिएहच्चा इ वा, सएहसिएहच्चा इ वा, उड्हरेग्यू इ वा, तसरेग्यू इ वा, रहरेग्यू इ वा। ं श्रद्व उसग्रहसग्रिहश्राश्रो सा एगा = सग्रहसग्रिहा श्रद्ध सग्रहसिग्हिञ्चात्रो सा एगा = उड्दरेग् उड्दरेगुओ सा एगा = तसरेगू तसरेगुत्रो सा एगा = रहरेगु श्रद्ध रहरेण्यों = देवकुरु-उत्तरकुरुएां-मगुत्राएां से एगे वालग्गे, श्रद्ध देवकुरु-उत्तरकुरूणं मणुश्राणं वालग्गा = हरिवास-रम्भगवासाएां मणुत्राएां से एगे वालग्गे श्रद्घ हरिवास-रम्मगवासायां मग्रुस्सायां वालग्गा = हेमवय-हेरएणवयाणं मखुस्साणं से एगे वालग्गे श्रद्व हेमनय.हेरएणनयाणं मणुस्साणं वाल्ग्गा = पुच्वविदेह-श्रवरविदेहाएां मणुस्साएां से एगे वालग्गे श्रद्व पुच्वविदेह-श्रवरविदेहाणां मणुस्साणां वालग्गा = भरह-एरवयाणं मणुस्साणं से एगे वालग्गे

श्रद्ध भरह-एरवयाणं मणुस्साणं वालग्गा = सा एगा लिक्सा, श्रद्ध लिक्खाश्रो = सा एगा जूश्रा

श्रह जिन्छा = सा एगा जुझा श्रह ज्याओं = से एगे जवमज्मे श्रह जवमज्मे = से एगे श्रंगुले।

एएएां अंगुलाग पमागोगां

छ त्रंगुलाइं = पादो

बारस त्रंगुलाइं = विहत्थी

चउवीसं त्रंगुलाइं = रचणी

श्रहयालीसं त्रंगुलाइं = कुच्छी

छन्नवइ त्रंगुलाइं = से एगे दंहे इवा, धणूइ वा

जुगेइ वा, नालिश्राइ वा

श्रक्खेइ वा, ग्रसलेइ वा।

एएएां धणुष्पमाणेगं दो धणुसहस्साइं = गाउत्रं

चत्तारि गाउश्राइं = जोश्रणं।

प्रः प्रः उस्सेहंगुलेगं कि पत्रोत्रगां ? उ॰ एएगां उस्सेहंगुलेगं ग्रेरइय-तिरिक्खजोगित्र मग्रुस्स-देवागं सरीरोगाहणा मधिज्जइ।

प्र॰ गोरइत्राणं भंते ! के महालित्रा सरीरोगाहणा परायता ? उ॰ गोयमा ! दुविहा पराणत्ता, तं जहा—

१ भवधारणिज्जा श्र २ उत्तरवेउव्विश्रा प । तत्थ गां जा सा भवधारणिज्जा सा गां— जहग्गोगां श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं। उक्कोसेगां पंच धग्रुसयाई।

तत्थ गां जा सा उत्तरवेउव्विया सा— जहग्गेगां श्रंगुलस्स संखेदजइभागं। उक्कोसेगां घग्रुसहस्सं।

प्र० रयगाप्पहाए पुढव्वीए नेरङ्क्याएां भंते ! के महालिया सरीरोगाहगा पएगुत्ता ? उ॰ गोयमा ! दुविहा पएण्ता, तं जहा—

१ भवधारगिष्जा य २ उत्तरवेउव्वित्रा य ।

तत्थ गां जा सा भवधारियाज्जा सा जहन्नेगां श्रंगुलस्ल असंखिज्जइभागं उक्कोसेगां-सत्तधगाइं तिरियारयगित्रो छच श्रंगुलाइं।

तत्थ यां जा सा उत्तरवेउन्विश्रा सा जहरूपोयां श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेयां पर्णारसधणूइं दोषिण रयणिश्रो-बारस श्रंगुलाईं।

प्र० असकरप्यहापुढवीए गोरइश्राणं मंते! के महालिश्रा सरीरोगाहणा परणत्ता ?

उ॰ गोयमा ! दुविहा पएगात्ता, तं जहा—

१ भवधारिणज्जा य २ उत्तरवेउव्विया य ।

तत्थ एां जा सा भवधारणिज्जा सा जहएणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेएां पएणरसधगूई, दुएिण रयणीश्रो बारसश्रंगुलाई।

तत्थ गां जा सा उत्तरवेउन्विया सा जहरांगेगां श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेगां एकतीसं धगाइं इक्करयगा श्र। प्र० वालुअप्पहापुढवीए गोरइयागां भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा परणता ? उ० गोयमा ! दुविहा पर्ग्यात्ता, तं जहा-१ भवधारगिज्जा य २ उत्तरवेउव्विया य । तत्थ गां जा सा भवधारगिज्जा सा जहराणेगां श्रंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेगां एकतीमं धगूइं इक्करयगी अ। तत्थ एां जा सा उत्तरवेडिवया सा जहएखेषां श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं

उक्कोसेणां बासिइधियाइं दो रयगीस्रो स्र ।

प्र० एवं सव्वासि पुढनीर्गं पुच्छा भागिष्रञ्जा । उ० पंकपहाए पुढवीए भवधारगिङ्जा जहरायेगां अंगुलस्स असंखेज्जइमागं उक्कोसेगां वासिंह धगाई दो रयगीश्रो। उत्तरवेउव्विया— जहरायेयां श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेगां पणवीसं धणुसयं।

प्र॰ धूमप्पहाए भवधारगिज्जा जहएगेएां अंगुलस्स असंखेज्जइमागं उक्कोसेणां पणवीसंब्ह्यणुसयं। उत्तरवेउव्विया-जहरागेरां श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेगां अड्ढाइज्जाई घरासयाई। उपक्रमाधिकार:] उ० तमाए भवधारगिज्जा जहएेोगां श्रंगुलस्स असंखेन्जइमागं उक्कोसेगां श्रड्ढाइज्जाइं धग्रुसयाई । उत्तरवेउव्विया-जहरारोएां इंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं पंच घणुसयाई ं प्र० तमतमाए पुढवीए नेरइयाणां भंते ! के महालिश्रा सरीरोगाहणा पराणता ? उ॰ गोयमा ! दुविहा परगाचा, तं जहा---१ भवधारिण्डजा य २ उत्तरवेडिवया य । तत्थ एां जा सा भवधारिएजा सा जहएगोएां अंगुलस्स असंखेज्जइभागं - उक्कोसेगां पंच धग्रुसयाइं।

तत्थ एां जा सा उत्तरवेउव्विया सा जहएगोगां श्रंगुलस्स संखेटजइभागं उक्कोसेणं धग्रुसहस्साई।

प्र॰ असुरकुमाराएां भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा पराण्या ? उ० गोयमा ! दुविहा प्रग्ता, ्तं जहा---१ भवधारिणाज्जा य २ उत्तरवेजिन्या य। तत्थ गं जा सा भवधारिण्जा सा , जहएणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेणां सत्तरयणीत्रो,

तत्थ गां जा सा उत्तरवेउिवया सा जहरुणेयां त्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उकोसेगां जोयगासयसहरसं । एवं त्रसुरकुमारगमेगां जाव--थिगायकुमाराणं भागित्रव्वं।

प्र० पुढिविकाइश्राणं भंते !

के महालिया सरीरोगाहणा प्रण्याता ?

उ० गोयमा ! जहरणोगं श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं

उक्कोसेण वि श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं ।

एवं सुहुमाणं श्रोहिश्राणं

श्रपज्जतगाणं पज्जतगाणं च भाणिश्रव्वं ।

एवं जाव बादरवाउकाइयाणं पज्जतगाणं भाणिश्रव्वं ।

प्र॰ वणस्सइकाइयाणां भंते !
के महालिया सरीरोगाहणा परणता ?
उ॰ गोयमा ! जहनेणां अंगुलस्स असंखेज्जइमागं
उक्कोसेणां सातिरेगं जोयणसहस्सं ।
सुहुमवणस्सइकाइयाणां अहिआ्राणं—

अप्राप्त स्वार्ग आर्व्याच्या अप्राप्त अप्राप्त स्वार्ग प्राप्त स्वार्ग प्राप्त स्वार्ग प्राप्त स्वार्ग असंखेड जह भागं उक्को सेण वि अंगुलस्स असंखेड जह भागं । वायरवर्गस्स इकाइयागं—ओहिआ्राणं

जहएगोएां श्रंगुलस्स श्रसंखेन्जइभागं उक्कोसेगां सातिरेगं जोयगसहस्सं श्रपजनगागां—

जहएणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेन्जइभागं उक्कोसेख वि श्रंगुलस्स श्रसंखेन्जइभागं

```
पन्जत्तगाणं-
जहराणेणं अंगुलस्स असंखेज्जइमागं
उक्कोसेणं सातिरेगं जोअणसहस्सं ।
```

प्र॰ बेईदिश्राएां पुच्छा-उ० गोयमा ! जहनेणं त्रंगुलस्स त्रप्तंखेज्जइभागं उक्कोसेगां बारसजोत्रगाईं अपन्नत्तगागां-जहएग्रेगं श्रंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेगा वि अंगुलस्स ध्यसंखेडजङ्भागं। पडजत्तगार्गं-जहएगोगा श्रंगुलस्स संखेज्जइमागं उक्कोसेणं बारसजोत्र्यणाइं। प्र० तेइंदियागां पुच्छा-उ० गोयमा ! जहनेणं त्रंगुलस्स त्रसंखेज्जइमागं उक्कोसेणं तिरिण गाउत्राइं। श्रपज्जनगार्ग-जहएषेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं। पज्जत्तगाणं-जहएयोगं श्रंगुलस्स संखेज्जइमागं उक्कोसेगां तिगिगा गाउत्राई।

प्र॰ चडरिंदिश्रागां पुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहन्नेगां श्रंगुलस्स श्रसंखेटजइभागं उक्कोसेगां चत्तारि गाउश्राइं। अपन्न त्तगार्ग्-स्ट्राणेणं

जहएग्रेगं उक्कोसेग् वि श्रंगुलस्स श्रसंखे आइभागं। पन्ज चगागां—

जहएयेगां श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेगां चत्तारि गाउयाइं।

प्र॰ पंचिदियतिरिक्खजोशियागां भंते !
के महालिया सरीरोगाहणा पएगता ?
उ॰ गोयमा ! जहएखेगां अंगुलस्स असंखेज्जइमागं
उक्कोसेगां जोयगासहस्सं ।

प्र० जल्तयरपंचिदियतिरिक्खजोिणयागां पुच्छा-उ० गोयमा ! एवं चेव ।

प्र॰ सम्मुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्खजोशियागं पुच्छा-उ॰ गोयमा! जहरुशेशं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेशं जोयगसहरूसं।

प्रविज्ञन्तगसम्मुच्छिमजलयरपंचिदियतिरिक्ख-जोगियागां पुच्छा-जहरागेगां अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेगा वि अंगुलस्स असंखेज्जइभागं।

तिरिक्खजोशियाणं पुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहएणेएां घ्रंगुलस्स संखेजजहमागं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं ।

प्र॰ पजत्तगसंग्रुच्छिमजलयरपंचिदिय-

प्र॰ गब्भवक्कंतिय-जलयर-पंचिदियपुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहएणेएां श्रंगुलस्स श्रमंखिज्जइमागं उक्कोसेएां जोयणसहस्सं ।

प्र० अपन्जत्तग-गन्भवक्कंतिय-जलचर-पंचिदियपुच्छा— उ० गोयमा ! जहएणेणं अंगुलस्स असंखेज्जइमागं उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेज्जइमागं।

प्र० पज्जत्तग्-गब्भवक्कंतिश्र-जलयरपुच्छा— उ० गोयमा ! जहएणेणं श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेणं जोश्रणसहस्सं ।

प्र॰ चरुष्पय-थलयर-पंचिदियपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहएणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेन्जइभागं उक्कोसेएां छ गाउत्राई । प्र॰ सम्मुच्छिम-चरुप्पय-थलयरपुच्छा—

उ॰ गोयमा ! जहएणेणं श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेणं गाउत्रपुहुत्तं ।

प्र॰ अपन्जत्तग-सम्मुन्छिम-चउप्पय-थलयरपुन्छा-उ॰ गोयमा ! जहएणेएां अंगुलस्स असंखेन्जइभागं । उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेन्जइभागं ।

प्र० पन्जत्तग्-सम्मुच्छिम्-चउप्पय-थलयरपुच्छा-उ० गोयमा ! जहनेशं श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेशं गाउश्रपुहुत्तं।

प्र॰ गब्भवक्कंतिय-चल्पय-थल्यरपुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहनेणं अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं छ गाउआई । प्र॰ श्रपज्जत्तग-गटभवनकंतिश्र-चउप्पय-थलयरपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहरुऐएां श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेख वि श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं

प्र॰ पन्जत्तग-गव्भवक्कंतिश्र-चडप्पय-थलयरपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहरुणेगं श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेगं छ गाउश्राई ।

प्र॰ उरपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहरुणेगां श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेगां जोश्रगसहस्सं ।

प्र॰ सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहन्नेणं श्रंगुलस्स श्रसंखेन्नहभागं उक्कोसेणं जोश्रणपुहुत्तं

प्र॰ श्रपन्जत्तग-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहएऐएं श्रंगुलस्स श्रसंखेन्जइभागं उक्कोसेण वि श्रंगुलस्स श्रसंखेन्जइभागं

प्र॰ पन्जत्तग-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहएखेएां श्रंगुलस्स संखेन्जइभागं उक्कोसेएां जोश्रखपुहुसं ।

प्र॰ गरू वक्कंतिश्र-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहएणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेडजइभागं उक्कोसेएां जोश्रणसहस्सं ।

प्र॰ अपन्जत्तग-गव्भवक्कंतिय-उरपरिसप्य-धलयरपुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहरुणेणं झंगुलस्स असंखेन्जइभागं उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेन्जइभागं।

त्र**गुत्रोगदार**मुत्तं उपक्रमाधिकारः] 8 प्रदे प्रमाणद्वार**म्** प्र० पज्जत्तग-गब्भवक्कंतिश्र-उरपरिसप्प-थलयरपुच्छा-उ० गोयमा ! जहन्नेएां श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेएां जीअणसहस्सं १ प्र० भुत्रपरिसप्प-थलयरपंचिदियाणं पुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहएणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उनकोसेगां गाउत्रपुहुत्तं। प्र० सम्मुच्छिम्-भुत्रपरिसप्प-थलयर-पंचिदियागां पुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहएयोगं श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेणं घणुपुहुत्तं । प्र० त्रपञ्जत्तग-सम्मुच्छिम-भुत्रपरिसप्प-थलयरागां पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएणेणं श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेण वि श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइमागं। प्र० पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-भुत्रपरिसप्पार्गं पुच्छा-उ० गोयमा ! जहराणेयां श्रंगुलस्स संखेज्जइमागं उक्कोसेएां घणुपुहुत्तं। प्र० गब्भवक्कंतिय-भुत्रपरिसप्प-थलयराग्यं पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएणेणं श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेगां गाउत्रपुहुत्तं । प्र॰ अपन्नसग-भुत्रपरिसप्पार्गं पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएगोएां अंगुलस्स असंखेन्जइभागं उक्कोसेण वि श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइमागं। प्र० पन्जत्तग-भुत्रपरिसप्पागां पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएणेएां श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं उक्कोसेएां गाउत्रपुहुत्तं।

```
प्र० खहयर-पंचिदियपुच्छा-
उ० गोयमा । जहरुणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेष्जइभागं
```

४८४]

उक्कोसेणं धणुपृहुतं । सम्मुच्छिम-लह्यराणं जहा भुत्रग-परिसप्प-सम्मुच्छियाणं तिसु वि गमेसु, तहा भाणिअन्वं । प्र० गन्भवक्कंतिग्र-खहयरपुच्छा-उ० गोयमा । जहएणेएां अंगुलस्स असंखेज्जइभागं उक्कोसेणं ध्यापृहुत्तं।

उक्कोसेण वि अंगुलस्स असंखेन्जइमागं। प्र० पन्जत्तग्-गव्यवक्कंतित्र-खहयरपुन्छा-उ० गोयमा ! जहरुषेएां श्रंगुलस्स संखेज्जइमागं उक्तेसेयां धणुपुहुत्तं । पत्थ संगहणिगाहास्रो हवंति, तं जहा-

प्र० अपडजत्तग्-गव्भवक्कंतिअ-खहयरपुच्छा-

उ॰ गोयमा । जहएणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जहमागं

दोगहं तु धणुपुहुत्तं, सम्मुच्छिमे होइ उचतं ॥१॥ जोअग्रसहस्स छग्गाउग्राइं, तत्तो त्र जोयग्रसहस्सं। गाउत्रपुहुत्तभुत्रगे, पक्लीसु भवे धणुपुहुत्तं ॥२॥ प्र॰ मणुस्सार्णं भंते ! के महालित्रा सरीरोगाहणा पराण्ता ? उ० गोयमा ! जहएणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेन्जइभागं

उक्कोसेणं तििएण गाउत्राई।

जोत्रग्सहस्स-गाउयपुहुत्त, तत्तो त्र जोत्रग्पपुहुत्तं।

प्र० सम्मुच्छिम-मग्रुस्सार्गं पुच्छा-

उ० गोयमा ! जहरुगोरां त्रंगुलस्स् त्रसंखेज्जइभागं

प्र० अपज्जत्तग्-राव्भवक्कंतिय-मणुस्सार्गं पुच्छा-

प्र॰ पज्जनग-गब्भवक्कंतिय-मणुस्साणं पुच्छा-

जहा श्रसुरकुमारागं तहा भागिश्रव्वा ।

प्र॰ सीहम्मे कप्पे देवाणं भंते !

उ॰ गोयमा ! दुविहा पएण्ता,

तत्थ एां जा सा मनधारियाज्जा सा-

उनकोसेणां सत्तरयणीत्रो।

तत्थ रां जा सा उत्तरवेउविवया सा-

उक्कोसेएां जोयग्रसयसहस्सं।

जहरायेषां अंगुलस्स असंखेज्जइभागं

जहएयोगं श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं।

तं जहा---

जहा वाण्मंतराणं तहा जोइसियाण वि ।

के महालिया सरीरोगाहणा परणता ?

१ भवधारगिज्जा श्र २ उत्तरवेउन्विश्रा य ।

उ० गोयमा ! जहएणेएां श्रंगुलस्स संखेज्जइभागं

वाण्मंतराणं भवधारणिज्जा य उत्तरवेउन्विश्रा य

उक्कोसेयां तियिग गाउत्राई।

उ० गोयमा ! जहराणेएां श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं

उक्कोसेगा वि श्रंगुलस्स श्रसंखेन्जइभागं।

उक्कोसेण वि श्रंगुलस्स श्रसंखेन्जइभागं।

श्रगुश्रोगदारसुत्तं

एवं ईसाग्यकपे वि भागित्रववं जहां सोहम्मकपागं देवागं पुच्छा तहां सेसकपदेवागं पुच्छा भागित्रव्या, जाव-श्रच्चश्रकपो ।

सणंकुमारे भवधारणिज्जा— जहरणोणं श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं जक्कोसेणं छ रयणीश्रो ।

उत्तरवेडिव्वया जहां सोहम्मे तहा भाणिश्रव्या । जहां सणंकुमारे तहा माहिंदे वि भाणिश्रव्वा ।

चंभलंतगेसु भवधारिण्डजा— जहएणेणं श्रंगुलस्स श्रसंखेडजङ्भागं उक्कोसेणं पंचरयणीश्रो

उत्तरवेउन्विया जहा सोहम्मे ।

महासुक्क-सहस्सारेसु भवधारणिज्जा— जहरणेणं श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेणं चत्तारि रयणीश्रो ।

उत्तरवेउन्विया जहा सोहम्मे— श्रागत-पागत-श्रारगा-श्रच्चुएसु चउसु वि भवधारगिज्जा—

जहरागोगं अंगुलस्स असंखेज्जइमागं उक्कोसेगं तिरिण रयगीओ । उत्तरवेडिवया जहां सोहम्मे ।

प्र॰ गेवेन्जगदेवाणं भंते ! के महालिया सरीरोगाहणा परणत्ता ? उ॰ गोयमा ! एगे भवधारियाज्जे सरीरगे प्रण्यत्ते, से जहरुणेगां श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं उक्कोसेगां दुरिया रयणीश्रो ।

प्रव त्रणुत्तरोववाइश्रदेवाणं भंते !

के महालिया सरीरोगाहणा परणाता ?

उ॰ गोयमा ! एगे भवधारणिज्जे सरीरगे परणाते,

से जहएणेणं श्रंगुलस्स श्रसंखेज्जइभागं

उक्कोरेणं एगा रयणीउ ।

से समासश्रो तिविहे परणाते,

तं जहा—

१ स्रइअंगुले २ पयरंगुले ३ घणंगुले । एगंगुलायया एगपएसिआ सेढी स्रइअंगुले । स्रई स्रईए गुणिआ पयरंगुले । पयरं स्रईए गुणियं घणंगुले ।

प्र॰ एएसि खं सङ्ग्रंगुल-पयरंगुल-घर्णंगुलाणं कयरे कयरेहिंती ऋप्पे वा बहुए वा, तुल्ले वा विसेसाहिए वा १

उ० सन्वत्थोवे सूइ-श्रंगुले पयरंगुले श्रसंखेन्जगुणे घणंगुले श्रसंखेन्जगुणे। से त्तं उस्सेहंगुले। प्र० से किं तं पमाणंगुले ?

उ० पमाणंगुले—

एगमेगस्स रएगो चाउरंतचक्कवड्डिस्स श्रहसोविएगए

कागणीरयणे छत्तले दुवालसंतिए श्रह्किरिणए श्रहिगरण-संठाणसंठिए परण्ते, तस्त णं एगमेगा कोडी उस्मेहंगुलविक्खंमा तं समणस्त भगनश्रो महावीररस श्रद्धंगुलं, तं सहस्तगुणं पमाणंगुलं भवइ। एएणं श्रंगुलपमाणेणं छ श्रंगुलाइं = पादो दो विहत्श्रीश्रो = रयणी दो रयणीश्रो = कुच्छी दो कुच्छीश्रो = धणू दो धणुसहस्साइं = गाउशं चत्तारिगाउश्राइं = लोश्रणं।

प्र॰ एएगं पमागंगुलेएं कि पश्चोत्रगं १
उ० एएगं पमागंगुलेएं
पुढ्वीणं कंडागं पातालागं
मवणागं भवणपत्थडागं
निरयागं निरयावलीणं निरयपत्थडागं
कप्पागं विमाणागं विमाणावलीगं विमाणपत्थडागं
टंकागं क्रुडागं सेलागं सिहरीगं
पन्भारागं विजयागं वक्खारागं
वासागं वासहरागं वासहरपन्वयागं
क्रेवेलागं वेइयागं दारागं तोरणागं
दीवागं समुद्दागं,

उपक्रमाधिकारः] प्रमाखहारम्

श्रायाम-विक्खंभोचत्तोव्वेह परिक्खेवा मविज्जंति। 🏸 से समासत्रो तिविहे परणत्रे, तंजहा-

१ सेढी श्रंगुले । २ पयरंगुले । ३ घर्णंगुले ।

श्रसंखेजात्रो जोयण-कोडाकोडीश्रो सेटी, सेढी सेढीए गुणियाः पयरं, पयरं सेढीए गुणियं लोगो संखेजएणं लोगो गुणिश्रो संखेजजा लोगा, श्रसंखेज्जएगं लोगो गुणिश्री श्रसंखेज्जा लोगा,

श्रगंतेणं लोगो गुणिश्रो श्रगंता लोगा । प्र॰ एएसि णं सेढी अंगुल-पयरंगुल-घणंगुलाणं कयरे कयरेहिंतो

अप्पे वा बहुए वा तुल्ले वा विसेसाहिए वा ? उ० सन्वत्थोवे सेढी अंगुले

> पयरंगुले ऋसंखेन्जगुणे घणंगले असंखिन्जगुरो से चं पमाणांगुले। से तं विभागनिष्करागे।

से तं खेतप्यमागे।

सु०-१३४ प्र० से कि तं कालपमागे १ उ० कालप्यमार्गे_दुविहे पराग्ते, ं तं जहा—

१ पएसनिष्फर्णो अ २ विभागनिष्फर्णो अ।

सु०-१३५ प्र० से किं तं पएसनिष्फरणे ?
उ० पएसनिष्फरणे—
एगसमयद्विईए दुसमयद्विईए तिसमयद्विईए
'' जाव'' दससमय-द्विईए,
संखिडजसमयद्विईए असंखिडजसमयद्विईए,
से तं पएस-निष्फरणे।

सु०-१३६ प्र० से किं तं विभाग-शिष्फरणो ?
उ० विभाग-णिष्फरणो—
गाहा— "समयाविल्य-मुहुत्ता, दिवस-ग्रहोरत्त पक्ख-मासा य ।
संवच्छर-जुग-पलित्रा, सागर श्रोसष्पि-परित्रद्वा ॥१॥"

सु०-१३७ प्र० से कि तं समए ?

समयस्स णं परूवणं करिस्सामि—

से जहानामए तुएणागदारए सिश्रा,
तरुणे वलवं जुगवं जुवाणे,
श्रणातंके थिरगहत्थे,
दह-पाणि-पाय-पास-पिहंतरोह्न परिण्ते,
तल-जमल-जुयल-परिघ-णिभ-बाहू,
चम्मेट्टग-दुहणं-सुद्दिश्र-समाहत-नियत-गत्तकाए
उरस्सवलसमएणागए,
लंघण-पवण-जहण-वाथाम-समत्थे,
छेए दक्षे पत्तद्दे कुसले
मेहावी निउणे निउणसिष्णोवगए
एगां महतीं पडसाडियं वा पट्टसाडियं वा गहाय
सयराहं हत्थमेत्तं श्रोसारेज्जा,

प्रमाणद्वारम्

तत्थ चोत्रए पएण्वयं एवं वयासी-जेगां कालेगां तेगां तुएगागदारए गां तीसे पडसाडिग्राए वा पट्टसाडिग्राए वा सयराहं हत्थमेत्ते श्रोसारिए से समए भवइ ? उ० नो इग्रहे समहे । कम्हा ? जम्हा संखेज्जाणं तंतूणं समुदय-समिति-समागमेणं एगा पडसाडिश्रा निप्फज्जइ। उवरिल्लम्मि तंतुम्मि श्रच्छिएणे हिद्दिल्ले तंतू न छिज्जइ। श्रयग्राम्म काले उवरिन्ले तंत् छिज्जइ श्रएणम्मि काले हिट्ठिल्ले तंतू छिज्जइ तम्हा से समए न भवइ , एवं वयंतं परमावयं चोयए एवं वयासी-प्र जेणं कालेगं तेगं तुरगागदारए गं तीसे पडसाडिग्राए वा पद्यसाडियाए वा उवरिन्ले तंतू छिएगो से समए भवइ ? उ० न भवह १ कम्हा ? जम्हा संखेन्नायां पम्हायां सम्रदय-समिति-समागमेयां एगे तंतू निष्फज्जइ, उवरिल्ले पम्हे अञ्छिएगे हिट्ठिल्ले पम्हे न छिन्जइ अयग्राम्मि काले उवरिल्ले पम्हे छिज्जइ श्रएण्मि काले हेडिल्ले पम्हे छिज्जइ, तम्हा से समए न भवइ।

एवं वयंतं परणवयं चोत्रए एवं वयासी-

प्र० जेगां कालेगां तेगां तुरगागदारए गां तस्स तंतुस्स उवरिन्ले पम्हे छिएगो से समए भवइ ?

उ० न भवइ।

कम्हा श्र्यांताणं संघायाणं सम्रदय-समिति समागमेणं एगे पम्हे निष्फज्जइ,

उविरल्ले संघाए श्रविसंघाइए हेड्डिले संघाए न विसंघाइज्जइ,

श्रारणिम काले उवरिल्ले संघाए विसंघाइन्जइ, श्रारणिम काले हिट्ठिल्ले संघाए विसंघाइन्जइ,

तम्हा से समए न भवइ।

एतो वि अ णं सहुमतराए समए परणते समणाउसो ! असंखिज्जाणं समयाणं समुदय-समिति-समागमेणं सा एगा 'आवलिअ' ति वुचइ,

> संखिज्जाश्रो श्रावितश्राश्रो = ऊसासी संखिज्जाश्रो श्रावितश्राश्रो = नीसासो।

गाहात्रो— हद्वस्स अणवगल्लस्स, निरुविकट्वस्स जंतुणो। एगे उसासनीसासे, एस पाणुत्ति वुच्चइ ॥१॥

> सत्तपाण्यि से थोवे, सत्त थोवाणि से लवे। लवाणं सत्तहत्तरीए, एस मुहुत्ते वि श्राहिए॥२॥

तिरिण सहस्सा सत्त य, सयाई तेहुत्तरिं च ऊसासा।

एस मुहुत्तो भिण्यो, सन्वेहि त्रणंतनागीहि ॥ ३॥

'उपक्रमाधिकारः] प्रमाणद्वारम् श्रगुत्रोगदारसुत्तं

एएगां मुहुत्तपमायोगां तीसं मुहुत्ता =त्रहोरतं, पएण्रस ग्रहोरत्ता = पक्खो, दो पक्खा = मासो, 'दो भासा = उऊ, तििएग उऊ = श्रयगं, दो श्रयणाई = संवच्छरे, पंच संवच्छराई = जुगे, वीसं जुगाई = वाससयं, दस वाससयाई = वास-सहस्सं, सर्यं वास-सहस्सागं = वास-सयसहस्सं, चोरासीइं वाससय-सहस्साइं = से एगे पुट्यंगे, चउरासीइं पुर्व्वंग सयसहस्साइं = से एगे पुर्व्वे चउरासीइं पुन्वसर्यसहस्साइं = से एगे तुडिअंगे, चउरासीई तुिड्यंग सयसहरसाई = से एगे तुिडए, चउरासीइं तुडित्र्य-सयसहस्साईं = से एगे श्रडडंगे, चउरासीइं श्रडडं-सयसहस्साइं = से एगे श्रडडे,

एवं श्रववंगे, श्रववे हुहुश्रंगे, हुहुए उप्पलंगे, उप्पले पुजमंगे, पुजमे

> निल्णंगे, निल्णे अच्छनिउरंगे अच्छनिउरे अउग्रंगे अउए

पउत्रंगे पउए -गउत्रंगे गउए

सा एगा सीसपहेलिया।

चूलिश्रंगे चूलिया सीसपहेलियंगे चउरासीइं सीसपहेलियंग-सयसहस्साइं =

एयावया चेव गणिए एयावया चेव गणित्रस्स विसए एत्तोऽवरं श्रोवमिए पवत्तइ।

सु०-१३८ प्र० से किं तं श्रोविमए १ उ० श्रोविमए दुविहे पएण्ते, तं जहा— १ पिलश्रोविमे य २ सागरोविमे य।

प्र० से किं तं पलिश्रोवमे ?

उ॰ पलिस्रोवमे तिविहे पएणत्ते, तं जहा— १ उद्धारपलिस्रोवमे २ स्रद्धापलिस्रोवमे ३ खेत्तपलिस्रोवमे स्र।

प्र० से कि तं उद्घारपिलश्रोवमे ?
उ० उद्घारपिलश्रोवमे दुविहे पएण्चे,
तं जहा—
१ सहुमे श्र २ ववहारिए य ।
तत्थ गां जे से सहुमे से ठण्ये।
तत्थ गां जे से ववहारिए—

से जहानामए पल्ले सिया,

प्रमाणद्वारम्

जोयगं श्रायामविक्खंभेणं जोत्रगं उड्ढं उचत्तेगं तं तिर्गुगं सविसेसं परिक्छे

जोत्रणं उड्ढं उच्चेर्णं तं तिगुणं सविसेसं परिक्लेवेणं से णं पल्ले एगाहिश्र-वेश्राहिश्र-तेश्राहिश्रः 'जाव'

उक्कोसेणं सत्तरत्तरूढाणं संसद्घे संनिचिते भरिए वालग्गकोडीणं,

ते गां वालग्गा नो श्रग्गी डहेन्जा

नो वाऊ हरेज्जा नो कुहेज्जा नो पलिविद्धंसिज्जा

नो पूइत्ताए हव्यमागच्छेज्जा तस्रो एां समए समए एगमेगं वालग्गं श्रवहाय जावइएगां कालेगां से पल्ले खीगो नीरए निल्लेवे गिष्टिए भवइ

से तं ववहारिए उद्धार-पंलिओवमे

गाहा-एएसि पल्लाणं कोडाकोडी हवेडजे दसगुणिया । (२) तं ववहारियस्स उद्घार सागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं॥

प्र॰ एएहिं वावहारिश्र-उद्धारपितश्रोवम सागरोवमेहिं किं पश्रोश्रणं ?

उ० एएहिं वावहारिश्र-उद्धार पिलश्रोवम सागरोवमेहिं— णित्थ किंचिष्पश्रोश्रणं, केवलं परणवणा परणविज्जइ। से चं वावहारिए उद्धार-पिलश्रोवमे।

प्र० से किं तं सुहुमे उद्घार पिल्योवमे ? उ० सहुमे उद्घार पिल्योवमे— से जहानामए पल्ले सिस्रा,
जोश्रणं श्रायाम-विक्खंभेणं
जोश्रणं उच्वेहेणं
तं तिगुणं सिवसेसं परिक्खेवेणं,
से णं पल्ले एगाहिश्र-वेश्राहिश्र-तेश्राहिश्र उक्कोसेणं
सत्त रत्त परूढाणं संसट्टे संनिचिते भरिए वालग्ग कोडीणं
तत्थ णं एगमेगे वालग्गे श्रसंखिज्जाई खंडाईकज्जइ,
ते णं वालग्गा दिद्धि-श्रोगाहणाश्रो श्रसंखेज्जइभागमेत्ता

सुहुमस्स पण्गजीवस्स सरीरोगाहणाउ असंखेन्जगुणा, ते एां वालग्गा गो श्रग्गी डहेन्जा

गो वाऊ हरेन्जा, गो कुहेन्जा, गो पलिविद्धंसिन्ज

गो पलिविद्धंसिज्जा, गो पूइत्ताए हव्वमागच्छेज्जा,

तत्रो यां समय समय एगमेगं वालग्गं अवहाय जावइएएां कालेगां से पल्ले खीयो नीरए निल्लेवे निष्ठिए भवइ,

ैं से तं सुहुमें उद्घार-पलिश्रीवमे ।

गाहा- एएसि पल्लाणं, कोडाकोडी हवेज्ज दसगुणित्रा। तं सहमस्स उद्धारसागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं॥३॥

प्र॰ एएहिं सुहुमउद्धार-पलिश्रोवम-सागरोवमेहिं किं पश्रोश्रएां ? उ॰ एएसिं सुहुम-उद्धार-पलिश्रोवम-सागरोवमेहिं दीवससुहाणां उद्धारो घेष्पइ । ्र प्रमाखद्वारम्

प्र॰ केवइत्रा एां भंते ! दीवसमुद्दा उद्धारेगां परणता ? उ० गोयमा ! जावइत्राणं श्रड्ढाइज्जाणं ्र उद्धारसागरोवमाणं उद्धारसमया, 🔑 😕 🥱 एवइयागं दीवसमुद्दा उद्घारेगं प्रण्या। सं तं सुहुमे उद्घारपलिश्रोवमे । ं से त्तं उद्धारपलिश्रोवमे । प्र० से किं तं अद्धापत्तिश्रोवमे ? उ० श्रद्धापलिश्रोवमे दुविहे परणचे, तं जहा-१ंसुहुमे श्र २ वावहारिए श्र । तत्थ र्णं जे से सुहुमे से ठप्पे। तत्थ एां जे से वावहारिए-से जहानामए पन्ले सिया जोञ्जणं श्रायामविक्खंभेणं 🦲 जोत्रणं उच्वेहेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से एां पल्ले एगाहित्र-वेत्राहित्र-तेत्राहित्र'''जाव''' भरिए वालग्गकोडीणं,

ते गं वालग्गा गो ग्रग्गी डहेज्जा ''जाव'''नो पलिविद्धंसिज्जा नो पूइत्ताए हव्यमागच्छेज्जा

तत्रो एां वाससए वाससए एगमेगं वालग्गं श्रवहाय जावइएएं कालेएं से पन्ले ं खीगों नीरए निल्लेवे गिडिए भवइ से तं वावहारिए अद्धापलिस्रोवमे

(४) गाहा-एएसि पल्लागं, कोडाकोडी भविज्जदसगुणिया । तं ववहारिश्रस्स श्रद्धासागरोवमस्स एगस्स भवे परिमागं।

प्र॰ एएहिं वावहारिश्र-श्रद्धापितश्रोवम-सागरोवमेहिं किं पत्रोश्रगं ?

उ० एएहिं वावहारिएहिं-श्रद्धापितश्रोवम-सागरोवमेहिं— गत्थि किंचिपश्रोश्रगं, केवलं परग्वगा परग्विज्जइः। से चं वावहारिए श्रद्धापितश्रोवमे।

प्र॰ से किं तं सुहुमे अद्धापित ओवमें ? उ॰ सुहुमे अद्धापित ओवमे—

से जहाणामंप पल्ले सिया,

जोत्रणं त्रायामेणं जोत्रणं उन्वेहेणं तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणं, से णं पन्ले एगाहित्र-बैत्राहित्र-तेत्राहिए'''जाव'''

मरिए वालग्गकोडीएां, तत्थं यां एगमेगे वालग्गे असंखिन्नाई खंडाई कन्जइ, ते यां वालग्गा दिद्धि-ग्रोगाहणात्रो असंखेन्नइभागमेत्ता सुहुमस्स पण्गनीवस्स सरीरोगाहणात्रो असंखेन्नगुणा,

ते एां वालग्गा गो श्रग्गी डहेन्जा '''नाव'''नो पलिविद्धंसिन्जा,

नो पूर्ताए हन्वमागन्छेन्जा,

तन्त्रो एां वाससए वाससए एगमेगं वालग्गं श्रवहाय जावइएएां कालेएां से पल्ले खीणे नीरए निल्लेवे निष्ठिए भवइ से तं सुहुमे श्रद्धापलिश्रोवमे ।

गाहा— एएसि पल्लागं, कोडाकोडी भवेज्ज दसगुणिश्रा।
तं सहमस्स अद्धासागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणं ॥४॥
प्र० एएहिं सहमहिं अद्धापिलिओवम-सागरोवमहिं किं पश्रोत्रणं १
उ० एएसिं सहमहिं अद्धापिलिओवम-सागरोवमहिं

गोरइश्र-तिरिक्खजोिणश्र-मणुस्त-देवाणं श्राउयं मविज्ञह । सु०-१३६ प्र० गोरइयाणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पएण्चा ?

प्र० रयगापदा-पुढवि-गोरइयाएां भंते !

उ० गीयमा ! जहरुषेशं दसवास-सहस्साइं - उनकोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाई।

> केवइयं कालं ठिई परण्या ? उ० गोयमा । जहएणेएां, दसवास-सहस्साइं उनकोसेणं एगं सागरोवमं ।

प्र॰ श्रपन्जत्तग-रयणपहापुढवि-गोरइयाएां भंते ! केवइयं कालं ठिई परागत्ता ? उ॰ गोयमा ! जहरागेरां वि श्रंतोग्रहुतं । उक्कोसेगा वि श्रंतोग्रहुतं ।

प्र० पडजत्तग-रयगण्यहापुढवि-गोरइयाणां भंते ! केवइयं कालं ठिई परगणता ? X00]

ु उ० गोयमा ! जहएणेएां दसवास-सहस्त्राई अंतोमुहुन्याई उक्कोसेणां एगं सागरोवमं अंतोम्रहुत्तूणां ।

प्र० सकरप्यहापुढवि-गोरइयागां भंते ! केवइयं कालं ठिई परण्या ?

क्डिंगोयमां ! जहरूखेएां एगं सागरोवमं " 🊁 🎘 🗦 🧓 उक्कोसेणं तििएण सागरोवमाई। ्ष्वं सेसपुढनीसु पुच्छा भागित्रव्वा ।

प्र०-उ० वालुऋषहापुढवि-गोरइयारां— उनकोसेणं सत्तसागरोवमाई ।

प्र०-उ० पंकप्पहापुढवि-गोरइयागां-जहएणेगां सत्तसागरीवमाई ं 🚟 ः उक्कोसेणां दससामरोवमाई ।

प्र०-उ० धूमप्पभापुढवि-गोरइयागां--जहएणेएां दससागरीवमाई उक्कोसेणां सत्तरससागरोवमाई। प्र०-उ० तमप्पहापुढवि-गोरइयागां—

🖖 ः जहएग्रेणं सत्तरससागरोवमाई उक्कोसेणां बावीससागरोवमाइं। प्र० तमतमापुढवि-णेरइयाणां भंते !

केवइयं कालं ठिई पएगता ? उ० गोयमा ! जहएणेएां बावीसं सागरोवमाई ; उक्कोसेण् तेत्तीसं सागरोवमाई।

उपंक्रमाधिकारः] प्रमाणद्वारम् '

प्र० सुहुम-पुढवीकाइयाएां 🕙 श्रोहिया्एां त्रपञ्जत्तयागां 🐫 🔠 पज्जतयागां यु।

तिसु वि पुच्छा-उ० गोयमा ! जहराणेणं श्रंतोमुहुत्तं, ं हें हुन उक्तोसेण वि श्रंतोमुहुतं।

प्र॰ अमुरकुमाराणां भंते ! केवइयं कालं ठिई परणत्ता ? उ० गोयमा ! जहरंगोर्ण दसवासंसहस्साई, 🐬 🤫 ं उनकोसेणां सातिरेणं सागरोवमं । प्र० असुरकुमार-देवीएां भंते ! केवइयं कालं ठिई पर्णेणता ? उ० गोयमा । जहरुणेगां दसवाससहस्साई,

उक्कोसेगां अद्भपंचमाइं पलिओवमाइं। प्र० नागकुमाराएां भंते ! केवइत्रं कालं ठिई परणता १ उ० गोयमा ! जहंग्णेयां दसवाससहस्साई, उक्कोसेणं देस्रणाइं दुिएण पलिश्रोवमाई।

प्र० नागकुमारीएां भंते ! केवइयं कालं ठिई पएणुत्ता ? उ० गोयमा ! जहएखेएां दसवाससहस्साइं, ्रज्कोसेणां देख्णां पलित्रोवमं। एवं जहा गागकुमारदेवागां देवीगां य, तहा " जाव " थिए। यकुमाराणं देवाणं देवीणं य माणियव्वं। प्रव पुढवीकाइयाएां भंते ! केवइयं कालं ठिई परणत्ता ?

उ॰ गोयमा ! जहएखेएां श्रंतोमुहुत्तं, उनकोसेणं बावीसं वाससहस्साई।

प्र० बादर पुढवि-काइयागां पुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहएऐएां अंतोग्रहुत्तं, उकोसेणं वावीसं वाससहस्साई। प्र॰ अपन्जत्तग-गायर-पुढवि-काइयागां पुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहएगोग वि श्रंतोग्रहुत्तं उक्कोसेगा वि श्रंतोम्रहुतं। प्र० पुन्जत्तग-बायर-पुढवि-काइयाएां पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएखेखं इंतोमुहुत्तं उकसेणं वावीसं वास सहस्साई श्रंतोम्रहुत्तूणाई। एवं सेसकाइयाणं वि पुच्छावयणं भाणियव्वं । प्र•-उ० श्राउकाइयाएां-जहएखेएां अंतोमुहुत्तं उक्कोसेगं सत्तवाससहस्साई। प्र०-उ० सुहुमञ्राउकाइयाणं श्रोहित्राणं 🤫 श्रपन्जत्तगार्गं पन्जन्गागं तिएहवि-जहएणेण वि श्रंतोमुहुत्तं

प्र०-उ० बादर-श्राउकाइयागं जहा श्रोहिश्रागं, प्र०-उ० श्रपन्जत्तग-बादर-श्राउकाइयागं— जहएग्रेग् वि श्रंतोग्रहुतं। उक्कोसेग् वि श्रंतोग्रहुतं। पन्जत्तग-बादर श्राउकाइयागं— जहएग्रेगं श्रंतोग्रहुतं उक्कोसेगं सत्त-बास-सहस्साई श्रंतोग्रहुत्तूगाई।

उक्कोसेण वि श्रंतोग्रहुत्तं।

ंडवकमाधिकारः] जिमाणद्वारम्

> प्र०-उ० तेउकाइश्राणं जहण्णेणं श्रंतोम्रहुत्तं उक्तोसेणं तिण्णि राइंदिश्राई।

प्र०-उ० सुहुम-तेउकाइयाणं श्रोहिश्राणं श्रपञ्जत्तगाणं पञ्जत्तगाणं तिएह वि—

जहएगोगं वि श्रंतोमुहुत्तं उक्तीसगं वि श्रंतोमुहुत्तं ।

प्र०-७० बादरतेउकाइयार्गं— जहएणेगं श्रंतोग्रहुत्तं उक्कोतेणं तिणिण राइंदिश्राइं प्र०-७० श्रपञ्जत्त बायर-तेउकाइयार्गं—

जहएणेणं वि श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेणं वि श्रंतोम्रहुत्तं [

प्र०-उ० पन्जत्तग-त्रायर-तेउकाइयाणं— जहएणेणं त्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेणं तिरिण राईदित्राई श्रंतोम्रहुत्तूणाई।

प्र०-उ० वाउकाइयार्ग-

अपज्जत्तगार्ण

जहरायेयां श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेयां तिरिया वाससहस्साइं। सुहुम-वाउकाइयायां-श्रोहिश्रायां

> पज्जत्तगाणं य तिग्रह वि— जहएणेणं वि श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेण वि श्रंतोम्रहुत्तं ।

प्र०-उ० वायर-वाउकाइयाणं— जहएणेणं त्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेणं तिषिण वाससहस्साई।

प्र०-उ० अपन्जत्तग वायर-वाउकाइयाणं— जहण्णेणं वि श्रंतोग्रहुत्तं उक्कोसेणं वि श्रंतोग्रहुतं।

प्र०-उ० पन्जत्तग-बाद्रवाउकाइत्राणं— जहएणेणं अंतोग्रहुत्तं उक्कोरेणं तिणिण वास-सहस्साइं श्रंतोग्रहुत्तूणाः

प्र०-उ० वणस्सइकाइयाणं— जहएणेणां अंतोम्रहुत्तं उक्कोसेणं दसवास-सहस्साई।

प्र०-उ० सुहुमवग्गस्सइ-काइत्राणं त्रोहित्राणं त्रपञ्जत्तगाणं पज्जत्तगाणं य तिण्ह वि । जहण्णेग् वि त्रंतीसुहुत्तं उक्कोसेग् वि त्रंतीसुहुत्तं।

प्र०-उ० बादरवग्रस्सइकाइत्राग्-जहएग्रेणं त्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेणं दसवाससहस्साई ।

प्र०-७० त्रपन्जत्तग-बायर-वग्रस्सइकाइत्रागां— जहएग्रेगां श्रंतोमुहुत्तं उक्कोसेग्र वि श्रंतोमुहुत्तं ।

श्रगुत्रोगदारसुत्तं डपक्रमाधिकारः] [KOX

प्रमाखद्वारम् प्र०-उ० पन्जत्तग-बायरवणस्सइकाइआएां-जहएणेणं श्रंतोग्रहुतं उक्कोसेणं दसवाससहस्साई अंतोम्रहुत्तूणाई । प्र० बेइंदिश्राणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पण्णचा ? उ॰ गोयमा ! जहएगोएां अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणं बारस संवच्छराणि। प्र० श्रेपज्जत्तग वेइंदिश्राणं पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएखेख वि श्रंतोग्रहुत्तं उक्कोसेगा वि प्र० पज्जसग-वेइंदिश्राणं-उ० गोयमा ? जहएएएएं अंतोमुहुत्तं उक्तोसेणं वारससंवच्छराणि श्रंतोम्रहुत्तूणाई । प्र० तेइंदिश्राणं पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएखेएां अंतोसुहुत्तं उक्कोसेणं एगूणपएणासं राइंदिश्राणं। प्र० त्रपञ्जत्तग-तेइंदिश्रायां पुच्छा— उ० गोयमा ! जहएग्रेग् वि अंतीमुहुत्तं उक्कोसेगा वि प्र० पज्जत्तग-तेइंदिश्रायां पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएखेखं झंतोम्रहुत्तं उक्कोसेगं एगूग्पएगासं राइंदिश्राइं श्रंतोम्रहुत्तृगाई। प्र० चडरिंदिआएां भंते ! केवइऋं कालं ठिई पएण्चा ? उ० गोयमा ! जहरायोगां श्रंतीमुहुत्तं उक्कोसेणं छम्मासा ।

```
प्र॰ अपन्जत्तग-चउरिदिश्राणं पुच्छा—
उ॰ गोयमा! जहएणेण वि श्रंतोग्रहुत्तं
उक्कोसेण वि ,, ।
प्र॰पन्जत्तग-चउरिदिश्राणं पुच्छा—
उ॰ गोयमा! जहएणेणं श्रंतोग्रहुत्तं
उक्कोसेणं छम्मासा श्रंतोग्रहुत्तृणाई।
```

प्र॰ पंचिदियतिरिक्खजोश्यियाणं भंते !
केवइश्रं कालं ठिई पण्णत्ता ?
उ॰ गोयमा ! जहण्णेणं श्रंतोम्रहुत्तं
उक्कोसेणं तिण्णि पलिश्रोवमाई ।
प्र॰ जलयर-पंचिंदियतिरिक्खजोश्यिश्राणं भंते !

केवइयं कालं ठिई पएगात्ता ? उ० गोयमा ! जहएगोएां अंतोम्रहुत्तं उक्कोसेएां पुन्वकोडी ।

प्र॰ सम्मुच्छिम-जलयरपंचिदियपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहएगोएां ऋंतोम्रहुत्तं उक्कोसेएां पुच्चकोडी । प्र॰ अपज्जत्तय-सम्मुच्छिम-जलयरपंचिदियपुच्छा—

उ॰ गोयमा ! जहएगोग वि श्रंतोमुहुत्तं, उक्कोसेण वि ,, । प्र॰ पञ्जत्तय-सम्मुच्छिम-जलयरपंचिदियपुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहनेगां श्रंतोमुहुत्तं, उक्कोसेगां पुच्चकोडी श्रंतोमुहुत्त्गा। वपक्रमाधिकारः] श्राणुश्रोगदारसुत्तं [४०७ प्रमाणद्वारम्

प्र० ग्रव्भवस्कंतिय-जलयर-पंचिदियपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहन्रेणं श्रंतोम्रहुत्तं,
उक्कोसेणं पुव्यकोडी ।

प्र० श्रपञ्जत्तग-गव्भवस्कंतिश्र-जलयर-पंचिदियपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहएगोणं वि श्रंतोम्रहुत्तं,
उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पञ्जत्तग-गव्भवस्कंतिय-जलयर-पंचिदियपुच्छा—
उ० गोयमा ! जहएगोणं श्रंतोम्रहुत्तं,
उक्कोसेणं पुव्यकोडी श्रंतोम्रहुत्त्गा ।

प्र० चउप्पय-थलयर-पंचिदियपुच्छा—

उ॰ गोयमा! जहराणेणं श्रंतोग्रहुत्तं । उक्कोसेणं तिरिण पलिश्रोवमाइं। प्र॰ सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिदियपुच्छा—

उ॰ गोयमा ! जहरागोगां श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेगां चउरासीई वाससहस्साई । प्र० त्रपञ्जत्तय-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिदियपुच्छा—

उ० गोयमा ! जहरुषोगां वि अंतोग्रहुत्तं उक्कोसेगा वि ,, । प्र० पज्जत्तय-सम्मुच्छिम-चउप्पय-थलयर-पंचिदियपुच्छा— उ० गोयमा ! जहरुषोगां अंतोग्रहुत्तं

उक्कोसेगां चउरासीई वाससहस्साई श्रंतोमुहुत्तूगाई प्र॰ गब्भवक्कंतिय-चउष्पय-थलयर-पंचिदियपुच्छा--उ॰ गोयमा ! जहएगोगां श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेगां तििएग पलिश्रोवमाई।

[डपक्रमाधिकारः **ज्रगुज्रोगदार**सुत्तं X05] प्रमाणहारम् प्र० ग्रपन्जत्तग्-गब्भवक्कंतिग्र-चउप्पयथल्यरपंचिदियपुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहएणेणं वि श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेगा वि प्र० पन्जत्तग-गन्भवक्कंतिश्र-चउप्पयथलयरपंचिदियपुच्छा-उ० गोयमा ! जहएयोगं श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेगां तिग्गिपलिद्योवमाई द्यंतोग्रहुत्तूणाई 🕴 प्र० उरपरिसप्प-थलयरपंचिदियपुच्छा-उ० गोयमा ! जहएगेग् अंतोमुहुत्तं उक्रोसेगां पुन्वकोडी। प्र॰ सम्मुच्छिम-उरपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुच्छा-उ० गोयमा ! जहरुखेखं श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेणं तेवनं वाससहस्साइं। प्र० अपन्जत्तय-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्पथल् यरपंचिदियपुच्छा— उ० गोयमा ! जहरुणेण वि श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेण वि प्र० पज्जत्तय-सम्मुच्छिम-उरपरिसप्पथलयरपंचिदियपुच्छा-उ० गोयमा ! जहएग्रेणं श्रंतोम्रहुतं, उक्कोसेर्ण तेवएणं वाससहस्साई श्रंतोम्रहुतूणाई। प्र॰ गन्भवक्कंतिश्र-उरपरिसप्य-थलयर-पंचिदियपुच्छा-उ० ग्रोयमा ! जहएणेगां श्रंतोग्रहूत्तं उक्कोसेगां पुन्वकोडी। प्र० अपन्जत्तग्-गब्भवक्कंतिअ-उरपरिसप्पथल्यरपंचिदियपुच्छा-उ० गोयमा ! जहवयोगा वि अंतोम्रहुत्तं उक्तोसेगा वि

- [X0E

अगुअोगदारसुत्तं उपक्रमाधिकारः]

प्रमाग्रहारम् प्र० पज्जत्तग्-ग्रव्भवक्कंतिश्र-उरपरिसप्पथल्यरपंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहएग्रेग् अंतोमुहुत्तं उक्कोसेगां पुन्वकोडी अंतोम्रहुत्तूणा। प्र० भुत्रपरिसप्प-थत्तयर-पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहएएएएं छंतोग्रहुत्तं उक्कोसेयां पुन्वकोडी। प्र० सम्मुन्छिम-भ्रयपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुन्छा-

उ० गोयमा ! जहएखेषां श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेएां वायालीसं वाससहस्साई। प्र० अपन्जत्तय-सम्मुच्छिम-मुत्रपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहरागेगा वि श्रंतोमुहूत्तं उक्कोसेगा वि प्र० पन्जत्तग-सम्मुच्छिम-भुश्रपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुच्छा-उ० गोयमा ! जहएणेयां श्रंतोम्रहुचं

उक्कोसेगां वायालीसं वाससहस्साई श्रंतोग्रहुत्तृ णाई प्र० गञ्भवक्कंतिअ-भुअपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुच्छा-उ० गोयमा ! जहएएोएां श्रंतोम्रहुतं उक्कोसेगां पुन्वकोडी। प्र० अपज्जत्तय-ग्रव्भवक्कंतिय-भ्रुअपरिसप्पथलयरपंचिदियपुच्छा-

उ० गोयमा ! जहएग्रेग वि श्रंतोमुहुत्तं उक्कोसेगा वि प्र० पज्जत्तय-ग्रव्मवक्कंतिश्र-भुश्रपरिसप्प-थलयर-पंचिदियपुच्छा-उ० गोयमा ! जहएऐएएं अंतोसुहुत्तं उक्कोसेखां पुञ्चकोडी श्रंतोम्रहुत्तृगा ।

प्र॰ खहयरपंचिदियपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहरखेरां श्रंतोमुहुत्तं

गोयमा ! जहएगएं। श्रेतामुहुत्ते उक्कोसेगां पलिश्रोवमस्स श्रसंखेन्जइभागो ।

प्र॰ सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदियपुच्छा— उ॰ गोयमा! जहएणेणां श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेणां बावत्तरिं वाससहस्साई।

प्र॰ अपन्जत्तग-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदियपुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहएखेण वि अंतोम्रहुत्तं उक्कोसेण वि ,, ।

प्र० पज्जत्तग-सम्मुच्छिम-खहयर-पंचिदियपुच्छा— उ० गोयमा! जहएग्रेगां श्रंतोमुहुत्तं उक्कोसेगां वावत्तरिं वाससहस्साइं श्रंतोमुहुत्तूगाईं अ प्र० गब्भवक्कंतिय-खहयर-पंचिदियपुच्छा—

उ॰ गोयमा ! जहएणेगं श्रंतोमुहुत्तं उक्कोसेगं पलिश्रोवमस्स श्रसंखेन्जइभागो ।

प्र० श्रपज्जत्तग-गव्भवक्कंतिश्च-खहयर-पंचिदियपुच्छा— उ० गोयमा ! जहरायोगं वि श्रंतोम्रहुत्तं, उक्कोसेगा वि ,, । प्र० पज्जत्तग-गव्भवक्कंतिश्च-खहयर-पंचिदिय-तिरिक्ख-

जोशिश्राणं भंते ! केवइश्रं कालं ठिई परागता ? उ॰ गोयमा ! जहएशेगं श्रंतोग्रहुत्तं, उक्कोसेणं पलिश्रोवमस्स श्रसंखिज्जइभागो श्रंतोग्रहुत्तूणो।

एत्थ एएसि गां संगहिशागाहास्रो भवंति, तं जहा— ग्राहा- सम्मुच्छिम पुन्वकोडी, चउरासीई भवे सहस्साई। तेवएणा बायाला, वावत्तरिमेव पक्खीणं ॥१॥ गब्भंमि पुन्वकोडी, तििएण य पिल्झोवमाई परमाऊ। उरग-भुद्य-पुन्वकोडी, पिल्झोवमा संखभागो झ ॥२॥ प्र० मणुस्साणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पएण्ता ?

प्र॰ मणुस्साण भव । कनइय काल ।ठइ पएण्या उ॰ गोयमा ! जहएणेएां श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेएां तिएिण पिल्ञोनमाई । प्र॰ सम्म्रुच्छिम मणुस्साएां पुच्छा—

उ० गोयमा ! जहएणेएां वि श्रंतोम्रहुत्तं । उक्कोसेणं वि श्रंतोम्रहुत्तं । प्र० गब्भवक्कंतिय मणुस्साएां पुच्छा-

उ॰ गोयमा ! जहएणेएां श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेएां तिरिण पलिश्रोवमाई । प्र॰ श्रपञ्जत्तग-गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं भंते !

केवइयं कालं ठिई पएगात्ता ? उ॰ गोयमा ! जहएग्रेगं श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेगा वि ,, । प्र० पज्जत्तग-गन्भवक्कंतिश्र मग्रुस्साग्रं भंते !

केवइयं कालं ठिई पएणता ? उ॰ गोयमा ! जहएणेएां श्रंतोम्रहुत्तं उक्कोसेणं तिएिण पलिश्रोवमाई श्रंतोम्रहुत्तूणाई। प्र॰ वाणमंतराणं देवाएां भंते ! केवइयं कालं ठिई पएणत्ता ?

उ॰ गोयमा ! जहएणेएां दसवाससहस्साईं उक्कोसेएां पत्तिश्रोवमं । प्र० वाणमंत्रशिणं देवीणं अंते ! केवइयं कालं ठिई परणता ! उ० गोयमा ! जहरुणेणं दसवास-सहस्साइं उक्कोसेणं अद्भपतिस्रोवमं ।

प्रव जोइसियाणं अंते ! देवाणं केवइयं कालं ठिई परणता ? । उ० गोयमा ! जहराणेणं साइरेगं अद्वभाग पिल्योवमं उक्षोसेणं पिल्योवमं वाससयसहस्समन्मिह्यं।

प्र॰ जोइसिय देवीणं भंते ! केवइयं कालं ठिई पएणता ? उ॰ गोयमा ! जहएणेणं श्रहभाग पिलश्रोवमं उक्षोसेणं श्रद्धपिलश्रोवमं पएणासाए— वाससहस्सेहिं श्रब्महिश्रं।

प्र॰ चंदिवमाणाणां भंते ! देवाणां केवइत्रं कालां ठिई परणाता ? उ॰ गोयमा ! जहरुणेणां चडमागपिलत्रोवमं उक्कोसेणां पिलत्रोवमं वाससयसहस्सम्बमहिश्रं

प्र॰ चंदिवमाणाणं भंते ! देवीणं पुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहरूगोणं चडमागपिलञ्जोवमं उनकोसेणं श्रद्धपिलञ्जोवमं पर्णासाए वाससहस्सेहं श्रब्महिश्रं।

प्रविमाणाणं भंते ! देवाणं पुच्छाउ० गोयमा ! जहएणेणं चउभागपिल्ञोवमं
उक्कोसेणं पिल्ञोवमं वाससहस्समन्महिश्रं ।

प्रविमाणाणां देवीणां पुच्छा— उ॰ गोयमा ! जहण्णेणां चडमागपिल्झोवमं उक्कोसेणां श्रद्धपिल्झोवमं पंचहिं वाससएहिं श्रब्महिश्रं। "उपक्रमाधिकारः]

प्र० गह-विमाणाणां भंते! देवाणां केवइश्रं कालं ठिई पण्णा ? उ॰ गोयमा ! जहएखेएां चडभागपलिश्रोवमं उक्कोसेएां पलिश्रोवमं। ्प्र० गह-विमाणाणं भंते ! देवीणं पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएगोगं चडभागपिल्छोवमं उक्कोसेगं अद्भुपत्तिश्रोवमं। प्रव राक्खत्तविमाणाणं भंते ! देवाणं पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएखेखं चडमागपलि स्रोवमं उक्कोसेणां श्रद्धपत्तिश्रोवमं। प्र० गुक्खत्तविमागागां देवीगां पुच्छा-्र उ० गोयमा ! जहएणेएां चउमागपलिश्रोवमं उक्कोसेयां साइरेगं चडमागपंतित्रोवमं। प्रवं ताराविमाणाणं भंते ! देवाणं पुच्छा-उ॰ गोयमा ! जहराणेणं साइरेगं श्रद्धभाग पलिश्रोवमं उक्तेंसेगां चडभागपलिस्रोवमं । प्र० ताराविमाणाणं देवीणं भंते ! केवइत्रं कालं ठिई पएण्ता ? उ० गोयमा ! जहरागेगां श्रष्टभागपिलश्रोवमं उक्तोसेगं साइरेगं अहुभागपिलुओवमं। प्र॰ वेमाणित्राणं भंते ! देवाणं केवइत्रं कालं ठिई पएणाता ? उ० गोयमा ! जहरूखेरां पलिस्रोवमं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं। प्र॰ वेमाणियाणं भंते ! देवीणं केवइत्रं कालं ठिई-परण्ता ? उ० गोयमा ! जहरागेरां पलित्रोवमं 🖔 उनकोसेयां पर्णपय्यां पलित्रोवमाई।

.प्र० सीहम्मे गां भंते ! कप्पे देवागां पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएखेएां पलिस्रोवमं उक्कोसेणं दो सागरोवमाइं।

प्र॰ सोहम्मे एां भंते ! कप्पे परिग्गहिन्नादेवीएां पुच्छा ? उ० गोयमा ! जहएणेएां पलिस्रोवमं उक्कोसेएां सत्तपलिश्रोवमाई।

प्र० सोहम्मे एां भंते ! कप्पे अपरिग्गहिआदेवीएां-केवइश्रं कालं ठिती पएणता ?

उ॰ गोयमा ! जहरुणोर्एा पलिस्रोवमं उक्कोसेणं पएणासं पलिश्रोवमं ।

प्र० ईसार्गे गं भंते ! कप्पे देवागं केवइयं कालं ठिई पएग्ता ? उ॰ गोयमा ! जहएगोएां साइरेगं पलिस्रोवमं उक्कोसेणं साइरेगाई दो सागरोवमाई।

अ० ईसाणे गुं भंते ! कप्पे परिगाहित्रादेवीगां-केवइश्रं कालं ठिई पराणता ?

उ० गोयमा ! जहएगोगां साइरेगं पलिञ्जोवमं उक्कोसेगां नवपलिख्रोवमाइं।

प्रशृहेसाणे गां भंते ! कप्पे अपरिग्गहिआदेवीगां-केवइश्रं कालं ठिई पएगाता ?

उ० गोयमा ! जहएणोएां साइरेगं पलिस्रोवमं उक्कोसेयां पराणपरागं पलिस्रोवमाई।

े , अ० संगंकुमारे एां भंते ! कप्पे देवाएां पुच्छा-उ० गोयमा ! जहएसोर्स दो सागरोवमाई उनकोसेणं सत्तसागरोवमाई।

प्र० माहिंदे ए भेते ! कप्पे देवाए पुंच्छा ? उ० गीयमा ! जहएणेएां साइरेगाई दो सागरीवमाई उक्कोसेगां साइरेगाई सत्तरागरीवमाई। प्र॰ बंभलोए गां भंते । कप्पे देवाणां पुच्छा ? उ० गोयमा ! जहएणेण सत्तसागरीवमाई उक्कोसेणं दस सागरीवमाई | प्रवं कप्पे कप्पे केवइयं कालं ठिई पर्णाता ? उ० गोयमा ! एवं भागिं अव्वं-लंतए- जहरुणेणं दस सागरीवमाई उक्कोसेषां चउइससागरोवमाई। महासुक्के-जहएणेणं चउँदस सागरीवमाई उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाई। सहस्सारे-जहएखेखं सत्तरस सागरीवमाईं उक्कोसेणं ऋडारस सागरोवमाई। श्राणए- जहएगोगां श्रहारस सागरोवमाइं

उक्कोसेगां एगूगावीसं सागरोवमाइं। पागए- जहएगोगां एगूगावीसं सागरोवमाइं उक्कोसेगां वीसं सागरोवमाइं। श्रारगे- जहएगोगां वीसं सागरोवमाइं

उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाई । श्रच्खुए- जहरूणेणं इक्कवीसं सागरोवमाई उक्कोसेणं वावीसं सागरोवमाई ।

प्र॰ हेडिम-हेडिम-गेविज्जविमाणेस एां भंते ! देवाणं केवइत्रं कालं ठिई पएणता ? उ० गोयमा ! जहराणेगां बावीसं सागरोवमाईं । जक्कोसेगां तेवीसं सागरोवमाईं ।

प्र० हेड्डिस-मिन्सिम-गेविन्जविमाणेसुणं भंते ! देवाणं० ? उ० गोयमा ! जहएणेएां तेवीसं सागरोवमाई उक्कोसेएां चडवीसं सागरोवमाई ।

प्र० हेड्डिम-उवरिम-गेवेन्जविमाणेसु णं भंते देवाणं० १ उ० गोयमा ! जहण्येणं चडवीसं सागरोवमाई उक्कोसेणं प्रश्वीसं सागरोवमाई ।

प्र० मिन्सम-हेट्टिम-गेवेज्जविमाग्रेसु गां भंते ! देवागां० १ उ० गोयमा ! जहण्योगां पणवीसं सागरोवमाईं उक्कोसेगां छन्वीसं सागरोवमाईं ।

प्र॰ मिन्सम-मिन्सम-गेवेज्जविमाणेसु णं भंते ! देवाणं॰ ? उ॰ गोयमा ! जहएणेगां छन्वीसं सागरोवमाइं उक्कोसेगां सत्तावीसं सागरोवमाइं।

प्र० मिन्सम-उविष्म-गेवेज्जविमाणेसु एां भेते ! देवाएां० १ उ० गोयमा ! जहएणेणं सत्तावीसं सागरोवमाई उक्कोसेणं श्रद्वावीसं सागरोवमाई ।

प्रु० उवरिम-हेड्डिम-गेविज्ञविमाग्रेसु गां भंते ! देवागां० ? उ० गोयमा ! जहरुणेगां त्राहावीसं सागरोवमाईं उक्कोसेगां एगू खतीसं सागरोवमाईं।

प्र० उवरिम-मिल्सिम-गेविज्जविमाग्रेसु एां भंते ! देवाणां० १ उ० गोयमा ! जहरुगोगां एगूगातीसं सागरोवमाइं उक्कोसेगां तीसं सागरोवमाइं। प्रमाणद्वारम्

प्रव उवरिमः उवरिम-गेविन्जमार्गेसु गां भंते ! देवाणां० १ उ० गोयमा ! जहरायोगं तीसं सागरोवमाई उक्कोसेयां इकतीसं सागरोवमाइं। प्र० विजय-वेजयंत-जयंत-अपराजितविमार्थेस एां भंते ! देवाणां केवइत्रं कालं ठिई पएणचा ? उ० गोयमा ! जहएगोरां इक्कतीसं सागरोवमाई उक्कोसेगां तेचीसं सागरोवमाई। प्र॰ सन्बद्धसिद्धे यां भंते ! महाविमाणे देवाणं-केवइत्रं कालं ठिई परणत्ता ? उ० गोयमा ! अजहर्यगमणुक्कोसेयां तेत्तीसं सागरोवमाई । से तं सुहुमे अद्भापितश्रोवमे । से चं अद्धापलिओवमे । सु०-१४० प्र० से किं तं खेत्तपलिश्रोवमे ? उ० खेत्रपलिश्रोवमे दुविहे परणत्ते, तं जहा-१ सुहुमे श्र २ वावहारिए श्र । तत्थ गां जे से सुहुमे से ठप्पे। तत्थ एां जे से वावहारिए-से जहानामए पन्ले सिया जोत्रणं श्रायामविक्खंभेणं जोत्रगां उच्वेहेगां - तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेवेणां, से एां पल्ले एगाहिअ-वेश्राहिअ-तेश्राहिश्र * * * जाव भरिए वालग्गकोडीएं,

ं ते गां वालग्गा गो अग्गी डहेन्जा

ः अजावः गो पूइत्ताए हव्यमागच्छेज्जा

जे गं तस्स पल्लस्स त्रागासपएसा तेहिं वालगोहिं श्रणुरणा तत्रो गं समए समए

-से तं वावहारिए खेत्तपत्तिश्रोवमे । गाहा-एएसि पल्लागं, कोडाकोडी भवेड्जदसगुणिया ।

गाहा-एए।स पल्लाण, काडाकाडा भवज्जदसगुणिया । तं ववहारिश्रस्स खेत्तसागरोवमस्स भवे परिमाणं॥

प्र॰ एएहिं वावहारिएहिं खेत्तपित्तश्चोवम-सागरीवमेहिं— किं पश्चोश्चर्णं ? उ॰ एएहिं वावहारिएहिं खेत्तपित्तश्चोवम-सागरीवमेहिं—

केवलं परम्मवम्। परम्मविज्जइः। से चं वावहारिए खेत्तपित्रश्रोवमे।

प्र॰ से किं तं सुहुमें खेत्तपित्रजीवमे १

णत्थि किंचिष्यश्रोश्रगं,

उ० सहुमे खेत्तपलिश्रोवमे— से जहाणामए पन्ले सिया, जोश्रएां श्रायामविक्खंभेणां

*** अजाव ' 'तं तिगुणं सविसेसं परिक्खेंवेणं,

^{*} पृष्ठ-४६६ पंक्ति १० से १२ के समान जानना * पृष्ठ-४६६ पंक्ति १७ के समान जानना।

^{*} पृष्ठ-४६६ पंक्ति ३ के समान जानना ।

से यां पल्ले एगाहिञ्ज-वेञ्जाहिञ्ज-तेञ्जाहिए'''*अजाव भरिए वालग्गकोडीएां, तत्थ एां एगमेगे वालग्गे असंखिन्जाई खंडाई कन्जइ, ते गं वालग्गा दिष्टि-श्रोगाहणाश्रो श्रसंखेज्जइभागमेत्ता सुहुमस्स प्रश्**गजीवस्स सरीरोगाह**णात्रो त्र्यसंखे**न्जगुर्गा,** ते गां वालग्गा गो श्रग्गी डहेन्जा ः * अवावः नो पूड्ताए हन्वमागच्छेज्जा, जे गं तस्स पन्लस्स ज्ञागासपएसा तेहिं वालगोहिं अप्फुराणा वा अगाफुराणा वा तत्रो एां समए समए एगमेगं त्रागासपएसं श्रवहाय जावइएएां कालेएां से पल्ले खीगो : : अजाव : : निष्टिए भवइ से तं सुहुमे खेत्तपलिश्रीवमे। तत्थ एां चोत्रए पएणवगं एवं वयासी— ''श्रित्थि एां तस्स पल्लस्स श्रागासपएसा जे यां तेहिं वालग्गेहि त्रणाफुरणा १" हंता ऋत्थि। ''जहा को दिइंतो ?'' से जहाणामए कोइए सित्रा कोहंडाएां भरिए तत्थ यां माउलिंगा पिक्खना ते वि माया तत्थ एां बिल्ला पिक्खत्ता ते वि माया

तत्थ एां श्रामलगा पिक्सता ते वि माया

^{*} पृष्ठ-४६६ पंक्ति ५, ६ के समान जानना।

^{*} पृष्ठ-४६६ पंक्ति १० से १३ के समान जानना।

^{*} पृष्ठ-४६६ पंक्ति १७ के समान जानना ।

तत्थ एां वयरा पिक्खत्ता ते वि माया तत्थ एां चर्णमा पिक्खत्ता ते वि माया तत्थ एां मुग्गा पिक्खत्ता ते वि माया तत्थ एां सरिसवा पिक्खत्ता ते वि माया तत्थ एां गंगावालुआ पिक्खत्ता सा वि माया एवमेव एएएां दिइंतेण अत्थि एां तस्स पन्लस्स आगासपएसा जे एां तेहिं वालग्गेहिं अगाफुएणा।

गाहा- एएसि पल्लागां, कोडाकोडी भवेज्ज दसगुणित्रा। तं सुहुमस्स खेत्तसागरोवमस्स एगस्स भवे परिमाणां ॥४॥

प्रः एएहिं सुहुमेहिं खेत्तपित्रश्रोवम-सागरोवमेहिं कि पश्रोत्रणां ? उ० एएसिं सुहुमेहिं खेत्तपित्रश्रोवम-सागरोवमेहिं दिद्विवाए दन्वा मविज्जंति ।

सु०-१४१ प्र० कइविहा गां भंते ! दव्वा परागत्ता ? उ० गोयमा ! दुविहा परागत्ता, तं जहा— १ जीव-दव्वा य २ श्रजीव-दव्वा य ।

प्र॰ श्रजीवद्व्वा र्णं भंते ! कइविहा पर्णाता ? उ॰ गोयमा ! दुविहा पर्णाता,

तं जहां-

, १ रूवी-श्रजीवद्व्वा य २ श्ररूवी-श्रजीवद्व्वा य।

प्र० अरुवी-श्रजीवद्व्वा गां भंते! कइविहा पराणता ?

ड॰ गोयमा ! दसविहा पराण्ता, तं नहा—

```
१ धम्मत्थिकाए
```

२ धम्मत्थिकायस्स देसा

३ धुम्मत्थिकायस्स पएसा

४ अधम्मत्थिकाए

५ श्रधम्मत्थिकांयस्स देसा

६ अधम्मत्थिकायस्स पएसा

७ त्रागासत्थिकाए ⊏ त्रागासत्थिकायस्स-देसा

६ त्रागासत्थिकायस्स पएसा

१० अद्धा समए।

प्र० रूवी-श्रजीवद्वा गां मंते ! कइविहा पएगता ?

उ॰ गोयमा ! चउविवहाः पएगाता, तंषहा—

१ खंघा २ खंघदेसा

३ खंधपएसा ४ परमाणुपोग्गला ।

प्र॰ ते यां भंते ! किं संखिल्ला असंखिल्ला अयांता ?

उ॰ गोयमा ! नो संखिन्जा, नो श्रसंखिन्जा, श्रयांता।

प्र० से केण्डेणं भंते । एवं बुचइ— ''नो संखिज्जा, नो श्रसंखिज्जा, श्रगंता'' १

उ॰ गोयमा । त्रगांता परमाणुपोग्गला

श्रगंता दुपएसिश्रा खंधा

ं जाव अगंता अगंतपएसिआ खंधा

से एएगां ऋहेगां गोयमा ! एवं वुचइ-

''नो संखेज्जा, नो असंखेज्जा, अगंता''।
जीवद्व्वाणं भंते! किं संखिज्जा असंखिज्जा अगंता?
गोयमा! नो संखिज्जा, नो असंखिज्जा, अगंता।
से केणहेणं भंते! एवं वुचइ—
''नो संखिज्जा, नो असंखिज्जा, अगंता''।
गोयमा! असंखेज्जा गोरइया

गोयमा ! श्रसंखेज्जा खेरइया श्रसंखेज्जा श्रसुरकुमारा '''जाव'''श्रसंखेज्जा थिणियकुमारा

श्रसंखेज्जा पुढविकाइया
'''जाव'' श्रसंखिज्जा वाउकाइया
श्रमंता वणस्सइकाइया
श्रसंखिज्जा वेइंदिश्रा
'''जाव'''श्रसंखिज्जा चडरिंदिश्रा

त्रसंखिज्जा पंचिदित्रतिरिक्खजोिणया त्रसंखिजा मणुस्सा त्रसंखिज्जा वाणमंतरा श्रसंखिज्जा जोइसिया

असंखेन्ना वेमाणित्रा अणंता सिद्धा से एएण अट्टेएां गोयमा ! एवं वुचइ—

''नो संखिज्जा, नो श्रसंखिज्जा, श्रगांता''। स॰-१४२ प्र॰ कइविहा एां भंते ! सरीरा पर्णाता ? उ॰ गोयमा ! पंचसरीरा पर्णाता,

तं जहा—

१ श्रोरालिए २ वेउव्विए

```
३ श्राहारए ४ तेश्रए ५ कम्मए।
प्र० गोरइत्रागं भंते ! कइ सरीरा परगत्ता ?
उ० गोयमा ! तत्रो सरीरा पराणत्ता,
     तं जहा—
     १ वेउव्विए २ तेत्र्यए ३ कम्मए।
प्रवास प्रमाराणं भंते ! कह सरीरा पर्याचा ?
उ० गोयमा ! तश्रो सरीरा परागत्ता,
     तं जहा-
     १ वेउन्विए २ तेश्रए ३ कम्मए।
     एवं तिरिया तिरिया एए चेव सरीरा" जाव
     थियकुमाराणं भागित्रज्ञा ।
 प्रविकाइत्रार्थं मंते ! कइ सरीरा पर्याचा ?
उ॰ गोयमा ! तश्रो सरीरा परणत्ता,
     तं जहा-
      १ श्रोरालिए २ तेश्रए ३ कम्मए।
     एवं श्राउ-तेउ-वगास्सइकाइयागा वि एए चेव
      तिरिण सरीरा भागिश्रव्वा ।
 प्र० वाउकाइयाणां भंते ! कइ सरीरा पर्यणता ?
 उ० गोयमा ! चत्तारि सरीरा पराणता,
      तं जहा-
   ' १ं ग्रोरालिए २ वेडन्विए
      ३ तेयए ४ कम्भए।
      वेइंदिअ-तेइंदिश्र-चउरिंदियागं जहा पुढवीकाइयागं
      पंचिदिश्र-तिरिक्लजोििशशागं नहा वाउकाइयागा ।
```

प्र॰ मणुस्साणं भंते ! कइ सरीरा पर्णाता ? उ० गोयमा । पंच सरीरा परागत्ता, तं जहां— १ श्रोरालिए २ वेउन्विए ३ श्राहारए ४ तेत्रए ५ कम्मए। वागामंतराणं जोइसित्राणं वेमाणित्राणं जहा गेरइयाणं। प्र॰ केवइत्रा एां मंते ! श्रोरालियसरीरा पएणचा ? उ० गोयमा दुविहा पएगाचा तंजहा-१ बद्धेन्लगा य २ मुक्केन्लगा य । ा तत्थ एां जे ते बद्धेल्लगा ते एां श्रसंखिजा श्रसंविजाहिं उस्सिपिणी-श्रोसिपणीहिं श्रवहीरंति कालश्री खेत्तत्रो त्रसंखेजा लोगा। तत्थ गां जे ते मुक्केल्लगा ते गां अगाता, श्रगंताहिं उस्सिपिणी-श्रोसिपणीहिं श्रवहीरंति कालश्रो खेतत्रो अणंता लोगा - देन्वज्री ज्ञेभवसिद्धिएहि ज्ञणंतगुणा

प्र॰ केवइत्रा एां भंते ! वेडिव्वय सरीरा पएणता ? उ॰ गोयमा ! दुविहा पएणत्ता, तं जहा— १ बद्धेल्लगा य, २ मुक्केल्लगा य ।

सिद्धार्णं अर्णतभागी।

तत्थ एं जे ते बद्धेन्लयां ते एं असंखिजा असंखेनजाहिं उस्सिपिणि-श्रीसिपणीहिं अवहीरंति कालश्रो खेनश्रो असंखिनजाश्री सेटीश्रो पयरस्स असंखेजहमागो। तत्थ एं जे ते सुक्केन्लया ते एं अएंति। असंताहिं उस्सिपिणि-श्रोसिपणीहिं अवहीरंति कालश्रो सेसं जहा श्रोर।लियस्स सुक्केल्लया तहा एएवि भागिश्रव्वा।

प्र० केवइत्रा गं भंते ! श्राहारग सरीर पर्णाता ?
उ० गोयमा ! दुविहा परणता,
तं जहा—
१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य ।
तित्थ गं जे ते बद्धेल्लया ते गं सि श्र श्रात्थ, सिश्र गत्थि जह श्रत्थ जहरणेगं एगो वा. दो वा, तिरिण वा उक्कोसेगं सहस्सपुहत्तं ।
मुक्केल्लया जहा श्रोरालिया तहा भागिश्रव्वा ।
प्र० केवइत्रा गं भंते ! तेश्रगसरीरा परग्ता ?

उ० गोयमा ! दुविहा परण्या, तं जहा—
 १ बद्धेल्लिया य २ सुक्केल्लिया य ।
 तत्थ गां जे ते बद्धेल्लिया ते गां अगांता—
 श्रगंताहि उस्सप्पणी-ओसप्पणीहि अवहीरंति कालुओ खेत्तओं अगांता लोगा
 देव्वेश्रो सिद्धेहि अगांतगुणा ।
 सव्वजीवागं श्रगंतगुणा ।

४२६]

[उपक्रमाधिकारः प्रमाणद्वारम्

तत्थ गं जे ते मुक्केल्लया ते णं त्रणंता त्रणंताहिं उस्सिष्णी-स्रोसिषणीहिं स्रवहीरंति कालस्रो खेत्तस्रो स्रणंता लोगा दन्वस्रो सन्वजीवेहिं स्रणंतगुणा

दन्वज्ञा सन्वजावाह अखतगुणा सन्वजीववग्गस्स् अर्गतभागो ।

उ॰ गोयमा ! दुविहा पर्ग्यात्ता, तं जहा— १ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।

प्र॰ केवड्त्रा एां भंते ! कम्मगसरीरा पएण्चा ?

जहा तेश्रगसरीरा तहा कम्मगसरीरा वि भाणिश्रव्वा । अं शेरइयाणं भंते ! केवइया श्रोरालियसरीरा परणना ?

तं जहा— १ बद्धेन्लया य २ मुक्केन्लया य । तत्थ गां जे ते बद्धेन्लया ते गां गात्थि ।

> तत्थ गां जे ते मुक्केन्लया ते जहा श्रोहिश्रा श्रोरालिश्र-सरीरा तहा भागिश्रव्या।

तं जहा---

उ॰ गीयमा ! दुविहा पराण्ता,

प्र॰ गोरइयागं भंते ! केवइत्रा वेउव्वियसरीरा प्रणता ? उ॰ गोयमा ! दुविहा प्रण्याता,

१ बद्धेन्लया य २ मुक्केन्लया य । तत्थ गां जे ते बद्धेन्लगा ते गां श्रसंखिन्जा श्रसंखिजाहिं उस्सिप्यगी-श्रोसप्यगीहिं श्रवहीरंति कालश्रो 🌝 खेत्तज्ञो असंखेजाश्रो सेढीत्रो पयरस्स असंखिज्जइभागो तासि गां सेढीणां विव्खंमस्इ-श्रंगुलपढमवग्गमूलं-

ः विङ्**त्रवग्गम्**लपडुप्यएगां । अहवा गां अंगुलविइअवग्गमूलघणपमाणमेत्राओ सेढीओ। तत्थ गां जे ते मुक्केलया ते गां जहा श्रोहिश्रा-त्रोरालिश्रसरीरा तहा भाणिश्रव्या

प्र० खेरइयाणं भंते ! केवइत्रा ब्याहारगसरीरा पराणता ? उ॰ गोयमा ! दुविहा पएग्राता, तं जहा-१ बद्धेल्लगा य २ मुक्केल्लया य ।

तत्थ गां जे ते बद्धेल्लगा ते गांगित्थ। तत्थ गाँ जे ते मुक्केल्लया— ते जहा श्रोहिश्रा तहा भाणिश्रुव्वा ।

तेयग-कम्मगसरीरा

उ० गोयमा ! जहा गोरइयागं श्रोरालियसरीरा तहा भागिश्रव्या ।

उ॰ गोयमा ! दुविहा पराण्ता, तं जहा-

१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य । तत्थ गां जे ते बढ़ेल्लया ते गां श्रसंखिजा श्रसंखिजाहिं उस्सप्पिगी श्रोसप्पिगीहिं श्रवहीरंति कालश्रो

जहा एएसिं चेव वेउन्वित्रसरीरा तहा भाणिश्रव्या । प्र० श्रसुरकुमाराणं भंते ! केवइत्रा श्रोरालियसरीरा पराणता ?

प्र० असुरकुमाराणं भंते ! केवइआ वेउव्वियसरीरा पराण्ता ?

खेतत्रो असंखेजाओ सेढीओ पयरस्स असंखिज्जहमागी

तासि गां सेढीगां विक्लंभसूइ-श्रंगु

तासि गां सेढीगां विक्खंभसइ-श्रंगुलपढमवग्गमूलस्स— श्रसंखिज्जइभागो । सुक्केल्लया जहा श्रोहिया श्रोरालिश्रसरीरा।

प्र० त्रसुरकुमाराणं केवइया त्राहारगसरीरा परणत्ता ?

उ॰ गोयमा ! दुविहा परण्ता, तं जहा— १ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।

> जहा एएसि चेव त्रोरालियासरीरा तहा भाणित्रवा। तेत्रगकम्मगमरीरा जहा एएसि चेव वेडव्वियसरीरा— तहा भाणित्रवा।

जहा असुरकुमाराणं तहाः जावः शिणयकुमाराणं

•••ताव•••भागित्र्यव्वा

प्र॰ पुढविकाइत्राणं भंते! केवइया श्रोरालिश्रसरीरा प्रण्ता। उ॰ गोयमा! दुविहा प्रण्ता, तं जहा—

१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य । एवं जहा श्रोहिश्रा श्रोरालियसरीरा तहा भागिश्रव्या ।

प्र० पुढविकाइयाणं भंते ! केवइत्रा वेउव्वियसरीरा पर्यात्ता ? उ० गोयमा ! दुविहा परणत्ता,

> .१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य । तत्य गां जे ते बद्धेल्लया ते गां गात्थि, मुक्केल्लया जहा ओहिस्रागां स्रोरालिस्रसरीरा—

तहा भागिऋंव्या ।

तं जहा-

४२६ **अगुज्ञोगदार**मुत्त

प्रमाणद्वारम्

चपक्रमाधिकारः]

तेअम-कम्मसरीरा जहा एएसि चेव श्रोरालिश्रसरीरा-तहा भागिअञ्बा। एवं श्राउकाइयागां तेउकाइयागां य—

क्षत्र्याहारगसरीरा वि एवं चेव भागािश्रन्वा ।

सन्वसरीरा भागायव्वा ।

प्र॰ वाउकाइयायां भंते ! केवइत्रा श्रोरालियसरीरा पर्यणत्ता ? उ० गोयमा ! दुविहा पएग्रात्ता,

तं जहा---१ बद्धेल्लया य, २ मुक्केल्लया य।

प्र० वाउकाइयार्णं केवड्या वेउव्वियसरीरा परणता ? ड॰ गोयमा ! दुविहा पएगात्ता,

तं जहा-बंधेल्लग्गा य मुक्केल्लगा य, तत्थ गं जे ते बद्धेन्लया ते गं असंखिज्जा,

समए समए अवहीरमाणा खेत्तपलिओवमस्स नो चेव गं श्रवहिश्रा सिश्रा।

तेश्रग-कम्मसरीरा जहा पुढिवकाइयाणं तहा भाणिश्रव्वा।

जहा पुढविकाइयागां त्र्योरालियसरीरा तहा भागियव्वा ।

श्रसंखिज्जइभागमेत्तेणं कालेणं श्रवहीरंति, • मुक्केल्खया वेउच्वियसरीरा त्राहारगसरीरा य-जहा पुढविकाइआंग तहा भागिअन्वा।

वयस्सइकाइयाणं अश्रोरालिश्र वेउव्विश्र-श्राहारगसरीरा जहा पुढिवकाइयागं तहा भागिश्रव्दा ।

* पृष्ठ-४२८ पंक्ति १३ से पृष्ठ ४२८ पंक्ति ३ तक के समान है।

प्र० वगास्सइकाइयाणां मंते । केवइच्या तेश्रगसरीरा पण्णा ?

उ० गोयमा दुविहा पराणना, जहा श्रोहित्रा तेश्रग-कम्मसरीरा तहा वर्णास्सइकाइयाण वि तेश्रग-कम्मगसरीरा भागिश्रव्वा । प्र॰ वेइंदियाणं भंते ! केवइत्रा त्रोरालियसरीरा परणता ? उ० गोयमा ! दुविहा परागत्ता, तं जहा---१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य । तत्थ गां जे ते बद्धेल्लया ते गां असंखिज्जा

असंखिजाहिं उस्सप्पिणी-श्रोसपिणीहिं अवहीरंति कालश्रो, खेत्तत्रो त्रसंखेजात्रो सेढीत्रो, पयरस्स त्रसंखिज्जइभागो तासि गां सेढीगां विक्खंभसई, असंखेन्जाओ-जोत्रग-कोडाकोडीत्रो त्रसंखिन्जाइं सेदिवग्गमूलाइं वेइंदियाणं श्रोरालियबद्धेल्लएहिं पयरं श्रवहीरइ असंखिज्जाहिं उस्सिपिगी-श्रोसिपगीहिं कालश्रो । खेत्रश्रो श्रंगुलपयरस्स स्रावलिश्राए-

श्रसंखिज्जइभागपडिमागेएां। मुक्केल्लया ् अन्ता त्रोहित्रा त्रोरालित्रसरीरा तहा भाणित्रव्वा वेउव्विय-श्राहारगसरीरा बद्धेल्लया नत्थी, मुक्केल्लया अनहा श्रोहित्रा श्रोरातिश्रंसरीरा तहा भागिश्रव्वा

जहा वेइंदिश्राणं तहा तेइंदिय-चउरिंदियाण वि भाणिश्रव्या । पृष्ठ- ४२४ पंक्ति ७ से १४ के समान है। २ * एष्ठ-४२४ पंति १४ से १८ के समान है।

तहा भागित्रव्या।

तेश्रगकम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव श्रोरालिश्रसरीरा-

अगुञ्जोगदारसुत्तं उपक्रमाधिकारः]

४३१

प्रमाखद्वारम्

पंचिदिय-तिरिक्खजोिणयाण वि श्रोरालिश्रसरीरा-

एवं चेव भाषित्रव्या ।

प्र० पंचिद्यतिरिक्खजोिणश्राणं भंते ! केवंइत्रा वेउव्वियसरीरा पराणता ?

उ० गोयमा ! दुविहा पंरायता,

तं जहा---

१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य । तत्थ गां जे ते बद्धेल्लया ते गां असंखिजा

श्रसंखिज्जइमागो।

श्राहारयसरीरा अजहा बेइंदिश्राणं तेश्रग-कम्मसरीरा जहा ऋोरालिया ।

उ॰ गोयमा ! दुविहा पराण्ता, तं जहा---

१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।

'सिश्र संखिज्जा सिश्र श्रसंखिज्जा जहरायपए संखेज्जा * पृष्ठ-४२४ पंक्ति १४ से १८ के समान है

श्रसंखिजाहिं उस्सिपिणी श्रोसिपणीहिं श्रवहीरंति कालश्रो, े खेत्तत्रो असंखेन्नात्रो सेढीजो, पयरस्स असंखिन्जइभागो, तासिं णं सेढीणं विक्खंभस्रइ-श्रंगुलपढमवग्गमूलस्स-

मुक्केल्लया अनहा श्रोहिश्रा श्रोरालिश्रा तहा भागिश्रव्वा।

प्र० मणुस्सार्गं भंते ! केवइया श्रोरालियसरीरा पराणता ?

तत्थ गां जे ते बद्धेलया ते गां-

* प्रष्ठ-४३० पंक्ति २१ के समान है

[उपक्रमाधिकारः प्रमाणद्वारम्

संखिन्जाओं कोडाकोडीओं, एगूग्तीसं ठागाईं-ति-जसलपयस्स उवरिं चउ-जमलपयस्स हेद्वा । त्रहव गां छद्दो वग्गो पंचमवग्गपड्प्पगाो। श्रहव गां छएणउइ-छेश्रगगदायिरासी। उक्कोसपए श्रसंखेन्जा, असंखेन्जाहिं उस्सप्पिणि-श्रोसप्पिणीहिं श्रवहीरंवि कालश्रो, खेत्तत्रो उक्कोसपए रूवपिखत्तेहिं मणुस्सेहिं-सेढी अवहीरइ कालग्री-असंखिन्जाहिं उस्सप्पिण-श्रोसप्पिगीहिं। खेत्तक्रो अंगुलपढमवग्गमूलं तइयवग्गमूलपडुप्पएएं। मुक्केल्लया अनहा श्रोहिश्रा श्रोरालिश्रा तहा भागिश्रव्या। प्र० मगुस्साणं भंते ! केवइत्रा वेउव्वियसरीर पराणता ? उ० गोयमा ! दुविहा परणत्ता, तं जहा--१ बद्धेन्लया य, २ मुक्केन्लया य। तत्थ गां जे ते बद्धेल्लया ते गां संखिषजा— समए समए अवहीरमाणा अवहीरमाणा-

२ * १ष्ट−४२४ पंक्ति १४ से १८ के समान है।

तह। भागिश्रव्वा ।

संखेज्जेगां कालेगां अवहीरंति,

नो चेव गां अवहित्रा सिया।

मुक्केल्लया अजहा ग्रोहिश्रा श्रोरालिश्राणं मुक्केल्लया

उपक्रमाधिकारः] **प्रमाण्डारम्** ् प्र० मणुस्साणं भंते ! केवइत्रा ब्राहारगसरीरा पण्याचा ? उ० गोयमा ! द्विहा परण्ता,

उक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं।

तं जहा---

तहा भागिअव्वा ।

उ० गोयमा ! दुविहा परण्ता, तं जहा-

१ बद्धेल्लया य २ मुक्केल्लया य ।

तहा भागिश्रव्वा। २ * पृष्ठ ४२४ पंक्ति १४ से १८ तक के समान है * पृष्ठ-४२६ पंक्ति ११ से १७ के समान है * पृष्ठ ४२८ पंक्ति ४ से ८ तक के समान है

सयवग्गपत्तिभागो पयरस्स ।

१ बद्धेल्लगा य २ मुक्केल्लया य । तत्थ एां जे ते बद्धेल्लया ते गुं सिम्र म्रित्थ, सिम्र गुत्थि जइ श्रित्थ जहएणेणं एको वा, दो वा, तिरिण वा

मुक्केल्लया अजहा श्रोहिश्रा श्रोरालिया तहा भागियव्वा । तेश्रग-कम्मगसरीरा जहा एएसिं चेव श्रोरालिया-

वाणमंतराणां श्रोरालियसरीरा अजहा गोरइयागां। प्र॰ वाणमंतराणं भंते ! केवइत्रा वेउव्वियसरीरा पएणता ?

तत्थ गां जे ते बद्धेल्लया ते गां असंखेन्जा, श्रसंखेज्जाहि उस्सप्पिगी-श्रोसप्पिगीहि श्रवहीरंति कालश्रो । खेत्तत्रो श्रसंखिन्जात्रो सेढीत्रो, पयरस्स श्रसंखेजहमागी । तासि गां सेढीगां विक्खंयसई संखेज्ज-जोश्रगा-मुक्केल्लया अनहा त्रोहित्रा त्रोरालित्रा तहा भागित्रवा।

त्राहारयसरीरा दुविहा वि अजहा श्रसुरकुमाराएां-

श्रगुश्रोगदारसुत्त ४३४]

उ० गोयमा ! दुविहा परणत्ता,

तं जहा-

उ० गोयमा ! जहा एएसिं चेव वेउन्वियसरीरा-

तहा तेत्रग-कम्मगसरीरा भाषाश्रव्वा ।

१ बद्धेल्लगा य २ मुक्केल्लगा य।

१ वद्धेन्लया य २ मुक्केन्लया य ।

तत्थ एां जे ते वद्धेन्लगा ते एां श्रसंखिजा

असंखिजाहिं उस्सप्पिणी-श्रोसप्पिणीहिं श्रवहीरंति कालश्री,

तत्थ गां जे ते बद्धेल्लगा "जाव" तासिं गां

प्र० जोइसियाणां भंते! केवइत्रा वेउव्वियसरीरा पर्णाता।

िं **उपक्रमाधिकारः** प्रमाणद्वारम् प्र० वार्गामंतराणं भंते ! केवइश्रा तेश्रग-कम्मसरीरा पर्णाचा ?

तहा भागित्रश्रवा।

सेढींगं विक्खंमसई, वेळप्पएएांगुलसयवग्गपलिभागो पयरस्स **मुक्केल्लया** क्षजहा त्रोहिया त्रोरालिया तहा भागित्रवा। श्राहारयसरीरा क्षजहा गोरइयागं तहा भागित्रवा । तेश्रग-कम्भगसरीरा जहा एएसि चेव वेउव्विया-प्र० वेमाणियाणं भंते ! केवंड्या श्रोरालियसरीरा पएण्ता ? उ० गोयमा ! अजहा गोरइयागं तहा भागित्रच्या । प्र॰ वेमाणित्राणां भंते ! केवइया वेउव्वियसरीरा परणता ? उ॰ गोयमा ! दुविहा पएण्ता,

* पृष्ठ ४२४ पंक्ति १४ से १८ तक के समान है * पृष्ठ-४२६ पंक्ति ११ से १७ के समान है * पृष्ठ ४२७ पंक्ति ७ से १३ तक के समान है।

तंजहा-

खेत्तत्रो त्रसंखिज्जात्रो सेहीत्रो पयरस्स त्रसंखेज्जइभागी,
तासं गं सेहीणं विक्खंभद्धई श्रंगुलबीयवग्गमूलं—
तइगवग्गमूलपढुण्पणां
त्रहव गं श्रंगुलतइश्रवग्गमूलघणपमाणमेत्तात्रो सेहीत्रो ।
गुक्केल्लया क्षजहा श्रोहित्रा श्रोरालिया तहा माणिश्रव्वा ।
श्राहारगसरीरा क्षजहा ग्रेरइणांग ।
तेश्रग-कम्मगसरीरा जहा एएसि चेव—
वेडिव्वयसरीरा तहा भाणिश्रव्वा ।
से तं सुहुमे खेत्तपिलश्रोवमे ।
से तं खेत्तपिलश्रोवमे ।
से तं विभागनिष्फण्णे ।
से तं विभागनिष्फण्णे ।

सु०-१४३ प्र० से किं तं भावप्पमागे ? उ० भावप्पमागे तिविहे पएगात्ते,

तं जहा---

१ गुगण्यमागे २ नयणमागे ३ संखणमागे ।

2 62 -- -- -- 2

सु०-१४४ प्र० से किं तं गुर्णेष्पमाणे १ उ० गुणप्पमाणे दुविहे परणचे, तं जहा—

^{*} पृष्ठ ४२४ पंक्ति १४ से १८ के समान है * पृष्ठ ४२७ पंक्ति ७ से १३ तक के समान हैं।

श्रमाण्डारम्
१ जीवगुणपमाणे २ अजीवगुणपमाणे अ।
प्र० से किं तं अजीवगुणपमाणे १
उ० अजीवगुणपमाणे पंचिवहे परणते,
तं जहा—
१ वरणगुणपमाणे २ गंधगुणपमाणे
२ रसगुणपमाणे ४ फासगुणपमाणे
५ संठाणगुणपमाणे ।
प्र० से किं तं वरणगुणपमाणे १
उ० वरणगुणपमाणे पंचिवहे परण्ते,
तं जहा—

प्र० से किं तं वरणगुणपमाणे ?
उ० वरणगुणपमाणे पंचिवहे परणाते,
तं जहा—
१ कालवरण-गुणपमाणे ', जाव' '
५ सुक्तिकलवरणगुणपमाणे ।
से तं वरणगुणपमाणे ।
प्र० से किं तं गंधगुणपमाणे ?
उ० गंधगुणपमाणे दुविहे परणाते,
तं जहा—
१ सुरिमगंधगुणपमाणे २ दुरिमगंधगुणपमाणे।

से तं गंधगुणप्यमाणे ।
प्र० से किं तं रसगुणप्यमाणे १
उ० रसगुणप्यमाणे पंचिवहे पर्यात्ते,
तं जहा—
तित्तरसगुणप्यमाणे "जाव" महुररसगुणप्यमाणे ।
से तं रसगुणप्यमाणे ।

प्र० से किं तं फासगुणप्पमाणे ?

प्र**माण्**द्वारम्

उ० फासगुणपमागो श्रद्धविहे परागत्ते, तं जहा---

से चं फासगुणपमाणे।

प्र० से किं तं संठागागुगाप्पमागो ? उ० संठागगुगप्पमाणे पंचविहे पण्याचे,

तं जहा---१ परिमण्डल-संठागागुगप्पमाणो २ वट्ट-संठाग्गुग्रप्यमागो

३ तंस-संठाणगुणपमाणे ४ चउरंस-संठाणगुगप्पमाणे ५ त्रायय-संठाणगुणपमाणे । से तं संठाग्युग्प्यमायो।

से तं श्रजीवगुग्पमागे। प्र० से किं तं जीवगुगाप्पमागो ? उ० जीवगुणपमाणे तिविहे पएणत्ते,

तं जहा---१ गागगुगपमागे २ दंसणगुणपमाणे ३ चरित्तगुगाप्यमागो ।

प्र० से किं तं गागगुगपमागो ? उ० गागगुणपमागो चडव्विहे पग्गाचे,

कक्खडफासगुगाप्यमायो ः जाव ः च्लुक्खफासगुगाप्यमायो

तं जहा---१ पच्चक्खे २ अणुमारो ३ श्रोत्रम्मे ४ श्रागमे । से किं तं पच्चक्खे ? पच्चक्खे दुविहे पएगात्ते, तं जहा--१ इंदिऋपच्चक्खे ऋ २ गोइंदिश्र-पच्चक्खे श्र । प्र० से किं तं इंदिश्रपच्चक्खे ? उ० इंदिश्रपच्चक्खे पंचविहे परागात्ते, तं जहा---१ सोइंदियपच्चक्खे २ चक्खुरिंदियपच्चक्खे ३ घाणिदिअपच्चक्खे ४ जिब्मिदिश्रपच्चक्वे ५ फासिंदिऋपच्चक्खे । से तं इंदियपच्चक्खे। प्र० से किं तं गोइंदियपच्चक्खे ? उ० गोइंदियपच्चक्खे तिविहे पएगात्ते, तं जहा---

१ स्रोहि-णागापच्चक्खे २ मणपज्जव-णागापच्चक्खे २ केवल-णागापच्चक्खे। से त्रं गोइंदियपच्चक्खे। से त्रं पच्चक्खे। प्रमागद्वारम्

प्र० से किं तं श्रणुमाणे ? उ० ऋणुमागो तिविहं पएगत्ते

तं जहा---१ पुन्ववं २ सेसवं ३ दिद्वसाहम्मवं।

प्र० से किं तं पुच्ववं ?

उ० पुरुवर्व—

गाहा- माया पुत्तं जहा नद्वं, जुवार्यं पुरागयं।

काइ पचिभजागोजा, पुन्वलिंगेण केगाइ।।१॥

- तं जहा---खतेण वा, वर्णांग वा

ं लंख्योग वा, मसेग वा, तिलएग वा। से तं पुठ्ववं।

प्र० से किं तं सेसवं ? उ० सेसवं पंचविहं पएणत्तं

तं जहा---

१ कन्जेयां २ कारयोगां ३ गुर्योगां ४ अवयवेगां ५ आसएगां।

प्र० से किं तं कज्जेगां ? उ० कज्जेगां—

संखं सदेगां, भेरिं ताडिएगां वसमं ढिक्कएणं, मोरं किंकाइएणं हयं हेसिएगां, गयं गुलगुलाइएगां

> रहं घणवणाइएगं। से तं कज्जेगं।

प्र० से कि तं कारणेगं ?
उ० कारणेगं—
तंतवो पडस्स कारणं, ग पडो तंत कारणं
वीरणा कडस्स कारणं, ण कडो वीरणा कारणं
मिणिडो घडस्स कारणं, ण घडो मिण्डिकारणं
से चं कारणेगं।

प्र० से किं वं गुगोगं ?
उ० गुगोगं—
सुवग्गां निकसेगां, पुष्फं गंधेगां
लवगां रसेगां, महरं त्रासायएगां
वत्थं फासेगां
से चं गुगोगां।
प्र० से किं तं श्रवयवेगां ?

उ० श्रवयवेणं—

महिसं सिंगेणं, कुक्कुडं सिहाएणं

हित्थ विसासेणं, वराहं दाढाए

मोरं पिच्छेगं, श्रासं खुरेणं

वण्यं नहेणं, चमिरं वालग्गेणं

वाण्रं लंगुलेणं

दुपयं मणुस्सादि चडण्यं गवयादि

वहुपयं गोमित्रादि सीहं केसरेणं, वसहं कुकुहेणं महिलं वलयवाहाए, उपक्रमाधिकारः]

गाहा— परित्ररबंधेगा भडं, जागिज्जा महिलियं निवसगेगं । सित्थेगा दोगापागं, कविं च एक्काए गाहाए॥२॥ से चं श्रवयवेगां!

प्र० से किं तं श्रासएगं ?

ड॰ श्रासएगां— श्रागंग धूमेगां, सलिलं बलागेगां वुद्धिं श्रब्भविगारेगां, कुलपुत्तं सीलसमायारेगां से त्तं श्रासएगां। से त्तं सेसवं।

प्र० से किं तं दिइसाहम्मवं ? उ० दिइसाहम्मवं दुविहं परण्तं,

> ं जहा—ं १ सामन्नदिइं च २ विसेसदिइं च।

प्र० से किं तं सामएणदिहं ?
उ० सामएणदिहं—
जहा एगो पुरिसो तहा बहवे पुरिसा,
जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो,
जहा बहवे पुरिसा तहा एगो पुरिसो,
जहा एगो करिसावणो तहा बहवे करिसावणा,
जहा बहवे करिसावणा तहा एगो करिसावणो,

से तं सामएणदिङ्गं।

प्र० से किं तं विसेसदिई ? उ० विसेसदिई— से जहागामए केइ पुरिसे कंचि पुरिसं— बहुगां पुरिसाणां मन्से पुन्वदिष्टं पद्यभिजागोज्जा— 'श्रयं से पुरिसे', बहुगां करिसावगाणां मन्से पुन्वदिष्टं करिसावणां— पद्यभिजागोज्जा—''श्रयं से करिसावणो''। तस्स समासश्रो तिविद्दं गहणां सवदं तं जहा— १ श्रतीयकालगहणां

२ पडुप्पएपाकालगहणं ३ श्रणागयकालगहणं। प्र० से किं तं श्रतीयकालगहणं १

उत्तर्णाणि वर्णाणि निष्फरण्णसस्सं वा मेइणि, पुरणाणि त्र कुण्ड-सर-गाई-दीहित्रा-तडागाई पासिता तेणं साहिज्जइ, जहा-सुबुद्धी त्रासी। से त्रं त्रतीतकालगहणं।

उ० अतीयकालगहणं-

प्र० से कि तं पहुष्परणकालगहर्ण ?
उ० पहुष्परणकालगहर्ण—
साहुं गोयरग्गगयं विच्छडिश्रपउरभत्तपार्या पासित्ता
ते गं साहिज्जइ—जहा सुभिक्खे वट्टइ।
से त्तं पहुष्परणकालगहर्णं।

प्र० से किं तं श्रणागयकालगहणं ?
उ० श्रणागयकालगहणं—
श्रव्मस्य निम्मलत्तं, किसणा य गिरी सविज्जुश्रा मेहा ।
श्रिण्यं वाउव्मामो, संभा रत्ता पणिद्धा य ॥३॥

उपक्रमाधिकारः] प्रमाग्रहारम्

वारुणं वा सहिंदं वा अरुणयरं वा पसत्थं उपायं पासित्ता

तेर्णं साहिज्जइ जहा—सुबुद्दी भविस्सइ। से तं त्रणागयकालगहणं।

एएसि चेव विवज्जासे तिविहं गहणं भवइ, तं जहा-

१ श्रतीयकालगहर्या २ पडुप्परम्यकालगहर्या ३ त्रगागयकालगहणे ।

प्र० से किं तं अतीयकालगहणं ?

तेगां साहिज्जइ जहा—कुवुट्टी त्रासी, से तं अतीयकालगहणं।

प्र० से किं तं पडुप्पएणकालगहणं ? से तं पडुप्परणकालगहरां।

प्र० से किं तं ऋणागयकालगहणं १ उ० त्रगागयकालगहणां— गाहा- धूमायंति दिसात्रो, संवित्र मेइग्री श्रपडिबद्धा।

पासित्ता तेगां साहिज्जइ जहा-क्रुवुड्डी भविस्सइ। से तं त्रणागयकालगहणं। से तं विसेसदिईं।

उ० नित्तिणाई वणाई श्रनिष्फ्रएण्सरसं वा मेइणि, सुक्काणि त्र्य कुग्रड-सर-णई-दीहित्रा-तडागाई पासित्ता—

उ० पडुष्परग्रकालगहर्ग-साहुं गोश्ररग्गगयं भिक्खं श्रतमाणं पासित्ता तेणं साहिज्जइ जहा—दुन्भिक्खे वट्टइ

वाया गोरहञ्रा खल्ल, कुबुद्दिमेवं निवेयंति ॥४॥ अगोयं वा वायव्वं वा ऋएण्यरं वा ऋपसत्थं उपायं से तं दिइसाहम्मवं। से तं श्रणुमाणे। प्र० से किं तं श्रोवम्मे ? उ० श्रोवम्मे दुविहे पएण्ते,

उ० आवम्म द्वावह प्रश्चात्त, तं जहा— १ साहम्मोवणीए २ वेहम्मोवशीए अ ।

प्र० से किं तं साहम्मोवणीए ?

उ॰ साहम्मोवणीए तिविहे पएण्ते, तं जहा— १ किंचि साहम्मोवणीए २ पायसाहम्मोवणीए

३ सन्वसाहम्मोवणीए । प्र० से किं तं किंचि साहम्मोवणीए ?

उ० किंचि साहम्मोवणीए— जहा मंदरो तहा सरिसवो, जहा सरिसवो तहा मंदरो

जहा समुद्दो तहा गोप्पयं, जहा गोप्पयं तहा समुद्दो जहा त्राइचो तहा खजोतो, जहा खजोतो तहा त्राइचो जहा चंदो तहा कुमुदो, जहा कुमुदो तहा चंदो,

से चं किंचि साहम्मोवणीए।

प्र० से किं तं पायसाहम्मोवणीए ?
उ० पायसाहम्मोवणीए—
जहा गो तहा गवश्रो, जहा गवश्रो तहा गो,
से तं पायसाहम्मोवणीए।

उपक्रमाधिकारः]

प्र० से किं तं सन्वसाहम्मोवणीए ? उ० सन्वसाहम्मे श्रोवम्मे गुरिय, तहावि तेखेव तस्स श्रोवम्मं कीरइ, जहा-श्ररिहंतेहिं श्ररिहंतसरिसं कयं चकवद्दिणा चकवद्दिसरिसं कयं वलदेवेण वलदेवसरिसं कयं वासुदेवेगा वासुदेवसरिसं कयं साहुणा साहुसरिसं कयं, से तं सन्वसाहम्मे । से तं साहम्मोवणीए । प्र० से किं तं वेहम्मोवर्णीए ? उ० वेहम्मोवणीए तिविहे पर्णत्ते, तं जहा---१ किंचिवेहम्से २ पायवेहम्मे ३ सन्ववेहम्मे । प्र० से किं तं किंचिवेहम्मे ? उ० किचिवेहम्मे-जहा सामलेरो न तहा बाहुलेरो, जहा बाहुलेरो न तहा सामलेरो, से चं किंचिवेहम्मे। प्र० से किं तं पायवेहम्मे ? उ० पायवेहम्मे- जहा वायसो न तहा पायसो

जहा पायसो न तहा वायसो,

से तं पायवेहम्मे।

प्र० से कि तं सन्वर्वहम्मे १
उ० सन्ववेहम्मे श्रोवम्मे णित्थ,
तहावि तेणेव तस्स श्रोवम्मं कीरइ, जहा—
णीएणं णीत्रसरिसं कयं
दासेणं दाससरिसं कयं
काकेणं काकसरिसं कयं
साणेणं साणसरिसं कयं
पाणेणं पाणसरिसं कयं
से तं सन्ववेहम्मे ।
से तं वेहम्मोवणीए।
से तं श्रोवम्मे ।

प्र॰ से किं तं श्रागमे ? उ॰ श्रागमे दुविहे पएगत्ते, तं जहा— १ लोइए श्र २ लोउत्तरिए श्र।

प्र० से किं तं लोइए ?
उ० लोइए-जं गां इमं अगणागिएहिं
मिच्छादिष्टिएहिं सच्छंदबुद्धिमइविगिष्पयं,
तं जहा—
भारहं रामायगां ''जाव' 'चत्तारि वेआ संगोयंगां।
से तं लोइए श्रागमे।

प्र॰ से किं तं लोउत्तरिए ? उ॰ लोउत्तरिए-जं गां इमं अरिंहंतेहिं भगवंतेहिं उप्परण-णागादंसगाधरेहिं तीय-पच्चुप्पणमणागयजागाएहिं

र ४४७.

तिलुक्कविद्य महित्र-पूर्एहिं, सन्वर्गाहिं सन्वद्रिसीहिं प्राण्यिं दुवालसंगं गणिपिंडगं, तं जहा—

श्रायारों जाव दिद्विचात्रों।
श्रहवा त्रागमे तिविहे प्राण्ये,
तं जहा—
१ सुत्रागमे २ श्रत्थागमे ३ तदुम्यागमे।
श्रहवा—श्रागमे तिविहे प्राण्ये;
तं जहा—

तं जहा— १ अत्तागमे २ अणंतरागमे ३ परंपरागमे । तित्थगराणं अत्थस्स अत्तागमे, गणहराणं सुत्तस्स अत्तागमे, अत्थस्स अणंतरागमे, गणहरसीसाणं सुत्तस्स अणंतरागमे, अत्थस्स परंपरागमे।

तेण परं सुत्तस्स वि अत्थस्स वि गो अत्तागमे,

परंपरागमे । से त्तं त्रागमे । से त्तं णाणगुगुप्पमागो ।

प्र०-से किं तं दंसगागुगाप्यमागो ?

णो अणंतरागमे,

उ० दंसग्रग्णपमागे चडिन्वहे प्रणत्ते, तं जहा— १ चक्खुदंसण्गुणपमागे २ श्रचक्खुदंसण्गुणपमागे ३ श्रोहिदंसण्गुणपमागे ४ केवलदंसणगुणप्याणे ।
चक्खुदंसणं चक्खुदंसणिस्स घडपडकडरहाइएस दन्वेस,
अचक्खुदंसणं अचक्खुदंसणिस्स आयमावे,
ओहिदंसणं ओहिदंसणिस्स सन्वरूविदन्वेसु—
न पुण सन्वपज्जवेसु,
केवलदंसणं केवलदंसणिस्स
सन्वदन्वेसु अ—सन्वपज्जवेसु आ।
से तं दंसणगुणप्यमाणे ।

प्र० से कि तं चरित्त-गुगाप्यमागे ? उ० चरित्त-गुगाप्यमागे पंचिवहे पएगात्ते, तं जहा—

१ सामाइअ-चरित्त-गुगप्पमागौ

२ छेत्रोवद्वावण-चरित्त-गुणपमागो ३ परिहार विसुद्धिश्र-चरित्त-गुणपमागो

४ सुहुमसंपराय चरित्त-गुगाप्यमागो

५ अहक्खाय चरित्त-गुगाप्यभागो । (१) सामाइअ-चरित्त-गुगाप्यमागो दुविहे पर्गात्ते,

तं जहा— १ इत्तरिए अ २ त्रावकहिए अ।

(२) छेत्रोवद्वावण-चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे परण्ते,

तं जहा—

१ साइश्रारे अ २ निरइआरे अ।

(३) परिहार विसुद्धिश्र-चरित्त-गुग्यपमाग्ये दुविहे पग्यात्ते,

तं जहा---

१ गिव्विसमागए अ २ गिविट्ठकाइए अ।

ाणद्वारम् (४) सुहुमसंपराय-चरित्त-गुगाप्पहागो दुविहे परगाचे,

तं जहा-

तं जहा-

पिडवाई स्र, त्रपिडवाई स्र। तं जहा-

१ पिंडवाई स्र २ त्रपिंडवाई स्र।

तं जहा-१ छउमत्थिए अ २ केवलिए य। से तं चरित्त-गुग्णपमाग्।

से तं जीवगुणप्पमाणे से त्तं गुणपमाणे। सु०-१४५ प्र० से किं तं नयप्पमागो ?

तं जहा-१ पत्थगदिइंतेगां २ वसहिदि हंते एां ३ पएसदिइंतेगां।

> प्र० से किं तं पत्थगदिद्वंतेणं ? उ० पत्थगदिद्वंतेणां—

१ संकिलिस्समागए य २ विसुज्कमागए य। श्रहवा-सुहुमसंपरायचरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पएण्ते,

(५) श्रहक्खाय चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पराणत्ते,

श्रहवा-श्रहक्खाय चरित्त-गुणप्पमाणे दुविहे पएण्ते,

उ० नयप्पमाणे तिविहे पराणत्ते,

[उपक्रमाधिकारः प्रमाणद्वारम्

त्र**शुत्रीगदा**रसुत्तं

से जहागामए केई पुरिसे परसुं गहाय अडविसमहुत्तो-गच्छेज्जा, तं पासित्ता केई वएज्जा-'किहं भवं गच्छिसि १' अविसुद्धो नेगमो भण्ड्-''पत्थगस्स गच्छामि।'' तं च केई छिंदमाणं पासित्ता वएज्जा-'किं भवं छिंदसि' ? विसुद्धो गोगमो भगाइ-'पत्थयं छिदामि'।

xx0]

तं च केई तच्छमारां पासित्ता वएज्जा—'किं भवं तच्छसि' ? विसुद्धतरात्रो गोगमो भगाइ-'पत्थयं तच्छामि'। तं च केइ उक्कीरमाणां पासित्ता वएज्जा-'किं भवं उक्कीरसि'? विसुद्धतरात्रो गोगमो भणइ-'पत्थयं उक्कीरामि'।

एवं विसुद्धतरस्स गोगमस्स नामाउडिश्रो पत्थश्रो। एवमेव ववहारस्स वि। संगहस्स चियमियमेज्जसमारूढो पत्थन्रो । उन्जुसुयस्स पत्थत्रो वि पत्थत्रो, मेन्जंपि पत्थत्रो । तिएहं सद्दनयाणं पत्थयस्स अत्थाहिगारजाणुत्रो जस्स वा वसेगां पत्थन्त्रो निष्फज्जइ। से तं पत्थयदि इंतेशं।

प्र० से कि वसहिदिद्वंतेगां ? उ० वसहिदिहंतेगां— से जहानामए केई पुरिसे कंचि पुरिसं वएनजा-

'कहिं भवं वससि १' तं अविसुद्धो गोगमो भगइ— 'लोगे वसामि।'

तं च केइ विलिहमाणां पासित्ता वएजा-'किं भवं विलिहसि'? विंसुद्धतरात्रो गोगमो भगाइ-'पत्थयं विलिहामि'।

ंश्रशुत्रोगदारसुत्तं

· [' ** \$

ंडपक्रमाधिकारः] ^१'प्रैमाणंद्वारम्

'लोगे तिविहे पएणत्ते, तं जहा---

१ उड्ढलोए २ ऋहोलोए ३ तिरियलोए तेसुसन्वेसु भवं वससि ११

विसुद्धो गोगमो भगाइ— 'तिरिश्रलोए वसामि।'

'तिरिश्रलोए जंबुद्दीवाइश्रा सर्यभूरमणपज्जवसाणा— विसुद्धतरात्रो खेगमो भणइ-

'जम्बुद्दीवे वसामि ।' 'जम्बुद्दीवे दसखेत्ता पएण्ता,

तं जहा-भरहे, एर व ए, हेमवए, एरएणवए, हरिवस्से, रम्मगवस्से, देवकुरु, उत्तरकुरु, पुन्वविदेहे, श्रवरविदेहे तेसु सच्वेसु भवं वसिस १ विसुद्धतरात्रो गोगमो भगाइ—

'मरहे वासे वसामि।' 'भरहे वासे दुविहे पएगाचे, तं जहा-दाहिगाड्ढ भरहे, उत्तरड्ढ भरहे छ।

तेसु *सन्वेसु भवं वससि ?' विसुद्धतरात्रो ग्रोगमो भगाइ-'दाहिगाड्ढे भरहे वसामि।'

श्रसंखिजा दीवसमुद्दा परणत्ता तेसु सन्वेसु भवं वससि १'

*** दोसु**

'दाहिणड्ढमरहे त्रयोगाईं गामागर-ग्गर-खेड-कब्बड-मडंब-दोगाग्रह-पट्टगासमसंवाह-सिएगावेसाई, तेसु सन्वेसु भवं वससि १' विसुद्धतरात्रो गोगमो भगाइ-'पाडलिपुत्ते वसामि।' 'पाडलिपुत्ते श्रणेगाइं गिहाइं, तेसु सन्वेसु भवं वसिस विसुद्धतरात्रो गोगमो भगाइ— 'देवदत्तस्स घरे वसामि'। 'देवदत्तस्स घरे श्रगोगा कोडुगा, तेसु सच्वेसु भवं वसिस ?' विसुद्धतरात्रो गोगमो भगाइ— 'गब्भघरे वसामि'। एवं विसुद्धस्स खेगमस्स वसमाखो । एवमेव ववहारस्स वि। संगहस्स संथारसमारूढो वसइ। उन्जुसुश्रस्स जेसु श्रागासपएसेसु श्रोगाढो तेसु वसइ। तिएहं सद्यायाणां आयमावे वसइ। से तं वसहिदिद्वंतेणं। प्र० से किं तं पएसिद्देंतेगां ? उ० पएसदिद्वंतेगां-गोगमो भगाइ-'छएई पएसो,

तं जहा— धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो, जीवपएसो खंधपएसो देसपएसो।' एवं वयंतं ऐगमं संगहो भगाइ— जं भगसि-छएहं पएसो तं न भवइ कम्हा ? जम्हा जो देसपएसो सो तस्सेव द्व्वस्स । जहा को दिइंतो ? दासेण मे खरो की त्रो, दासो वि मे खरो वि मे, तं मा भणाहि-छएहं पएसो, भणाहि पंचएहं पएसो, तं जहा-धम्मपएसो अधम्मपएसो आगासपएसो, जीवपएसो खंधपएसो।' एवं वयंतं संगहं ववहारो भण्ड्-'जं मणिस पचएहं पएसो, तं न भवइ।' कम्हा ? जइ जहा पंचयहं गोडित्राणं पुरिसाणं केइ दव्वजाए सामण्णे भवइ, तं जहा---हिरएणे वा सुवएणे वा धर्णे वा धर्णे वा तं न ते जुत्तं वत्तुं जहा पंचएहं पएसो तं मा भणाहि-पंचएहं पएसो, भणाहि पंचिवहो पएसो तं जहा---धम्मपएसो श्रधम्मपएसो श्रागासपएसो जीवपएसी खंधपएसी। एवं वयंतं ववहारं उज्जुसुत्रो भगाइ—

'जं भणिस-पंचिवहों पएसो तं न भवइ।'

कम्हा ?

जइ ते पंचिवहो पएसो, एवं ते एक्केक्को पएसो पंचिवहो-एवं ते पगावीसइविहो पएसो भवइ तं मा भणाहि-पंचविहो पएसो, भणाहि-भइयव्वो पएसो-

सिश्र धम्मपएसो, सिश्र श्रधम्मपएसो, सिश्र श्रागासपएसो सित्र जीवपएसो, सित्र खंधपएसो ।' एवं वयंतं-उज्जुसुयं संपइ सद्दनश्रो भगाइ—

'जं भगसि भइयव्वो पएसो तं न भवइ।' 'कम्हा १'

'जइ भइश्रव्वो पएसो एवं ते धम्मपएसो वि-सित्र धम्मपएसो सिय त्रधम्मपएसो सित्र त्रागासपएसो सिय जीवपएसो सित्र खंधपएसो ।

अधम्मपएसो वि सिअ धम्मपएसो " जाव" सिश्र खंधपएसो जीवपएसो वि सिश्र धम्मपएसो "जाव" सिश्र खंधपएसो खंधपएसो वि सित्र धम्मपएसो ''जाव' 'सित्र खंधपएसो

एवं ते श्रग्वतथा भविस्सइ

तं मा भणाहि-भइयव्वो पएसो, भणाहि-धम्मे पएसे से पएसे धम्मे, अहम्मे पएसे से पएसे अहम्मे श्रागासे परसे से परसे श्रागासे

जीवे पएसे से पएसे नोजीवे खंधे पएसे से पएसे नोखंधे।

एवं वयंतं सद्नयं समभिरूढो भण्ड्-'जं भणसि-धम्मपएसे से पएसे धम्मे' 'जाव' ''

जीवे पएसे से पएसे नो जीवे खंधे पएसे से पएसे नोखंधे तं न भवह।' उपक्रमाधिकारः] **अगुओगदार**मुत्तं *<u>488</u>* प्रमाणद्वारम् कम्हा ? इत्थं खलु दो समासा भवंति, तं जहा-१ तप्पुरिसे अ २ कम्मधारए अ। तं ण गाजाइ कयरेणां समासेणां भगासि ? किं तप्पुरिसेगां, किं कम्मधारएगां ? जइ तप्पुरिसेणं भणिस तो मा एवं भणाहि, श्रह कम्मधारएणं भणिस तो विर्सेसश्रो भणाहि— धम्मे अ से पएसे अ से पएसे धम्मे, श्रधम्मे श्र से पएसे श्र से पएसे श्रहम्मे, त्रागासे अ से पएसे अ से पएसे आगासे, जीवे अ से पएसे अ से पएसे नो जीवे, खंधे अ से पएसे अ से पएसे नो खंधे।' एवं वयंतं समभिरूढं संपइ एवंभूत्रो भण्ड-'जं जं भणसि तं तं सन्वं कसिगां पडिपुएगां निरवसेसं एगगह्णगहियं देसे वि मे अवत्थू , पएसे वि मे अवत्थू। ं से तं पएसदिइंतेणं। से तं नयपमागो। सु०-१४६ प्र० से किं तं संखपमाणे १ उ० संखपमाणे अट्टविहे पराण्ते, तं जहा-

१ गामसंखा २ ठवगासंखा

३ दन्वसंखा ४ श्रोवम्मसंखा

५ परिमाणसंखा ६ जागणासंखा

७ गगगासंखा = भावसंखा |

अगुअीगदारसुत्तं **डिपक्रमाधिकारः ४**४६] प्रमाणद्वारम

उ० नामसंखा-जस्स गं जीवस्स वा ** * जाव ***

से चं गामसंखा। प्र० से किं तं ठवणासंखा ? उ० ठवणासंखा-जं णं कहकम्मे वा पोत्थकम्मे वा ' * * अजाव' से तं ठवणासंखा।

प्रव नामठवणाणां को पइविसेसो १ उ० नामं त्रावकहित्रं, ठवणा इत्तरिया वा होज्जा;

प्र० से किं तं नामसंखा ?

श्रावकहिश्रा वा होज्जा। प्र० से किं तं दव्वसंखा ? उ० दन्वसंखा द्विहा पराण्ता,

तं जहा-

तं जहा-१ एगभविए २ वद्धाउए ३ श्रभिमुहणामगोत्ते श्र ।

* देखो सूत्र नं ० ६ * देखो सूत्र नं ० १० । क्ष देखां सूत्र नं ० १३ से १७ तक।

१ श्रागमश्रो य २ नो त्रागमश्रो य । * * * जाव * * * प्र० से कि तं जाण्यसरीर-भवित्र्यसरीरवइरित्ता दव्वसंखा ? उ० जाणयसरीरभवित्रसरीरवइरित्ता दव्वसंखा तिविहा पएणता,

प्र॰ एगमविए गां भंते! 'एगमविए' त्ति कालुओ केवचिरं होइ ? उ० जहएणेणं श्रंतोग्रहुत्तं, उक्कोसेणं पुन्वकोडी। प्र॰ वद्वाउएएं भंते! 'बद्घाउए' ति काल्यो केवचिरं होइ ?

उ० जहराणेणं श्रंतोम्रहुत्तं, उक्कोसेणं पुन्वकोडीतिभागं।

प्र० श्रिमग्रहनामगोत्तं गां भंते ! 'श्रिमग्रहनामगोए' ति कालश्रो केवचिरं होइ ? उ० जहएग्रेगं एक्कं समयं, उक्कोसेगं श्रंतोग्रहुत्तं ।

उ० जहएणेणं एक्कं समयं, उक्कोसेणं श्रंतोग्रहुत्तं।
प्र० इयाणीं को नश्रो कं संखं इच्छइ ?
उ० तत्थ णेगम-संगह-ववहारा तिविहं संखं इच्छंति,
तं जहा—
१ एगभविश्रं २ बद्धाउयं ३ श्रभिग्रहनामगोत्तं च।
उज्ज्रसुश्रो दुविहं संखं इच्छइ,
तं जहा—
१ बद्धाउयं च २ श्रभिग्रह नामगोत्तं च।
तिरिण सहणया श्रभिग्रहनामगोत्तं संखं इच्छंति।
से त्तं जाणयसरीर-भविश्रसरीर वहरित्ता दव्वसंखा।
से त्तं नो श्रागमश्रो दव्वसंखा।
से त्तं दव्वसंखा।

प्र० से किं तं श्रोवम्मसंखा ? उ० श्रोवम्मसंखा चउन्विहा पएगात्ता,

तं जहा---

२ श्रित्थ संतय श्रसंतएणं उविभन्जइ ३ श्रित्थ श्रसंतयं संतएणं उविभन्जइ ४ श्रित्थ श्रसंतयं श्रसंतएणं उविभन्जइ । तत्थ संतयं संतएणं उविभन्जइ जहा—संता श्रिरहंता संतएहिं पुरवरेहिं संतएहिं कवाडेहिं संतएहिं वच्छेहिं उविभन्जइ,

१ श्रत्थि संतयं संतएगां उविमन्जइ

तं जहा --

सिरिवच्छंकित्र वच्छा, सच्वे वि जिणा चउव्वीसं ॥१॥

श्रसंतएहिं पलिश्रोवम सागरोवमेहिं उविमन्जंति ।

श्रसंतयं संतएगं उविमन्जइ,

गाहात्रो- परिजूरित्रपेरंतं, चलंतविटं पडंतनिच्छीरं।

पत्तं व वसण्पत्तं, कालप्पत्तं भण्इ गाहं ॥१॥ जह तुन्भे तह श्रम्हे, तुम्हे वि श्रहोहिहा जहा श्रम्हे।

अप्पाहेइ पर्डतं, पंडुअपत्तं किसलयागं ॥२॥ गवि अतिथ गवि अहोहि, उल्लावो किसल-पंडुपत्तागां।

उनमा खलु एस कया, भविश्र-जण-विबोहण्डाए ॥३॥ असंतयं असंतएहिं उनमिज्जइ—

जहा खरविसाणं तहा ससविसाणं ।

प्र० से किं तं परिमाणसंखा ? उ० परिमाणसंखा दुविहा पराण्ता,

१ कालिअ-सुत्र-परिमाणसंखा २ दिद्विवात्र-सुत्र-परिमाणसंखा त्र ।

प्र० से किं तं कालिश्र-सुत्र-परिमाणसंखा ? उ० कालिश्र-सुत्र-परिमाणसंखा श्रगोगविहा पराण्ता,

&&<]

तं जहा-

संतयं श्रसंतएणं उवमिज्जइ जहा-संताइं नेरइ ऋ तिरिक्खजोणि ऋ-मणुस्स-देवाणं आउआई

से चं श्रोवम्मसंखा।

तं जहा-

गाहा- पुरवर-कवाड-वच्छा, फलिहभुत्रा दुंदहि-त्थगित्रयोसा।

तं जहा--पन्जवसंखा श्रवखरसंखा संघायसंखा

पयसंखा पायसंखा गाहासंखा सिलोगसंखा वेढसंखा निन्जुत्रिसंखा त्रगुत्रोगदारसंखा उद्देसगसंखा अन्भयंणसंखा

सुत्रखंधसंखा श्रंगसंखा। से तं कालिश्र-सुत्र-परिमाणसंखा।

प्र० से किं तं दिद्विवाय-सुत्र्य-परिमाणसंखा ? उ० दिद्विवाय-सुत्र-परिमाणसंखा त्रणेगविहा परणत्ता, तं जहा---

वत्थुसंखा ।

से चं परिमाणसंखा। प्र० से किं तं जाणणासंखा ? उ० जागगासंखा-जो जं जागइ,

तं जहा-

वेज्जयं वेज्जो। से तं जाग्गगासंखा।

प्र॰ से कि तं गण्णासंखा ? ं उर्व गर्णणासंखा-एको गर्णणं न उनेइ,

पन्जवसंखा ' नाव ' ऋणुऋोगदारसंखा पाहुडसंखा पाहुडिश्रासंखा पाहुडपाहुडिश्रासंखा से त्तं दिद्विवाय-सुत्र-परिमाणसंखा।

सदं सिद्त्रो, गिणयं गिण्त्रो निमित्तं नेमित्तिश्रो, कालं कालणाणी

दुप्पभिइ संखा तं जहा— संखेज्जए श्रसंखेज्जए श्रगंतए। प्र० से किं तं संखेज्जए ?

प्र० से किं तं असंखेज्जए ?

उ० संखेज्जए तिविहे पर्यणचे, तं जहा— १ जहरणए २ उक्कोसए ३ अजहरण्यमणुक्कोसए।

उ० त्रसंखेन्जए तिविहे परणत्ते, तं जहा— १ परित्तासंखेजए २ जुत्तासंखेजए ३ त्रसंखेजासंखेजए।

प्र० से किं तं परित्तासंखेज्जए ?
उ० परित्तासंखेज्जए तिविहे पर्यात्ते,
तं जहा—

१ जहएणए २ उक्कोसए ३ अजहएणमणुक्कोसए।
प्र० से किं तं जुत्तासंखेज्जए १
उ० जुत्तासंखेज्जए तिविहे पएण्ते,

तं जहा— १ जहएणए २ उक्कोसए ३ श्रजहएणमणुकोसए ।

प्र॰ से किं तं श्रसंखेन्जासंखेन्जए ?
उ॰ श्रसंखेन्जासंखेन्जए तिविहे पएण्ते,
तं जहा—

१ जहएणए २ उक्कोसए ३ अजहएणमणुक्कोसए ।

, श्रगुत्रोगदारसुत्तं

खप्रमाधिकारः] प्रमाणद्वारम्

> प्र० से कि तं अग्रांतए ? उ० अग्रांतए तिविहे प्राग्ते,

त्रणतए।तावह पर्यात्त, तं जहा — १ परिचार्णतए २ द्वाराणंतए ३ त्रणंताणंतए।

प्र ° से कि तं परित्तार्खंतर ? उ० परित्तार्खंतए तिविहे पएखत्ते,

तं जहा— १ जहएसए २ उक्कोसए ३ अजहएसमसुक्कोसए।

प्र० से कि तं जुत्ताशंतए ?
उ० जुत्ताशंतए तिविहे पर्ण्याचे,
तं जहा—
१ जहएणए २ उक्कोसए ३ अजहरण्णमणुक्कोसए।

प्र० से कि तं अर्णतार्णतए ? उ० अर्णतार्णत्वर दुविहे पएराचे,

तं जहा— १ जहएसए १ अजहएसमणुक्कोसए। प्र• जहएसायं संखेन्जयं केवइत्रं होइ ?

उ० दोरूवयं । तेशं षरं अजहराणमणुक्कोसयाई ठाणाई '''जाव''' उक्कोसयं संखेज्जयं न पावइ ।

प्र॰ उक्कोसयं संखेज्जयं केवइश्रं होइ ?
उ॰ उक्कोसयस्स संखेज्जयस्स परूवणं करिस्सामि—
से जहानामए पल्ले सित्रा,
एगं जोयगसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं

तिरिण जोयणसयसहस्साई सोलससहस्साई दोषिण श्र— सत्तावीसे जो अणसए तिषिण अ कोसे, अद्वावीसं च घणुसयं, तेरस य अंगुलाई, अद्धं अंगुलं च किंचि विसेसाहिअं— परिक्खेवेणं परणत्ते, से गं पल्ले सिद्धत्थयाणं भरिए। तत्रो गं तेहिं सिद्धत्थएहिं दीवसम्रहागं उद्धारो घेण्ड। एगे दीवे एगे समुद्दे एवं पिक्खिप्पमाणेणं पिक्खप्पमाणेणं जावइत्रा दीवसमुद्दा तेहिं सिद्धत्थएहिं अप्पुरणा, एस गं एवइए खेचे पल्ले पढमा सलागा। एवइत्राणं सलागाणं असंलप्पा लोगा भरित्रा तहा वि उक्कोसयं संखेज्जयं न पावइ।

प्र॰ जहां को दिइंतो ?

उ० से जहानामए मंचे सिश्रा श्रामलगाएां भरिए
तत्थ एगे श्रामलए पिक्खित्ते से वि माए
श्रएणे वि पिक्खित्ते से वि माए
एवं पिक्खिप्पमाणेएां पिक्खिप्पमाणेएां होहि सेऽवि श्रामलए
जंसि पिक्खित्ते से मंचए भरिन्जिहिइ,
जे तत्थ श्रामलए न माहिइ,
एवामेव उक्कोसए संखेन्जए रूवे पिक्खित्ते

जहराण्यं परित्तासंखेज्जयं भवइ । तेण परं त्रजहराणमणुक्कोसयाइं ठाणाइं जाव ''' उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं न पावइ ।

प्र॰ उक्कोसयं परित्तासंखेन्जयं केवइश्रं होइ ? उ॰ जहरूणयं परित्तासंखेन्जयं जहरूणयं परित्तासंखेन्जयमेतारां

[XER

धगुष्ठींगदारसूर्त उपक्रमाधिकारः] रासीणं श्रवणमयणव्मासो रुवूणो

उक्कोसं परिचासंखेज्जयं होइ। श्रहवा जहन्नयं जुत्तासंखेन्जयं रूवृगां

प्रमाणिद्वारम्

उक्कोसयं परित्तासंखेज्जयं होइ। प्र० जहराण्यं जुत्तासंखेज्जयं केवइत्रं होइ ? उ० जहएग्यपरिचासंखेज्जयमेत्राग्धं रासीयां त्रयग्यम्यग्रन्भासो

पिंदुएगो जहएग्यं जुत्तासंखेन्जयं होइ। श्रहवा उक्कोसए परित्तासंखेज्जए रूवं पिक्खतं जहएण्यं जुत्तासंखेज्जयं होइ। श्रावलिश्रा वि तत्तिश्रा चेव। तेगा परं अजहराणमणुकोसयाइं ठागाई ' जाव' '

उक्कोसयं जुत्तासंखिज्जयं न पावइ। प्र० उक्कोसयं जुत्तासंखेन्जयं केवइश्रं होइ १ 🧸 ५० जहएणएणं जुत्तासंखेन्जएएां श्रावलित्रा गुणित्रा अएगमएग्वभासो रुवृग्गो उक्कोसयं जुनासंखेअयं होइ।

अहवा जहएण्यं असंखेन्जासंखेन्जयं रूवृगां उक्कोसयं जुत्तासंखेज्जयं होइ । प्र० जहराग्यं असंखेज्जासंखेज्जयं केवइं होइ ? उ० जहएगएएगं जुत्तासंखेन्जएगं त्रावलिश्रा गुगिश्रा

त्र्यग्रमण्याब्भासो पहिपुण्यो [.] जहएस्यं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ। श्रहवा उक्कोसए जुत्तासंखेज्जए रूवं पविख्तं जहएण्यं असंस्वेन्जासंखेन्जयं होइ। ते**ण परं अजहरागमणुकोसयाई** ठाणाई''' जाव ''' उक्कोसयं असंखेजनासंखेजनयं गा पावइ।

प्रदेश । श्राणुश्रीगदारसुत्तं [प्रक्रमाधिकारः प्रमाणद्वारम् । प्रमाणद्वारम् । प्रमाणद्वारम् । प्रव उक्कोसयं असंखेज्जासंखेज्जयं केव्ह्श्रं होह ? उ० जहएण्यं असंखेज्जासंखेज्जयमेत्ताणं रासीणं श्रासीणं श्रासीणं श्रासीणं श्रासीणं श्रासीणं श्रासीणं श्रासीणं । श्रासीणं श्रासीणं स्वृणो उक्कोसयं श्रासंखेजासंखेजयं होह ।

श्रहवा जहराणयं परित्तारांतयं रुवूर्णं उक्कोस्यं असंखेज्जासंखेज्जयं होइ । प्र० जहएण्यं परिचार्णातयं केवइऋं होइ १ उ० जहएण्यं असंखेज्जासंखेज्जयमेत्ताणं रासीणां श्रएगमएग्रन्मासो पिडपुएगो जहएग्रयं परित्राग्रंतयं होइ। श्रहवा उक्कोसए श्रसंखेन्जासंखेन्जए रूवं पिक्खतं जहएण्यं परित्राणंतयं होइ। तेण परं श्रजहएण्मणुकोसयाई ठासाइं ' 'जाव ' ' उक्कोसयं परित्तार्गातयं ण पावइ । प्र० उक्कोसयं परित्तागांतयं केवइश्रं होइ ? उ० जहराग्यपरित्तागंतयमेत्तागं रासीगं अरागमराग्वभासो ः रुवृग्गो उक्कोसयं परित्तार्गतयं होइ । श्रहवा जहरायायं जुत्तार्यातयं रूवूर्णं उक्कोसयं प्रितार्णातयं होइ। प्र० जहराण्यं जुनार्गतयं केवइत्रं होइ ?

श्रहवा जहरण्यं जुत्तागंतयं रुवृणं उक्कोसयं परिताणंतयं होइ।
प्र० जहरण्यं जुत्तागंतयं केवइश्रं होइ ?
उ० जहरण्यपरित्ताणंतयमेत्ताणं रासीणं श्ररण्यमरण्डमासो
पिडपुरणो जहरण्यं जुत्ताणंतयं होइ,
श्रहवा उक्कोसए परित्तागंतए रुवं पिक्खतं
जहरण्यं जुत्ताणंतयं होइ।
श्रमविद्यद्विश्रा वि तित्वश्रा होति।
तेण परं श्रजहरण्णमणुक्कोसयाई ठाणाई…जावः
उक्कोसयं जुत्ताणंतयं ण् पावइ।

- 155

[४६४ उपक्रमाधिकारः] **श्रुग्रागदारसुत्तं** वक्तव्यताद्वारम् प्र० उक्कोसयं जुत्तार्णतयं केवइत्रं होइ ? 🕟 उ० जहराण्यणं जुत्ताणंतएणं अभवसिद्धिआ गुणिया-ष्यएग्यमएग्यन्मासी रुवृणो उक्कोसयं जुत्ताखंतयं होइ। श्रहवा जहराग्यं श्रगंतागंतयं रुवृगां उक्कोसयं जुत्तागंतयं होइ। प्र॰ जहराग्यं श्रगंतागांतयं केवइश्रं होइ ? उ० जहरागएरां जुत्तारांतएरां अभवसिद्धिया गुगिया श्रवग्रमव्ग्रह्मासो पिडपुव्यो जहव्यायं श्रवांतायांतयं होइ। श्रहवा उक्कोसए जुत्ताएांतए रूवं पिक्खत्तं जहएण्यं अ्रणंताएांतयं होइ। तेगा परं अजहरग्णमणुककोसयाई ठाणाई। से तं गणणासंखा। प्र० से किं तं भावसंखा ? उं० भावसंखा-जे इमे जीवा संखगइनामगोत्ताई कम्माई वेदेंति, से तं भावसंखा। से चं संखापमाणे। से तं भावप्पमाणे। से चं पमाय। पमाणे ति पयं समत्तं। सु०-१४७ प्र० से किं तं वत्तव्वया ? उ० वचन्वया तिविहा पएण्चा,

तं जहा---१ सममयवत्तव्वया २ परसमयवत्तव्यया

३ ससमय-परसमयवत्तव्वया ।

प्र० से कि तं ससमयवत्तव्वया ?
उ० ससमयवत्तव्या—जत्थ गां ससमए
ग्राधित जह, परणित जह पर्विजह
दंसि जह निदंसि जह उवदंसि जह,
से तं ससमयवत्तव्या।

प्र. से किं तं परसमयवत्तव्वया ? उ॰ परसमयवत्तव्वया—जत्थ एां परसमए श्राधविज्ञइः जावः उवदंसिज्जइ, से त्तं परसमयवत्तव्वया।

्प्र० से कि तं ससमय-परसमयवत्तव्वया ?
उ० ससमय-परसमयवत्तव्वया—ज्ञत्थ एां
ससमए परसमए श्राघविज्जइ ' ' जाव' ' ' उवदंसिज्जइ,
से तं ससमय-परसमयवत्तव्वया।

प्र॰ इत्राणीं को ग्रन्थों कं वत्तन्वयं इच्छइ ? उ॰ तत्थ ग्रेगम-संगह-ववहारा तिविहं वत्तन्वयं इच्छंति, तं जहा— १ ससमयवत्तन्वयं २ परसमयवत्तन्वयं

३ ससमय-प्रसमयवत्तव्वयं । उज्जुसुत्रो दुविहं वत्तव्वयं इच्छइ, तं जहा—

१ ससमयवत्तव्वयं २ परसमयवत्तव्वयं । तत्थ यां जा सा ससमयवत्तव्वया सा ससमयं पविद्वा, जा सा परसमयवत्तव्वया सा परसमयं पविद्वा । तम्हा दुविहा वत्तव्वया, नित्थ तिविहा वत्तव्वया ।

[* KEO त्र**गुत्रोगदार**मुत्तं उपक्रमाधिकार्!] श्रर्थद्वारम्, समवतारद्वारम् तिरिशा सद्दशया एगं ससमयवत्तव्वयं इच्छंति, नित्थ परसमयवत्तव्यया । कम्हा १ जम्हा परसमए अगाट्टे अहेऊ असब्भावे अकिरिए उम्मगे अणुवएसे मिच्छादंसग्मितिकडु । तम्हा सच्वा संसमयवन्तव्वया णत्थि परसमयवत्तव्वया, णत्थि ससमय-परसमयवत्तव्वया। से तं वत्तव्वया। सु०-१४८ प्र० से किं तं अत्थाहिगारे ः १ उ० अत्थाहिगारे-जो जस्स अज्भावणस्स अत्थाहिगारो तं जहा--गाहा-सावज्जजोगविरई, उक्किन्गण गुणवश्रो य पडिवत्ती। खलियस्स निंदणा, वणतिर्गिच्छ गुणधारणा चेव ॥१॥ से नं अत्थाहिगारे। सु०-१४६ प्र० से किं तं समोत्रारे ? उ० समोत्रारे छव्विहे पएण्रो, तं जहा-१ णामसमोत्रारे २ ठवणासमोत्रारे ३ दव्यसमोत्रारे ४ खेशसमोत्रारे ४ कालसमोत्रारे ६ भावसमोत्रारे। गामठवणात्रो पुर्वं विष्णत्रात्रोः जावः से त्तं भवित्रप्तरीरदव्वसमीत्रारे। प्रवास कि तं जाण्य-सरीर भविश्रसरीरवइरिने द्व्वसमोश्रारे १ उ० जाग्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्ते द्व्वसमोश्रारे तिविहे पर्णते तं जहा--

१ आयसमोश्रारे २ परसमोश्रारे

३ तदुभयसमोत्रारे।

सन्वदन्या वि एां त्रायसमोत्रारेणं त्रायभावे समोत्ररंति परसमोत्रारेणं जहा कुंडे वदराणि ।

तदुभयसमोत्रारे जहा घरे खंभो श्रायभावे छ,

जहा घडे गीवा श्रायभावे श्र । श्रहवा जाग्यसरीर-मवियसरीरवइरिसे दन्वसमीश्रारे—

तं जहा---

दुविहें पराणत्ते,

श्रायसमोत्रारे श्र, तदुमयसमोत्रारे श्र ।

चउसद्वित्रा श्रायसमोत्रारेणं श्रायभावे समोयरइ, तदुभयसमोत्रारेसं वत्तीसित्राए समोत्ररइ श्रायभावे य ।

वत्तीसित्रा श्रायसमोत्रारेणं श्रायभावे समोयरह, तदुमयसमोत्रारेणं सोलसियाए समीयरइ श्रायभावे य ।

सोलसिया श्रायसमोत्रारेणं श्रायभावे समोश्ररइ, तदुमयसमोत्रारेणं श्रद्धभाइश्राए समोश्ररइ श्रायभावे श्र ।

श्रहभाइत्रा श्रायसमोत्रारेगां श्रायमावे तमोश्ररइ, तदुभयसमोत्रारेगां चडभाइयाए समोत्ररइ श्रायभावे श्र ।

चडभाइया त्रायसमीत्रारेणं त्रायभावे समोत्ररह, तदुभयसमोत्रारेणं त्रद्धमाणीए समोत्ररह त्रायभावे स्र।

श्रद्धमाणी श्रायसमोत्रारेणं श्रायभावे समोत्ररह, तदुभयसमोत्रारेणं माणीए समोत्ररह श्रायमावे श्र । **अगुञ्जोगदार**सुत्तं

ि ४६६ **उपक्रमाधिकारः**] समतवारद्वारम् से तं जाणयसरीर-भवित्रसरीरवइरित्ते दुव्वसमीत्रारे। से तं नो श्रागमश्रो दव्वसमोश्रारे। से तं दन्वसमोत्रारे। प्र० से किं तं खेलसमोत्रारे ?

ं उ० खेत्तसमोत्रारे दुविहे परग्ति, तं जहा-

आयसमोत्रारे अ, तदुभयसमोत्रारे अ। भरहे वासे आयममोयारेणं आयभावे समोअरइ, तदुभयसमोत्रारेगां, जंबुद्दीवे समोत्ररइ श्रायभावे श्र ।

जंबुद्दीवे आयसमोयारेणं आयभावे समोश्ररइ, तद्भयसमोत्रारेणं तिरियलोए समोयरइ श्रायभावे श्र । तिरियलोए श्रायसमोत्रारेणं श्रायभावे समोश्ररइ, तदुभयसमोत्रारेशं लोए समोत्ररह आर्यभावे अय। से चं खेत्तसमोत्रारे।

प्र॰ से किं तं कालसमोत्रारे ? उ० कालसमोत्रारे दुविहे प्रायत्ते, तं जहा---श्रायसमोत्रारे श्र, तदुभयसमोत्रारे श्र ।

समए त्रायसमोत्रारेणं त्रायभावे समोयरइ, तद्भयसमोत्रारेगं त्रावलियाए समोयरइ श्रायभावे य।

 ^{*} लोए श्रायसमोत्रारेगां श्रायभावे समोयंरइ । तदुभयसमोश्रारेणं श्रलोए समोयरइ श्रायभावे श्र । इत्यधिकम् प्रत्यन्तरे ।

एवमाणापाण् थोवे लवे मुहुत्ते ऋहोरत्ते पक्खे मासे उऊ श्रयगो संवच्छरे जुगे वाससए वाससहस्से वाससयसहस्से पुन्वंगे पुन्वे तुडियंगे तुडिए 'ग्रडडंगे ग्रडडे त्रववंगे ग्रववे हृहूश्रंगे हृहूए उपलंगे उपले पडमंगे पडमे गलिएंगे गलिए अत्थनिउरंगे अत्थनिउरे अउसंगे अउए नउत्रंगे नउए पउत्रंगे पउए चूलित्रंगे चूलित्रा' सीसपहेलियांगे सीसपहेलिया पलिख्रोवमे सागरोवमे-त्रायसमोत्रारेणं श्रायभावे समोयरइ तदुभयसमोत्रारेणं त्रोसपिणी-उस्सपिणीसु समोयरइ श्रायभावे श्र । श्रोसपिगी-उस्सपिगीश्रो श्रायसमोत्रारेगं श्रायभावे समीयरंति. तदुभयसमोत्रारेणं पोग्गलपरित्रहे समोयरंति त्रायभावे त्र। पोग्गलपरिश्रद्धे श्रायसमोत्रारेणं श्रायभावे समोयरइ, तदुभयसमोयारेणं तीतद्धा-त्रणागतद्धासु समोत्ररह । तीतद्धा-श्रणागतद्धाउ श्रायसमीयारेणं श्रायभावे समोत्ररंति तदुभयसमोत्रारेणं सन्वद्धाए समोयरंति श्रायभावे श्र । से तं कालसमोत्रारे।

प्र॰ से किं तं भावसमोत्रारे ? उ॰ भावसमोत्रारे दुविहे पएण्ते, तं जहा—

त्रायसमोत्रारे च तदुभयसमोत्रारे य।

श्रद्वकम्मपयडीश्रो श्रायसमोश्रारेणं श्रायभावे समोश्ररंति,

तदुभयसमोत्रारेणं छन्विहे भावे समीयरंति श्रायभावे श्र।

जीवे जीवत्थिकाए आयसमोआरेगां आयमावे समोऋरइ,

तदुभयसमोत्रारेणं सञ्बद्च्वेसु समोश्ररइ आयभावे य।

कोहे माणे माया, लोमे रागे य मोहणिक्जे अ।

पगडी भावे जीवे, जीवत्थिकायं द्व्वा य ॥१॥

एवं छन्विहे भावे ।

एत्थ संगहणी गाहा-

से तं भावसमोग्रारे।

उवक्कम इति पढमं दारं।

से तं समोत्रारे।

से सं उवक्कमे।

उ० निक्खेवे तिविहे पएण्ते,

१ श्रोहशिप्फरारो

२ गामनिप्कएग्रो

प्र० से किं तं श्रोहनिप्फरागो ?

३ सुत्तालावगनिष्फएणे ।

उ० ओहनिप्फरागो चउन्विहे पराणत्ते,

तं जहा----

सुं ०-१५० प्र० से किं तं निक्खेंवे १

कोहे श्रायसमोयारेणं श्रायभावे समोश्ररइ, तदुभयसमोत्रारेणं माणे समोत्ररइ त्रायमावे त्र ।

एवं माणे माया लोभे रागे मोहणिडजे।

, तं जहां—

१ अन्भयमो २ अन्भीमो ३ आया ४ खनमा ।

प्र॰ से कि तं अन्भयणे ?

उ० अन्भयगो चडिवहे पएगाचे,

तं जहा---

१ गामन्भयगो २ ठवगान्भयगो

३ दव्वज्यसयमो ४ भावज्यसयमो ।

गाम-ठवगात्रो पुन्वं वरिग्रात्रात्रो ।

प्र० से किं तं द्व्वज्यस्यगो ?

उ० दन्वन्भयणे दुविहे परण्ते,

तं जहा-

१ त्रागमश्रो त्र २ जो त्रागमत्रो य ।

प्र० से किं तं त्रागमत्रो दव्यक्सयणे ?

उ० ञ्रागमञ्जो द्व्वन्भयगो—जस्स गां 'ग्रन्भयगा' ति पयं सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजियं'' क्षजाव'' एवं जावङ्ग्रा त्रगुवउत्ता श्रागमञ्जो तावङ्ग्राई दव्वन्भयगाः

एवमेव ववहारस्स वि।

संगहस्स गां एगो वा अगोगो वा " * अजाव " "

से त्तं त्रागमत्रो दव्वन्भयगे ।

प्र० से किं तं गोत्रागमत्रो दन्वन्सयगे ?

उ॰ गोत्रागमग्रो दव्वजंभयग्रे तिविहे परग्रते,

तं जहा---

^{*} देखो सूत्र नं० १३-१४ * देखो सूत्र नं० १४।

१ जाग्यसरीरदव्यक्क्सयग्रे

२ भवित्रसरीरदव्यज्मयस्

२ नापअसरारप्रभागस्

३ जाणयसरीर-भवित्रसरीरवइरित्ते दव्वज्भयणे ।

प्र० से किं तं जाण्यसरीरद्व्वक्सयणे ?

उ० श्रद्भयग्रपयत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरं

ववगय-चुत्र-चावित्र-चत्तदेहं जीवविष्पजढं "जाव" अहो गां इमेगां सरीर-समुस्सएगां जिगादिहेगां भावेगां

'श्रज्भयणे' ति पयं श्राघवियं जाव जवदं सियं, जहा को दिहुंतो ?

त्रयं घयकुंभे त्रासी, त्रयं महुकुंभे त्रासी, से त्तं जाणयसरीरदव्वज्भयणे।

प्र० से किं तं भवित्रसरीरद्व्वक्क्यणे ?

उ० भविश्रसरीरदव्यज्भयणे—जे जीवे जोणि-जम्मण-निक्खंते इमेणं चेव श्रायत्तएणं सरीरसमुस्सएणं

निक्खत इमण चव आयत्तएण सरारसम्रस्सएण जिर्णादिष्टंतेणं भावेणं 'अन्भवणे' त्ति पयं सेत्रकाले सिक्खिस्सइ न ताव सिक्खइं,

जहा को दिइंती ? अयं महुकूंभे भविस्सइ,

त्रयं घयकुंभे भविस्सइ । से चं भवित्रसरीरदव्वन्भयगो ।

प्र० से किं तं जाग्यसरीर-भिवश्रसरीरवइरित्ते द्व्वक्सयगे ? उ० पत्तयपोत्थयलिहियं, ४७४] त्रशुत्रोगदारसुत्तं [निद्मेपाधिकारः

से तं जाग्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्ते द्व्वन्भयगे।
से तं गो श्रागमश्रो दव्वन्भयगे।
से तं दव्वन्भयगे।

प्र० से किं तं भावन्मयणे ? उ० भावन्मयणे दुविहे परण्चे, तं जहा—

श्रागमश्रो श्र, गो श्रागमश्रो श्र। प्र० से किं तं श्रागमश्रो भावन्भयगे ?

उ॰ त्रागमत्रो भावज्ययम्। से तं त्रागमत्रो भावज्ययम्।

प्र० से किं तं नोत्रागमत्रो भावज्भयणे ?

उ॰ नो-श्रागमश्रो भावन्भयग्ये— गाहा— श्रन्भप्पस्ताण्यगां, कम्मागां श्रवचश्रो उवचित्रागां।

त्रगुवचत्रो त्र नवागं, तम्हा त्रज्यग्मिच्छंति ॥ से तं गो त्रागमत्रो भावज्यगो ।

से त्तं भावन्मयणे । से त्तं श्रज्मयणे ।

प्र० से किं तं श्रक्कीयो ? उ० श्रक्कीयो चउन्विहे पर्यात्ते,

> तं जहा— गामन्भीषो ठवग्रन्भीषो दन्वन्भीषो भावन्भीषो ।

५०वज्माण भावज्माण । नाम-ठवणात्रो पुन्वं वरिणत्रात्रो । प्र० से कि तं दन्वज्मीगो ?
उ० दन्वज्मीगो दुविहे पराग्यत्ते,
तं जहा—
१ श्रागमश्रो य नो श्रागमश्रो य।

प्र० से किं तं श्रागमश्रो द्व्यन्मीयो ? उ० श्रागमश्रो द्व्यन्मीयो-जस्स गां 'श्रन्मीयो' ति प्रयं सिक्खियं जियं मियं परिजियं ' 'जाव' ' से तं श्रागमश्रो द्व्यन्मीयो ।

प्र० से किं तं नो श्रागमश्रो दन्वन्भीणे ?
उ० नो श्रागमश्रो दन्वन्भीणे तिविहे पएण्चे,
तं जहा—
१ जाण्यसरीरदन्वन्भीणे
२ भिवश्रसरीरदन्वन्भीणे
३ जाण्यसरीर भिवश्रसरीर वहरिचे दन्वन्भीणे।
प्र० से किं तं जाण्यसरीरदन्वन्भीणे।

उ० जाण्यसरीरद्व्वच्मीणे—'श्रज्मीण' पयत्थाहियार-जाण्यस्स जं सरीरयं ववगय-चुय-चाविश्र चत्तदेहं जहा द्व्वज्मयण् तहा भाणिश्रव्वं ''जाव'' से तं जाण्यसरीरद्व्वज्मीणे।

प्र० से किं तं भविश्यसरीरद्व्वक्सीणे ? उ० भविश्रसरीरद्व्वक्सीणे—जे जीवे जोणि-जम्मण-निक्खंते जहा दव्वक्सयणे "जाव" से तं भविश्रसरीरद्व्वक्सयणे ।

क्ष देखो सूत्र नं० १३ से १४ तक।

प्र० से किं तं जाण्यसरीर भविश्रसरीर वहरित्ते दव्वज्मीणे। उ० जाग्यसरीर भवित्रसरीर वहरित्ते दव्वक्सीग्रे सच्वागाससेही। से त्रं जाण्यसरीर-भवित्रसरीर वइरित्ते दव्वज्भीणे। से तं नो श्रागमश्रो दव्वज्सीसे। से त्तं दव्यज्कीग्। प्र० से किं तं भावज्भीगे ? उ० भावज्कीयों दुविहे पर्णात्ते, तं जहा-श्रागमश्रो य नो श्रागमश्रो य। प्र॰ से कि तं ज्ञागमज्ञो भावज्की शे ? उ० श्रागमत्रो भावज्भीगो जागाए उवउने। से तं त्रागमत्रो भावन्भीगे। प्र० से किं तं नो श्रागमश्रो भावज्मी थे ? उ० नो श्रागमश्रो भावन्सीग्रे-गाहा- जह दीवा दीवसयं पइप्पइ, दिप्पए अ सो दीवो । 😘 🔑 दीवसया आयरिया, दिष्पंति परं च दीवंति ॥१॥ 🥍 से नं नो त्रागमत्रो भावज्कीगो। ं से नं भावज्कीयो । से चं श्रज्भीगे। प्र० से किं तं श्राए ?

ं उ० श्राएं चंडिनहें- पराग्ते, तं जहा—ः

१ नामाए २ ठवणाए ३ दव्वाए ४ मावाए । नाम-ठवणात्रो पुन्वं भणित्रात्रो । प्र० से किं तं दन्वाए १
उ० दन्वाए दुविहे पएण्ते,
तं जहा—
१ श्रागमश्रो श्र नो श्रागमश्रो श्र ।

प्र० से किं तं आगमओ दब्बाए ?

उ० त्रागमत्रो द्व्वाए-जस्स गं 'त्राए' ति पयं सिक्खियं ठियं जियं मियं परिजियं ' 'जाव' ' कम्हा ?

त्रणुवत्रोगो दन्वमिति कहु । णेगमस्स णं जावइत्रा त्रणुवउत्ता—

श्रागमत्रो तावइत्रा ते द्व्याया "जाव" से तंत्रागमत्रो द्वाए ।

प्र० से कि तं नो श्रागमश्रो दन्वाए ? उ० नो श्रागमश्रो दन्वाए तिविहे परागत्ते, तं जहा—

> जाणयसरीरदव्वाए भित्रसरीरदव्वाए जाणयसरीर-भिवश्रसरीरवइरित्ते दव्वाए ।

प्र॰ से कि तं जाग्यसरीरदच्चाए ? उ॰ जाग्यसरीरदच्चाए—'श्राय' पयत्थाहिगारजाग्यस्स

जं सरीरयं ववगय-चुश्र-चाविश्र चत्तदेहं जहा दव्वज्भवयोः जावः

से त्तं जाग्यसरीरदव्वाए ।

```
प्र० से किं तं भवित्रसरीरद्वाए ?
उ० भवित्रसरीरद्व्वाए-जे जीवे जोशि-जम्मग्र-शिक्खंते
    जहा दव्वज्भयगोः जावः
```

से त्तं भविश्रसरीरद्ववाए ।

प्र० से किं तं जाण्यसरीर-भवित्रसरीरवइरित्ते दन्वाए । उ० जाग्यसरीर-भवित्रसरीरवइरित्ते दघ्वाए तिविहे पएग्रे, तं जहा---

१ लोइए २ कुप्पावयिणए ३ लोगुत्तरिए?

उ० लोइए तिविहे पराणत्ते, तं जहा--१ सचित्ते २ अचित्ते ३ मीसए अ।

प्र० से किं तं सचित्ते ? उ॰ सचित्ते तिविहे पए एपे, तं जहा-

प्र० से किं तं लोइए ?

१ दुपयाणं २ चडप्पयाणं ३ श्रपयाणं । दुपयाणं दासाणं दासीणं

चउप्पयाणं त्रासाणं हत्थीणं अपयाणं श्रंवाणं श्रंवाडगाणं श्राए। से तं सचिते।

प्र० से किं तं श्रचिते ? उ० अचित्ते-सुव्वएग्-रयय-मग्गि-मोत्तिश्र-संख-सिल-

प्यवाल-रत्तरयणाणं संतसावएज्जस्स आए, से मं श्रविरो ।

अगुअोगदारसुत्तं

निचेवाधिकारः]

प्र० से किं तं मीसए ?

उ० मीसए-दासाणं दासीणं त्रासाणं हत्थीणं समामरिश्राउजालंकियाणं त्राए,

से तं मीसए।

से तं लोइए।

प्र० से किं तं कुप्पावयणिए ?

उ० कुप्पावयिषए तिविहे परणत्ते, तं जहा---

१ सचित्ते २ श्रचित्ते ३ मीसए श्र । तिरिख वि जहा लोइए" **जाव से तं मीसए।

से तं क्रुपावयिषए।

प्र॰ से किं तं लोगुत्तरिए ?

उ० सोगुत्तरिए तिविहे पएगात्ते, तं जहा---

> से किं तं सचित्ते ? सचित्ते-सीसाणं सिस्सणित्राणं से तं सचित्ते।

प्र० से किं तं अचित्ते ?

उ० अचित्ते-पडिग्गहागां वत्थागां कंवलागां पायपुंख्यागां आए, से तं अचिते।

30%

१ सिचते २ अचित्ते ३ मीसए अ।

* पृष्ठ ५७८ पंक्ति ६ से पृष्ठ ५७६ पंक्ति ४ तक के समान है।

```
प्र० से किं तं मीसए ?
```

उ० मीसए-सिस्साणं सिस्सणिश्राणं सभएडोवगरणाणं श्राए, से तं मीसए। से तं लोगुत्तरिए।

से तं जाग्यसरीर-भविश्वसरीरवइरित्ते दव्वाए । से तं नो श्रागमश्रो दव्वाए । से तं दव्वाए ।

प्र० से किंतं भावाए ?

उ० भावाए दुविहे पएगात्ते, तं जहा— १ श्रागमश्रो श्र नो श्रागमश्रौ श्र।

प्र० से किं तं श्रागमश्रो भावाए? उ० श्रागमश्रो भावाए जागए उवउत्ते। से तं श्रागमश्रो भावाए।

प्र० से किं तं नो श्रागमश्रो भावाए ?
उ० नो श्रागमश्रो भावाए दुविहे पएण्ते,
तं जहा—
पसत्थे अ श्रपसत्थे श्र ।

प्र० से किं तं पसत्थे ?
उ० पसत्थे तिविहे पर्यण्ते,
तं जहा—
१ णाणाए २ दंसणाए ३ चरित्ताए।
से त्तं पसत्थे।

तिनेपधिकारः] श्रमुश्रीनारायमुत्तं

प्र० से किं तं श्रपसत्थे १

उ० श्रपसत्थे चडिवहे परण्ते,

तं जहा—
१ कोहाए २ माणाए ३ मायाए ४ लोहाए ।
से तं श्रपसत्थे ।
से तं ग्रा श्रामश्रो मावाए ।
से तं श्राए ।
से तं श्राए ।
प्राप्त श्राप ।
प्राप्त श्रम्म श्राम्य ।
प्राप्त श्रम से तं भावाए ।
प्राप्त श्रम से तं भावाए ।
प्राप्त श्रम से तं भवणा १

उ० भवणा चडिवहा परणता, तं जहा— १ णामन्भवणा २ ठवणन्भवणा ३ दव्वन्भवणा ४ भावन्भवणा। नाम-ठवणात्रो पुर्वं भिण्ठात्रो।

प्र० से किं तं द्व्वज्भवणा ?

उ० दन्त्रज्यत्या दुविहा पर्यात्ता, तं जहा— १ त्रागमञ्जो त्र २ नो त्रागमञ्जो त्र । प्र० से किं तं त्रागमञ्जो दन्त्रज्यत्या ?

उ० श्रागमञ्जो द्व्यन्भवणा—जस्स णं 'भवणे' ति पर्यं सिक्ख्यं ठियं जियं मियं परिजिञ्जं ' 'जाव' ' से तं श्रागमञ्जो द्व्यन्भवणा ।
प्र० से किं तं नो श्रागमञ्जो द्व्यन्भवणा ?

उ॰ नो आगमुत्रो दन्वन्भवणा तिविहा पएण्ता,

तं जहा-

१ जाणयसरीरद्व्वज्भवणा २ भवित्रसरीरदव्वन्भवणा

३ जाग्यसरीर-भवित्रसरीरवइरित्ता दव्वन्भवगा।

प्र० से किं तं जाणयसरीरद्व्वज्भवणा १

उ० 'सवणा' पयत्थाहिगारजाणयस्स जं सरीरयं ववगय-चुत्र-चाविय-चत्तदेहं

सेसं जहा दव्वज्भवरो। ' 'जाव' ' से नं जाग्यसरीरदव्वज्भवगा।

प्र० से किं तं भविश्रसरीरद्व्वन्भवणा ? उ० जे जीवे जोगि-जम्मग्-शिक्खंते

> सेसं जहा दव्वज्भययो ' जाव''' से नं भवित्रसरीरदव्वज्भवणा।

प्र० से किं तं जाण्यसरीर-भवित्रसरीरवइरित्ता द्व्वज्भवणा उ० जहा जाण्यसरीर-भविश्रसरीरवइरित्ते द्व्वाए

तहा भागित्र्यन्वा "जाव"

से तं मीसित्रा। से तं लोगुत्तरित्रा।

से तं जाण्यसरीर-भवित्रसरीरवइरित्ता दव्वज्भवणा। से तं नो श्रागमश्रो दन्वन्भवगा।

से तं दव्यज्भवणा।

प्र॰ से किं तं भावज्भवणा ? ड॰ भावज्मत्या दुविहा पर्यासा, तं जहा—

१ त्रागमञ्जो स्र २ गोस्रागमस्रो स्र।

प्र० से किं तं त्रागमत्रो भावज्भवणा ?

उ० त्रागमत्रो भावज्भवणा—जागए उवउत्ते। से तं त्रागमत्रो भावज्भवणा।

प्र० से किं तं गोत्रागमत्रो भावन्भवगा ? उ० गोत्रागमत्रो भावन्भवणा दुविहा पएगात्ता, तं जहा— पसत्था य त्रपसत्था य ।

प्र० से किं तं पसत्था ?
उ० पसत्था तिविहा पर्ण्या,
तं जहा—
१ नागज्भवणा

३ चरित्तडमत्वणा । से त्तं पसत्था । प्र० से किं तं अपसत्था ?

२ दंसग्राज्भवगा

तं नहा— १ कोहन्भवणा २ माणन्भवणा ३ मायन्भवणा ४ लोहन्भवणा। से तं त्रपसत्था।

से तं नो श्रागमश्रो भावज्यवणा ।

उ० अपसत्था चउन्विहा पराग्ता,

से तं भावन्भवणा। से तं भवणा। से तं श्रोहनिष्फएगो । प्र॰ से किं तं नामनिष्फएणे ? उ० नामनिष्फरागे सामाइए। से समासत्रो चउव्विहे पएण्चे, तं जहा--१ गामसामाइए २ ठवणासामाइए ३ दन्वसामाइए ४ भावसामाइए। गामठवगात्रो पुन्वं भगित्रात्रो । दव्वसामाइए वि तहेव "जाव" से तं भविश्रसरीरदव्वसामाइए। प्र० से किं तं जाण्यसरीर-भवित्रसरीरवइरित्ते दव्वसामाइए ? उ० पत्तयपोत्थयत्तिहियं, से तं जाण्यसरीर-भवित्रसरीरवइरित्ते दव्वसामाइए। से तं गो आगमओ दन्वसामाइए। से तं दव्वसामाइए। प्र॰ से किं तं भावसामाइए ? उ० भावसामाइए दुविहे पएण्ते, तं जहा---१ त्रागमत्रो च ३ नो त्रागमत्रो स्र ।

प्र॰ से किं तं श्रागमश्रो भावसामाइए ? उ॰ श्रागमश्रो भावसामाइए जागए उवउत्ते, से तं श्रागमश्रो भावसामाइए । निचेपाधिकारः]

प्र० से किं तं नो आगमंत्री भावसामाइए १. उं ं नो त्रागमत्री भावसामाइए-

गाहाओ- जस्स सामाणिओ अप्पा, संजमे शिअमे तवे।

सामाइत्रं होइ, इइ केवलिमासित्रं ॥१॥ तस्स

समो सन्वभूएसु, तसेसु थावरेसु अ

सामाइयं होइ, इइ केवलिभासियं ॥२॥

जह मम गो पिश्रं दुक्खं, जागिश्र एमेव सन्वजीवागां।

न हणइ न हणावेइ अ, सममण्ड तेगा सो समणो ॥३॥

णित्थ य सि कोइ वेसो, पिंत्रो स्र सन्वेसु चेव जीवेसु। एएण होइ समणो, एसो अनोऽवि पन्नाओ ॥४॥

से तं नो आगमओ भावसामाइए से तं भावसामाइए

से तं सामाइए से तं नामनिष्फरागे।

प्र० से किं तं सुत्तालावगनिष्फएणे ?

उ० इत्राणि सुत्तालावयनिष्फ्एणं निक्लेवं इच्छावेइ, से अ पत्तलक्खणे वि ग गिक्खपइ।

कम्हा ?

लाघवत्थं । श्रतिथ इत्रो तइए श्रग्राश्रोगदारे अणुगमे ति । तत्थ णिक्खंते इहं गिक्वित भवइ ।

उरग-गिरि-जलगा,-सागर, नहतल-तुरुगगा समो अ जो होइ।

ममर-मिय-धरणि-जलरूह-रवि-पवण्समो श्र सो समणो ॥४॥ तो समगो जइ सुमगो, भावेगा य जई ग होइ पावमगो।

सयगे अ जगे अ समी, समी अ माणावमाणेसु ॥६॥

इहं वा गिक्खित्ते तत्थ गिक्खिते भवइ। तम्हा इहं ग गिक्खिप्पइ, तिहं चेव गिक्खिपइ। से तं गिक्खेवे।

क्षु०-१५१ प्र० से किं तं त्रग्रुगमे ?

ंड॰ श्रग्रुगमे दुविहे पएगात्ते,

तं जहा--

१ सुत्ताणुगमे अ २ निज्जुतिश्रणुगमे अ।

प्र० से किं तं निज्जुत्तित्रगुगमे १

उ॰ निज्जुत्तिश्रणुगमे तिविहे पएणत्ते, तं जहा—

र णिक्खेव-निज्जुत्तित्रगुगमे

२ उवग्वाय-निञ्जुत्तिश्रणुगमे ३ सुत्तप्फासिश्र-निञ्जुत्तिश्रणुगमे ।

प्र० से किं तं निक्खेव-निज्जुत्तित्रगुगमे ? उ० गिक्खेव-निज्जुत्तित्रगुगमे त्रगुगए,

से तं णिक्खेव-निज्जुत्ति ऋणुगमे।

प्र० से कि तं उवग्वायनिन्जुत्तित्रणुगमे ? उ० इमाहिं दोहिं मूलगाहाहिं त्रणुगंतव्वो,

तं जहा— - -गाहास्रो– उद्देसे निद्देसे स्त्र, निग्गमे खेत्त काल पुरिसे य।

> कारण पचय -लक्खण नए समोत्रारणाणुमए ।।१॥ किं कइविहं कस्स कहिं केसु कहं किचिरं हिवह कालं। कइ संतर मिवरहियं भवा विरिस- किसण मिक्ती ।।२॥

से चं उवग्घायनिन्जुत्तित्रणुगमे।

गाहा-

प्र० से कि तं सुत्तप्कासिश्रनिज्जुत्तिश्रगुगमे ?

उ० सुत्तप्फासिश्चनिज्जुत्तिश्रणुगमे-

सुत्तं उच्चारेश्रव्यं-

श्रक्खलिश्रं, श्रमिलियं, श्रवच्चामेलियं पडिपुर्ग्गं, पडिपुर्ग्मोसं, कंठोडुविष्यमुक्कं,

पाडपुरका, पाडपुर गुरुवायगोवगयं।

तत्रो तत्थ गाजिजहिति ससमयपयं वा परसमयपयं वा,

बंधपयं वा मोक्खपयं वा।
सामाइश्रपयं वा नो सामाइश्रपयं वा।

तश्रो तिमा बुच्चारिए समाणे केसि च णं भगवंताणं केइ श्रत्थाहिगारा श्रहिगया भवंति,

केइ अत्थिहिगारा अणिहिगया भवंति। तयो तेसि अणिहिगयाणं अहिगमणहाए पर्य पएणं विष्णइस्सामि-

संहिया य पदं चेव, पयत्थो पयविग्गहो। चालगा य पसिद्धी श्र, छन्विहं विद्धि लक्खगं ॥१॥

से तं सुत्तप्फासिश्च-निज्जुत्ति श्रशुगमे । से तं निज्जुत्ति श्रशुगमे ।

स तं अणुगमे।

सु०-१५२ प्र० से कि तं नए ? उ० सत्त मूलण्या परण्या,

सत्त मूलग्या परग्यता, तं जहा—

१ **गो**गमे २ संगहे ३ ववहारे ४ **उ**ज्जुसुए ४ सहे ६ सममिरूढे ७ एवंभूए। तत्थ गाहा ओ- गोगेहिं मागोहिं, मिणइ चि गोगमस्स य निरुत्ती। सेसाएां पि नयागं, लक्खणिमणमो सुगह वोच्छं ॥१॥ संगहिश्रपिंडिश्रत्थं, संगहवयणं समासत्रो विति। वच्चइ विशिच्छित्रत्थं, ववहारी सन्वदन्वेसु ॥२॥ पच्चपन्नग्गाही, उज्जुसुत्रो ग्यायविही सुगोत्राञ्चो। ्रइच्छइ विसेसिय तरं, पच्चुप्परणं गत्रो सदो ॥३॥ वत्थू हो संक्रमणं होइ, श्रवत्थू नए समिरुहे। वंजग्रा अत्थत दुभयं, एवं भू स्रो विसे से इ।।४।। ्णायस्मि गिपिहञ्चव्वे, ऋगिएहञ्चवस्मि चेव ऋत्थस्मि । ं जइअन्वमेव इइ, जो उवएसो सो नुश्री नाम ॥५॥ सन्वेसि पि नयाणं, बहुविहवत्तन्वयं निसामित्ता । तं सन्वनयविसुद्धं, जं चरगागुणहित्रो साह ॥६॥ से तं नए। ्रं ।। अणुओगदारा समत्ता ॥ सोलर्सस्यांणि चउरुत्तराणि, होति उ इमंमि गाहाणं। दु सह स्स म गुहु भ, छंद वि च प मा गु श्रो भगिश्रो।।१॥ गायरमहादारा इव, उवकमदारागुत्रोगवरदारा।

।। अणुओगहारं सुत्तं समतं॥

श्रक्खरविंदुगमत्ता, लिहिया दुक्खक्खयद्वाए ॥२॥

॥ यूलस्त्राणि-समत्ताणि ॥